मासिक प्रकाशन • जनवरी '९७

कादम्बिनी

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका



हे नववर्ष

काल जितना क्रूर है उतना कायर भी

चलिए चोखी ढाणी

११ रुपए

हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन


LIBERTY
कुछ सुना तुमने...
इस उम्र में मिसिज़ जुनेजा को लगा है
इश्क़ का रोग
माना कि वो लिबर्टी टिपटॉप पहनती है। मुलायम लेदर के PU सोल वाले, मज़बूत और टिकाऊ सैण्डिल। बेशक उनके डिज़ाइन-स्टाइल भी लेटेस्ट होते हैं, तो क्या जमाने भर का दुखड़ा बन जाएंगे वो ?
TIPTOPP
FROM LIBERTY
अनोखी शान, सबका अरमान

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

● ज्ञानेन्दु

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी । उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए, और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए । इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा ।

१. **विद्रूप** — क. बनावटी, ख. बुरा कार्य, ग. बिगड़ा रूप, घ. विकृत ।

२. **लोकाचार** — क. अच्छा व्यवहार, ख. संसार का व्यवहार, ग. परंपरा, घ. सामाजिक कार्य ।

३. **मिथ्यारोपण** — क. झूठ, ख. अपयश, ग. गलत बात, घ. झूठे आरोप लगाकर बदनाम करना ।

४. **परिणामदर्शी** — क. दूरदर्शी, ख. परिणाम भुगतनेवाला, ग. किसी कार्य के फल को जाननेवाला, घ. ज्योतिषी ।

५. **निःशंक** — क. संदेशहीन, ख. निस्संदेह, ग. निडर, घ. साहसी ।

६. **अधिगत** — क. अधिकृत, ख. प्राप्त, ग. सेवा में संपन्न, घ. दबा हुआ ।

७. **आहत** — क. चोट, ख. मरा हुआ-सा, ग. जिस पर आघात किया गया हो, घ. जो अतीत का हो ।

८. **आहूत** — क. बुलाया हुआ, ख. चोट खाया हुआ, ग. स्वागत, घ. अतिथि ।

९. **आह्लाद** — क. सुख, ख. आनंद, ग. संतुष्टि, घ. तृप्ति ।

१०. **पलायमान** — क. डरा हुआ, ख. दौड़ता हुआ, ग. भय से भागता हुआ, घ. थका हुआ ।

११. **सजीव** — क. प्राणी, ख. क्रियाशील, ग. बुद्धिमान, घ. जीवित ।

१२. **सज्ज** — क. उद्यत, ख. सजा हुआ, ग. धारण किया हुआ, घ. जिंदादिल ।

१३. **दुखियारा** — क. दुःख में पड़ा हुआ, ख. बीमार, ग. गरीब, घ. भिखमंगा ।

१४. **दुतरफा** — क. बनावटी, ख. दोनों ओर का, ग. पक्षपाती, घ. जिसे दोनों ओर का समर्थन हो ।

उत्तर

१. ग. बिगड़ा रूप, भद्दा । यह कलाकृति **विद्रूप** है ।

२. ख. संसार का व्यवहार, चलन । अतिथि का सत्कार **लोकाचार** है । (लोक+आचार)

३. घ. झूठे आरोप लगाकर बदनाम करना । यह सरासर **मिथ्यारोपण** है । मिथ्या+आरोपण (व्युत्.-आ+रुह्)

४. ग. किसी कार्य के फल को जाननेवाला । मनुष्य को **परिणामदर्शी** होना चाहिए । (व्युत्.-परि+नम्+दृश्)

५. ग. निडर । **निःशंक** होकर सत्कर्म करो (निः+शंक)

६. ख. प्राप्त । परिश्रम से ही सुख-सुविधाएं **अधिगत** होती हैं । (व्युत्.-अधि+गम्)

७. ग. जिस पर आघात किया गया हो । भगदड़ में **आहत** हुए लोगों की संख्या बहुत है । (व्युत्.-आ+हत्)

८. क. बुलाया हुआ । **आहूत** व्यक्ति का सत्कार करना चाहिए । (आ+हूत)

९. ख. आनंद, हर्ष । विजय से **आह्लाद** होता है । (आ+ह्लाद्)

१०. ग. भय से भागता हुआ । अपराधी **पलायमान** हो गया । (व्युत्.-परा+अय्)

११. घ. जीवित, सप्राण । मूर्ति **सजीव**-सी प्रतीत होती है । (व्युत्.-स+जीव्)

१२. ख. सजा हुआ । पंडाल सुंदर वस्तुओं से **सज्ज** है । (व्युत्.-सस्ज्+अच्)

१३. क. दुःख में पड़ा हुआ । गरीबी में प्रायः आदमी **दुखियारा** हो जाता है । (बोलचाल)

१४. ख. दोनों ओर का । कुछ व्यक्ति **दुतरफा** होते हैं ।

पारिभाषिक शब्द

Summon	=आह्वान-पत्र/सम्मन
Warrant	=अधिपत्र/वारंट
Verdict	=अधिमत
Acquisition	=अर्जन
Requisition	=अधियाचन
Assignment	=अधिन्यास
Act	=अधिनियम
Premium	=अधिशुल्क/प्रीमियम
Bonus	=अधिलाभांश/बोनस

ज्ञान-गंगा

दोहदैरालवालैश्च कियद्वृक्षानुपास्महे ।
ते तु कालं प्रतीक्षन्ते फलपुष्पसमागमे ।।

(सभारञ्जनशतक ६२)

—वृक्ष का सिंचन करना, मेड़ बनाना आदि कितना भी प्रयास करें, वृक्ष समय आने पर ही फलदायक होते हैं ।

मनस्वी म्रियते कामं कार्पण्यं न तु गच्छति ।
अपि निर्वाणमायाति नानलो याति शीतताम् ।।

(हितोपदेश १/४५)

—मनस्वी पुरुष भले ही मर जाए, परंतु हीन-भाव पैदा नहीं कर सकता, जैसे अग्नि भले ही बुझ जाए,परंतु ठंडी कभी नहीं होती है ।

शोकपरिहारेणापि शोको वर्धते ।

(कुन्दमाला २)

—शोक हटाने के प्रयास से भी शोक बढ़ता है ।

ननु स्वार्थपरो लोको न वेद परसंकटम् ।

(श्रीमद्भागवत् ६/१०/६)

—निश्चयतः लोक बड़े स्वार्थी होते हैं, वे दूसरे के संकट को नहीं जानते हैं ।

मा प्रगाम पथो वयम् ।

(ऋग्वेद १०/५७/१)

—हम सुपथ से कुपथ की ओर न जाएं ।

पाषाणरेखाक्षरनिर्विशेषा वाचः सतां प्रत्ययमावहन्ति ।

(प्रभावती परिणायम् ४/२३)

—सज्जनों की वाणी पत्थर पर की गयी लकीर की तरह विश्वास उत्पन्न करती है ।

अन्धादयं महानन्धो विषयान्धीकृतेक्षणः ।

(आत्मानुशासन ३५)

—विषयांध व्यक्ति अंधों में सबसे बड़ा अंधा है ।

—प्रस्तुति : महर्षि कुमार पांडेय

प्रतिक्रियाएं



प्रोत्साहन पुरस्कार

आदर करें, हमारे वरदानों का

'कादम्बिनी' का नवम्बर '१९९६ का तंत्र विशेषांक वस्तुतः यथार्थता, प्रामाणिकता और कई हजार वर्ष पूर्व भी विज्ञान का अस्तित्व सिद्ध करनेवाले श्रेष्ठ एवं विलक्षण ज्ञान का सच्चा संवाहक था।

आज का युग इतना अधिक यांत्रिक हो चुका है, इतना अधिक वैज्ञानिकपूर्ण हो चुका है कि अब उसे इस वृत्त से मुक्त होने में खासी समस्या उत्पन्न हो सकती है। यदि हम भारत के पुरातन ग्रंथों जैसे— चारों वेद, सुश्रुत और चरक संहिता आदि को उठाकर देखें तो दैनिक जीवन से जुड़ी ऐसी सैकड़ों उपयोगी जानकारियां हमें मिल जाएंगी जिसके प्रत्येक शब्द में हजारों

पुरस्कृत पत्र

अंधेरे में रोशनी

राम-राम ! पहले भी कई पत्र डाल चुका हूं। कोई भी नहीं छपा । कम पढ़ा-लिखा हूं न, आपकी श्रेणी का नहीं हूं। फिर भी 'कादम्बिनी' की एक-एक बात, तथ्य, विचार को समझता हूं। पत्र नहीं छपता कोई बात नहीं। १९७६ से पढ़ता आ रहा हूं। एक अदना-सा दुकानदार हूं। दुकान खोलने के साथ-साथ 'दैनिक हिन्दुस्तान' व 'कादम्बिनी दीदी' शुरू की थी, जो मेरी रोजी-रोटी के साथ-साथ मेरा साथ अब तक देती आ रही हैं। जब कभी आहत होता हूं तो पुराना 'कालचिंतन' पढ़ने लगता हूं। सुकून मिल जाता है। मैं आपका बहुत सम्मान करता हूं, क्योंकि आप अंधेरे में एक किरण दिखाते हैं। जब भी असफलता महसूस होती है, 'कादम्बिनी' का कोई-न-कोई लेख नया साहस पैदा करता है।

एक बात बताना चाहूंगा आपको। आपकी 'कादम्बिनी' का पायता पूजता हूं। दशहरे के दिन रस्म होती है, आंगन में खाट बिछाकर उस पर अपनी-अपनी पाठ्य-पुस्तक रखकर पूजन होता है। सब बच्चे अपनी-अपनी पाठ्य-पुस्तकें रखते हैं। मैं अपनी 'कादम्बिनी' रखता हूं। ठीक है न । मेरी प्रिय पुस्तक (पाठ्य-पुस्तक) तो यही है।

वैज्ञानिक तथ्य बगैर किसी प्रचार के छिपे हुए हैं, जैसा आपने 'आखिर कब तक' में स्पष्ट किया है कि 'अपने विवेक से काम कीजिए' तो इस तारतम्य में मैं आपके तर्कों का पूर्ण समर्थन करने के उपरांत भी यही कहूंगा कि ईश्वर प्रदत्त कुछ सेवाभावी या विलक्षण कार्यों में विवेक (मस्तिष्क) से नहीं, बल्कि दिल से काम लेना ही उचित है । वस्तुतः आज विज्ञान ने हमारे लिए जितनी सुविधा उपलब्ध करायी है, उतने ही भटकाव के मार्ग भी प्रशस्त कर दिये हैं । इस दौड़ती-भागती-हांफती जिंदगी में मनुष्य कुछ क्षण यदि आत्म चिंतन, एकाग्रता या ध्यान योग में प्रयुक्त करे तो धीरे-धीरे उसका 'अंतिम सत्य' से साक्षात्कार हो सकता है ।

जहां तक नवम्बर के तंत्र विशेषांक का प्रश्न है उसमें कोई भी लेख यथार्थता से दूर नहीं ले जाता । यह हम भारतीयों की विडंबना ही कही जाएगी कि भारत की सर्वाधिक प्राचीनतम सभ्यता और संस्कृति से प्राप्त हमारे अनमोल आशीर्वादों और उपहारों पर विदेशों में खोजें चल रही हैं और हम अपने तंत्र-मंत्र का परिहास उड़ाते हैं । इंदौर में कुछ माह पूर्व कैंसर विशेषज्ञों के एक सम्मेलन में एक विदेशी डॉक्टर (शायद स्विट्जरलैंड) ने हल्दी की उपयोगिता बताते हुए कहा था कि, 'कैंसर को नष्ट करने में हल्दी की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है'; यह समाचार सभी अखबारों के मुखपृष्ठ पर छपा था । हमने पढ़ा और भूल गये, परंतु कुछ माह पश्चात ही अमरीका द्वारा हल्दी पेटेंट कर ली गयी ।

— विवेक हिरदे
पॅट्रियट कैंसर क्लब
२८१, लोकमान्य नगर,
इंदौर-४५२००९

पढ़ना-पढ़ाना मुझे अच्छा लगता है । बी.कॉम पूरा नहीं कर पाया, इसका मलाल मुझे ताउम्र रहेगा । बड़ा लड़का दस वर्ष का है । पांचवीं कक्षा में है । उसे बी.कॉम अवश्य कराने की कोशिश करूंगा । जिस दिन वो बी.ए. या बी.कॉम या कुछ ऐसा कर लेगा, आपको सबसे पहले जरूर बताऊंगा (रोकर) । मेरा सपना पूरा होगा ।

आपका शुभचिंतक
हमेशा से
हमेशा तक
— शिव प्रकाश शर्मा
जरनल मर्चेंट, गढ़ गेट,
अयोध्यापुरी, हापुड़

मृत संजीवनी

मैं आपकी पत्रिका के माध्यम से हिंदुस्तान के मनोचिकित्सकों से अनुरोध करूंगा कि वह मानसिक रूप से बीमार व्यक्ति को कादम्बिनी पत्रिका नियमित रूप से पढ़ने की सलाह दें । यह पत्रिका व्यक्ति को संघर्ष करने की प्रेरणा देती है । इसका कालचिंतन तो ऐसे व्यक्ति जो आत्महत्या करने की ठान चुका हो, को भी जीने का रास्ता दिखाता है । जब अमरीका-जैसे देश में मानसिक बीमारी और हार्ट अटैक के मरीजों का इलाज भगवान से प्रार्थना करने से संभव है तो फिर हमारे मनोचिकित्सकों को भी मरीजों से यह कहने में क्या आपत्ति है कि भगवान की शरण में जाओ ।

— अरविंद
लश्कर, ग्वालियर

संपादकजी

परम् आदरणीय संपादकजी
कादम्बिनी के अभिभावक जी ।
शत नमन आपको बार-बार
हे 'कालचिंतन' के लेखक जी ।
साधना में लीन साधक जी
पाठकों के मनभावक जी ।
मां सरस्वती के उपासक
राष्ट्रभाषा हिंदी के धावक जी ।
जहां साहित्य दम तोड़ रहा
हे संस्कृति के विचारक
जीवन और जीवनी शक्ति दे
डूबती कश्ती के उबारक
शत नमन आपको बार-बार
हे 'कालचिंतन' के लेखक जी
कादम्बिनी के संपादकजी

— तारकेश्वर शर्मा 'विकास'
खड़गपुर

विद्या ददाति विनयं

'कादम्बिनी' अक्तूबर अंक में 'अहंकार के बीज' लेख पढ़ा । अहंकार मनुष्य के विवेक को शून्य कर देता है, जिसके कारण वह अपनी तुलना में बाकी सबको तुच्छ समझता है । क्षणिक भौतिक उपलब्धियों को प्राप्त करने के उपरांत अहंकारी व्यक्ति स्वयं को अन्य के भाग्य का विधाता समझने के कारण अपनी बुद्धि को कलुषित करते हैं । अहंकारी व्यक्ति की सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि वह अपनी क्षमताओं का सही मूल्यांकन करने में असमर्थ होता है, जिसके कारण वह सदैव दिग्भ्रमित रहता है ।

इसके विपरीत 'विद्या ददाति विनयं' के अनुसार विद्या से विनम्रता उत्पन्न होती है जिससे अहंकार का नाश होकर यश और कीर्ति की प्राप्ति होती है, जो मनुष्य को अमर रखती है । मनुष्य की सार्थकता भी इसी में निहित है और मनुष्य को इसी के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

— श्रीमती पूनम गक्खड़
जालंधर शहर (पंजाब)

अकबर : एक महान शासक

'कादम्बिनी' के नवम्बर अंक में प्रकाशित लेख 'अकबर सूर्य-उपासक था' पढ़ा । इसे पढ़कर इतिहास के कई राज सामने खुलकर आये । इसका अवलोकन करने से पता चलता है कि अकबर की गणना न केवल भारत के इतिहास वरन विश्व के इतिहास में महान सम्राट के रूप में की जाती है ।

मुसलमान शासकों में वही ऐसा शासक था जो अपनी प्रजा को पुत्रवत मानता था । उसकी उदारवादी नीति के फलस्वरूप ही हिंदू-मुसलिम के बीच की दीवारें ध्वस्त हो चुकी थीं । अकबर का स्वभाव बहुत ही स्नेहमय था । उसकी मानसिक योग्यता उच्च कोटि की थी । वह निरक्षर होते हुए भी उच्चतम श्रेणी का विद्वान था । उसके अंदर कुशल राजनीतिज्ञ होने के सभी गुण विद्यमान थे ।

अपनी हिंदू रानियों के संपर्क में आकर वह अपना जीवन सादा तथा शुद्ध रूप में बिताने लगा ।

उसका हिंदू धर्म के प्रति विशेष लगाव था । उसने दीन-ए-इलाही नामक धर्म चलाया । दीन-ए-इलाही में बहुत-सी ऐसी बातों पर प्रतिबंध लगाया गया जो मुसलिम समाज में जायज थीं ।

— श्रद्धा श्रीवास्तव
कर्नलगंज, गोंडा

आस्था के आयाम

मेरे दादाजी

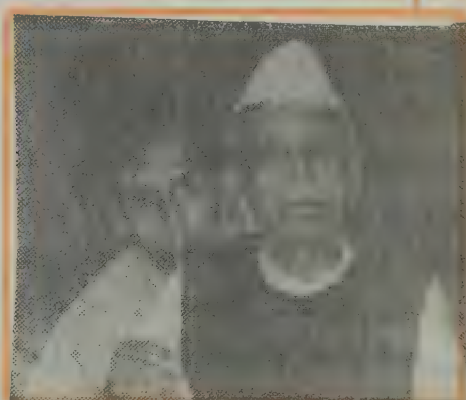
चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं,
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूं भाग्य पर इठलाऊं ।
मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ में तुम देना फेंक,
मातृभूमि पर शीष चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक ।

इन पंक्तियों के रचयिता मेरे दादाजी पं. माखनलाल चतुर्वेदी घर में आये मिलनेवाले हर व्यक्ति को पूरा समय देते, उसकी कठिनाइयां जान कर, समय-असमय उसे उचित मार्गदर्शन प्रदान करते थकते नहीं थे । दादाजी अपनी लंबी अस्वस्थता के कारण वर्षों चारपाई पर पड़े रहे, परंतु प्रत्येक आगंतुक को हमेशा दरवाजे के बाहर तक आकर विदा करने का संकल्प उन्होंने मृत्युपर्यंत निभाया ।

पद्मभूषण में क्या रखा है

कभी किसी पद या सम्मान का मोह दादाजी को रास नहीं आया । १९६४ में भारत सरकार द्वारा उन्हें दी गयी 'पद्मभूषण' की उपाधि के बारे में जब मैंने पूछा कि "दादाजी आपको कैसा लग रहा है ?" तो उन्होंने तुरत उत्तर दिया, 'क्या कल और आज में कोई विशेष अंतर आ गया है ? मुझे तो सब कुछ साधारण-सा लग रहा है ।'

एक दिन अनायास ही सुबह बंबई से आनेवाली मेल से स्व. डॉ. राममनोहर जी लोहिया खंडवा स्टेशन पर उतरे और इधर-उधर पता ठिकाना पूछते दादाजी के पास आ पहुंचे । २-३ घंटे तक दोनों के बीच राजनीतिक चर्चाएं होती रहीं । दोपहर का भोजन करने के बाद लोहियाजी ने दादा के पैर छुए तथा चलने की आज्ञा मांगी । इसी बीच हम लोगों ने एक छायाकार को बुलवा लिया था और बाहर दरवाजे पर जैसे ही छायाकार ने अपना कैमरा संभाला, दादाजी ने बड़े सहज भाव से कहा,



"इस लफंगे के साथ मुझे कैमरे में क्यों कैद करते हो ।" प्रत्युत्तर में लोहियाजी ने ठहाका मारकर कहा, "दादा, आपका यह आशीर्वाद भी लेकर जा रहा हूं" और वातावरण में मानो सुखद आनंद का एक झरना-सा फूट पड़ा । एक क्षण पूर्व के विनोदमय दादा ने भावविह्वल स्वर में लोहियाजी को विदा दी ।

दादाजी, पं. माखनलाल चतुर्वेदी १९६८ में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के निर्वाण दिवस ३० जनवरी पर ही गोधूलि में हम सबको बिलखता छोड़कर गोलोकवासी हो गये ।

● डॉ. आर. के. चतुर्वेदी
—राजकीय क्षय चिकित्सालय, शाहजहांपुर (उ. प्र.)

मासिक प्रकाशन

कादम्बिनी

- वर्ष ३७,
- अंक ३,
- जनवरी, १९९७

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

लेख एवं निबंध

'कादम्बिनी' : चंदे की दरें

अर्द्धवार्षिक : ६० रुपये; वार्षिक : ११५ रुपये : द्विवार्षिक : २२५ रुपये; विदेशों में : पाकिस्तान, नेपाल एवं भूटान; अर्द्धवार्षिक; १८५ रु. (अमरीकी डॉलर-७ पौंड-४), वार्षिक : ३६५ रु. (अमरीकी डॉलर-१३.५०, पौंड-७.५०), : अन्य सभी देशों के लिए : अर्द्धवार्षिक २७५ रुपये (१०.५० डॉलर, पौंड-६); वार्षिक : ५३५ रु. (२०.५० डॉलर, पौंड-११.५०) ।
चंदा भेजने का पता प्रसार व्यवस्थापक,
'कादम्बिनी'
हिन्दुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ ।
आवरण (पारदर्शी) प्रेम कपूर

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

संपादकीय परिवार

मुख्य उप-संपादक : भगवती प्रसाद डोभाल
वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज, सुरेश नीरव,
उप-संपादक : डॉ. जगदीश, चंद्रिकेश, धनंजय सिंह, सुजीत वाजपेयी
प्रूफ-रीडर : प्रदीप कुमार,
कला विभाग प्रमुख : सुकुमार चटर्जी,
चित्रकार : भुपेन मंडल
संपादकीय पता : 'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ ।
फोन : ३३१८२०१/२८६, टेलेक्स : ३१-६६३२७, फैक्स : ०११-३३२११८९

काल-चिंतन

— हम वाह्य-जगत से परेशान हैं । परेशान हैं कि विश्व की समस्याएं क्या हैं ?
— अपने अंतर को झांककर हम शायद ही कभी देखते हों । अपने आंतरिक उलझनों, समस्याओं और हस्तक्षेपों को देखने की चिंता हमें नहीं है ।

□

— संपूर्ण जगत एक-एक व्यक्ति की अवधारणा का विराट स्वरूप है ।
— व्यक्ति जैसे होंगे, देश वैसे बनेंगे ।
— देश जैसे होंगे, विश्व का स्वरूप भी वैसा ही होगा ।
— व्यक्ति पहली संज्ञा है । एक व्यक्ति पहला अस्तित्व है । एक व्यक्ति नीति-निर्धारण का पहला स्वामी है ।
— वही एक अनेक में बदलता है ।
— वही अनेक व्यक्तियों का झुंड बन जाता है ।

□

— मैं देखता हूं, समस्याएं व्यक्तियों की नहीं होतीं ।
— मैं देखता हूं, समस्याएं देश की नहीं होतीं और न विश्व की ।
— देशों में अंतर्निहित हर व्यक्ति की अपनी अलग समस्या है । वे लिखकर भेजते हैं मुझे अपनी पीड़ा की दास्तानें । वे चाहते हैं उनकी पीड़ा का निराकरण क्या है ? कहां है ?
— एक की पीड़ा दूसरे की पीड़ा से एकदम अलग है । इसलिए हर पीड़ा की पहचान अलग-अलग करनी होती है ।
— हम यदि एक पीड़ा को सर्वजननीय बना लें तो वही स्थिति होगी कि रोग तो कुछ है, निदान हम कुछ कर रहे हैं ।
— हमारा विज्ञान इस भ्रम का प्रमाण है ।

□

— अज्ञान का पोषण, ज्ञान का सबसे बड़ा क्षय है ।

— यह होते हुए भी अज्ञान सार्थक भी है । अज्ञान होगा तो कर्म को बल मिलेगा ।
— ज्ञानी बनने के लिए कार्मिक-क्षमता को संघर्ष के शतरंज से गुजरना होगा ।
— शतरंज के मायाजाल में फंसकर बुद्धिबल का यज्ञ करना जरूरी है । यज्ञ से ही शक्तियां मिलती हैं । यज्ञ से ही वायुमंडल का प्रदूषण निर्मल होता है ।
— यज्ञ तत्त्वों का क्षार नहीं है, वह क्षार होते तत्त्वों से पवित्रता के महामंत्र निर्मित करता है ।

□

— अग्नि सर्वोत्तम शक्ति है । वह विनाश ही नहीं करती, निर्माण का भी प्राणाधार है ।
— शरीर के भीतर का मूल-तत्त्व अग्नि है । जिस दिन अग्नि निष्चेत हो गयी हमारा अस्तित्त्व ही समाप्त हो जाता है ।
— अग्नि दावानल बनकर जंगल का दोहन करती है, यह सत्य है; लेकिन उससे परम सत्य है कि हमारी भौतिक आकांक्षाओं और इच्छाओं का प्रज्जवलन अग्नि से होता है । वही अग्नि हमारे शरीर में सार्थक आहार उत्पन्न कर प्रमाणपत्र देती है कि हम अचेतन नहीं हैं ।
— इस मूल-तत्त्व को समझ लें तो अज्ञान से ज्ञान की जो बातें मैंने उठायी थीं, उससे निष्कर्ष निकलता है कि अज्ञानी को ज्ञानी बनने के लिए कर्म करना होता है । ज्ञानी बनते ही वह कर्म से टूट जाता है ।

□

— कर्म एक नहीं है ।
— ज्ञान तालाब में आबद्ध सीमा नहीं है ।
— ज्ञान अनंत महासागरों से भी विस्तृत है । जीवन के अंतिम क्षण तक संघर्ष करने के बावजूद संपूर्ण ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती ।
— ज्ञान अनंत है । अपनी क्षमता से हम उसका जितना अंश पा लें ज्ञान के भंडारक का बहीखाता कभी खाली नहीं होता ।
— लीजिए जितना चाहें उतना ज्ञान लीजिए, ज्ञान पारे की तरह फिर बढ़कर अपनी पूर्व स्थिति में आ जाएगा ।
— अतः अज्ञानी से ज्ञानी बनने तक की प्रक्रिया में कर्म भले ही टूटता नजर आये उसे संघर्ष निरंतर करना होगा । महासागर में फंसे व्यक्ति की तरह जो हाथ-पैर मारकर तैरने के कौशल को सार्थक तो करता है किंतु कब तक तटवर्ती बनता है अथवा वहीं उसके श्रम का मोहभंग हो जाता है, वह स्वयं नहीं जानता ।

□

— ज्ञान विस्फारित स्फटिक है ।

— ज्ञान की अपूर्णता से अहम् को बल मिलता है ।

— अहम् मिथ्या संतोष का खाली पात्र है । वह उद्दंडता को जन्म देता है । इतिहास परिचायक है कि अहम् के मैदान में किरकिट खेलनेवाले उद्दंडता का शिकार हुए हैं और अंततः उनकी लौह-दृढ़ क्षमता कांच के चूर्ण में बदली है ।

— अहम् सबसे पहले व्यक्तित्त्व पर आक्रमण करता है । अहम् के आक्रमण से मनुष्य की विनम्रता क्षयग्रस्त होती है ।

— विनम्रता मनुष्य का वह आभूषण है जो हीरे-जवाहरात से खरीदी नहीं जाती ।

— विनम्रता का मूल्य निर्धारण आज तक कोई नहीं कर सका इसलिए यह भी नहीं कह सकूंगा कि विनम्रता अमूल्य है ।

— अमूल्य तो उसे कहा जाता है जिसके मूल्य की कोई न कोई सीमा होती है ।

— सत्य और असत्य प्रतिद्वंद्वी नहीं हैं, क्योंकि यहां भी वही गणित काम करता है कि सत्य जब मूल्यता के किसी तराजू में तौला नहीं जाता तो असत्य क्या है, सत्य क्या है, इसका निर्धारण भी संभव नहीं है ।

□

— मान लेना चाहिए कि अहम् के विग्रह से ही सत्य उद्घाषित होता है । वह सत्य पूर्ण सत्य तो नहीं होगा; हुआ भी नहीं, लेकिन समंदर में सीप तो होते हैं ।

— अहम् का पराभव और सत्य का सम्मिश्रण मार्ग को स्थिर करता है । स्थिर करता है कि तुम्हारा गंतव्य मार्ग प्रशस्त है ।

— मार्ग प्रशस्त होने का आश्वासन मिल जाए तो शांति के द्वार तक हम पहुंच जाते हैं ।

— शांति किसी चिड़िया का नाम नहीं है ।

— शांति समवेत संवेदना भी नहीं है ।

— शांति हमारी आंतरिक आस्था का प्रतिभाषण है ।

— शांति सर्वेक्षण से परे हो जाए तो कौन क्या है, क्या करता है, क्या कहता है और किससे मिलकर छल-प्रपंच कर रहा है, यह सब सोचना व्यर्थ है ।

— सोच अपने आप में भटकाव है ।

— शांति सोच को विराम देती है । विजित वही होता है जो जयी है । जयी भी वह जो जय और पराजय को विश्लेषण का माध्यम नहीं बनाना चाहता ।

□

— इस स्थिति तक पहुंचकर विश्व की चिंता कर लें तो अंत सुनिश्चित होगा।
— समस्त ब्रह्मांड या समस्त जागृत विश्व त्रिगुणात्मक है।
— इस त्रिगुणात्मक विश्व के अंग हैं—

- सात्विक गुण
- राजसिक गुण
- तामसिक गुण

— इस त्रिगुणता से बाहर कुछ भी नहीं है। सारी परिभाषाएं इसी त्रिगुण में समाहित हैं।
— त्रिगुण की किसी सीमा में थोड़ी भी सिहरन हुई तो मकड़ी के जाले बनेंगे।
— मकड़ी के जाले ही तो थे कि युधिष्ठिर-जैसा चिंतक-विचारक शतरंज का मोहरा बना और महाभारत का युद्ध हुआ।
— मकड़ी के जाले ही तो थे कि भगवान राम की बुद्धिचेतना स्वर्ण मृग का चिंतन बनी और स्वर्ण-मंडित लंका युद्ध-स्थल बना। युद्ध के बाद बिखराव की भयंकर भूमिका ने किसी को नहीं छोड़ा। एक अशेष पश्चात्ताप, रीतेपन का भयानक अवशेष और सोच की खंडहर दीवारें— यह क्या हो गया?
— जरदस्तु का पराभव तमस का बलिदान बना।
— हिटलर की तामसिक वृत्तियां विध्वंस की कृतिकाओं में बदल गयीं।
— महाबोधि के संरक्षक सात्विकता के प्रतीक एक प्रश्नचिह्न तो छोड़ ही गये।
— मंदिरों की दीवारों में तराशे प्रस्तर के प्रतिमान राजसिकता के वैभव का इतिहास लिखकर अंततः शांति के द्वार तक पहुंचते-पहुंचते मोहभंग के शिकार हुए।

□

— मैं व्यतीत के प्रतिमानों की भर्त्सना नहीं करना चाहता। करना मेरा लक्ष्य भी नहीं है।
— बताना चाहता हूं कि धर्म की सीमा है :

- बताना चाहता हूं कि धर्म का स्रोत सत्य है
- सत्य का स्रोत करुणा है
- करुणा की आश्वस्ति क्षमा है।
- क्षमा दूसरों के हृदय का कल्मष नष्ट करती है।
- क्षमा मनुष्य की भटकन का आशीर्वाद बनती है, इसलिए क्षमा करना और

क्षमा याचना, साधना के श्रेष्ठ द्वार हैं ।

— भूलें किसमें नहीं होतीं ! हम मनुष्य हैं तो गलती करेंगे ही, भूलें होंगी ही । इनसे परे हो जाएंगे तो देवत्व के द्वार हैं । इनमें संलिष्ट होंगे तो पश्चात्ताप का प्रेमी राक्षस है ।

— मान लीजिए भूल मात्र आदमी से होती है ।

— भूल न देवता करते और न अदेवत्व के स्वामी, राक्षस ।

— भूल कीजिए; कीजिए नहीं हो जाए तो पराजय का अनुभव शेष न रहने दीजिए, स्वीकारिए; बस स्वीकारिए ।

— स्वीकार्य से बड़ा पश्चात्ताप कुछ भी नहीं है ।

— पश्चात्ताप की पहचान ही शुद्ध स्वर्ण की चमक है, सही हीरे की परख है और मनुष्य की अंगिका का पावन गंगाजल है ।

— स्वीकार्य की इस सीमा तक पहुंचकर ही आत्मयोगी, महायोगी बन जाता है ।

— हृदय के कल्मष स्वीकार्य के क्षितिज तक पहुंचते हैं ।

— क्षितिज, जो मिथ्या है, भ्रम है, वहां तक पहुंच जाएं तो सुख का विचार उभरेगा ही क्यों ?

— तब तो कहेंगे— समरस थे जड़-चेतन, स्वीकार घना था, चेतना एक विलसती, आनंद अखंड घना था ।

□

— समय ने बहुत भटकाया है हमें । भटकाना समय का धर्म है । समय को भेदना और चेतना देना हमारा धर्म है ।

— आइए तो अंतरात्मा से जुट जाएं :

- वीभत्स व्यतीत के कलुष को नष्ट करने में सहायक हों
- पहचानें अपनी सात्विक क्षमताओं को
- विध्वंस करें स्वार्थपरक दीवारों को
- जन्म दें उसी वीभत्स को छानकर सत्य के पारदर्शी परदे को

— होगा यह तभी जब हम अपनी भागीदारी को संपूर्णता से समझेंगे । तटस्थ रहने से काम नहीं चलेगा । हमारी शक्ति-क्षमता और कालावधि सीमित है, इसे पहचानकर युद्धरत हों हम उस डायनासोर से जो आज भी केवल कल्पनाजीवी है ।

राजेन्द्र अवस्थी



हे नव वर्ष !

घूमना-फिरना मेरी आदत में शुमार है । देश में हो या विदेश में, यदि कहीं जाना है तो अकसर हवाई जहाज से ही जाता हूं । हवाई यात्राएं करते हुए मैंने कई बार सोचा कि आकाश में उड़ते हुए दो विमान यदि आपस में टकरा जाएं तो क्या होगा ? यह सोचते समय मुझे कतई दहशत नहीं होती । एक बार मैं ज्यूरिक से कोपेनहेगेन जा रहा था । अचानक रास्ते में विमान का इंजन फेल हो गया, तो घोषणा की गयी 'लाइफ जैकेट' के बारे में, और यदि आपातकालीन स्थितियां आ जाएं तो क्या करना चाहिए ? मैं तब भी निश्चिंत था, क्योंकि मृत्यु से भय खाना मेरी दृष्टि में कायरों का काम है । इसे जब आना ही होगा तो आ ही जाएगी । मैंने विमान में बैठे लोगों को देखा, प्रायः सबकी हालत खराब थी । मृत्युबोध से सभी आतंकित थे, मेरे पास एक विदेशी महिला बैठी थी, मेरे कंधे पर सिर रखकर वह फूट-फूटकर रोने लगी । अंगरेजी में ही उसने बताया कि वह अपनी नवजात नातिन को देखने जा रही है । मैं समझाता रहा, लेकिन सब व्यर्थ । मेरे कंधे के कोट का हिस्सा जरूर उसके आंसुओं से भीग गया । संकटकालीन यह दृश्य मुश्किल से पांच मिनट चला होगा कि उसी समय पायलट ने घोषणा की कि दूसरा इंजन चालू हो गया है, इसलिए परेशानी की बात नहीं है ।

परेशानी तो दूर हो गयी, लेकिन मुझे उसमें बैठे सारे लोगों की कायरता आज तक नहीं भूली । मैं तब भी सोचता रहा कि यह तो मशीनी दुर्घटना है, पर यदि अचानक दो विमान टकरा जाएं तो क्या होगा ? कौन किससे शिकायत करेगा ? इस प्रसंग में हाल में दादरी-चरखी के पास दो विमानों की दुर्घटनाओं के ऐसे ही अवशेष देखकर मैं दंग रह गया । मुझे तब पता लगा कि कल्पना और सत्यता में कितना अंतर है ?

आखिर याचना करें तो किससे ?

विमान दुर्घटनाओं के बारे में आये दिनों पढ़ने को मिल रहा है, लेकिन इस प्रसंग को लिखते-लिखते जम्मू जा रही झेलम एक्सप्रेस में भीषण दुर्घटना का समाचार भी पढ़ने को मिला है । पता लगा है कि उसके डिब्बे में विस्फोटक पदार्थ था जिसके कारण डिब्बे की धज्जियां उड़ गयीं । कुछ ही समय पहले एक भीषण दुर्घटना और हो

चुकी है । एक क्या इस वर्ष दुनियाभर में दुर्घटनाओं का हिसाब लगायें तो वे बेहिसाब होंगी । यात्रा करना आदमी की मजबूरी है । अब न रेल का सफर सुरक्षित है और न हवाई जहाज का, ऐसे में एक ही बात शेष रह जाती है कि हर आदमी को घर से निकलते समय अपनी जिंदगी हथेली पर लेकर चलनी चाहिए, न जाने किस सफर में जिंदगी की शाम आ जाए । असुरक्षा कहां नहीं है, हत्याओं और लूटपाट की खबरें तो आम हो गयी हैं । उस अज्ञात शक्ति से यही प्रार्थना कर सकते हैं, यह नया वर्ष दुर्घटनाओं का वर्ष न हो !

साइकिल से अच्छी सवारी नहीं

यूरोप के कई देशों में मैंने बड़े-बड़े लोगों को देखा है कि वे ठाठ से साइकिल से अपने दफ़्तरों को जाया करते हैं । मुझे पुराने चेकोस्लोवाकिया में 'प्राग' की एक बात याद आती है । वहां के विश्वविद्यालय में मेरा भाषण था । भाषण समाप्त हुआ तो मुझे कार में गंतव्य के लिए रवाना कर दिया गया और विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष साइकिल पर गये । उन्होंने कहा, 'आप चलिए मैं आपको 'रिसीव' करूंगा ।' बात सही हुई । साइकिल जल्दी पहुंच गयी और कार देर से पहुंची ।

दिल्ली में अचानक बड़ी-बड़ी और नयी गाड़ियों की भीड़ इकट्ठी हो गयी है । पुरानी गाड़ियां तो कम देखने को मिलती हैं । भीड़ का हाल तो यह है कि पैदल चलनेवाले बचकर निकल जाएं तो वे अपने आप को सौभाग्यशाली समझें । कारवाले अपनी नयी कार में टक्कर के निशान न देखें तो उन्हें 'सत्यनारायण' की कथा सुननी चाहिए । कुल मिलाकर दिल्ली का हाल यह है कि सुबह हो या शाम, छुट्टी का दिन हो या काम का दिन, सड़कें कारों, तिपहियों और स्कूटरों से ठसाठस भरी होती हैं । दुर्घटना रोज कितनी होती हैं, इसकी बात मत पूछिए, क्योंकि हर दुर्घटना अखबार की सुर्खियां नहीं बनतीं । कारों का तो यह हाल है कि परिवार के परिवार दुर्घटनाग्रस्त हो गये और इस दुनिया से चले गये । मुंबई शहर की आबादी दिल्ली से अधिक है, लेकिन वहां चलनेवाली बिजली की लोकल रेलगाड़ियों ने सड़कों की हालत बचाकर रखी है । एक बात और है वहां तिपहिये, केवल उपनगरों में ही चलते हैं । लंदन में तो हाल यह है कि जो लोग बहुत दूर रहते हैं वे अपनी कार स्टेशन में खड़ी कर देते हैं, वहां से लोकल ट्रेन से आसानी से अपने कार्यालय पहुंच जाते हैं । लंदन की सड़कों में दिल्ली की तरह ट्रैफिक रुकता नहीं है, दिल्ली में हाल यह है कि बाहर से कोई छोटा-मोटा मेहमान भी आ जाए, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति या प्रधानमंत्री को किसी सड़क से जाना हो तो सारा ट्रैफिक रोक दिया जाता है । कई बार घंटों जाम । कल्पना कीजिए एक आदमी बीमार और एम्बुलेंस से उसका तुरंत अस्पताल पहुंचना आवश्यक है, आखिर उसका होता है क्या ? कई बार

तो इस शाही ठाठ-बाट पर वह रास्ते में ही दम तोड़ देता है ।

दिल्ली की भीड़ कैसे कम की जाए, इसकी सलाह हम दें भी तो कौन सुनेगा ? बिन मांगी सलाह देनी भी नहीं चाहिए । दिल्ली में रहना मजबूरी है तो कारों की भीड़ और प्रदूषित हवाओं को झेलना पड़ेगा ही । सेंट्रल रोड रिसर्च इंस्टीट्यूट के डॉयरेक्टर डॉ. ए.के. गुप्ता ने आंकड़े दिये हैं कि दिल्ली में इस शताब्दी के अंत तक ३५ लाख कारें हो जाएंगी । उनका कहना है कि लगभग २००० नयी कारों का पंजीकरण रोज हो रहा है ।

राजनीति और भ्रष्टाचार

दुनियाभर की बात मैं नहीं करना चाहता, हमारा देश इन दिनों राजनीतिक भ्रष्टाचार से पीड़ित है । भ्रष्टाचार की सीमा हवाला या दलाली तक ही सीमित नहीं रह गयी है । सबसे बड़ी चिंता तो यह है कि राजनीतिक दलों का अस्तित्व अपने आप में भ्रष्ट होता जा रहा है । किसी भी दल पर जनता की आस्था नहीं रही, कोई भी दल पाक साफ नहीं रहा है, जोड़-तोड़ और स्वार्थ का मैदाने-दंगल हर व्यक्ति का चरित्र बनता जा रहा है ।

जो अन्य देशों की राजनीति से परिचित हैं उन्हें कतई आश्चर्य नहीं होगा कि कई देश ऐसे हैं, जहां एक व्यक्ति का बहुमत है, तब भी सरकार मजे में चल रही है । कुछ दिनों पहले मैं नीदरलैंड गया था, तब मुझे पता लगा कि हॉलैंड की सत्ता केवल एक व्यक्ति की अधिकता के कारण चल रही है । जो गरीब और विकासशील देश हैं, उनमें इस तरह की घटना असंभव है । सवाल यह उठता है कि सत्ता की कुरसी पर जो बैठे हैं वे जनसेवक हैं या धन-सेवक हैं । जहां लोभलालच नहीं होगा और जनसेवा की भावना होगी, वहां ही ईमानदारी रह सकती है । काश ! भारत सहित दुनिया के ऐसे देश दूसरे देशों से शिक्षा लें और जनता के अभिमत का आदर करें ।

वैसे एक विराट सत्य यह भी है कि धरती अपनी धुरी पर घूमती है । उसी तरह राजनीति में भी घुमाव आता रहता है । सबसे पहले हमारे यहां ब्राह्मणों की सत्ता थी, उसके बाद दोयम दरजे की सत्ता ने जन्म लिया । फिर सत्ता निम्नवर्ग और अधकचरे लोगों के हाथ में आयी । घुमाव का यह चक्र पूरा करने के लिए अभी सत्ता को और भी नीचे स्तर पर जाना होगा, उसी के बाद समय-चक्र उद्धार का काम करेगा और फिर 'सवर्णों' के हाथ 'स्वर्ण' सत्ता आएगी । इस सत्य को पहचान लीजिए तो प्रतीक्षा ही जनता के जीने का संबल रह सकती है ।

एक और नयी दीवार मिली

चीन की दीवार के बारे में सबने पढ़ा है । मुझे तो वह दीवार देखने को भी मिली है । एक समाचारपत्र से पता लगा कि ५००० कि.मी. लंबी एक दीवार का पता

हाल ही में मंगोलिया में चला है । कहा जाता है कि इस दीवार का निर्माण सन् ११२३ और ११९८ के बीच किया गया था । दीवार बनानेवाले 'नोमेडिक' लोग थे । नोमेडिक का अर्थ है घुमंतू । इन्हीं घुमंतू लोगों ने पूरा यूरोप बसाया और अमरीका की भी खोज की । वही घुमंतू जाति मंगोलिया पहुंची होगी, तब वहां 'जिन डायनेस्टी' ने राज्य करना शुरू किया होगा । ये लोग सन् १११५ से लेकर १२३४ तक राज्य करते रहे । इन्हीं लोगों ने यह दीवार बनवायी । यह दीवार नैंजिंग नदी के पश्चिमी भाग से शुरू होती है और मंगोलिया के उत्तर-पूर्वी प्रांत तक जाती है । वहां बाउटू नाम का नगर है । यह दीवार मिट्टी की बनी है और इसका नाम मंगोलियन भाषा में 'ट्रेंच ऑव जिन' रखा गया है । दीवार के सहारे कुछ किले भी बने हैं और 'वाच टॉवर' भी हैं । यह महत्त्वपूर्ण खोज चीनी पुरातत्त्ववेत्ताओं ने की है । प्राचीन सभ्यता की ऐसी खोज जहां भी हो, जैसी भी हो हमें उसका स्वागत करना चाहिए ।

वह किया जो शेक्सपियर ने भी नहीं किया

प्रख्यात नाटककार शेक्सपियर के प्रसिद्ध नाटक 'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' के क्रूर यहूदी महाजन शायलॉक ने अन्तानियो द्वारा उसका उधार न चुकाये जाने पर शायलॉक ने शर्त (जीवित ही अन्तानियो के शरीर से एक पौंड मांस निकालने) पूरा करवाने के लिए अदालत का दरवाजा खटखटाया था, लेकिन अन्तानियो की चतुर वकील दोस्त पोर्शिया ने अदालत में शायलॉक को इस मामले में मात दे दी और यहूदी महाजन अन्तानियो के शरीर से एक पौंड मांस नहीं ले सका था, लेकिन खेतिहर मजदूरी करनेवाले ३० वर्षीय सेलिम मोहम्मद का पोर्शिया-जैसा कोई दोस्त नहीं था । इसलिए तीन हजार रुपये की शेष कर्ज राशि वसूल करने के लिए महाजन सेफा मोहम्मद ने सेलिम मोहम्मद का एक गुरदा बेच दिया ।

कलकत्ता से प्रकाशित बंगला दैनिक 'आनंद बाजार पत्रिका' में एक खबर छपी है जिसका शीर्षक है 'धारेर टाका शोध पिते ना पाराय किडनी दिते होलो दिन मजूर के' यानी 'कर्ज के रुपये वापस न करने पर खेतिहर मजदूर को अपनी किडनी देनी पड़ी । उत्तर दिनाजपुर में हेमतावाद थाना के दादपुर गांव के खेतिहर मजदूर सेलिम मोहम्मद की दर्दभरी कहानी अन्तानियो से मिलती-जुलती है । अन्तानियो को अपने शरीर से एक पौंड मांस नहीं देना पड़ा था, लेकिन मोहम्मद सेलिम को अपनी किडनी देनी पड़ी । हेमतावाद से उपरोक्त बंगला दैनिक में छपी खबर के अनुसार कर्ज का रुपया वापस न दे सकने के कारण सेलिम मोहम्मद की किडनी महाजन सेफा मोहम्मद ने उसे मुंबई ले

जाकर बेची थी । ऐसे आरोप लगाकर सेलिम मोहम्मद ने हेमतावाद थाने में प्राथमिकी दर्ज की है । सितम्बर माह में थाने में प्राथमिकी दर्ज होने पर भी पुलिस ने अभी तक कोई कदम नहीं उठाया है ।

जिले के एस.पी. देवेन्द्र सुकुल ने इस तरह की कोताही बरते जाने से अपना क्षोभ जाहिर किया है एवं थाने के दारोगा को मामले की छानबीन में लापरवाही के लिए कारण बताओ नोटिस दिया है । उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व भी इस जिले के कई लोगों को मुंबई ले जाकर किडनी निकाल लेने की घटनाएं हुईं एवं जिन समाज विरोधियों ने ये काम किये थे, उनमें से कुछ पुलिस की हिरासत में भी पहुंचे ।

बंगला दैनिक में छपी खबर के मुताबिक सेलिम मोहम्मद ने सन् १९९४ में सन (जूट) की खेती के लिए एक स्थानीय महाजन सेफा मोहम्मद से आठ हजार रुपये कर्ज लिये थे । शर्त के मुताबिक उसी वर्ष दुर्गापूजा तक १५ रुपये सैकड़े की दर से उसे कर्ज वापस करना था, लेकिन सूखे के कारण १९९४ में जूट की खेती बरबाद हो गयी । अपनी जमीन बेचकर सेलिम मोहम्मद ने सेफा मोहम्मद को पांच हजार रुपये चुकाये । इसके बाद सेलिम बाकी के रुपये नहीं चुका सका । दो वर्ष तक कर्ज वापस न करने पर सेफा मोहम्मद एवं उसके पुत्र मकबूल हुसैन उसे नौकरी देने का लालच देकर मुंबई ले गये । हेमतावाद थाना के दादपुर गांव निवासी सेलिम मोहम्मद ने बताया कि मकबूल ने उसे सबसे पहले दादर में एक मकान बनानेवाली संस्था में मजदूरी का काम दिलाया । वहीं कुछ दिन काम करने के बाद मकबूल ने उससे कहा कि यहां काम करने से बीमारियां होती हैं । रोग प्रतिरोधक टीका दिलवाने के बहाने मकबूल ने उसे एक नर्सिंग होम में भरती करा दिया । सात मंजिले नर्सिंग होम में उसे एक सूई देकर बेहोश कर दिया गया था । उसे जब होश आया तो उसके दायें पेट में जबरदस्त दर्द हो रहा था ।

दर्द के बावत पूछने पर नर्सिंग होम के एक कर्मचारी ने बताया कि उसकी दाहिनी तरफ की किडनी निकाल ली गयी है । हतप्रभ सेलिम को अस्पताल में कुछ समझ में नहीं आ रहा था । बाद में उसे महाजन सेफा मोहम्मद ने बता दिया कि उसकी किडनी अस्पताल में बेचकर शेष राशि सूद समेत उसने वापस ले ली है ।

और अंत में

जैसे-तैसे बीता यह वर्ष
न आये वैसा अगला वर्ष

नये वर्ष की शुभकामनाओं सहित

—राजेन्द्र अवस्थी

स्वतंत्रता की पचासवीं वर्षगांठ

राजनीति संपत्ति का पासपोर्ट बन रही है !

• *अटल बिहारी वाजपेयी*

भारत स्वतंत्रता की ५०वीं वर्षगांठ मनाने जा रहा है । सारा देश अपने गौरवशाली अतीत की ओर उत्सुकता से देख रहा है । सरकारी स्तर पर तथा आम लोगों के बीच भी देश की स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती कैसे मनायी जाए, इस पर बहस शुरू हो गयी है । यद्यपि धरातल पर उन बातों का पता नहीं चलता तथा वे चीजें नहीं दिखायी देती हैं, पर सारा राष्ट्र इस समय इसी बहस के मंथन के दौर से गुजर रहा है कि विगत ५० वर्षों की स्वतंत्रता में देश ने क्या पाया है और क्या खोया है ? पाने में वह क्यों असफल रहा है ? सरकार की कोशिशें बढ़ती हुई आबादी और उसकी बदलती हुई आकांक्षाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति कर पाने में कितनी सफल हुई हैं ? इस असफलता के लिए आखिर दोषी कौन है ?

बहस साहसपूर्वक हो

इस तरह की बहस का स्वागत है । ऐसी बहस विस्तृत, गंभीर, स्वतंत्र तथा ईमानदारी से होनी चाहिए । बहस चाहे विचारों की हो या विचारधाराओं के बीच परस्पर संघर्ष की हो अथवा प्रत्यारोपों की हो, उनसे बचना नहीं चाहिए । कुछ प्रश्नों के जवाब के लिए साहस दिखाने की आवश्यकता है । प्रत्येक ऐतिहासिक आंकड़ों की चाहे वे बड़े हों या छोटे हों, उन सबका मूल्यांकन करने में साहस दिखाना जरूरी है । आंख मूंदकर किसी चीज का अंदाजा लगाने की बजाय हर पहलू से अच्छी चीजों को स्वीकार करने के लिए खुले दिमाग का इस्तेमाल करना होगा । निःसंदेह, इस तरह की बहस उपयोगी और लाभदायी होगी । जैसा हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों ने कहा है कि 'वादे-वादे जायते तत्त्वबोधाह' यानी निष्पक्ष और निरंतर बहस से सत्य उद्घाषित होता है ।

जवाबदेही का अभाव

राष्ट्रीय अनुभव के पांच दशकों के महत्त्वपूर्ण मसलों के बारे में अपने विचारों और अपनी चिंताओं से संसद और राज्य विधानसभाएं अपनी जवाबदेही तथा उत्तरदायित्व का सही निर्वहन नहीं कर रही हैं । कुछ अपवादों को छोड़कर, वे लोग जो इन शीर्ष लोकतांत्रिक संस्थाओं के लिए चुने जाते हैं वे औपचारिक अथवा अनौपचारिक रूप से कानून बनाने के मसले पर न तो प्रशिक्षित होते हैं और न ही वे अपने कर्त्तव्य के निर्वहन के लिए आवश्यक ज्ञान प्राप्त करने तथा उत्तरदायित्व को समझने में रुचि लेते हैं ।

दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि चुने हुए प्रतिनिधियों का महत्त्वपूर्ण कार्य संसद अथवा विधानसभाओं में व्यापक जनहित के मामलों

पर अपने भाषणों तथा वक्तव्यों के माध्यम से जनता की आवाज को प्रस्तुत करना होता है। बहस के माध्यम से कार्यपालिका के कार्यों तथा नीतियों को प्रभावित करना उनका कर्त्तव्य है। ऐसा नहीं हो रहा। पांच दशकों के राष्ट्रीय अनुभव से यह स्पष्ट है कि वर्तमान संसदीय लोकतांत्रिक प्रणाली अच्छी चीजें देने में असफल रही है। इसलिए अब समय आ गया है कि देश सरकारी ढांचे में तीव्रगामी प्रणालीवाले परिवर्तन को शामिल करे।

चुनाव निष्पक्ष नहीं

संसदीय लोकतंत्र की वर्तमान प्रणाली से उत्पन्न बीमारी जिसे भारत ने करीब पांच दशक पहले ब्रिटिश मॉडल से पाया है अब वह दिनोंदिन गंभीर होती जा रही है। अब गंभीर बहसें लगभग बंद हो गयी हैं तथा इन बहसों ने अब अखाड़ों का रूप ले लिया है जहां शोर-शराबा और शोरगुल के अतिरिक्त कुछ भी नहीं होता।

वे लोग जो समाज में मतदाताओं की सेवा करने में रुचि दिखाते हैं तथा जो विधायी कार्यों को भली-भांति करते हैं, वे आज की चुनाव प्रणाली में सफल होने के लिए बड़ी कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। मुख्य चुनाव आयुक्त तथा उनके सहयोगियों ने हाल में जो परिवर्तन किये हैं, वे स्वागत योग्य हैं। इन परिवर्तनों से धनशक्ति, बाहुबल तथा जाति एवं समुदाय के आधार पर वोट बैंक की राजनीति करनेवालों को गहरा धक्का लगा है। इससे जातिवाद तथा संप्रदायवाद के मुद्दे चुनावों में कमजोर हो सकते हैं, पर चुनावी प्रक्रियाओं में राजनीतिक दल उन्हीं की सहायता ले रहे हैं। इसका तात्पर्य है कि चुनाव पूर्ण रूप से स्वतंत्र तथा निष्पक्ष नहीं है तथा लोगों की सच्ची भावना तथा इच्छाएं चुनावों के माध्यम से व्यक्त नहीं हो पाती हैं।

नौकरशाही में भ्रष्टाचार

चुनावों में राजनीतिक दलों का जीतना या हारना लोकतांत्रिक प्रणाली में स्वाभाविक रूप से होता आया है। इससे सरकार में कोई आंच नहीं आती, क्योंकि भारत एक ऐसा देश है जिसमें एक स्थायी, गैर-राजनीतिक तथा निष्पक्ष नौकरशाही उसकी एक महान संपत्ति रही है। दुर्भाग्यवश,इसमें भी भ्रष्टाचार का घुन लग गया है और नौकरशाही सड़ने लगी है। जातिवाद, भ्रष्टाचार तथा राजनीति नौकरशाही में भी प्रवेश कर गयी है।

चुनाव में धन बल और बाहुबल

राजनीतिक दलों के कार्यक्रमों, नीतियों तथा चुनावी घोषणापत्रों ने जवाबदेही के अभाव में शासन की वर्तमान प्रणाली का अर्थ ही खो दिया है।



बालिग मताधिकार, स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव, बहुदलीय प्रणाली, स्वतंत्र प्रेस, निष्पक्ष न्यायपालिका— एक गैर-राजनीतिक सिविल सर्विस इन लोकतांत्रिक संस्थाओं पर आधारित भारतीय लोकतंत्र की गाड़ी गत ५० वर्षों से अनेक झटके खाते हुए अबाध गति से चलती जा रही है, यह प्रशंसा का विषय है, किंतु इस तसवीर का दूसरा पहलू भी है जो लोकतंत्र के भविष्य के प्रति आशंकाएं उत्पन्न करता है। चुनाव आयोग द्वारा कुछ साहसिक कदम उठाने के बावजूद चुनाव में धनबल और बाहुबल का

प्रभाव बढ़ा है । दलों की बहुलता राजनीतिक बिखराव का रूप ले रही है । संसद तथा विधान मंडल कानून बनाने और सार्वजनिक महत्त्व के मामलों पर गंभीर चर्चा करने के काम में कम रुचि लेते हैं । इन संस्थाओं का राजनीतिक अखाड़ों के रूप में प्रयुक्त करने में वे अधिक समय और शक्ति खर्च करते हैं । राजनीति का अपराधीकरण एक गंभीर रूप धारण कर चुका है । सिविल सेवाएं निर्भय और निष्पक्ष रूप से अपने दायित्व का पालन करते हुए कानून का राज्य कायम रखने में सहायक होने की बजाय सत्ताधीशों की सही-गलत हर बात में 'हां' में 'हां' मिलाने में अपनी सुरक्षा तथा भौतिक उत्थान समझती हैं ।

राष्ट्र-जीवन के सभी क्षेत्रों में भ्रष्टाचार जड़ें जमा चुका है । राजनीति सेवा का साधन नहीं रह गयी । येन-केन-प्रकारेण सत्ता में आने और एक बार सत्ता में आने के बाद जैसे भी हो सत्ता को टिकाये रखने का माध्यम मात्र बनकर रह गयी है । विभिन्न घोटालों में कंठ तक डूबे और अदालतों के कटघरों में खड़े राजनेताओं की निरंतर लंबी होती हुई लाइनें सार्वजनिक जीवन में जो आस्था का संकट पैदा हो गया है, उसका संकेत देती हैं ।

अपराधीकरण का सीधा प्रभाव

कार्यपालिका के साथ-साथ विधायिका के कार्यों और उनकी संरचनाओं पर भी राजनीति के अपराधीकरण का सीधा दुष्प्रभाव पड़ा है । सत्ता में जो लोग हैं वे उनका इस्तेमाल कर रहे हैं । वह चाहे अपराधियों को बचाने के लिए हो अथवा राजनीतिक शत्रुता के कारण उनको आपराधिक मामलों में फंसाने में हो । इसलिए इस विषय पर सर्वदलीय सहमति की तत्काल आवश्यकता है कि आपराधिक रेकॉर्डवाला कौन है और अपराधीकरण के इस अभिशाप से कैसे निपटा जाए ?

आज के सांसदों तथा विधायकों की स्वाभाविक प्रवृत्ति कार्यपालिका की कार्यप्रणाली में सीधे हस्तक्षेप की है । यह प्रवृत्ति उनमें बिना किसी जवाबदेही और योग्यता के है । किसी भी तरह से चाहे वह गलत हो या सही उनका मकसद सत्ता पर कब्जा करना होता है, क्योंकि चुने हुए प्रतिनिधियों का यह मानना है कि सत्ता ही व्यक्तिगत उन्नति का सही मार्ग है ।
जनप्रतिनिधि विधायक या सांसद बनकर संतुष्ट नहीं होता, वह शासक बनना चाहता है— भले ही उसमें योग्यता न हो । जनप्रतिनिधि समझते हैं कि सत्ता में भागीदारी का अर्थ है व्यक्तिगत समृद्धि का पासपोर्ट प्राप्त करना ।
अनाप-शनाप धन इकट्ठा करने की तृष्णा सिद्धांतहीन राजनीति को बढ़ावा देती है । इसमें से अवसरवादी गठबंधन जन्म लेते हैं ।

सत्ता बनाम नाटक मंडली

अवसरवाद के गठबंधन तथा तालमेल में लोकप्रिय जनमत का अकसर अभाव होता है । यहां तक कि इसमें संख्या की बात भी लगभग गौण-सी हो जाती है । यद्यपि वे दल सत्ता तो प्राप्त कर लेते हैं तथा सत्ता में बने भी रहते हैं पर वे यह सत्ता निहित प्रणाली दोष के कारण प्राप्त करते हैं । बहुदलीय प्रणाली लोकतंत्र की आत्मा है, किंतु अवसरवादी लोगों ने राजनीतिक दलों में तोड़फोड़ के माध्यम से इस बहुदलीय प्रणाली की मूल भावना को तिलांजलि दे दी है । इसका सबसे बड़ा उदाहरण है, वर्तमान तेरह दलीय संयुक्त मोर्चा की 'नाटक मंडली' । इसमें संयुक्त मोर्चा का खुद ही अपना कोई बहुमत नहीं है, स्वयं प्रधानमंत्री उस राजनीतिक दल से संबंध रखते हैं जिसके लोकसभा में मात्र ४५

सदस्य ही हैं । इसी संयुक्त मोर्चे के कुछ घटक तो ऐसे हैं जिसके लोकसभा में केवल चार सदस्य हैं । इनमें से उसके दो सदस्य केंद्रीय मंत्रिमंडल में मंत्री हैं । तेरह पार्टियों का यह मोर्चा चौदहवीं पार्टी कांग्रेस और पंद्रहवीं मार्क्सवादी पार्टी के कंधों पर टिका है । प्रधानमंत्री की अपनी पार्टी सदन में नहीं, मोर्चा में भी अल्पमत में है । चार सदस्योंवाली पार्टी के आधे सदस्य मंत्री हैं । यह लोकतंत्र का मखौल नहीं तो और क्या है ?

भारत ने चार लड़ाइयां लड़ीं

पिछले ५० वर्षों की ओर अगर नजर डालें तो पाते हैं कि देश ने वह सब हासिल नहीं किया जो वह पाना चाहता था । निःसंदेह भारत ने काफी बाधाएं पार की हैं तथा एक विकासशील अर्थव्यवस्था से उत्पन्न अनेक चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना किया है । करोड़ों की जनसंख्या को न केवल देश भोजन देने में कामयाब रहा है, बल्कि भारत ने अतिरिक्त खाद्य भंडारण और कृषि आधारित उत्पाद को निर्यात करने में भी सफलता पायी है । यह उपलब्धि भारत का गौरव है तथा पड़ोसी देशों की ईर्ष्या का कारण भी है । आधी शताब्दी के इस कम समय में ही भारत ने चार लड़ाइयां लड़ीं तथा अपने ही देश के भीतर उग्रवाद की चुनौतियों का सामना किया । लोकतंत्र की सबसे बड़ी चुनौती का सामना तो तब किया गया जब जनता ने १९७७ के चुनाव में आपातकालीन शासन को उखाड़ फेंका तथा लोकतांत्रिक भावना में पुनः आस्था जतायी । इस क्रूर विधेयक ने महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तनों को जन्म दिया । कम संसाधनों के बावजूद वैज्ञानिकों ने रक्षा संस्थानों में रात-दिन कड़ी मेहनत कर देश के सुरक्षा क्षेत्र को मजबूत किया ।

इन सारी उपलब्धियों के बावजूद भारत आधुनिक राष्ट्र के रूप में अपनी स्वतंत्रता की ५०वीं वर्षगांठ क्यों नहीं मना रहा ? इसका उत्तर साधारण है । यदि राजनीतिक वर्ग खत्म हो गया अथवा राजनीति ने अपनी प्रमुखता खो दी तो लोकतंत्र जीवित नहीं बचा रह सकता । आशा के अभाव, दलों की सक्रिय भागीदारी के बिना तथा जनता की उपेक्षा के कंधों पर लोकतंत्र को खड़ा नहीं किया जा सकता ।

> ***तेरह पार्टियों का यह मोर्चा चौदहवीं पार्टी कांग्रेस और पंद्रहवीं मार्क्सवादी पार्टी के कंधों पर टिका है । प्रधानमंत्री की अपनी पार्टी सदन में नहीं, मोर्चा में भी अल्पमत में है । चार सदस्यों वाली पार्टी के आधे सदस्य मंत्री हैं । यह लोकतंत्र का मखौल नहीं तो और क्या है ?***

अगर इसे न रोका गया तो इसका परिणाम यह होगा कि देश में अस्थिरता, भ्रष्टाचार, गड़बड़ी तथा तानाशाही को बढ़ावा मिलेगा । फलस्वरूप, भारत अपने पूर्वजों के इन सपनों से बहुत दूर चला जाएगा जिन्होंने अपने खून-पसीने से अंगरेजी हुकूमत से देश को आजाद कराया । इतना ही नहीं,यदि राजनीतिक प्रक्रिया खतम होती है तो उससे देश राजतंत्र की ओर चला जाएगा और राष्ट्र-राज्य में टूटन के अतिरिक्त हमारे समाज में भी विखंडन होगा । इससे निकलने का सहज, किंतु व्यापक उपाय

यह है— सार्वजनिक जीवन में बिलकुल सच्चाई और पारदर्शिता।

चुनाव पद्धति दोषपूर्ण है!

वर्तमान वेस्ट मिनिस्टर पद्धति जिसमें सबसे अधिक वोट पानेवाला उम्मीदवार विजयी होता है, दोषपूर्ण है। कारण, यह जरूरी नहीं है कि उसे कुल मतदाताओं या मताधिकार का उपयोग करनेवाले व्यक्तियों का बहुमत प्राप्त हो। ऐसा व्यक्ति सही जनप्रतिनिधि कैसे हो सकता है? वर्तमान पद्धति में ऐसा भी होता है कि अधिक प्रतिशत मत पानेवाला दल कम सीटें मिलने के कारण सत्ता से वंचित हो जाता है और कम वोट पानेवाला ज्यादा सीटें लेकर सत्ता प्राप्त कर लेता है।

जाति, उपजाति और संप्रदाय के वोट बैंक के आधार पर लड़े जानेवाले चुनाव राजनीतिक दलों को बेमानी और चुनाव घोषणा पत्रों को व्यर्थ की लफ्फाजी का रूप दे रहे हैं। यदि इस स्थिति को सुधारा नहीं गया तो लोकतंत्र की आत्मा मर जाएगी और हम उसका ढांचा लेकर ढोल बजाते रहेंगे। आस्थाविहीन देश, नैतिकताविहीन राजनीति, निष्पक्षताविहीन शासन-प्रशासन, शुचिताविहीन सार्वजनिक जीवन-राष्ट्र को विघटन और अधोगति की ओर ही ले जाएंगे। वास्तव में देश की प्रणाली में परिवर्तनों की आवश्यकता है— न केवल शासन को चलाने के लिए, बल्कि शासन करने के लिए भी। देश संसदीय प्रणाली में इस स्तर तक की भयावह गिरावट देख रहा है, जिसमें एक ऐसे दल को जिसके केवल कुल दस सदस्य हैं, उसे देश में शासन करने की अनुमति मिली हुई है। दूसरी ओर एक ऐसा दल जो अपना चुनाव चिह्न खोने के खतरे के बिलकुल निकट है, उसके दो सदस्य देश के गृह एवं कृषि विभाग के दो महत्त्वपूर्ण मंत्रिमंडल का कार्यभार संभाले हुए हैं। आश्चर्य का विषय है कि संविधान निर्माताओं ने ऐसी संभावना को क्यों छोड़ दिया? ऐसी स्थिति में भारत क्या करे? मैं कुछ सुझाव देना चाहूंगा:

प्रथम अपनी लोकतांत्रिक व्यवस्था के सभी दोषों को दूर करने की दृष्टि से उसका परिशोधन करने के लिए प्रणाली में परिवर्तन लाने के जितने भी वैकल्पिक सुझाव संभव हो सकते हैं, उन सब पर समूचे राष्ट्र में गंभीर चर्चा होनी चाहिए। राष्ट्रपति प्रणाली की अच्छाइयों की चर्चा करने में भी झिझक नहीं होनी चाहिए।

द्वितीय यदि राष्ट्रपति प्रणाली अव्यावहारिक अथवा अवांछनीय हो तो देश को वर्तमान संसदीय लोकतांत्रिक प्रणाली में बिना विलंब के द्रुतमूलगामी परिवर्तनों को शामिल करना चाहिए। परिवर्तन कई तरह के हो सकते हैं।

समानुपातिक प्रतिनिधित्व (सूची पद्धति)

५० फीसदी चुनाव क्षेत्रों से उम्मीदवारों का चयन सीधे मतदान द्वारा नहीं समानुपातिक प्रतिनिधित्व के आधार पर सूची पद्धति के अनुसार हो। राजनीतिक दल उम्मीदवारों की सूची प्रकाशित करें और दलों को मिले मतों के अनुपात में प्रकाशित सूची में से उम्मीदवार निर्वाचित घोषित किये जाएं।

जापानी प्रणाली

हाल ही जापान के पूर्व प्रधानमंत्री ने बताया कि उनके देश ने किस प्रकार एक सम्मिलित प्रणाली को अपना लिया है और इस प्रक्रिया से किस प्रकार लाभ पहुंचा है? पूर्व में जापानी संसद में ५११ सीटें थीं जो प्रत्यक्ष चुनावों के माध्यम से भरी जाती थी। अब सीटों की कुल संख्या कम होकर ५०० हो गयी है, जिनमें

३०० सीटें प्रत्यक्ष चुनाव के माध्यम से भरी जाती हैं, जबकि २०० सीटें समानुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली के माध्यम से भरी जाती हैं । क्या भारत जापान की इस प्रणाली के बारे में नहीं सोच सकता है ?

चुनाव का सारा व्यय सरकार उठाये

इस मसले पर एक व्यापक सर्वदलीय सहमति बन रही है । इसलिए इस उपाय को अमल में लाने के लिए अब विलंब नहीं किया जाना चाहिए ।

> ***एक ऐसे दल को जिसके केवल कुल दस सदस्य हैं, उसे देश में शासन करने की अनुमति मिली है । दूसरी और एक ऐसा दल जो अपना चुनाव चिन्ह खोने के खतरे के बिलकुल निकट है, उसके दो सदस्य देश के मंत्रिमंडल का कार्यभार संभाले हुए हैं ।***

आस्ट्रेलिया के उपप्रधानमंत्री ने हाल ही की बातचीत में यह बताया था कि उनके देश में किस प्रकार चुनावों का खर्च सरकार उठाती है और इस प्रकार किस तरह भ्रष्टाचार के स्रोत को नष्ट करने में मदद मिली है ।

राजनीतिक दलों की लोकतांत्रिक प्रणाली

राजनीतिक दलों को लोकतांत्रिक ढंग से चलना अनिवार्य हो । नियमित रूप से सदस्यता, आंतरिक चुनाव, कोष संग्रह आदि का हिसाब-किताब रखा जाए । पूरी जवाबदेही और पारदर्शिता का परिचय न देने पर दलों को चुनाव लड़ने के अधिकार से वंचित कर दिया जाए । राष्ट्रीय स्तर पर एक स्वस्थ लोकतांत्रिक संस्कृति के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण बात राजनीतिक दलों के भीतर आंतरिक लोकतंत्र कायम करना है । दुर्भाग्यवश, स्वतंत्र बहस, जवाबदेही तथा नियमित संगठनात्मक चुनाव राजनीतिक दलों के लिए अपवाद हो गये हैं । उदाहरणार्थ,कांग्रेस पार्टी के पास तो सदस्यता नवीनीकरण अभियान ही नहीं है तथा इसी बहाने पार्टी के कई वर्षों से संगठनात्मक चुनाव ही नहीं हुए हैं । कांग्रेस ने ऊपर से नामांकन के द्वारा पदाधिकारियों को लादने की एक अलोकतांत्रिक संस्कृति को जन्म दिया है । देश का लोकतांत्रिक चरित्र तब तक सुदृढ़ नहीं बना रह सकता है जब तक देश की सबसे पुरानी तथा अभी भी सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी खुद अलोकतांत्रिक कार्यप्रणाली को तिलांजलि न दे दे । ऐसी स्थिति में सुधार के लिए बड़े राजनीतिक दलों की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है ।

राज्यपालों द्वारा पदों का दुरुपयोग

संविधान के अनुच्छेद ३५६ का उद्देश्य किसी राज्य के संवैधानिक ढांचे को टूटने से बचाने का था, किंतु अब उसका उपयोग लोकतंत्र को ताक पर रखने के लिए किया जा रहा है । पहले गुजरात में और अब उत्तर प्रदेश के राज्यपाल केंद्र के इशारे पर संविधान की परंपराओं और मर्यादाओं की जो धज्जियां उड़ा रहे हैं उससे लोकतंत्र कलंकित हुआ है और प्रदेशों की स्वायत्तता एक मखौल बनकर रह गयी है । यदि यही सिलसिला जारी रहा तो राज्यपाल के पद को ही समाप्त करने की मांग जोर पकड़ेगी ।

—७ सफदरजंग रोड,
नयी दिल्ली

बीते वर्ष के अंतिम पड़ाव में दो बड़ी और वीभत्सकारी विमान दुर्घटनाएं हुईं तथा तीसरी होते-होते बची । देश के नागर विमानन के इतिहास की सबसे बड़ी व अभूतपूर्व दुर्घटना १२ नवम्बर को हुई जिसमें दो विदेशी विमानों की आकाश में टक्कर हो गयी । यह सऊदी एयरवेज का जंबोजेट तथा कजारु एयरवेज के विमान थे । इस दुर्घटना में लगभग ३५ यात्रियों की मृत्यु हुई ।

दूसरी दुर्घटना में, विमान में सवार अपहर्ताओं ने इथियोपियाई एयरलाइंस के बोइंग विमान ७६७ का अपहरण कर लिया और ईंधन खत्म हो जाने पर यह विमान हिंद महासागर में जा गिरा । इस दुर्घटना में भी १२३ यात्रियों की मृत्यु हो गयी ।

निश्चित रूप से यह दूसरी दुर्घटना अत्यंत भाग्यहीनता और क्षोभपूर्ण स्थिति का शिकार हुई । करोड़ों रुपये का विमान और १२३ लोगों की अमूल्य जाने गयीं । अपहर्ताओं की धृष्ठता और नासमझी के कारण ही ऐसा हुआ । इसके अलावा विशाखापट्टन के आकाश में इंडियन एयर लाइंस की सहायक निजी विमान सेवा के बीइंग ७०७ में आग लग जाने से उसमें सवार १९९ यात्रियों की जान को खतरा पैदा हो गया ।

विमान दुर्घटनाओं से उठते सवाल

• देशबंधु वशिष्ठ

दादरी-चरखी विमान दुर्घटना का एक दृश्य



विमान दुर्घटना का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि उनका चलन, और संभवतया ऐसी दुर्घटनाओं से बचने की कोई गारंटी तो भविष्य में भी मुमकिन नहीं है । विमान दुर्घटनाओं की श्रेणी में घटी यह नवीनतम घटना, अपने तरह की पहली घटना मानी जाएगी, क्योंकि इस तरह की दुर्घटनाएं बहुत कम हुई है । भारत में अब से १५ वर्ष पहले पटियाला में प्रशिक्षण के काम में इस्तेमाल किये जा रहे एक पुष्पक विमान की आसमान में हैलीकॉप्टर से टक्कर जरूर हुई थी, किंतु यात्री विमानों के आपस में टकराने की यह घटना पहली है । वैसे दुनिया के दूसरे देशों में भी इस तरह की इक्का-दुक्का घटनाएं ही हुई हैं । दिल्ली के निकट हुई इस भीषण दर्घटना का यह क्रूरतम रूप ही माना जाएगा कि दोनों विमानों में सवार यात्रियों में से कोई भी जीवित नहीं बचा ।

दुर्घटना की जांच का काम नागर विमानन महानिदेशालय भी कर रहा है, परंतु सरकार ने उसकी जांच की जिम्मेदारी दिल्ली हाईकोर्ट के न्यायाधीश श्री आर. सी. लाहोटी को सौंपी है ।

दोषी किसे माना जाए

अब दोषी किसे माना जाए ? सवाल यह है । लेकिन जांच के बाद जो दोषी पाया जाएगा, सिर्फ उसी का अपराध अक्षम्य नहीं है । अक्षम्य वह व्यवस्था भी है, जिसमें ऐसी गलती करने की संभावना बाकी है । इसलिए, जांच के नतीजे आने के पहले भी वह रास्ते खुले हैं, जिन पर चलकर हम ऐसी त्रादसी के अक्षम्य कारणों पर विचार कर सकते हैं । क्या यह माननेवाली बात है कि एक ग्राउंड कंट्रोलकर्मी किसी भी वजह से यदि कोई गलत निर्देश दे देता है या एक चालक किसी भी वजह से किसी निर्देश का पालन नहीं कर पाता, तो न तो वह गलती किसी दूसरी समानांतर व्यवस्था द्वारा तुरंत पकड़ में आएगी और न ही सुधारी जा सकेगी । यदि सुरक्षा की ऐसी इकहरी व्यवस्था के सहारे ३६० यात्रियों को लेकर हम हवाई यात्रा की उम्दा सेवाएं दे रहे हैं, तो क्या इसे अक्षम्य नहीं माना जाएगा । जिन आधुनिकतम यंत्रों को सजाकर हम स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते हैं, वे बार-बार फेल क्यों हो रहे हैं । मौसम की जानकारी देने के लिए हमारे पास न सिर्फ सुपर कंप्यूटर हैं, बल्कि उपग्रह की सुविधा है । लेकिन उस पूर्वी गोदावरी के तूफान की भी हम समय रहते सूचना नहीं दे पाते, जहां हमेशा तूफान का खतरा बना रहता है । प्रतिरक्षा के अपने उपकरणों की हम प्रशंसा और प्रदर्शन तो खूब करते हैं, लेकिन एक साधारण विदेशी विमान पुरूलिया में आकर हथियार गिरा देता है

पिछले एक साल में नियंत्रण कक्षों को आधुनिक बनाने के नाम पर सरकार ने अच्छा-खासा पैसा खर्च किया है । लेकिन जो राडार इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से विमानों के यातायात पर नजर रखता है, वह बीस साल से ज्यादा पुराना है और सिर्फ विमानों का स्थान और उनकी दिशा बता पाता है, ऊंचाई नहीं ।

और हमें जानकारी नहीं होती । क्या इससे यह नतीजा नहीं निकाला जा सकता कि आधुनिक संसाधन हमने चाहे जुटा लिये हों, लेकिन हम उनका इस्तेमाल करने में सिद्धहस्त नहीं हैं ।

सबक नहीं सीखे गये

भला हो अमरीकी सी-१४१ विमान चालक मंडल का, जिसने इंदिरा गांधी हवाई अड्डे पर उतरते ही उक्त त्रादसी की सूचना दी, अन्यथा दिल्ली हवाई अड्डे के उत्तरदायी कर्मचारीगण विमानों के राडार से गायब होने की बात जाने कब तक करते रह जाते । विमानों का राडार से संपर्क टूट गया । आज के युग में तक्नीक इतनी विकसित हो चुकी है कि विमानों का हवाई अड्डे के इतने निकट होते हुए भी राडार से संपर्क टूटना एक असाधारण घटना ही मानी जाएगी । वैसे भी भारत के उड़ान नियंत्रण कक्ष बेहद आधुनिक सुविधाओं से लैस हैं, इस बात को विदेशी भी मानते हैं । पिछले एक साल में नियंत्रण कक्षों को आधुनिक बनाने के नाम पर सरकार ने अच्छा-खासा पैसा खर्च किया है । लेकिन जो राडार इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से विमानों के यातायात पर नजर रखता है, वह बीस साल से ज्यादा पुराना है और सिर्फ विमानों का स्थान और उनकी दिशा बता पाता है, ऊंचाई नहीं और यह दुर्घटना ऊंचाई संबंधी निर्देशों की गड़बड़ी अथवा उनके ठीक से समझ में न आने के कारण ही हुई है । एक विमानन अधिकारी का कहना है कि हम साल में लाखों उड़ानें सफलतापूर्वक नियंत्रित करते हैं, सिर्फ एक दुर्घटना के चलते हमें दोषी ठहराने का प्रयास नहीं किया जाना चाहिए । जाहिर है, उनके विभाग को जबरदस्ती दोषी ठहराने का प्रयास गलत है, पर लाखों उड़ानें ठीक से संचालित करने पर इस एक दुर्घटना में हुई धन-जन और प्रतिष्ठा के नुकसान की भरपाई नहीं हो सकती । इसी हवाई अड्डे पर कम-से-कम दस मामले इससे पूर्व ऐसे हो चुके हैं, जब दो विमानों में टक्कर होते-होते बची है और इनकी अवधि भी पिछले चार-पांच वर्षों तक ही सीमित रही है । इसके बावजूद जरूरी सबक नहीं सीखे गये, यह तो स्पष्ट है ।

विमानों की आवाजाही बढ़ी

ऐसी दुर्घटनाओं की संभावना उस समय से व्यक्त की जाती रही है, जब भारत ने खुले आकाश की नीति पर अमल करना शुरू किया था । यह पांच वर्ष पहले की बात है । उसके बाद में विमानों की आवाजाही कई गुना हो गयी । कई निजी कंपनियां अस्तित्व में आ गयीं, विदेशी विमानों की आवक बहुत बढ़ गयी और बहुत-सारे ऐसे विमान भी हमारे गगन से गुजरने लगे, जो पहले ऊपर से होकर निकलते थे । इस भारी यातायात के अनुरूप हमारे हवाईअड्डों की व्यवस्थाओं में जो बदलाव आने चाहिए थे, वे आज तक नहीं आ पाए हैं । नयी प्रणालियों की खरीद हो चुकी है, पर उन्हें लगाने का काम धीमी रफ़्तार से चल रहा है । चार सौ करोड़ का एक राडार छह महीने से रखा है, अभी तक उसे काम में नहीं लाया जा सका है । यह भी दुखद विषय है कि आई.जी.आई.—जैसे अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के पास अत्याधुनिक नियंत्रण-उपकरण नहीं हैं और सभी कुछ ए.टी.सी. करता है । अत्याधुनिक विमानों में आसमानी टक्कर की चेतावनी देने वाले उपकरण भी मुहैय्या कराये जाने लगे हैं, किंतु इतना तो निश्चित ही है कि दोनों ही विमानों में इस तरह के उपकरणों का अभाव था, वरना कोई कारण नहीं

कि दुर्घटना होती ।

आने-जाने का एक ही मार्ग

दिल्ली हवाईअड्डे पर विमानों के आगमन-रवानगी के मार्ग अलग-अलग नहीं है । इसलिए कई बार विमानों को उतरने एवं उड़ान भरने में कठिनाइयां आती हैं । हवाई अड्डे पर विमानों की रवानगी और आगमन के अलग-अलग मार्ग बनाने की मांग लंबे अरसे से की जाती रही है, लेकिन इस दिशा में अभी तक कुछ भी नहीं किया गया है । भारतीय वायुसेना इसकी मंजूरी नहीं दे रही है । वजह यह कि उसके अपने संसाधन एक रास्ते की निगरानी के लिए ही पर्याप्त है ,जबकि 'खुले आकाश की नीति'—जैसा बड़ा बदलाव अपने साथ-साथ ढांचागत बदलाव के समेकित प्रयासों की भी मांग करता है, इस ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया । यदि विमानों के आगमन और रवानगी का रास्ता अलग-अलग किया जाना संभव नहीं है, तो कम-से-कम इतना तो होना ही चाहिए कि विमानों का आगमन और रवानगी जिस 'संकरे गलियारे' से होती है उसे और अधिक चौड़ा बनाया जाए ।

कजाक विमानों की गुणवत्ता के बारे में नागर विमानन क्षेत्र में कई प्रकार के संदेह प्रकट किए जाते रहे हैं । पिछले पांच वर्षों में यह पांचवां कजाक विमान दुर्घटनाग्रस्त हुआ है, सन् १९९३ से अब तक पूर्व सोवियत संघ के पांच 'तुपोलेव—१५४' किस्म के विमान दुर्घटनाग्रस्त हो चुके हैं और विगत दिवस कजाकिस्तान का जो विमान सऊदी एयरवज के जम्बोजेट विमान ७४७ से टकराया वह 'तुपोलेव—१५४' किस्म का ही था । यह मुद्दा



विमानः जहां यात्रियों की सुरक्षा आवश्यक

भी विचारणीय है कि उड़ान कक्ष के कर्मचारी दुर्घटना के शाम ही हड़ताल पर जाने वाले थे । इसलिए जरूरत के मुताबिक कर्मचारियों की कम तादाद के चलते कहीं लापरवाही हुई हो तो इस संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता । वैसे दिल्ली एयर ट्रैफिक कंट्रोल (डी.ए.टी.सी.) में गड़बड़ी के चलते भी ऐसी दुर्घटना हो सकती है । ऐसा संभव है कि जो निर्देश डी.ए.टी.सी. ने सऊदी अरब के विमान को दिया हो, उसे वह ठीक से समझ न पाया हो । कजाकिस्तान और पूर्व सोवियत संघ के अन्य देशों के पायलट अंगरेजी में दिये जाने वाले दिशा-निर्देशों को आसानी से नहीं समझ पाते, उस पर अंतरराष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संघ को गंभीरता से विचार करना चाहिए । यदि वास्तव में पूर्व सोवियत संघ के देशों के पायलटों को अंगरेजी में दिए जाने वाले उन दिशा-निर्देशों को समझने में कठिनाई होती है,

जो विश्व भर में इसी भाषा में दिए जाते हैं, तो फिर इसका मतलब है कि इन देशों के पायलट दुनिया भर के विमानों और विमान यात्रियों के लिए खतरा बने हुए हैं ।

मानवीय भूलें, परिणाम घातक

यद्यपि किसी भी क्षेत्र में मानवीय भूलों से बच पाना मुश्किल है, फिर भी इस बात के प्रयास तो किए ही जाने चाहिए कि नागर विमानन और विशेष रूप से विमान चालन के क्षेत्र में मानवीय भूलों की गुंजाइश कम-से-कम हो । इस क्षेत्र में जब माननीय भूलें होती हैं, तो उनका परिणाम बहुत ही घातक होता है । विमान चालन के क्षेत्र में होने वाली मानवीय भूलों के संदर्भ में यह कोई छिपी बात नहीं है कि ६० से ८० प्रतिशत विमान दुर्घटनाएं मानवीय भूलों के कारण होती है और जो तकनीकी भूलें होती हैं, उनमें से भी अधिकांश के पीछे मानवीय भूल होती है । इस दुर्घटना के मामले में मानवीय और तकनीकी, दोनों ही प्रकार की भूलों से इनकार नहीं किया जा सकता ।

मंत्रालय की योजना सन् २०१० तक जमीन पर आधारित वायु यातायात नियंत्रण प्रणाली खत्म करने की है, लेकिन आज इस पुराने पड़ चुके तंत्र को बदलने की नाकामी से लगता है कि यह भी कहीं योजना भर बनकर न रह जाए । बहरहाल, अब सुरक्षा व्यवस्था को और नजर अंदाज नहीं किया जा सकता । अन्यथा देर—सवेर और भिड़ंत की त्रासदी झेलनी होगी ।

— द्वारा-श्री विक्रम सिंह (अध्यापक)
३१९, संतपुरा, श्याम सिंह बिल्डिंग के पीछे,
मोदीनगर-जिला गाजियाबाद-उ.प्र.

"**क्या** वह इश्तहार तुमने छपवाया था ?"

"कौन-सा इश्तहार ?"

"वही इश्तहार-ऐलाने-गुमशुदगी ।"

"मेरी गुमशुदगी के बारे में ?"

"नहीं, मैं तो तुम्हें जानती भी नहीं कि तुम कौन हो ?"

"मैं वही हूं, जिसके बारे में तुमने ऐलान करवाया था कि एक बच्चा, जिसकी उम्र दस साल है, उसने गहरे ब्राउन रंग की खानेदार बुश्शर्ट और खाकी रंग की नेकर पहन रखी है, कल सुबह खेलने के लिए घर से निकला था, मगर फिर लौटकर नहीं आया ।"

वह एकदम घबरा गयी और गौर से उसके चेहरे पर देखते हुए बोली, "नहीं, मैंने ऐसा ऐलान नहीं करवाया, न ही मैं तुम्हें जानती हूं

पाकिस्तानी कहानी

खोया हुआ बचपन

● मजहर-उल-सलाम



और अब तुम जवानी की दहलीज पार कर चुके हो । क्या यह तुम्हारे बचपन का वाकिया है । क्या तुम गुम हो गये थे ?''

वह इत्मीनान से कुरसी से टेक लगाकर बैठ गया और सिगरेट का लंबा कश लेते हुए बोला, ''हां, मैं बचपन में गुम हो गया था और आज तुम्हें देखकर न जाने मुझे क्यों यह एहसास हो रहा है कि मेरी गुमशुदगी के बारे में वह ऐलान तुमने ही करवाया था, और आज तुम्हें देखते ही मुझे लगा, जैसे मैं गुम हो गया था, अब मिल गया हूं । बचपन से अब तक मैं भी अपने आपको ढूंढ़कर थक गया हूं, मगर तुम्हें मिलकर आज जैसे मुझे याद आ गया है ।

जिसे स्कूल के बरामदे में भागते-भागते अचानक एहसास होता है कि उसका रिबन बालों से निकलकर कहीं पीछे गिर गया है ? वह बार-बार अपने खूबसूरत बालों में रिबन को टटोलने की कोशिश कर रही थी ।

फिर कुछ देर बाद वह संभलकर बैठ गयी और बोली, ''मैंने तुम्हें पहचाना नहीं । क्या बचपन में तुम कहीं मेरे घर के करीब ही रहते थे ?''

''नहीं, मुझे तो यह भी मालूम नहीं कि तुम बचपन में कहां रहती थी ?''

''तो फिर तुम यह सब कुछ क्यों कह रहे हो ?''

वह गौर से उसकी बातें सुन रही थी, मगर जब वह चुप हो गया, तब बोली, ''मैं हैरान हूं कि तुम कभी मुझसे नहीं मिले और फिर भी मेरे बारे में इतना कुछ जानते हो । वह बातें, जो मेरे शौहर और बच्चों को भी मालूम नहीं । क्या तुम यह भी जानते हो कि...'' वह चुप हो गयी ।

लगता है, मैंने अपने आप को ढूंढ़ लिया है, मगर अब मुझे गुम न होने देना । आज मेरी हालत उस बच्चे-जैसी है, जो पहली बार चिड़ियाघर देखने जाता है और हर जानवर को देखने के बाद बार-बार किसी बड़े की अंगुली पकड़ लेता है । मेरी भी इस वक्त वही हालत है । मैं अंदर से डर रहा हूं कि कहीं फिर गुम न हो जाऊं । मुझे पहचानने की कोशिश करो ।''

उसने जेहन पर जोर देते हुए उसकी तरफ देखा, जैसे कुछ याद करने की कोशिश कर रही हो । उसकी हालत उस बच्ची-जैसी हो गयी,

''इसलिए कि मुझे यों लग रहा है, जैसे तुम मुझे ढूंढ़ती रही हो और अब तक अपने बच्चों में भी मुझे ढूंढ़ती रहती हो ।''

वह एकदम पीछे की तरफ हटी और बोली, ''तुम मेरे बारे में कैसे जानते हो ?''

''मैं तुम्हारे बारे में और भी बहुत कुछ जानता हूं ।''

''क्या ?''

''यह कि एक बार स्कूल में तुम्हारा बस्ता गुम हो गया था और उस बस्ते में कहानियों की एक किताब भी थी, जिसमें सुनहरी बालोंवाली लड़की की कहानी तुम्हें बहुत पसंद थी । तुम्हारे



"मैं जानता हूं कि फिर तुम कितनी देर अतीत में भटकती रहती हो, यहां तक कि तुम्हारे बच्चे तुम्हें झंझोड़कर पूछते हैं, अम्मी फिर क्या हुआ ? तुम चौंक उठती हो और कहानी को वहीं से शुरू करने की कोशिश करती हो, जहां से उसका सिलसिला टूटा था, मगर तुम्हें कहानी का सिरा नहीं मिलता और तुम घबराकर अपने बच्चों से कहती हो, बस, अब सो जाओ । बहुत रात हो गयी है ।"

वह गौर से उसकी बातें सुन रही थी, मगर जब वह चुप हो गया, तब बोली, "मैं हैरान हूं कि तुम कभी मुझसे नहीं मिले और फिर भी मेरे बारे में इतना कुछ जानते हो । वह बातें, जो मेरे शौहर और बच्चों को भी मालूम नहीं । क्या तुम यह भी जानते हो कि..." वह चुप हो गयी ।

"हां, मैं यह भी जानता हूं कि तुम बचपन में गुम हो गयी थी और तुम्हारे बारे में ऐलान भी हुआ था ।"

"एक बच्ची, जिसकी उम्र दस साल है, उसने गहरे ब्राउन रंग का फ्राक पहन रखा है और पांव से नंगी है, उसके पास उसकी गुड़िया भी है । कल सुबह खेलने के लिए घर से निकली थी, मगर लौटकर नहीं आयी ।"

उसने अपनी मुट्ठियां भींचीं और खोल दीं । एकदम ३९ साल उसकी मुट्ठियों से फिसलकर गिरे... फिर उसने खिड़की से बाहर मौसम में नये-नये खिले हुए फूलों की तरफ देखा और बोली, "मुझे यों लग रहा है, जैसे आज मैंने भी अपने आप को ढूंढ़ लिया है ।"

वालिदैन ने कोर्स की किताबें तुम्हें फिर से खरीद दी थीं, मगर कहानियों की वह किताब कोशिश के बावजूद कहीं से भी नहीं मिल सकी थी । फिर जब तुम्हारे स्कूल में ड्रामा स्टेज किया गया था, तब तुमने सुनहरी बालोंवाली उस लड़की का किरदार अदा किया था, जिसकी कहानी, कहानियों की उस किताब में थी, जो गुम हो गयी थी ।"

वह एकदम बहुत उदास हो गयी और बोली, "यह तो कई साल पुरानी बात है । उसके बाद मैंने कई कहानियां पढ़ी हैं और कई कहानियां अपने बच्चों को भी सुनायी हैं ।"

"लेकिन अब भी जब तुम बच्चों को कहानी सुनाती हो, तो कहानी सुनाते-सुनाते अचानक रुक जाती हो और तुम्हें सुनहरी बालोंवाली लड़की याद आ जाती है ।"

"तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ ?"

अनुवाद : सुरजीत

—सी-३४, सुदर्शन पार्क,
नयी दिल्ली-११००१५

मैं तो बंदे का बंदा हूं

• महावीर सिंह तोमर

कश्मीर के पुंछ जिले के राजौरी गांव में लक्ष्मण देव नाम के बालक का जन्म हुआ । यह शुभ दिन २७ अक्तूबर, सन् १६७० का था । पिता का नाम रामदेव था । वे समृद्ध कृषक क्षत्रिय राजपूत थे । बालक लक्ष्मण देव जन्म से ही बलिष्ठ व सुंदर शरीर का था । लक्ष्मणदेव बचपन से ही व्यायाम, कुश्ती व घुड़सवारी का अभ्यास करता था । साथ ही तलवार, बरछी व तीर-कमान चलाने का उसे शौक था ।

खेती के कार्य में भी मन लगाकर परिश्रम करता था । इस प्रकार लक्ष्मणदेव एक निपुण, परिश्रमी, चरित्रवान, सुंदर व बलिष्ठ युवक के रूप में आसपास के क्षेत्र में जाना जाता था । अचानक उसे शिकार करने का व्यसन लग गया । तीर कमान उठा, घोड़े पर सवार आखेट को निकल जाता ।

वैराग्य

एक दिन लक्ष्मण देव घोड़े पर सवार होकर जंगल की ओर आखेट के लिए जा रहा था । कुछ ही दूरी पर उसे हिरण दिखायी दिये । हिरण शिकारी को आता देख भाग खड़े हुए । परंतु एक गर्भवती हिरणी भाग नहीं सकी । लक्ष्मण देव ने उसे ही तीर मार दिया । हिरणी के पास जब लक्ष्मण देव पहुंचा, तब वह तड़प रही थी । हिरणी ने अपनी पीड़ा, स्थिति व विवशता सब कुछ लक्ष्मण देव की आंखों में देखकर कह दी । लक्ष्मण देव हिरणी की आंखों से आंख नहीं मिला पाया । मरते-मरते हिरणी ने दो बच्चों को जन्म भी दे दिया । उन बच्चों की पीड़ा लक्ष्मण देव को द्रवित कर गयी । वे मासूम बच्चे जो आंख खोल भी नहीं पाये थे, अपनी तड़पन से एक क्षत्रीय वीर को पश्चाताप और ग्लानि के साथ-साथ पाप, पुण्य, धर्म, अधर्म सब का मूक उपदेश दे गये । लक्ष्मण देव ने वहीं तीर कमान फेंककर घर के बजाय पाप-मुक्ति के लिए उपाय ढूंढ़ने चल पड़े । मात्र पंद्रह वर्ष की आयु का युवा विषाद-युक्त हृदय से किसी ऐसे गुरु की शरण पाने को भटकने लगा जो उसके जीवन को सार्थक बना सके ।

जानकी दास नाम के संत ने उन्हें दीक्षित करके माधोदास का नाम दिया । माधोदास नासिक पंचवटी में किसी प्रसिद्ध औघड़ के संपर्क में भी रहे, जिन्होंने उसे मंत्र सिद्धि करायी और तंत्र-मंत्र के रहस्य दिये ।

नासिक से माधोदास गोदावरी के निकट नांदेड़ में रहने लगे । नांदेड़ में गुरु गोविंद सिंह ने पूर्व जन्म में तपस्या की थी । गुरुजी को

योगबल से वह पूर्ण स्मरण था ।

नांदेड़ में रहते माधोदास को सोलह वर्ष बीत गये । उनकी सिद्धियों, चमत्कारों की ख्याति दूर तक फैल चुकी थी । अंतिम बार गुरुजी उस समय नांदेड़ गये, जब गुरुजी की सैन्य-शक्ति नष्ट हो चुकी थी । दो पुत्र युद्ध में मारे जा चुके थे । दो छोटे बालकों को सरहिंद के नवाब वजीरखां ने जीवित दीवार में चिनवा दिया था । माता गुजरी पौत्रों के शोक में बुर्ज से कूद कर प्राण दे चुकी थी । गुरुजी पत्नी विछोह से पीड़ित थे । ऐसे समय में गुरुजी माधोदास के आश्रय में पहुंचे । वे सीधे माधोदास के उस पलंग पर जा बैठे जिस पर माधोदास के अतिरिक्त बैठनेवाले विपत्ति में फंस जाते थे । माधोदास ने बाहर से ही उस तेजस्वी व्यक्ति को अपनी सिद्धियों व तंत्र-मंत्र से पलंग से गिराना चाहा, लेकिन गुरुजी पर उसकी शक्ति का कोई प्रभाव नहीं पड़ा । माधोदास समझ गये कि गुरुजी की शक्ति उनसे अधिक है । यह सन् १७०७ ई. की घटना है । तब माधोदास ने परास्त होकर गुरुजी के चरणों में सिर टेककर कहा, "आदेश दो, मैं आपका बंदा हूं ।"

कर्त्तव्य पथ पर

गुरुजी ने बंदा का समर्पण स्वीकार करते हुए कहा, "देश, धर्म पर घोर विपत्ति है । ऐसे काल में तुम जैसे वीर टोटका, प्रपंच में फंसकर समय और शक्ति का दुरुपयोग करके जीवन का लक्ष्य भूल गये हो । तलवार उठाकर उत्तर में चले जाओ और मलेच्छ संस्कृति और सभ्यता को बढ़ने मत दो । गुरुजी ने अपनी मोहर लगाकर पंजाब के लोगों के नाम पत्र देते हुए आशीर्वाद देकर विदा किया । साथ में धौंसा, पांच तीर व ध्वज भी दिये ।

गुरुजी के पीछे दो मुसलमान पठान पंजाब से ही उनके प्राण लेने को लगे थे । उन्होंने नांदेड़ में छद्मवेश में ही गुरुजी पर घातक वार किया । एक शत्रु को तो गुरुजी ने तुरंत समाप्त कर दिया और दूसरा उनके भक्तों ने समाप्त किया । गुरुजी को भी बचाया नहीं जा सका । कदाचित वे बचना भी नहीं चाहते थे । उन्होंने बंदा को सेनापति बनाकर अपना काम पूरा कर लिया था और स्पष्ट आदेश भी किया था कि आगे गुरु कोई नहीं बनेगा । बंदा को गुरुजी झंडा व धौंसा भी सौंप चुके थे । उनको मरते समय पूर्ण संतोष था ।

विजय-अभियान

बंदा जैसे ही पंजाब आया, नांदेड़ से भरतपुर होकर वदन सिंह की शक्तिशाली सेना ले पंजाब पहुंचा । सिख व अन्य क्षत्रीय योद्धा उसके झंडे के नीचे एकत्रित होने लगे । बंदा ने पहला सफल आक्रमण समारा पर किया । गुरु तेग बहादुर का हत्यारा समारा का था और गुरु गोविंद सिंह के दो पुत्रों का सिर काटने वाले भी समारा के थे । उन्हें भी यमलोक पहुंचाया । समारा गेंधन भी मिला । मार्ग में कपूरी व अन्य नगरों को जीता । दुराचारी फौजदार मारा गया । एक दल ने मालर कोटला को परास्त किया । इसके थोड़े समय उपरांत सिर हिंद पर धावा बोल दिया । वजीर खां, हाथी पर चढ़कर युद्ध करता था । हाथी बहुत ऊंचा व विशालकाय था । सूंड में भारी सांकल लेकर युद्ध में शत्रु-पक्ष के सैनिकों को लपेटकर रौंदकर मारता था । वह अजेय समझा जाता था । उसके शरीर, मस्तक व आंखों तक कवच था । बंदा के वीर मल्ल सैनिकों ने तेज बरछी, भाले व बल्लम लेकर हाथी के सामने आकर जान की

परवाह न करके आक्रमण कर दिया । उसके कवच भेदकर बल्लम भाले शरीर में घोंप दिये । सूंड पर भाला मारकर एक मल्ल ने हाथी की सूंड उसकी छाती से लगा दी । हाथी चिंघाड़ता हुआ विवश होकर उल्टे पैर भागता रहा । पीछे एक कब्र में उसके पिछले पैर जाने से ऐसे बैठ गये, जैसे सरकस में कुरसी पर बैठता है, वीरों ने वजीर खां को दबोच कर वहीं समाप्त करके सांस लिया । साथ ही उसके दीवान सुच्चानंद को यमलोक भेज दिया ।

बालकों को दीवार में चिनवानेवाले को समाप्त करते ही समाना व थानेसर को जीतने में विलंब नहीं किया ।

मुखलिसपुर के दुर्ग की मरम्मत करवाकर उसका नाम लौहगढ़ रखा । लौहगढ़ को राजधानी बनाया । बंदा ने अपनी राजमुद्रा व सिक्कों पर बंदा ही लिखवाया था । सहारनपुर व बेहट भी उसके राज्य के अंग थे ।

नवाब अब्दुल समद खां ने कई हिंदू सामंतों, सैय्यद बंधुवों (जो वजीर ही नहीं बादशाह बनानेवालों के नाम से जाने जाते हैं) को बंदा सहित गुरुदासपुर के किले में घेरा । किले की नाकेबंदी करके उसे जेल का रूप दिया । खाद्य सामग्री समाप्त हो गयी । ईंधन [illegible] रहा । [illegible] पशुओं का मांस कच्चा खाने को विवश हो गये । जो शाकाहारी थे, उन्होंने वृक्षों की छाल कूटकर खायी । समदखां की सेना में जो हिंदू सैनिक थे, उनके सगे-संबंधी बंदा के साथी, सहायक व सैनिक होने के नाते किले में बंद थे । किले में बंद वीर धर्म युद्ध से हटने को तैयार नहीं थे ।

अंत में दिसम्बर सन् १७१५ ई. में दुर्ग जीत लिया गया । कई सौ सैनिकों के सिर काटकर भालों पर टांगकर लाहौर सहित कई नगरों में जुलूस निकाले गये । दिल्ली में बंदा को एक पिंजड़े में बंद करके हाथी पर रखा हुआ था । उसके आगे दो हजार सिखों व हिंदुओं के सिर काटकर भाले पर टांगकर चल रहे थे । पीछे ७४० सिख दो-दो की जोड़ी में ऊंटों पर बंधे थे । जिन्हें भेड़ की खाल की कुर्तियां पहना रखी थीं । इस प्रकार के क्रूर उत्पीड़न व अपमान से भी किंचित विचलित नहीं हुए थे । सबको जेल में डाल दिया गया । प्रतिदिन सौ बंदियों को चबूतरों पर लाकर प्रातः ही मारने की दिनचर्या बनायी गयी । मुसलमान बनने पर जीवनदान की छूट थी । लेकिन किसी ने भी जीवन के मोह में मुसलमान बनना स्वीकार नहीं किया ।

बंदा की हत्या

इस दिन बंदा को उपहासजनक वेश में हाथी पर बैठाकर दिल्ली में घुमाया गया । बहादुर

पहले छुरे से बंदा की एक आंख निकाली । बायां पैर काटा, फिर हाथ काटे । फिर गरम लाल सिंडासियों से मांस खींचा । इतना सहन करते हुए भी बंदा का मुख मुरझाया तक नहीं । अंत में उसका सिर काटा । बंदा ने राजा होते हुए भी देश धर्म के लिए एक महान शहीद की मौत पायी ।

शाह की कब्र के चारों ओर घुमाया गया । मुसलमान बनने से इनकार करने पर बंदा को उसी के चार वर्षीय पुत्र का वध करने को कहा । बंदा के न मारने पर जल्लाद ने उसके पुत्र का वध करके लड़के का कलेजा निकालकर बंदा के मुंह में ठूंस दिया ।

पहले छुरे से बंदा की एक आंख निकाली । बायां पैर काटा, फिर हाथ काटे । फिर गरम लाल सिंडासियों से मांस खींचा । इतना सहन करते हुए भी बंदा का मुख मुरझाया तक नहीं । अंत में उसका सिर काटा । बंदा ने राजा होते हुए भी देश धर्म के लिए एक महान शहीद की मौत पायी ।

मैं तो बंदे का बंदा हूं

गुरदासपुर से बंदी बनाये सिक्खों में एक किशोर भी दिल्ली लाया गया था । उसकी कम आयु व सुंदरता इतनी मोहक थी कि फर्रूखसियर ने उसकी जान बख्श देना ही ठीक समझा । उसकी विधवा मां भी उसे छुड़ाने बादशाह के पास आयी थी । बादशाह ने कहा, "लड़के तेरी मां कहती है कि तू बंदे का साथी नहीं है । इसीलिए मैं तुझे छोड़ता हूं, तू अपनी मां के साथ अपने घर जा ।" मां भी गिड़गिड़ायी, बेटा 'तेरे बिना जमीन-जायदाद सब तेरे बाप की संपत्ति समाप्त है, मुझे भी समाज शांति व सम्मान से नहीं जीने देगा ।"

लड़के ने कहा, "न कोई मेरी मां है, न घर है । मेरा तो जो कुछ है बंदा है, मैं तो बंदे का बंदा हूं ।" मां ने पुनः कहा, "बेटा, मेरी ओर देख तो ले, मैं ही तेरी मां हूं । मेरे जीवन का ही सहारा है तू । कुल का दीपक है ।"

लड़का बोला, "कौन मां ? किसकी मां ? मुझे अब तू दीखती ही नहीं है । मेरी आंखों में तो बंदा ही बंदा है ।"

यह कहकर जल्लाद से कहा, "जल्दी कर रे", जल्लाद भी विस्मय से भर गया और उसकी गरदन पर तलवार चला दी ।

धर्म-यज्ञ की पूर्णाहुति जो शेष थी वह दी जा चुकी थी । वीर बंदा वैरागी ने आठ वर्ष युद्ध, शासन व प्रजा से न्याय किया । उसने चंबा के राजा उदयसिंह की लड़की से विवाह किया था ।

फरुखसियर बादशाह द्वारा यह जघन्य हत्या थी । सैय्यद बंधुओं ने उसे बादशाह बनाकर उसका विवाह जोधपुर महाराजा अजीत सिंह की लड़की से करवा दिया था । वह सैय्यद बंधुओं को समाप्त करने के लिए तीन बार षड्यंत्र कर चुका था, परंतु वीर बंदा वैरागी की हत्या के कारण जन-जन सैय्यद बंधुओं पर लानत देने लगे । इस असहनीय बदनामी के कारण उन्होंने फरूखसियर को अंधा करके बंदीगृह में डाला और गला घोंटकर हत्या करायी ।

—पट्टी गोपी,

ग्राम व पो. ऑ.—बावली, मेरठ २५०६२१

बगदाद के खलीफा हासन रशीद का प्रधानमंत्री 'दाहिया अलवर मरी' नित्य घोड़े पर सवार होकर शहर का चक्कर लगाया करता था । उसे जहां कहीं भी अजनबी मनुष्य दिखायी देते, वहीं वह १०० रुपयों के सिक्कों से भरी थैली उछाल देता था । भीड़ उन सिक्कों को लूट लेती । इस प्रकार उसने सन् ७८६ से ७९८ तक २४ करोड़ डॉलर की रकम उछाली ।

● लक्ष्मी सोनी

संस्मरण



यूं रक्षा हुई कवि प्रदीप की

● धर्मेन्द्र गौड़

१ सितम्बर, १९३९ को नात्सी सेनाओं द्वारा पोलैंड पर आक्रमण होते ही जरमनी द्वितीय विश्व युद्ध में कूद पड़ा । आनन-फानन में एक के बाद दूसरे यूरोपीय देश में हिटलर के झंडे लहराने लगे । इधर, ७ दिसम्बर, १९४१ को उआहू द्वीप (पर्लहारबर) पर आक्रमण करते ही जापान भी मित्र-राष्ट्रों के खिलाफ इस युद्ध में कूद पड़ा । उन दिनों मैं संयुक्त प्रांत (वर्तमान उत्तर प्रदेश) की 'स्पेशल ब्रांच' (राजनीतिक शाखा) में कार्यरत था और नियुक्ति थी मेरी लखनऊ हेडक्वार्टर्स पर । तभी की दास्तान है ।

आज हिमालय की चोटी से

बांबे टाकीज की फिल्म 'किस्मत' संयुक्त प्रांत में सबसे पहले कानपुर शहर में रिलीज हुई थी । दूसरे दिन वहां के अंगरेज पुलिस अधीक्षक की रिपोर्ट कोरियर द्वारा लखनऊ पहुंचायी गयी । इसे डी.आई.एस. (डिस्ट्रिक्ट इंटेलिजेंस स्टाफ) के सब-इंसपेक्टर इन-चार्ज बृजनंदन मिश्र ने तैयार किया था । अंगरेज अफसर के तो महज दस्तखत थे । डी.आई.एस. (वर्तमान लोकल इंटेलिजेंस यूनिट) का महकमा एस.पी. के आधीन था और मुफ्त में सिनेमा देखने का उनके पास बाकायदा एक 'फ्री पास' भी रहता था । इंटरटेनमेंट टैक्स जैसी कोई चीज तो थी ही नहीं अंगरेजी जमाने में ।

हेडक्वार्टर्स पर मुकम्मिल जांच के लिए यह रिपोर्ट की गयी मेरे हवाले । स्पेशल ब्रांच के पुलिस अधीक्षक जार्ज डि' वैरो पारकिन का स्पष्ट आदेश था, "कानपुर जाकर न तो मैं वहां के डी.एम., एस.पी. से संपर्क करूं, न ही डी.आई.एस. ग्रुप ऑफिस के किसी व्यक्ति से । 'किस्मत' में गाये गये गीतकार प्रदीप के गाने 'आज हिमालय की चोटी से फिर हमने ललकारा है, दूर हटो ऐ दुनियावालो हिंदुस्तान हमारा है' पर उन्हें विशेष आपत्ति थी कि 'यह गाना एंटी-ब्रिटिश' है । अंगरेजों को भारत से निकाल बाहर करने के लिए फिल्मवालों की गहरी साजिश है । पब्लिक के दिलो-दिमाग पर बुरा असर पड़ेगा । इस प्रकार मुकम्मिल तफतीश के बाद गाने की जब्ती और दफा २६

डिफेंस ऑॅव इंडिया रूल्स के अंतर्गत कवि प्रदीप को अनिश्चितकाल के लिए जेल भेजने की तजवीज थी ।

उस जमाने में बांबे बोर्ड ऑॅव फिल्म सेंसर्स तथा बंगाल बोर्ड ऑॅव फिल्म सेंसर्स नामक दो सरकारी संस्थाएं थीं । मुंबई, पुणे, कोल्हापुर में निर्मित हिंदी, मराठी, गुजराती और अंगरेजी फिल्में प्रदर्शन के लिए 'पास' करना बांबे बोर्ड ऑॅव फिल्म सेंसर्स के आधीन था । इसी प्रकार कलकत्ता में बनी हिंदी, बंगला, असमी, उड़िया फिल्में बंगाल बोर्ड ऑॅव फिल्म सेंसर्स के जिम्मे थी । लखनऊ में पायोनियर प्रेस के ठीक सामने आइडियल फिल्म्स लिमिटेड और यू.पी. सिनेटोन लिमिटेड की फिल्में अलबत्ता इन दोनों स्थानों में से किसी का सर्टिफिकेट प्राप्त करने योग्य थीं । आज इनके स्थान पर सेंट्रल बोर्ड ऑॅव फिल्म सेंसर्स कार्यरत है ।

कानपुर के परेड स्थित इंपीरियल सिनेमा हाउस में प्रदर्शित 'किस्मत' फिल्म के लगातार दो दिनों में चारों शो देख डाले । मुझे तो पिक्चर बहुत पसंद आयी ! अशोककुमार और मुमताज शांति की सुंदर और आकर्षक जोड़ी देखते ही बनती थी । मुबारक और शाहनवाज को आज भी पुरानी पीढ़ी के दर्शक भूले न होंगे । मुमताज शांति द्वारा रुपहले परदे पर प्लेबैक पद्धति से गाया गया अमीरबाई कर्नाटकी का सुमधुर गीत 'धीरे-धीरे आ रे बादल, धीरे-धीरे आ-आ, मेरा बुलबुल सो रहा है, शोरगुल न मचा' सुनकर दर्शक झूम उठते थे । जबकि 'आज हिमालय की चोटी से फिर हमने ललकारा है, दूर हटो ऐ दुनियावालो हिंदुस्तान हमारा है' सुनकर जवानों का ही नहीं, बूढ़ों का खून भी खौल उठता था ।

मैं दुविधा में पड़ गया । रिपोर्ट में क्या लिखूं, क्या छोड़ूं ! बराबर यही सोचता रहा कानपुर से लखनऊ तक ४५ मील लंबे जी.आई.पी. मेल के सफर में । तभी खयाल आया क्यों न जरमनी और जापान को इस मामले में घसीटा जाए ! जरमनी के 'लुफ़्तवाफ' बांबर लंदन शहर पर भीषण बमबारी कर ही रहे थे । जापान के 'जीरो' फाइटर प्रशांत महासागर में अमरीकनों, फ्रांसीसियों और डचों की मिट्टी

> ***'किस्मत' में गाये गये गीतकार प्रदीप के गाने 'आज हिमालय की चोटी से फिर हमने ललकारा है, दूर हटो ऐ दुनियावालो हिंदुस्तान हमारा है' पर उन्हें विशेष आपत्ति थी कि 'यह गाना एंटी-ब्रिटिश' है । अंगरेजों को भारत से निकाल बाहर करने के लिए फिल्मवालों की गहरी साजिश है । पब्लिक के दिलो-दिमाग पर बुरा असर पड़ेगा । इस प्रकार मुकम्मिल तफतीश के बाद गाने की जब्ती और दफा २६ डिफेंस ऑॅव इंडिया रूल्स के अंतर्गत कवि प्रदीप को अनिश्चितकाल के लिए जेल भेजने की तजवीज थी ।***

पलीत करने में लगे ही थे । अब मुझे ठोस आधार मिल गया और लखनऊ पहुंचते ही रिपोर्ट दागी (मूल अंगरेजी में) —

उनके लिए काव्य सब कुछ

"...कवि प्रदीप का नाम है रामचन्द्र द्विवेदी । जात— ब्राह्मण । जन्म-स्थान— बड़नगर (मालवा), सेंट्रल प्रोविंसेज (वर्तमान मध्यप्रदेश) । पेशा— स्कूल मास्टर । बचपन से कविता का शौक । बुलंद और सुरीली आवाज के धनी । सन् १९३८ में उनकी एक कविता प्रसिद्ध कवि पंडित सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' को बहुत पसंद आयी, तो उन्होंने उनके ऊपर एक लेख लिख मारा । शीर्षक था 'नवीन कवि प्रदीप' । बस, इसी से प्रदीप को इतनी ऊर्जा मिली, उनमें इतनी स्फूर्ति आयी, कि उन्होंने काव्य को ही अपना ओढ़ना-बिछौना, सब कुछ बना लिया ।

अमीनाबाद, लखनऊ के गंगाप्रसाद मेमोरियल हॉल में हुए कवि सम्मेलनों में मैंने भी सुनीं दो बार उनकी ओजस्वी कविताएं । आज भी याद आती है उनकी 'हल्दीघाटी' ।

इस गाने से गीतकार प्रदीप ने जरमनी और जापान को ही अपना निशाना बनाया है, अंगरेजों को कतई नहीं । धोती-कुरता पहनते जरूर हैं प्रदीप, मगर वे कांग्रेसी कतई नहीं हैं । क्रांतिकारी भी नहीं हैं ।"

जब यही रिपोर्ट पारकिन के पास पहुंची, तो 'प्लीज डिसकस' लिखकर मुझे वापस लौटा दी गयी । दूसरे दिन उनके समक्ष पेश हुआ । उनके सभी सवालों का संतोषजनक उत्तर दिया । वे संतुष्ट हुए । फिर तो यू.पी. में ही नहीं, समस्त भारत में 'किस्मत' का प्रदर्शन यथावत बरकरार रहा । संभवतः श्री प्रदीप तो आज भी इस घटना से पूर्णतः अनभिज्ञ हैं ।

सन् १९४८ में अनुज (स्व.) व्रजेन्द्र गौड़, सिने पटकथा, संवाद लेखक से मिलने मुंबई गया था । उसने 'किस्मत' के ख्यातिलब्ध निर्देशक (स्व.) ज्ञान मुखर्जी से मलाड में उनके घर जाकर मिलाया था । तभी ज्ञात हुआ कि 'किस्मत' ने सैकड़ों की किस्मत बनाकर रख दी थी । 'किस्मत' भारत की सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म साबित हुई थी । कलकत्ता और मुंबई में तो खासी धूम मचाकर रख दी थी । कलकत्ता के रॉक्सी सिनेमा में लगातार ३ वर्ष ८ महीने तक चलकर न केवल भारत बल्कि विश्व के समस्त रेकॉर्ड तोड़े थे ।

'किस्मत' को एक डिस्ट्रीब्यूटर ने महज ६० हजार रुपये में खरीदा था— और वह भी बहुत आनाकानी से । फिल्म ऐसी चली, ऐसी चली, कि एक करोड़ रुपये तो उसने पैदा किये ही, एक सिनेमा हाउस और कई बंगलों का मालिक भी उसे बना दिया ।

—रूंगटा बिल्डिंग, सिनेमा रोड
गोरखपुर-२७३००१

सिंह लग्न

सिंह लग्न में जन्म लेनेवाला जातक क्रोधी स्वभाव का होता है । आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी ऐसा जातक उन्नत ललाटवाला होता है । अपने अफसर के प्रति कृतज्ञ होता है । परिस्थिति के अनुकूल अपने को बदलने की इसमें अद्भुत क्षमता होती है । शंकालु प्रवृत्ति और आलस्य इसके अवगुण होते हैं ।

भारतीय भाषाओं के साहित्य की मूलभूत एकता

● डॉ. दर्शन सेठी

भारतीय भाषाओं का साहित्य अनेकता में एकता के सत्यान्वेषण की सकारात्मक साधना है । भारतीय-साहित्य में श्रौत, श्रमण, अग्नेय, द्रविड़, यूनान, शक, आमीर, मुसलिम तथा अंगरेजी परंपराओं के संस्कारों का सकारात्मक तथा स्वस्थ समाहार हुआ है । यह समन्वय भारतीय भाषाओं के साहित्य की अक्षय शक्ति का मूल-मंत्र है । इस शक्ति के मूल प्रेरणा-स्रोत हमारी पुण्य-प्रशस्त श्रौत परंपरा के इन दिव्य सूत्रों में सन्निहित है—

आनो भद्रा क्रतवो यंतु विश्वतः

(ऋ. १/८८/१)

अर्थात हमें सब ओर से भली भावनाएं प्राप्त हों ।

एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति

(ऋ. १/१६४/४६)

अर्थात एक ही ब्रह्म को मनीषी जन अनेक नामों से पुकारते हैं ।

भारतीय साहित्य तथा संस्कृति की इस अस्मिता के प्रति उर्दू के महाकवि डॉ. इकबाल ने अपनी नज़्म 'तराना-ए-हिंदी' में इस प्रकार अपना खराज-ए-अकीदत पेश किया है—

यूनान मिस्र रोमा सब मिट गए जहान् से,
अब तक मगर है बाकी नाम-व-निशान हमारा ।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौर-ए-जमाना हमारा ।।

अस्मिता की पहचान

निस्संदेह विविध विषमताओं, विविधताओं, विसंगतियों तथा विरोधाभासों के बावजूद भी समरसता के सत्यान्वेषण की यह प्रवृत्ति भारतीय भाषाओं के साहित्य की मूलभूत एकता और अस्मिता की पहचान रही है । राष्ट्रीय भावात्मक एकता, सांस्कृतिक सहबोध, परस्पर प्रेम और सहयोग, सर्वधर्मसमभाव, सामाजिक न्याय तथा समानता, सतत संचरणशीलता, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, सांप्रदायिक तथा सार्वभौम सद्भाव और स्वस्थ तथा सकारात्मक समन्वय-भावना भारतीय भाषाओं के साहित्य के प्रेरक तथा पोषक तत्त्व रहे हैं ।

विविधता तथा विषमता मानव-सृष्टि का एक अपरिहार्य अनुभव है । हिंदी के महाकवि जयशंकर प्रसाद ने अपने महाकाव्य 'कामायनी'

में इस तथ्य को इस प्रकार वाणी दी है—

विषमता की पीड़ा से व्यस्त,
हो रहा स्पंदित विश्व महान ।
यही दुःख-सुख विकास का सत्य,
यही भूमा का मधुमय दान ।।

(श्रद्धा सर्ग पृ. ५४)

विषमता की इस वेदना में समरसता का संधान ही भारतीय भाषाओं के साहित्य का प्रशस्त प्रयोजन रहा है और अनेकता में एकता, असंतुलन में संतुलन, असामंजस्य में सामंजस्य तथा विषमता में समरसता का संदेश इसका सराहनीय साध्य है । इन भौतिक विभिन्नताओं में व्याप्त एक ही आत्म-तत्व की अनुभूति की अभिव्यक्ति भारतीय भाषाओं के साहित्य का मूल तत्व-दर्शन है । इस समरसता के सत्य-अन्वेषण की साधना का विवेचन-विश्लेषण ही इस आलेख का विवेच्य-विषय है ।

अपने ही युग में 'मुहकिक-ए-हिंद', अर्थात— भारतीय सत्य के अन्वेषक की सम्मानपूर्ण उपाधि से सुविख्यात भारतीय सूफी महाकवि मलिक मुहम्मद जायसी ने इस तथ्य का उल्लेख इस प्रकार किया है—

तुरकी, अरबी, हिंदुई, भाषा जेती आहिं ।
जेहिं मंह मारग 'प्रेम' कर सबै सराहैं ताहि ।।

(जायसी का काव्य-शिल्प : पृ. २६७, डॉ. दर्शन सेठी)

भारतीय संस्कृति के गायक गोस्वामी तुलसीदास का यह कथन भी इस संदर्भ में उल्लेख्य है—

का भाषा, का संस्कृत, 'प्रेम' चाहिए साँच ।
काम जु आवै कामरी, कालै करै कुमाँच ।।

(दोहावली-दोहा-५७२)

भारतीय भाषाओं के साहित्य में मानव-मात्र की समरसता और एकता का आधार 'विचार' अथवा 'ज्ञान' नहीं हो सकता, क्योंकि 'विचार' अहम् तथा अलगाव का मूल कारण है । 'मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना' वाक्य इसका प्रमाण है । यही कारण है कि भारतीय भाषाओं के साहित्य में अपने पावन-प्रयोजन की परिणति के लिए सार्वभौम भावात्मक तत्व 'प्रेम' को ही 'प्राण-तत्व' स्वीकार किया गया है । कदाचित इसी कारण 'कबीर' ने कहा था—

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ पंडित भया न कोई ।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़ै सु पंडित होई ।।

भारतीय सूफी महाकवि जायसी की यह सूक्ति भी इस संबंध में सत्कार्य है—

मानुष पेम भएउ बैकुंठी ।
नाहिं त काह छार एक मूंठी !!

(पदमावत छंद १६६/२)

'प्रेम' सार्थक तत्व

निस्संदेह सार्वभौम भावात्मक एकता के लिए 'प्रेम' ही इस सृष्टि का सर्वोत्तम, भावात्मक तथा सार्थक तत्व है । राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी मानव-प्रेम को ही जीवन का मूल तत्व मानते थे । गांधीजी ने कहा था कि 'मानव-प्रेम... दैवी अथवा सार्वभौमिक प्रेम का प्रथम सोपान है ।' वस्तुतः मानव-मात्र के प्रति प्रेम ही अनेकता में एकता की साधना का प्राण-तत्व तथा मूल मंत्र है । इस प्रकार भारतीय भाषाओं के साहित्य की एकता का मूलभूत आधार सार्वभौम सद्भाव अथवा मानव-मात्र के प्रति 'प्रेम भाव' है, क्योंकि मानव-प्रेम ही परमात्मा की पूजा है । भारतीय भाषाओं का साहित्य सार्वभौम भावात्मक एकता अथवा विषमता में समरसता की इस उदार तथा उदात्त प्रवृत्ति से आद्योपांत अनुप्राणित और ओत-प्रोत है ।

'वेद' विश्व की प्राचीनतम उपलब्ध ज्ञान-राशि है । सुप्रसिद्ध विद्वान प्रो. मैक्समूलर का कथन है—
'वेद' मानवकृत भौगोलिक, राजनीतिक, सामाजिक अथवा सांप्रदायिक किसी भी प्रकार की सीमा को स्वीकार नहीं करता । उसके लिए संपूर्ण मानव जाति एक इकाई है । वैदिक उपनिषदों में 'आत्मदीपो भव', तस्सवुफ में 'इंसान-ए-कामिल', बाइबल में भद्रपुरुष "GENTLEMAN," गुरुवाणी में 'सतपुरुख' तथा हिंदी में 'साधु' अथवा मर्यादा पुरुषोत्तम और गांधी-दर्शन में 'वैष्णव जन' की संज्ञा से संबोधित किया गया है । इस संबंध में वेद में कहा गया है कि तृष्णां नर्यो नृतमः'

विषमता की इस वेदना में समरसता का संधान ही भारतीय भाषाओं के साहित्य का प्रशस्त प्रयोजन रहा है और अनेकता में एकता, असंतुलन में संतुलन, असामंजस्य में सामंजस्य तथा विषमता में समरसता का संदेश इसका सराहनीय साध्य है । इन भौतिक विविधताओं में व्याप्त एक ही आत्म-तत्व की अनुभूति की अभिव्यक्ति भारतीय भाषाओं के साहित्य का मूल तत्व-दर्शन है । इस समरसता के सत्य-अन्वेषण की साधना का विवेचन-विश्लेषण ही इस आलेख का विवेच्य-विषय है ।

वाङ्मय का यह सूत्र इस संदर्भ में सत्कार के योग्य है—

सर्वेषां स्वस्तिरभवतु, सर्वेषां शांतिर्भवतु ।
सर्वेषां पूर्णम् भवतु, सर्वेषां मंगलम् भवतु ।।
लोकाः समस्तः सुखिनः भवंतु । अर्थात सभी स्वस्थ हों, सभी शांति प्राप्त करें, सभी पूर्णता को प्राप्त करें, सबका जीवन मंगलमय हो । सृष्टि के सभी मानव सुखी हों ।

(ऋग्वेद—१०/१९१)

भारतीय भाषाओं का साहित्य भी इसी परंपरागत सार्वभौम सद्भावना से सराबोर है ।

मानवों में श्रेष्ठ मनुष्य

ऋग्वेद का आदर्श वाक्य है 'मनुर्भव' । इसे अर्थात मानवों में श्रेष्ठ मनुष्य, मानवों का हित करता है । (ऋ. १०/२९/१) । यह प्रत्येक मनुष्य का अनुकरणीय आदर्श है और मनुष्य जीवन की सार्थकता का सार है । किंतु यह सिद्धि एक दुष्कर कार्य है । इस संबंध में उर्दू के महाकवि मिर्जा गालिब का यह शेर गौर-तलब है—

बस कि मुश्किल है हर काम का आसान होना ।
मय्यस्सर नहीं आदमी को इंसान होना ।

उपनिषदों में भी मनुष्य मात्र को 'सच्चा इंसान' अथवा 'आर्य' बनाने का स्तुत्य संदेश दिया गया है—

चरैवेति, चरैवेति, कृवन्तो विश्वम् आर्वम् ।

(कठ—३/१४)

उपनिषदों में भी इसी संवेदनशील, सार्वभौम, सर्वात्मवादी जीवन-दृष्टि के सर्वत्र दर्शन होते हैं । उपनिषदों का यह सूत्र 'सर्वे खलु इदं ब्रह्म'— इसी तत्व-दर्शन का बोधक है । वेदांत के प्रख्यात आचार्य शंकर का 'अद्वैतवाद' तो द्वैत के सर्वथा अभाव का प्रवर्तक सिद्धांत है । 'एकोब्रह्मः द्वितीयो नास्ति' ।

सूफीमत का आधारभूत दर्शन 'इब्न-अल-अरबी' का 'वहदतुलवुजूद' अथवा 'तौहीद', जिसका मूल-वाक्य 'हमा ऊस्त' (सब कुछ वही है) है । यह आचार्य शंकर के अद्वैत सिद्धांत का ही फारसी संस्करण है । मंसूर हल्लाज का 'अनलहक' भी अद्वैतवाद के 'अहम् ब्रह्मास्मि' का फारसी पर्याय है । अलगाव के मूल कारण अहम् के 'इदम्' में लय की उदात्त भावना से अनुप्राणित भारतीय सूफी महाकवि जायसी का यह कथन इस प्रसंग में दृष्टव्य हैं—

हौं हौं कहत मत्त सब कोई ।
जो तू नाहिं, आहि सब सोई ।।

(पद्मावतः छंद २१६/५)

विषमता में समरसता

यही 'फना' और 'बका' की सार्वभौम सर्वात्मवादी सूफी साधना है । इस तत्व-दर्शन का मूल-मंत्र द्वैत तथा अहम् का अभाव अथवा विषमता में समरसता के सत्य-अन्वेषण की अनन्य आराधना है और अद्वैतवाद के सिद्धांत के सर्वथा अनुरूप है । मध्यकालीन हिंदी महाकवि कबीरदास का 'मरजीवा' सिद्धांत भी इस तत्व-दर्शन का देन है—

तू तू करता तू भया, मुझ में रही न हूं ।
वारी फेरी बलि गयी, जित देखों तित तूं ।।

गोस्वामी तुलसीदास ने भी इस अहम् को ही मिथ्या माया अथवा अलगाव का मूल कारण माना है—

मैं अरु मोर तोर तैं माया ।
जिहि बस कीन्हे जीव निकाया ।।

इस अहम् का इदम् में विलय ही शाश्वत आनंद का एकमात्र उपाय है ।

फारसी के प्रसिद्ध सूफी कवि 'अबू सईद' की यह रुबाई इस संदर्भ में काबिल-ए-ताजीम है—

मन तू शुदम, तू मन शुदी,
मन तन शुदम, तू जान शुदी ।
ता कस न गोयद बाद अजीन,
मन दीगरम तू दीगरी ।।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस की ये प्रिय पंक्तियां इसी भाव का हिंदी रूपांतर है—

मुझ में समा जा इस तरह,
तन प्राण का जो तौर है ।
इतना न कोई कह सके,
मैं और हूं तू और है ।

इस प्रसंग में उर्दू की ये पंक्तियां भी सहसा स्मरण हो आती हैं—

जब हम खुद से अपने को जुदा देखते है ।
खुदी को मिटा, खुदा देखते हैं ।।

यह भारतीय भाषाओं के साहित्य की मूल संवेदना है । आचार्य भर्तृहरि के नीतिशतक का यह श्लोक भी इसी सार्वभौम सद्भाव से संपुष्ट है—

अयं निजः परोवेति गणना लघु चेतसाम् ।
उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम् ।।

अर्थात्, यह अपना है, यह पराया है, इस प्रकार के विचार छोटे दिलवालों के होते हैं । उदार चरित्रवाले लोगों की दृष्टि में तो संपूर्ण पृथ्वी ही एक परिवार है ।

(शेषः अगले अंक में)

तनाव से मुक्ति

● **डॉ. सतीश मलिक**

भविष्य के प्रति चिंतित

स.ग., दिल्ली : मैं एक अविवाहिता २२ वर्षीय लड़की हूं । अपनी अज्ञानता और भावावेश में आकर मैं गर्भवती हो गयी । दो महीने बाद ही मैंने गर्भपात करवा भी दिया । शीघ्र ही मेरा विवाह होनेवाला है । मैं चिंतित हूं कि कहीं मेरे पति को इसकी जानकारी न लग जाए और मेरा वैवाहिक जीवन संकट में न पड़ जाए ।

हमें आपके तीनों पत्र जो अधिक चिंता व परेशानी की मन:स्थिति में लिखे गये हैं, मिले । वास्तव में इस घटना में आपका कोई दोष नहीं है । इसलिए अपने अंदर ग्लानि की भावना न पैदा होने दें । अपने पति को इस बारे में न बतायें, क्योंकि वह इसे सही तरीके से शायद न ले पायें । आप विवाह योग्य हैं । फिर भी यदि कोई शंका हो तो उसके समाधान के लिए व्यक्तिगत रूप से आप संपर्क कर सकती हैं ।

तनावग्रस्त स्थिति

अशोककुमार, प्रतापगढ़ : मेरा ३३ वर्षीय भाई अविवाहित है । वह हैदराबाद में जब पी.एच-डी. कर रहा था, तब उसे मानसिक तनाव हुआ । हिम्मत बंधाने तथा चिकित्सक से मिलने के बाद उसने अपनी पी.एच-डी. पूरी कर ली । अब वह कनाडा में शोध कर रहा है, लेकिन अभी हमें सूचना मिली है कि उसकी वहां पर वही तनावग्रस्त स्थिति हो गयी है । वह दवा भी नहीं ले रहा है । इस कारण कि लोग यह न जान पायें कि वह रोगी है । वह विवाह के लिए भी तैयार नहीं है । अब उसकी स्थिति यह है कि बार-बार वह अपने हाथ धोता रहता है और कपड़े भी धोता रहता है । कृपया कोई सुझाव दें ।

आपके भाई के साथ किसी को रहना चाहिए या किसी ऐसे व्यक्ति को कनाडा में संपर्क करें जो उसको इस समय की मानसिक स्थिति से निकाल सके । चिकित्सक को दिखाना और दवा लेना आवश्यक है जो इस समय शायद वह अकेला नहीं करेगा । जिन लक्षणों को आपने लिखा है, वह 'ऑवसेसनल डिस ऑर्डर' के हैं । यह आजकल की दवाओं तथा 'बिहेवियर थेरेपी' द्वारा पूर्ण स्वस्थ हो सकती हैं ।

दूसरा समझ जाता है

म.बा. कुक्षी : मेरी आयु पंद्रह वर्ष है । मुझे लगता है कि जो कुछ मैं सोचता हूं वह दूसरों को पता चल जाता है । इसके मुझे स्पष्ट प्रमाण मिले हैं । मेरे मन में अजीब-अजीब-सी बातें आती हैं । किसी की भी तसवीर अनचाहे मस्तिष्क में बन जाती है । मुझे लगता है कि मेरा मन पर नियंत्रण नहीं है । घर से बाहर निकलने का मन नहीं करता । दूरदर्शन देखने का मन नहीं करता । मन करता है कि आत्महत्या कर लूं या भाग जाऊं । कृपया इसे

मजाक न समझें, समस्या से मुझे मुक्ति दिलाएं ।

आपसे हमें पूर्ण सहानुभूति है । आप मजाक के पात्र बिलकुल नहीं हैं । आपको अपनी मानसिक स्थिति को गंभीरतापूर्वक लेना चाहिए क्योंकि यह लक्षण मानसिक रोग की प्रारंभिक अवस्था के हैं । आप समय पर चिकित्सा मिलने से स्वस्थ हो सकते हैं ।

जीभ चबाने की आदत

मसउद आलम, सुल्तानगंज (पटना) : मैं २० वर्षीय बी.ए. प्रथम वर्ष का छात्र हूं । सन् '९४ से तनाव से ग्रसित हूं । चटोरेपन की आदत से जीभ चबाने की बुरी आदत पड़ गयी है । बायीं कनपटी के पास जो जोड़ है वह खट्ट-खट्ट करता है । दबाने पर पहले दाहिना भी करता था । अब सिर्फ बायां ही है । इस कारण मैं भयभीत रहता हूं । डॉक्टर साहब, कृपया कोई उपाय बतायें ।

वास्तव में यह सब मानसिक तनाव के कारण ही आप जीभ चबाते रहते हैं तथा कनपटी के जोड़ को दबाते हैं । इससे आप आवाज सुनते हैं । आपने लिखा है कि आप हर समय अध्ययन या कुछ कार्य करते रहते हैं । आपको मनोरंजन के साथ-साथ अपने आपको 'रिलेक्स' और तनाव रहित रहना भी सीखना चाहिए । यदि कोई और व्यक्तिगत समस्या हो तो अपने अंदर झांककर देखें । यह तनाव के लक्षण मात्र हैं ।

नाम बिगाड़ दिया

पी. हमीरपुर : तीन माह पूर्व रैगिंग के समय मेरा नाम बिगाड़कर बोला जाने लगा । वह अब भी सुधरा नहीं । इससे मैं परेशान होकर छटपटा जाती हूं । अब तो अकेली बैठी रहती हूं तथा सोचती हूं कि यह लोग कब मुझे सही नाम से पुकारेंगे । पढ़ाई में भी एकाग्रता नहीं बन पाती । फिर पृष्ठ संख्या बार-बार देखती हूं । ऐसा करने से मुझे लगता है यदि पृष्ठ संख्या सम होगी तो मेरा नाम सुधर जाएगा । यदि विषम होगी तो नहीं सुधर पाएगा । कागज पर रेखाएं खींचती हूं तब देखती हूं कि रेखाएं सम संख्या में हैं तो सुधर जाएगा अन्यथा नहीं । कृपया सुझाव दें ।

रैगिंग के समय अवश्य सहपाठी व आपके वरिष्ठ (सीनियर्स) आपको तंग करने के लिए मजा लेते रहे । अब यदि वह आपका नाम बिगाड़कर पुकारते हैं, तो शायद उनको सही नाम पता नहीं है । उन्हें अपना सही नाम बताने की आवश्यकता है । या फिर आपको चिढ़ाने के लिए वह जानबूझकर ऐसा कर रहे हैं । आपको चाहिए कि आप लोगों से कटें नहीं । मेलजोल रखें ।

अकेले बैठकर ऐसी स्थितियों पर अधिक सोचें नहीं । अपने को गंभीर बनाने के बजाय हलका-फुलका रखें । आपस में बातचीत करें । हंसी-मजाक भी करें और सहने की क्षमता भी उत्पन्न करें । इन

> इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आय, पद, आयु एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें ।
>
> —संपादक

उपायों से आशा है आप अपनी मनोस्थिति से बाहर निकल पाएंगी ।

असमंजस में

सुनीलकुमार, दुमका (बिहार) : इकतीस वर्षीय ग्रामीण स्नातक हूं । सरकारी नौकरी में हूं । शादी दस वर्ष पूर्व हुई । डेढ़ वर्ष की बच्ची है । मेरी पत्नी अनपढ़ है । इसका मुझे दुःख नहीं है । क्योंकि मेरी मां भी कम पढ़ी-लिखी है । हम सभी तीन भाई संयुक्त परिवार में रहते हैं । पत्नी के घर के किसी भी सदस्य के साथ मेलजोल नहीं । पत्नी शंकालु तथा कुंठित है । इसके कारण सारा परिवार तनावग्रस्त रहता है । मैं शहर में नौकरी कर रहा हूं । उसे कम ही साथ रखता हूं, क्योंकि साथ रखने से उसके व्यवहार से तंग आ गया हूं । मन में बैठ गया है कि मुझे एक अच्छे जीवनसाथी का सहचर्य कैसे मिले ? असमंजस में हूं । कृपया कोई [illegible] बतायें ?

आप शहर में रहते हैं और आपकी पत्नी आपके परिवार के साथ गांव में । इससे पहले कि आप पत्नी को छोड़ दूसरी शादी की सोचें, आप एक बार पत्नी को साथ रखकर अपनी ओर से पूरी कोशिश करें कि उसके व्यवहार में परिवर्तन आ जाए । एक लड़की की मां होने के नाते यह उसके ऊपर अन्याय होगा । उसे पूरा सम्मान दें तथा प्रेम दें । इससे आपकी पत्नी के व्यवहार में परिवर्तन आने की पूर्ण संभावना है । आपके परिवार के लोग भी पत्नी के मायकेवालों से मेलजोल रखें । इन कदमों से आपके यहां सुख-शांति लौटेगी ।

दहेज-मृत्यु और दहेज-हत्या

दहेज हत्या के बढ़ते हुए मामलों को रोकने के लिए भारतीय दंड संहिता व भारतीय साक्ष्य अधिनियम में क्रांतिकारी संशोधन किया गया । भारतीय दंड संहिता १८६० में धारा ३०४ ख जोड़ी गयी, जिसमें यह प्रावधान है कि यदि किसी दुलहन की मृत्यु विवाह के सात वर्ष के भीतर सामान्य परिस्थितियों से अन्यथा, हो जाती है और यदि यह साबित कर दिया जाता है कि दहेज की मांग करने के लिए उसके पति या पति के नातेदारों ने उसके साथ क्रूरता की है या उसे तंग किया था, वहां ऐसी मृत्यु को दहेज-मृत्यु कहा जाएगा और ऐसा पति या नातेदार उसकी मृत्यु कारित करनेवाला समझा जाएगा ([illegible]) । दा.नि.प. १९८३ के मामले में माननीय उच्च न्यायालय ने यह अभिमत व्यक्त किया है कि यदि पति या नातेदारों की क्रूरता तथा मानसिक व शारीरिक प्रताड़ना से तंग आकर पत्नी ने आत्महत्या भी कर ली है तो उसे भी दहेज हत्या माना जाएगा ।

भारतीय दंड संहिता की धारा ३०४ ख [illegible] है, जिसे १९८६ में संशोधन द्वारा अंतःस्थापित किया गया है और इस धारा [illegible] के संबंध में कार्यवाही की जाती है । भारतीय साक्ष्य अधिनियम की धारा ११३ ख भी [illegible] संशोधन करके 'उपधारणा' करने का प्रावधान किया गया है ।

पुराण कथाएं— १०

जय-पराजय

• डॉ. सुधा पांडे

प्रकृति की पूरी गाथा का इतिहास नारी की ही गाथा है...। युग-युग के इतिहास निर्माण की प्रबल भूमिका भी रही है । ऐसे ही क्रम में नारी मन के ईर्ष्या-द्वेषभरे कोलाहल को मुखरित करती शर्मिष्ठा-देवयानी की व्यथा का यह प्रथम चित्र...

"तुझे अपने कुकृत्य का फल भोगना ही पड़ेगा । सम्राट् की कन्या होने के समान अपने को मानती हुई निरंतर झूठा गर्व करनेवाली भिक्षुणी आज तेरी मुक्ति हो जाएगी ।"

क्रोध से थरथराती शर्मिष्ठा देवयानी पर अपने संचित उद्वेग को निकालकर एक बार में ही बदला लेने का संकल्प कर चुकी थी उस दिन... ।

"यह अब जीवनभर सड़े इसी जगह । बहुत गर्व था इसे अपने ऊपर ।" शर्मिष्ठा ने कहा और इठलाती, खिलखिलाती सखियों और दासियों सहित लौट गयी थी अपनी राजधानी की ओर । चीखती-तड़पती देवयानी करुण पुकार करती रही, किंतु उस अंधे कुंए से उस निर्जन वन में उसकी वाणी कौन सुन पाता ? विवश वहीं करुण-क्रंदन करती पड़ी रही ।

शर्मिष्ठा और देवयानी अपने युग की महिमामयी नारी सृष्टि ! देवयानी असुरों के आचार्य शुक्र की लाड़ली कन्या । दैवी सौंदर्य की दीपशिखा-सी, नवयौवन की मादकता से लहराती लावण्यमयी देवयानी...अपने पिता के अमोघ प्रभाव से गर्वभरी देवयानी । दूसरी ओर असुर अधिपति वृषपर्वा की दुहिता शर्मिष्ठा ! राज परिवारों, सम्राटों और आभिजात्यभरे अतिरिक्त नखरों से पली राजपुत्री... ! अपने अहंकार से समस्त राजकुल में कुख्यात हो चुकी थी ।

परस्पर सखियां थीं वे दोनों ही...पर ऊपरी दिखावे के लिए... । अहंकारभरी वाणी, दुर्निवार विष-बुझे तीरों की भांति एक-दूसरे के अंतर को बींधने में सदैव अचूक रहती थीं । ईर्ष्या और डाह से दोनों के अंतर सदैव धधकते रहते थे । एक-दूसरे को नीचा दिखाने में कोई कमी नहीं छोड़ती थीं वे दोनों । पिता शुक्राचार्य और सम्राट् वृषपर्वा पुत्रियों के इस द्वंद्व-प्रतिद्वंद्व को देखकर बचपन का सहज रूप मानकर टाल जाते थे... । समय आने पर सब समझ जाएंगी । ऐसा ही क्रम चल रहा था । पर उस दिन तो उनकी आपसी कलह ने सारी सीमाएं तोड़ दी थीं । सख्य-भाव को वैमनस्य में बदलते देर न लगी ।

"देवयानी पिछले कुछ दिनों से उदास दिख रही है ।" शर्मिष्ठा को उसकी चतुर दासियों ने सूचना पहुंचा दी थी ।

कच के प्रति देवयानी का प्रणय निवेदन और प्रणय को ठुकराकर कच देवलोक को लौट गया है । प्रणय का मोहक जाल, जिसमें फंसी देवयानी रूप-गर्विता बन बैठी थी...क्षणभर में

ही टूट गया था । जाते-जाते कच देवयानी के लिए जीवनभर का दारुण अभिशाप भी छोड़ गया था यह कहकर, "कोई भी ब्राह्मण युवक तुम्हारा वरण नहीं करेगा ।" देवयानी का अंतर करुण दारुण कर उठा था ।

देवयानी कहीं विजन में अकेली पड़ी आहें भर रही है, यह भी शर्मिष्ठा से छिपा न था ।

"देवयानी ! कई दिनों से आप दिखायी नहीं दीं । शर्मिष्ठा आपको स्मरण कर रही हैं ।" शर्मिष्ठा की दासी के स्वर से देवयानी की तंद्रा भंग हुई ।

"कौन ? शर्मिष्ठा ने भेजा है तुम्हें यहां । अरे ! मैं भी कितनी मूर्ख हूं, कितना समय बीत गया, शर्मिष्ठा से भी नहीं मिली हूं ।" देवयानी ने अपनी पीड़ा छिपा ली थी ।

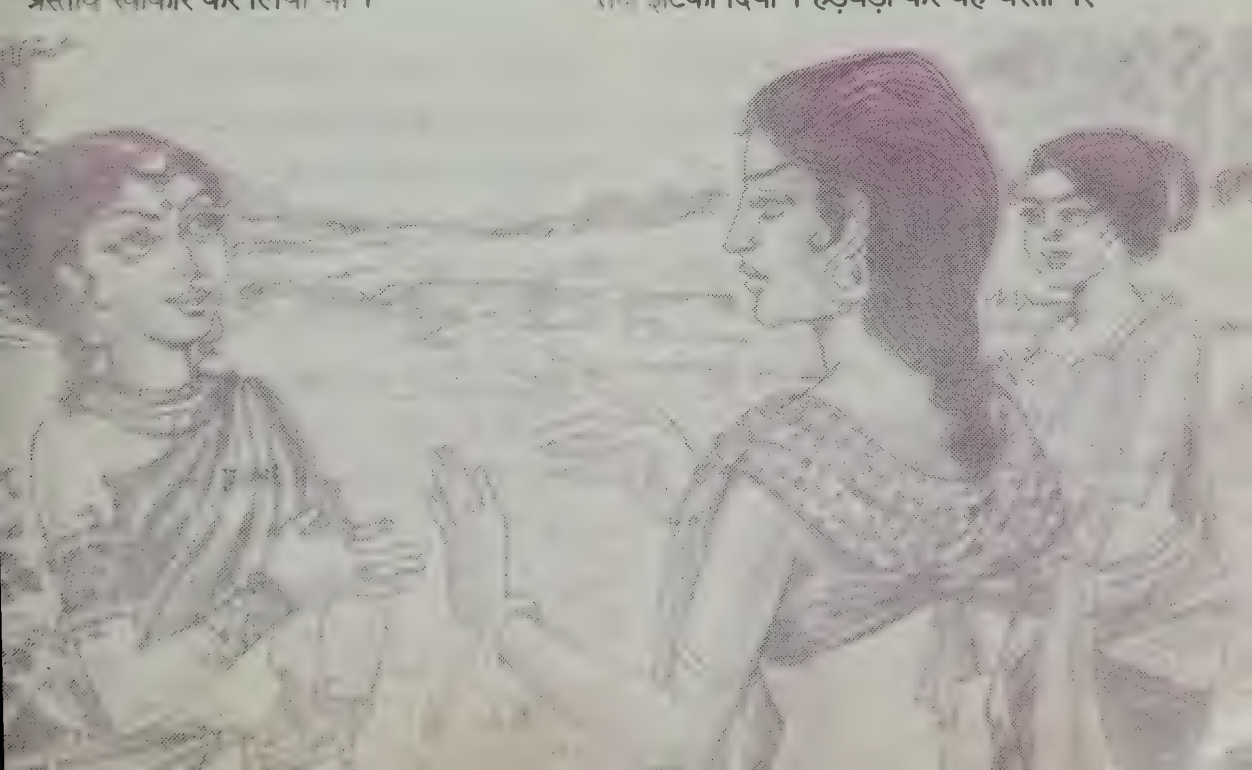
"शर्मिष्ठा ने आपके पास संदेश भेजा है कि आज हम सब सरोवर में जल विहार के लिए जा रही हैं । तुम भी साथ चलो ।"

"ठीक है । मैं भी चलूंगी ।" देवयानी ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था ।

वे सभी बेसुध जलक्रीड़ाओं में मग्न थीं, उसी समय क्षण प्रबल झंझावात चलने लगा । तट पर स्थित वृक्ष उस वात्याचक्र के कारण हरहरा उठे । चारों तरफ धूल और रेत का अंधेरा छा गया । हड़बड़ायी दासियां जब तक वस्त्रों को संभालें, सारे वस्त्र हवा में उड़ ही तो गये । किसी प्रकार दौड़-दौड़कर दासियों ने वस्त्रों को दबाकर उड़ने से रोका ।

कुछ क्षणों तक झंझावात के शांत होने की प्रतीक्षा करती वे सभी बालाएं सरोवर से बाहर आयीं और दासियों से वस्त्र मांगे । झंझावात की हड़बड़ाहट में सभी के वस्त्र आपस में मिल गये थे । सभी को लौटने की व्यग्रता थी । उसी व्यग्रता में दासी ने शर्मिष्ठा को देवयानी के वस्त्र दे दिये ।

"यह क्या किया तूने ?" देवयानी के प्रति क्रोधभरी शर्मिष्ठा चीख उठी थी । देवयानी शर्मिष्ठा के वस्त्र धारण करे, यह उसके लिए असह्य था । दासी पर क्रोधित शर्मिष्ठा ने उसे तेज झटका दिया । हड़बड़ाकर वह धरती पर



गिर गयी थी । अन्य सखियां भयभीत-सी वहीं रुक गयीं ।

"शर्मिष्ठा ! बेचारी दासी को अपमानित करने से लाभ ? और एक सम्राट कन्या को इस प्रकार के अपशब्दों का प्रयोग करना शोभा नहीं देता । तुम्हीं तो मेरे वस्त्र धारण करना चाहती थीं कि मेरे समान सुंदर दिखो ।" देवयानी ने शर्मिष्ठा को रोका था ।

"अरे ! मैं तेरे वस्त्र क्यों पहनने लगी ? तू ही तो सदैव सम्राट की कन्या की बराबरी करने को उत्सुक रहती थी ।" शर्मिष्ठा का क्रोध प्रचंड हो चला था ।

"भिखारिणी ! मेरे पिता की कृपा के टुकड़ों पर पलनेवाली, तुझे दंड मिलना ही चाहिए । तुझे शायद ज्ञात नहीं है कि सम्राट की कन्या के वस्त्र चुरानेवाले को कौन-सा दंड भोगना पड़ता है ?"

शर्मिष्ठा के तीखे वाग्वाणों से बिंध देवयानी भी आपा खो बैठी और उत्तेजना में भरकर बोली, "जा-जा ! अपना मुंह देख, तेरे वस्त्र पहनने से मेरा भी तो अपमान हुआ है । सम्राट पुत्री, मेरे पिता की शक्ति पर ही तो तेरे पिता का राज्य टिका है और इस प्रकार की नीचताभरी बातें करते तुझे शर्म नहीं आती । तू धूर्तता की पराकाष्ठा है ।"

"तेरा इतना साहस ! सम्राट कन्या के मुंह लगती है । मुझसे सीना-जोरी करती है । तू महा नीच है । आज तुझे अपने किये का फल मिल ही जाएगा और वर्षों का मेरे मन का ताप भी शांत हो सकेगा ।" शर्मिष्ठा का स्वर दंभ से भर गया था ।

परस्पर विवाद बढ़ चला था । कोई किसी से कम नहीं । स्त्री-सुलभ प्रवृत्तियों का साकार रूप उपस्थित हो गया था । देवयानी से बदला लेने की जो भीषण ज्वालाएं शर्मिष्ठा के अंतर में वर्षों से सुलग रही थीं, अवसर पाते ही तीव्रतर रूप से धधक उठीं । निरंतर अपशब्दों के वाग्बाणों से वह देवयानी और उसकी दासियों को बींध रही थी । देवयानी की दासियां थर-थर कांप उठी थीं । शर्मिष्ठा के भीषण क्रोध को शांत करने का साहस किसी में भी न था । उसकी क्रोधभरी वाणी को कहीं विराम न था ।

"तुम्हारे व्यर्थ के अभिमान ने ही तुम्हारे मस्तिष्क को विकृत कर रखा है । इसी कारण तुम्हारे सारे वंश का अकल्याण समीप आ पहुंचा है । असुर राज भी तुम्हारे इन कृत्यों से बहुत सुखी नहीं हैं । फिर मेरे पिता के पास तो ज्ञान का कोष है, जो त्रिलोक की अनुपम निधि के समान है । फिर मैं चोरी-जैसा पापकर्म करने को उद्यत क्यों होने लगी ?" देवयानी शांत-संयत स्वर में बोली थी ।

"अरी भिखारिणी ! तेरा इतना दुस्साहस ! मैं तो तुझे कुछ मानती ही नहीं ।" शर्मिष्ठा तेजी से देवयानी की ओर लपकी और पलक झपकते ही दासियों सहित उसने देवयानी को घसीटकर नीचे गिरा दिया । उसके वस्त्र फाड़ डाले । केशों को खींचकर अस्त-व्यस्त कर दिया । उसके बहुमूल्य आभूषण भी तोड़-ताड़ डाले और लातों-घूंसों से मार-मारकर उसे क्षत-विक्षत कर डाला, "ले आनंद मना सम्राट पुत्री के वस्त्र पहनकर राजकुमारी के समान दीखने का..." कहते-कहते उसे पैरों से ही धकेलकर अंधे कुंए में धकेल दिया ।

देवयानी की दासियों को अपने आधीन कर

वह गर्विणी पाप-चित्तवाली शर्मिष्ठा पितृगृह को लौट गयी । नारी के क्रूर रूप से सारा परिवेश भी कांप उठा एक क्षण को । क्रूर शर्मिष्ठा, नीच शर्मिष्ठा, अहंकारी शर्मिष्ठा की प्रतिध्वनियों की अनुगूंज से पेड़-पौधे भी अछूते न रहे ।

देवयानी मर गयी होगी— इस आनंद से भरी शर्मिष्ठा अपने राजभवन में लौट उत्सव, मनोविनोद, राग-रंग में फिर से डूब गयी ।

अंध कूप में पड़ी देवयानी की व्यथा का अंत न था । सांझ उतरने को थी, पर दूर-दूर तक कोई आहट, कोई स्वर नहीं सुनायी दे रहा था । कलरव करते लौटते पक्षियों की चहचहाहट कभी-कभी उस निस्तब्ध परिवेश को मुखर बना देती थी । विवश देवयानी ! किसे पुकारे ? अंतर की वेदना हाहाकार कर उठी और करुण रुदन के स्वरों ने सारे वन-प्रांतर को द्रवित-सा कर दिया ।

संध्या की नीरवता और अधिक सघन हो चली थी । श्रांत आखेटक शिथिल वाहनों और अश्वों को लेकर लौट रहे थे । उन्हीं आखेटक समूह में मृगया से श्रांत नहुष पुत्र ययाति प्यास से व्याकुल होकर उसी कुंए के पास पहुंचे ।

घोड़ों की आहट से देवयानी को आभास हुआ कि समीप कोई आया है । तत्क्षण देवयानी ने कहा, ''कोई बचाओ ! मैं इस अंध कूप में पड़ी विवश व्याकुल हूं । मेरे प्राण यहीं समाप्त हो जाएंगे । मुझे अपने गृह में लौटा हुआ न देखकर मेरे पिता कितने पीड़ित होंगे ? अंतरिक्ष के देवों ! तुम्हीं मेरी प्रार्थना सुनो ।'' देवयानी वेदनाभरे स्वर में अब भी कराह रही थी ।

यह क्या ? यहां कुंए से तो किसी अबला का करुण क्रंदन सुनायी दे रहा है— चौंक पड़े थे ययाति ।

समीप जाकर देखा कि कुंए के अंदर अग्निशिखा के समान तेजस्विनी, रूपवती कन्या पड़ी है और बाहर आने के लिए सहायता ढूंढ़ रही है ।

''कौन हो तुम देवी ? किसने तुम्हारी ऐसी दशा की है ?'' ययाति की उत्कंठा बढ़ चली थी ।

''महाराज ! मुझे इस विपत्ति से उबारें । मैं

> **मैं कन्या होकर भी [illegible] जो मर्म है उसे भली भांति समझ[illegible] और क्रोध-अक्रोध के विषय [illegible] को भी जानती हूं । पर जो [illegible] होकर भी शिष्य के समान आचरण न करे, ऐसे व्यक्ति को कभी क्षमा नहीं करना चाहिए ।**

असुर गुरु आचार्य शुक्र की कन्या देवयानी हूं । वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा ने मुझे इस कुंए में गिरा दिया । आप कृपा कर मुझे इस कुंए से बाहर निकालें ।

''देवयानी ! तुम यहां इस दशा में ?'' महाराज का हृदय रोमांचित हो उठा था । मोहिनी कायावाली, अपार रूपवाली देवयानी को वे पा सकेंगे— इस कल्पना मात्र से उनका अंतर आह्लाद से भर उठा । अंतर के उमड़ते प्यार को थाम वे क्षणभर को ठिठक-से गये ।

''मैं निश्चयपूर्वक जानती हूं...अत्यंत वीर और यशस्वी हैं । आप ही इस अंध कूप में पड़ी

मुझ अबला की सहायता कर सकेंगे ।" देवयानी ने विनीत भाव से याचना की ।

राजोचित धर्म की मर्यादा को ध्यान में रखते हुए ययाति ने उसे अंध कूप से बाहर निकाला । कृतज्ञता से भावाश्रु उमड़ आये देवयानी के नयनों में । कुछ क्षण वहीं ठहरकर ययाति ने देवयानी से वार्ता की और अपने नगर को लौट गये । विह्वल, सुध-बुध खोयी देवयानी स्मृतियों की माला गूंथती रही ।

"मैं अब वृषपर्वा के नगर नहीं लौटूंगी । हे घूर्णिके ! तुम जाकर मेरे पिता को सारी घटना का विवरण दो कि शर्मिष्ठा ने मेरी कैसी दुर्गति की थी ?"

"मेरी पुत्री की ऐसी दशा हो गयी और मुझे इसका पता भी न चला ।" शुक्राचार्य उसी क्षण दासियों सहित वन की ओर चल पड़े थे ।

देवयानी की दुर्दशा देखकर उनका अंतर भी द्रवित हो उठा । हृदय से लगाकर उसे उन्होंने समझाया, "सभी प्राणी अपने ही गुण-दोष के अनुसार सुख-दुःख भोगते हैं । तुमने निश्चय ही कोई बुरा कर्म किया होगा, उसी के परिणामस्वरूप तुम्हें यह फल मिला है ।"

अमर्ष और क्रोध से तमतमा उठा देवयानी का मुखमंडल, "इतनी पीड़ा और अपमान सहने के बाद भी पिताश्री मुझे ही उपदेश दे रहे हैं ।" अंतर के आवेश को रोक न पाने के कारण विवश पिता से बोली थी देवयानी, "यह मेरे कर्म का फल हो या न हो । असुरराज वृषपर्वा की कन्या शर्मिष्ठा ने मुझसे कहा, "आप दैत्यों के भार हैं, तुम स्तुति पाठ करनेवाले और दान लेनेवाले की पुत्री हो और मैं स्तुति किये जानेवाले और सदैव दान देनेवाले, कभी याचना न करनेवाले की पुत्री हूं । अहंकार से भरी वृषपर्वा कन्या शर्मिष्ठा ने निरंतर क्रोध में जलती वाणी से मुझसे ऐसा कहा है । क्या यह सच है ? इस प्रकार गर्हित अपमानभरा जीवन जीना क्या सुखदायक है ?"

"ठीक कहा तुमने । इस प्रकार विषभरे वाग्बाणों को मैं तो क्या कोई भी सहन नहीं कर सकता । फिर भी तुम्हें यह तो भली-भांति ज्ञात है कि तुम स्तुति पाठक और याचक की पुत्री नहीं हो और वृषपर्वा की भांति इंद्र और नहुष पुत्र ययाति भी यह भली-भांति जानते हैं कि मेरा ज्ञानार्जित बल विरोधों से परे अचिंत्य और परम ऐश्वर्यवान है । फिर यह भी सोचो, जो निंदित होकर निंदा को पी जाते हैं, सह जाते हैं, वे ही इस संपूर्ण जगत को जीत पाते हैं, जो अपनी क्षमा से चढ़े हुए क्रोध को दूर कर देता है पुत्री ! वही इस संसार को विजय कर सकता है ।"

आचार्य शुक्र ऐसे अनेक उपायों से देवयानी को समझाने की चेष्टा करते रहे, किंतु देवयानी का स्वाभिमान जाग उठा था । अपना ही पक्ष प्रबल रखते हुए उसने क्षणभर में अपना निर्णय सुना ही दिया था—

"मैं कन्या होकर भी धर्म का जो मर्म है उसे भली-भांति समझती हूं और क्रोध-अक्रोध के विषय में बलाबल को भी जानती हूं । पर जो शिष्य होकर भी शिष्य के समान आचरण न करे, ऐसे व्यक्ति को कभी क्षमा नहीं करना चाहिए । ऐसे निकृष्ट व्यवहार से भरे देश में और अधिक रहने की मेरी इच्छा नहीं है पिताश्री । मैं एक क्षण भी यहां नहीं रुकूंगी ।" देवयानी बिलख पड़ी पिता के सामने और

लिपट गयी थी विह्वल होकर ।

"जैसी तुम्हारी इच्छा बेटी !" पिता-पुत्री ने तत्काल वृषपर्वा का नगर छोड़कर प्रस्थान करने का निश्चय कर लिया था ।

"महाराज ! अनर्थ हो गया है । शुक्राचार्य राजधानी छोड़कर चले गये हैं ।" अमात्यों ने असुरराज को सूचना दी थी । वृषपर्वा के पैरों तले धरती खिसक गयी थी । तत्काल दौड़े वे उसी दिशा में । अपने अमात्यों और स्वजनों से घिरे असुरराज आचार्य शुक्र के चरणों में झुक गये थे—

"महाप्रभु ! इस क्रोध के प्रतिकार के लिए मैं स्वयं प्रस्तुत हूं । मैं सर्वस्व त्यागने को तत्पर हूं, पर आप ऐसा न करें । मुझे इस प्रकार छोड़कर न जाएं ।"

शुक्राचार्य का मन क्रोध और ग्लानि से भरा था । पुत्री की दुर्गति और शर्मिष्ठा की कटुक्तियों से उनका अंतर तार-तार हो चला था । उसी आवेग ने उनका बांध ही तोड़ दिया और फुंफकार उठे असुरराज पर—

"हे राजन ! अधर्म आचरण करने से उसी दिन तो परिणाम नहीं दीख पड़ता, किंतु जैसे धरती जोतने, बोने के अनुसार ही फल देती है, उसी प्रकार अधर्म भी धीरे-धीरे फल देता है । पाप कर्मों का परिणाम अपने में न दिखायी दे तो पुत्र या पौत्र में अवश्य दिखायी देता है । हे वृषपर्वब् ! अधर्मपूर्वक तुमने मेरे ही घर में रहते हुए निष्पापी कच का वध किया और मेरी पुत्री के वध का प्रयास तुम्हारी कन्या द्वारा किया गया । इस महान अनर्थ को देखकर, सहकर मैं क्षणभर भी तुम्हारे राज्य में नहीं रुकना चाहता ।"



आचार्य शुक्र की प्रतारणा से कांप उठे थे असुरराज । "हे भार्गव ! आप हमें छोड़कर न जाइए । यदि आप चले गये तो हम सब समुद्र में डूब जाएंगे, क्योंकि आपके बिना हमारी कोई गति नहीं ।"— गिड़गिड़ाते स्वर में वृषपर्वा ने विनती की थी ।

आचार्य शुक्र यथावत् खड़े रहे । देवयानी के मुखमंडल पर विजय की मुसकान उभर आयी थी । आचार्य का क्रोध अभी शांत नहीं हुआ था । उसी रोषभरे स्वर में कहते गये, "असुर गण ! तुम चाहे समुद्र में डूबो या किसी अन्य दिशा में भाग जाओ, किंतु मैं भी अपनी बेटी के अपमान को नहीं सह सकूंगा । भले ही मैं तुम लोगों का आचार्य हूं । पर मेरा जीवन देवयानी के आधीन है ।"

असुरराज की चिंता बढ़ चली थी, "हे भार्गव ! इस धरती पर असुरों की जितनी भी संपदा है, आप ही उन सबके और मेरे भी स्वामी हैं ।" वृषपर्वा ने पुनः याचना की थी ।

आचार्य शुक्र अपनी बात पर अडिग थे । आश्चर्य-मिश्रित स्वर में उन्होंने फिर कहा, "हे असुरराज ! यदि असुरों की सारी संपदा और ऐश्वर्य का मैं अधिपति हूं तो मेरा आदेश है कि तुम देवयानी को ही प्रसन्न करो ।"

यह सब क्षणिक लोभ की माया फैलाकर आपको भ्रम में डालने की बात कह रहे हैं पिताश्री । यह कोई नहीं जानता कि दैत्यराज की सारी संपत्ति के अधिपति आप ही हैं, मैं भी तो नहीं जानती । यदि ऐसा ही सच है तो असुरराज स्वयं आकर मुझसे यह बात कहें ।'' देवयानी का सोया स्वाभिमान बोल उठा था ।

''प्रिय देवयानी ! मैं तुम्हारी समस्त कामनाएं पूर्ण करूंगा । तुम्हारी काम्य वस्तु दुर्लभ और मेरे द्वारा अदेय भी हो तो मैं उस कामना को भी पूर्ण करूंगा ।'' वाणी में कोमलता लिए स्वर में वृषपर्वा ने देवयानी से अनुरोध किया ।

देवयानी को मानो इसी अवसर की तो प्रतीक्षा थी । शर्मिष्ठा से बदला लेने की भावना से उसके अंतर्मन में सैकड़ों लहरें तरंगित हो उठीं । नयनों में सहस्रों दीप जल उठे थे । ईर्ष्या की भंगिमाएं उसके मुख पर साफ झलक रही थीं । त्रैलोक्य का अधिपति असुरराज वृषपर्वा और गर्विणी शर्मिष्ठा का पिता देवयानी के समक्ष विनीत भाव से खड़ा था ।

''शर्मिष्ठा ने मेरी जो दुर्गति की है उसका परिणाम तो उसे भोगना ही पड़ेगा । मैं कामना करती हूं कि सहस्रों कन्याओं समेत शर्मिष्ठा मेरी दासी बने । मेरे पिता जहां मुझे दान करें, शर्मिष्ठा वहां भी दासी बनकर मेरे साथ जाए ।'' देवयानी ने कठोर आदेश सुनाया ।

अवसन्न रह गये थे वृषपर्वा, फिर भी दिये वचन का पालन तो करना ही था । दासी को आदेश दिया, ''उठो, शीघ्रता करो । शर्मिष्ठा को यहां ले आओ ।'' वाणी कांप रही थी उनकी ऐसा आदेश देते हुए । देवयानी की कामना से उनकी पुत्री का पराभव उनके सामने ही होगा, इसकी कल्पना भी न की थी उन्होंने । सम्राट पुत्री दासी बनकर रहेगी । नियति का कैसा विलक्षण खेल था यह ।

''भद्रे शर्मिष्ठा, उठो ! अपने बंधुओं का कल्याण करो । हे कल्याणी ! आज देवयानी जो भी कामना करेगी, उसे तुम्हें पूरा करना पड़ेगा, ऐसा तुम्हारे पिता का आदेश है ।'' दासी ने शर्मिष्ठा को जाकर सूचना दी थी ।

''पिता की आज्ञा शिरोधार्य है ।'' कहती, बहुमूल्य वस्त्राभूषणों से अलंकृत श्रेष्ठ पालकी पर आरूढ़ सहस्र कन्याओं से अनुगता शर्मिष्ठा का वैभव आज मानो उसके भाग्य पर ही उपहास कर उठा ।

''जिस उपाय से दुःखी बंधु वर्ग सुखी रह सके, वही कार्य मुझे करना होगा । इसलिए मैं निरंतर तुम्हारी अनुगता रहूंगी ।'' असुर सम्राट की पुत्री ने देवयानी का दासीत्व स्वीकार कर लिया था । देवयानी की विजय हुई और शर्मिष्ठा भी अपने पिता की कठोर आज्ञा और प्रजाजनों की कल्याण कामना से विमुख न हो सकी । शर्मिष्ठा दासी बन चुकी थी । आचार्य के विज्ञान और विद्या के बल ने भौतिक सुखों पर विजय प्राप्त कर ली । मन की भौतिक वंचनाओं का असुर ज्ञानाध्यात्म की प्रखर ज्वालाओं में भस्म हो चुका था । असुर सम्राट राजधानी लौटे । शुक्राचार्य का महत्त्व और अधिक बढ़ गया, किंतु क्या देवयानी-शर्मिष्ठा का मानसिक द्वंद्व समाप्त हुआ ? घायल नागिन की भांति तड़पती रही उन दोनों की विरल वेदना ।

—प्राचार्य
एम.के.पी. पो. ग्रे. कॉलेज, देहरादून

गजल

आपसे किसने कहा

आपसे किसने कहा स्वर्णिम शिखर बनकर दिखो
शौक दिखने का है तो फिर नींव के अंदर दिखो

चल पड़े तो गर्द बनकर आसमानों पर दिखो
और अगर बैठो कहीं तो मील का पत्थर दिखो

सिर्फ दिखने के लिए दिखना कोई दिखना नहीं
आदमी हो तुम अगर तो आदमी बनकर दिखो

जिंदगी की शक्ल जिसमें टूटकर बिखरे नहीं
पत्थरों के शहर में वो आईना बनकर दिखो

आपको महसूस होगी तब हर एक दिल की जलन
जब किसी धागे-सा जलकर मोम के भीतर दिखो

एक जुगनूं ने कहा मैं भी तुम्हारे साथ हूं
वक्त की इस धुंध में तुम रोशनी बनकर दिखो

लोग ऊंचे दाम पर तुमको खरीदेंगे जभी
इस नुमाईशगाह में सबसे अलग हटकर दिखो

एक मर्यादा बनी है हम सभी के वास्ते
गर तुम्हें बनना है मोती सीप के अंदर दिखो

पंछी ! इनसे आ रही है कातिलों की आहटें
उड़के इन पूजाघरों से अपनी शाखों पर दिखो

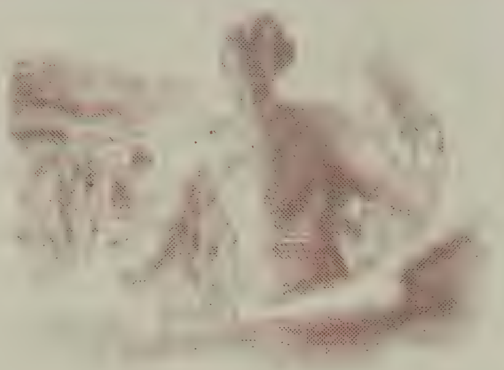
डर ना जाए फूल बनने से कोई नाजुक कली
तुम ना खिलते फूल पर तितली का टूटा पर दिखो

कोई ऐसी शक्ल तो मुझको दिखे इस भीड़ में
मैं जिसे देखूं उसी में तुम मुझे अक्सर दिखो

ऐशगाहें चाहती हैं सब लुटा चुकने के बाद
तुम किसी तंदूर में, हंसते हुए जलकर दिखो

• माणिक वर्मा

पॉवर हाउस के पीछे,
हरदा (म. प्र.) ४६१३३१



आदमी की भीड़ में

आदमी की भीड़ में तनहा खड़ा है आदमी
प्यार का घर खोजता यूं फिर रहा है आदमी ।

यह हुई कैसी तरक्की, घर से हम बेघर हुए
आज बनजारा बना फिरता यहां है आदमी ।

किससे हम शिकवा करें, किससे करें हम आरजू,
देवता ही नहीं, जब पत्थर बना है आदमी ।

एक चेहरे पर कई चेहरे लगाते लोग जब
आज रहबर दोस्त भी रहजन हुआ है आदमी ।

प्यार की खुशबू यहां क्यों दूर तक मिलती नहीं,
नफरतों के कैक्टस से यूं घिरा है आदमी ।

राजधानी दिल की दिल्ली में भी दिलवाले कहां,
दिल बदले दिल्लगी सहता यहां है आदमी ?

देश क्या है, धर्म क्या, भाषा न, भाई है कहीं,
चंद सिक्कों के लिए जब बिक रहा है आदमी ।

• राधेश्याम बंधु

बी-३/१६३ यमुना विहार
दिल्ली-११००५३

वैद्य की सलाह

मीनाक्षी, रतलाम

प्रश्न : पैंतीस वर्षीय अविवाहिता हूं । पेट में नाभि से नीचे बायीं ओर कुछ उभरा व सख्त मालूम पड़ता है । अनेक चिकित्सकों को दिखाया, जांच भी की । पहले तो ऑपरेशन के लिए कहा । जब अन्य चिकित्सकों से परामर्श किया तो उन्होंने ऑपरेशन करने के लिए मना किया । उनकी राय थी कि दवा खाने से ठीक हो जाएगा । सभी हाल पत्र में लिख दिये हैं । मैं आयुर्वेदिक दवा खाना चाहती हूं ।

उत्तर : 'कांचनार गूगल' दो वटी, चंद्रप्रभावटी एक, आरोग्य वर्धनी वटी एक लेकर सुबह-शाम गरम पानी से लें । कांकायन वटी दो-दो भोजन के बाद पानी से लें । अविपत्तिकर चूर्ण एक-एक चम्मच रात दूध से लें । दही, चावल और वायुकारक वस्तुएं, सरसों का तेल, खटाई का सेवन न कर छह माह नियमित औषधि सेवन करें ।

अनुराधा, सिंभावली

प्रश्न : मेरे सुपुत्र की आयु १२ साल है । सिर के बाल बहुत झड़ते हैं । याददाश्त भी कमजोर है । बहुत चंचल है । वैसे स्वस्थ है । ऐसी दवा लिखें जो आसानी से सुलभ हो सके ।

उत्तर : आंवला सूखा सौ ग्राम और शंखपुष्पी सौ ग्राम बारीक चूर्ण करें । आधा-आधा चम्मच सुबह और रात दूध से दें । नियमित तीन माह औषधि प्रयोग करायें ।

सीमा, राऊरकेला

प्रश्न : इक्कीस वर्षीय छात्रा हूं । मेरे शरीर पर लाल-लाल चकत्ते हो गये हैं । पहले पैर, छाती और गले पर थे । अब पूरे शरीर में फैलने लगे हैं ।

उत्तर : गंधक रसायन पंद्रह ग्राम और बावची चूर्ण तीस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम पानी से लें । खदिरारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पियें । खटाई, दही और सरसों के तेल का परहेज कर एक वर्ष नियमित औषधि सेवन करें ।

मनोज, पटियाली

प्रश्न : उम्र इक्कीस साल है । मानसिक अवसाद, शारीरिक कमजोरी और पेट खराब रहता है । थूक बहुत आता है । पढ़ाई में मन नहीं लगता ।

उत्तर : अविपत्तिकर चूर्ण एक चम्मच और शंखपुष्पी चूर्ण आधा चम्मच लेकर सुबह-शाम पानी से लें । अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच और सारस्वतारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद पियें । खटाई और देर से पचनेवाली वस्तुएं सेवन न कर एक वर्ष नियमित औषधि सेवन करें ।

ज्वाला प्रसाद, मालथौन

प्रश्न : उम्र पैंसठ साल है । तीन साल से दाहिनी तरफ छाती में दर्द होता है । अब गरदन व कमर में भी होने लगा है । सुबह के समय खांसने से बलगम निकलता है ।

उत्तर : योगराज गूगल एक वटी, व्योशादि वटी एक सुबह-शाम गरम पानी से लें । अश्वगंधारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद लें । शीतल पेय, वायुकारक वस्तुओं का परहेज कर तीन माह नियमित औषधि सेवन करें ।

बेणी प्रसाद, ककोड़

प्रश्न : पचपन वर्षीय हूं । गुदा मार्ग पर हर समय खारिश होती रहती है । कभी-कभी बैठना भी मुश्किल होता है । अकसर कब्ज बनी रहती है । परहेज के साथ अच्छी दवा लिखें ।

उत्तर : आरोग्यवर्धनी वटी दो-दो सुबह-शाम पानी से लें । अभयारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पानी से लें । त्रिफला गूगल दो-दो वटी रात पानी से लें । खटाई, मिर्च, अरबी, भिंडी, राजमां, उड़द, बैगन आदि का सेवन न कर छह सप्ताह नियमित औषधि सेवन करें ।

लक्ष्मणसिंह, अल्मोड़ा

प्रश्न : पत्नी की उम्र अट्ठाइस वर्ष है । पेट का निचला भाग बढ़ता जा रहा है । मासिक स्राव ठीक नहीं होता है । स्राव नाममात्र है । अभी छह माह का बेटा है । दूध पीता है । पेट में हलका-हलका दर्द भी होता रहता है । बहुत कमजोर है । हाथ-पैर कभी-कभी सूज जाते हैं । चेहरा पीला नजर आता है ।

उत्तर : पुनर्नवामन्डूर पंद्रह ग्राम, शोथारिलोह दस ग्राम, शंख भस्म दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । [illegible] चम्मच, द्राक्षारिष्ट एक [illegible] में जल मिलाकर भोजन के [illegible]

सितोपलादि चूर्ण तीस ग्राम, मुक्ताशुक्ति भस्म पांच ग्राम लेकर तीस मात्रा बनायें । एक मात्रा रात दूध से लें । हलका सुपाच्य भोजन सेवन कर तीन माह नियमित औषधि सेवन करें ।

वृषपाल, कैथल

प्रश्न : मेरी उम्र पैंतीस वर्ष है । पैरों की अंगुलियों के बीच घाव हो जाते हैं । कभी-कभी तो इतना परेशान हो जाता हूं कि चलना भी मुश्किल हो जाता है । तरह-तरह की दवा लगा चुका हूं । कुछ समय लाभ मिलता है, फिर वही स्थिति आ जाती है । कृपया कोई दवा बतायें ?

उत्तर : पिसी हल्दी सरसों के तेल में मिलाकर सुबह और रात यथास्थान लगायें । साथ में केशोर गूगल एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से लें । सारिवाद्यासव दो-दो चम्मच भोजन के बाद पियें । खटाई और दही का सेवन न कर तीन माह औषधि सेवन करें ।

श्रीमती सपना, अंबाला

प्रश्न : उम्र २६ वर्ष है । तीन वर्ष विवाह के हो चुके हैं । संतान नहीं । मान प्रतिष्ठा के कारण किसी को बताना उचित नहीं । पति सीधे व समझदार हैं, किंतु उनकी कुछ भूलों के कारण गृहस्थ सुख नहीं । पत्र में सब कुछ लिख दिया है । अच्छी से अच्छी औषधि लिखें । आभारी रहूंगी ।

उत्तर : कौंच बीज चूर्ण सौ ग्राम, [illegible] तीस ग्राम, वृहद वंगेश्वरर [illegible] मात्रा बनायें । एक-एक [illegible]

लेकर अस्सी मात्रा बनायें । दिन में दो बार आठ घंटे के अंतराल से शहद से लें । दही और खटाई का परहेज कर छह माह नियमित औषधि सेवन करें ।

अशोक, बदरपुर

प्रश्न : माताजी की उम्र साठ साल है । सिर दर्द, पेट दर्द और घबराहट रहती है । खाने की इच्छा नहीं करती । कब्ज के साथ-साथ नींद कम आती है । सभी प्रकार के परीक्षण करवाये, सब ठीक हैं । कृपया कोई दवा बतायें ।

उत्तर : शूलवगुणी वटी एक और शिरःशूलादि वज्र रस एक वटी लेकर सुबह-शाम पानी से दें । कांकायन वटी दो-दो भोजन के बाद पानी से दें । त्रिफला चूर्ण एक बड़ा चम्मच रात सोने से पहले गरम दूध से दें । देर से पचनेवाली वस्तुएं सेवन न कर छह सप्ताह नियमित औषधि सेवन करें ।

श्रीमती रंजना, जबलपुर

प्रश्न : उम्र अट्ठाइस साल है । दो संतानें हैं । साल में चार-पांच बार दौरे पड़ जाते हैं । दौरे पड़ने के बाद बहुत कमजोर हो जाती हूं । अजीब तरह की बेचैनी काफी दिनों तक बनी रहती है । अब याददाश्त भी कमजोर हो गयी है । काम करने में मन नहीं लगता । गृहस्थ जीवन में भी पति को सुख नहीं दे पा रही हूं । अपने आप से परेशान हूं । अभी तक ऐलोपैथी दवाओं का प्रयोग किया है । चार साल के बाद भी परेशानी बढ़ी है ।

उत्तर : वचादि चूर्ण तीस ग्राम, वात्तकुलान्तकरस दस ग्राम की अस्सी मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम दूध से लें । अश्वगंधारिष्ट एक बड़ी चम्मच, सारस्वतारिष्ट एक बड़ी चम्मच भोजन के बाद लें । ब्रहम रसायन एक-एक चम्मच रात दूध से लें । आहार-विहार का परहेज कर नियमित एक वर्ष औषधि सेवन करें ।

शोभना, सवाई माधोपुर

प्रश्न : उम्र ३५ साल है । छह माह पूर्व फाजिल हो गया था । मुंह टेढ़ा तथा नसों में खिंचाव और सिर में भारीपन था । इलाज से ठीक हो गया । अब पुनः असर हो रहा है । कमजोरी आ गयी है ।

उत्तर : त्रयोदशांग गूगल साठ ग्राम, अश्वगंधादि चूर्ण सौ ग्राम और रसराज रस तीन ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-रात दूध से लें । अश्वगंधारिष्ट एक चम्मच, दशमूलारिष्ट एक चम्मच भोजन के बाद दोनों समय पियें । चावल, दही, शीतल पेय और खट्टी वस्तुएं सेवन न करें । उड़द, लहसुन और हींग का प्रयोग विशेष रूप से सीमित मात्रा में कर तीन माह नियमित औषधि सेवन करें ।

—कविराज वेदव्रत शर्मा

अपने समूह के दूसरे साथियों को संदेश देने के लिए हिरण अपनी पूंछ का प्रयोग करते हैं ।

दिशाओं में हलकी-सी गुलाबी और फिर जोगिया आभा के चिह्न उभरने लगे हैं। उषा का अवतरण होने को है, जिसके उजाले से भरपूर पांव कुछ ही घंटों में इस सुविस्तृत नील जल पर थिरकने लगेंगे।

गंगा का सागर में मिलन

लेकिन हमारा गंतव्य तो गंगासागर है। जो, सुंदरवन या 'सागरद्वीप' का दक्षिणी हिस्सा है। तीस कि.मी. लंबे और ९ कि.मी. चौड़े इस पवित्र द्वीप को भारत का अन्यतम तीर्थ माना जाता है। गंगा यहां आकर सागर में मिलती है

सारे तीरथ बार-बार : गंगासागर एक बार

—आलेख एवं छाया : डॉ. हरिमोहन

और स्वयं सागर बन जाती है, इसलिए इसे 'गंगासागर' नाम ठीक ही मिला है।

सामने दिग् दिगंतव्यापी विशाल नील समुद्र, बायीं ओर हरा-भरा वन, अनंत आकाश के तले पिघली चांदी की तरह चमचमाती रेतीली भूमि और इस समूचे परिवेश में विद्यमान कपिल मुनि का मंदिर। यह मंदिर ही गंगासागर का एकमात्र मान्य पूज्य मंदिर कहा जाता है। यों तो यहां आसपास और भी कई मंदिर हैं, जिनमें से नागा संन्यासी पंचम गिरि द्वारा प्रतिष्ठित चिंता हरनेश्वर महादेव का मंदिर, योगेश्वर श्री सीताराम ओंकारानंदजी का योगेन्द्र मठ, शिवशक्ति महानिर्वाण आश्रम, भारत सेवा संघ, इत्यादि प्रमुख रूप से दर्शनीय हैं लेकिन मुख्य रूप से माहात्म्य कपिलमुनि मंदिर का ही माना गया है।

यह मंदिर बहुत पुराना नहीं है। सन् १९७३ में बना है। बताया गया कि पहले समुद्र के बीच में एक मंदिर हुआ करता था। वह डूब गया। फिर एक मंदिर और बनाया गया, वह भी डूब गया। वर्तमान मंदिर चौथी बार बना है। मंदिर में सिंदूरपुती अनघड़-सी कुछ प्रस्तर प्रतिमाएं रखी हैं। इनमें से एक प्रतिमा महामुनि कपिल की है, जो योगासन में विराजमान हैं। उनके बायें हाथ में कमंडल तथा दायें हाथ में जप-माला है। मस्तक पर पंचमुखी नाग का छत्र फैला हुआ है। कपिलमुनि के एक ओर मकरवाहिनी मां गंगा की प्रतिमा है, जिनकी गोद में भगीरथ विराजमान हैं और दूसरी ओर महाराजा सगर की प्रतिमा है। पश्चिम में विराजमान हैं पवनसुत हनुमान। पूर्व में यज्ञ के घोड़े की वल्गा थामे इंद्र और व्याघ्रवाहिनी मां विशालाक्षी देवी हैं।

गंगासागर एक बार

गंगासागर तट पर प्रतिवर्ष मकर संक्रांति पर एक विशाल मेला लगता है। उस दिन दूर-दूर से आये लाखों श्रद्धालु सागर-स्नान करते हैं। 'मकर संक्रांति' सूर्य के मकर रेखा से उत्तर की ओर अर्थात् उत्तरायण में जाने का समारोह कहा गया है। देश के अलग-अलग भागों में इसे अलग-अलग नाम दिये गये हैं। जैसे दक्षिण भारत में 'पोंगल', पूर्वोत्तर में 'विहू'। मकर संक्रांति के पर्व पर प्रायः पूरे देश में नदियों-जलाशयों-सागर के तट पर मेले जुड़ते हैं। इनमें सबसे बड़ा मेला गंगासागर का ही है। इसलिए यह मान्यता भारतीय जनमानस में न जाने कब से प्रचलित चली आ रही है कि 'सारे तीरथ बार-बार, गंगासागर एक बार'! अर्थात् सब तीर्थ अनेक बार करने पर जिस फल की प्राप्ति होती है, वह फल गंगासागर में एक बार की यात्रा से ही मिल जाता है। इसके मूल में शायद यह बात भी रही है कि गंगासागर की यात्रा सब तीर्थों से कठिन है। लेकिन अब यह यात्रा इतनी कठिन नहीं रह गयी।

गंगासागर तट पर मकर संक्रांति के विशाल मेले का उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में मिलता है। इसका संबंध मंदिर में स्थापित मूर्तियों से भी जुड़ा है। ऐसा पौराणिक आख्यान है कि प्राचीनकाल में अयोध्या में इक्ष्वाकु वंश के सगर नाम के राजा थे। उन्होंने एक अश्वमेघ यज्ञ किया था। इस यज्ञ का विधान था कि इसमें यज्ञ की घोषणा के साथ एक हृष्टपुष्ट अश्व सजा-संवारकर छोड़ दिया जाता था। उस अश्व के साथ किसी वीर सेनापति के नेतृत्व में एक विशाल सेना चला करती थी। वह अश्व जिस-जिस राज्य के भीतर से गुजरता था, उस-उस राज्य के राजा यदि घोड़े को बांध लेते, तो युद्ध करना होता था। पराजय के बाद उस राज्य का राजा यज्ञकर्त्ता राजा की आधीनता स्वीकार कर लेता था। यदि कोई राजा घोड़े को नहीं बांधता और निर्विघ्न अपने राज्य के भीतर से गुजर जाने देता था, तो इसका स्वतः ही यह अर्थ था कि उस राज्य के राजा ने यज्ञकर्त्ता राजा की आधीनता स्वीकार कर ली है। राज्य-विस्तार के लिए बड़े-बड़े राजा ऐसा यज्ञ किया करते थे। तो, महाराजा सगर ने अपने यज्ञ के घोड़े के साथ अपने साठ हजार पुत्रों को भेजा। उनके प्रतापी पुत्र भारत-विजय के लिए निकल पड़े। सगरपुत्रों का पराक्रम देख इंद्र भी भयभीत हो गये। मेरा सिंहासन न छिन जाए, इस भय से भयभीत इंद्र ने राक्षस का वेश बनाया और यज्ञ के उस घोड़े को चुराकर पाताल लोक ले गये। वहां महर्षि कपिल ध्यानस्थ बैठे थे। इंद्र ने घोड़े को उनके पास ही बांध दिया और स्वयं वहां से चले गये। एक वर्ष बीत गया। न घोड़ा लौटा, न उसके रक्षक सगर-पुत्र। इससे सगर को चिंता हुई। सगर-पुत्र अलग चिंतित थे कि घोड़ा गया तो कहां गया? उन्होंने समूची पृथ्वी छान मारी। घोड़ा कहीं नहीं मिला। अंत में वे समुद्र के किनारे पहुंचे। वहां उन्होंने समाधिस्थ कपिलमुनि को देखा, जिनके पास ही यज्ञ-अश्व बंधा हुआ था। सगरपुत्रों ने सोचा यह मुनि ही अश्वचोर है। उन्होंने कपिलमुनि पर प्रहार किया। कपिलमुनि ने आंखें खोलीं। उन्हें बहुत क्रोध आया। उनकी क्रोधाग्नि में सगर के वे साठ हजार पुत्र भस्म हो गये। इधर संशयग्रस्त

गंगा का अंतिम बिंदु यहीं है । यहीं गंगा सागर में मिलती है । इसी स्थान पर कपिलमुनि का तपस्थल माना गया है । इसलिए इस भूमि का पौराणिक-आध्यात्मिक महत्त्व है । इसी भावना से लाखों यात्री प्रतिवर्ष यहां स्नान करने आते हैं ।

सगर ने अपनी दूसरी पत्नी केशनी के पुत्र असमज के बेटे अंशुमान को भेजा कि वह यज्ञ-अश्व तथा अपने साठ हजार भाईयों को ढूंढ़कर लाये । संपूर्ण पृथ्वी पर घूमने के उपरांत अंशुमान पाताल लोक गया । वहां उसने कपिलमुनि को तपस्यालीन देखा । पास ही में अश्व बंधा था । सामने विशाल भस्मराशि थी । मुनि के चरणों में प्रणाम कर उसनें दीनतापूर्वक सगरपुत्रों का हाल पूछा । मुनि ने सारी घटना सुनाकर कहा, "गंगा के आगमन से ही इनकी मुक्ति संभव है । तुम अश्व लेकर जाओ और महाराज से यज्ञ संपन्न करने को कहो ।"

गंगा पृथ्वी पर आयी

अंशुमान अश्व लेकर लौट आया और उसने पूरी घटना कह सुनायी । सारी घटना सुनकर महाराज सगर ने अपना संपूर्ण राज्य अंशुमान को सौंप दिया और स्वयं गंगा की खोज में चल पड़े । गंगा कहीं नहीं मिली और हताश सगर ने आत्महत्या कर ली । तब अंशुमान ने अपने कुल के उद्धार के लिए तपस्या की और गंगा की खोज में निकल पड़े । उन्हें भी सफलता नहीं मिली । उनके बाद उनके वंश के दिलीप ने भी तप किया, लेकिन सफलता नहीं मिली । तब दिलीप के पुत्र भगीरथ ने घोर तप के बाद गंगा को पृथ्वी पर उतार लाने में सफलता प्राप्त की और अपने पूर्वजों की श्रापग्रसित आत्माओं को मुक्त किया ।

गंगा का अंतिम बिंदु यहीं है । यहीं गंगा सागर में मिलती है । इसी स्थान पर कपिलमुनि का तपस्थल माना गया है । इसलिए इस भूमि का पौराणिक महत्त्व है । इसी भावना से लाखों यात्री प्रतिवर्ष यहां स्नान करने आते हैं ।

"यह मेला कब से लगता है ?" इसका कोई निश्चित उत्तर नहीं है । "हजारों साल से ।" ऐसा उत्तर मिलेगा । कुछ पुरानी पुस्तकों में इस मेले का उल्लेख है । जैसे— 'फेयर्स एंड फैस्टिवल ऑव वेस्ट बेंगाल' (अशोक कुमार मित्र) नामक पुस्तक में आजादी से पूर्व के बंगाल के लगभग १५१९ मेलों का उल्लेख है, जिनमें गंगासागर का मेला सबसे बड़ा कहा गया है । इसी तरह 'फ्रैंड्स ऑव इंडिया' नामक पुस्तक में यहां के मंदिर तथा मेले का उल्लेख है । एच.एच. विल्सन की पुस्तक 'एस्सेज ऑन रिलिजंस ऑव हिंदू' में कहा गया है, 'मंदिर के निकट एक बहुत बड़ा वटवृक्ष था । उस वटवृक्ष के मूल में राम तथा हनुमान की दो मूर्तियां थीं । कपिलमुनि से प्रार्थना करने के पश्चात् तीर्थयात्री मंदिर की दीवारों पर अपना नाम लिख दिया करते थे । वटवृक्ष की शाखा में छोटे पत्थरों के टुकड़ों को बांधकर तीर्थ के देवी-देवताओं से धन, स्वास्थ्य आदि की प्रार्थना किया करते थे । मंदिर के पीछे एक कुंड था ।

लोग इसे सीता कुंड कहते । दक्षिणा लेकर पुरोहित उसमें से थोड़ा जल यात्रियों के हाथों में दे दिया करते । इसका पान कर यात्री स्वयं को धन्य समझते । कुंड का जल प्रतिदिन शाम को समाप्त हो जाता, लेकिन दूसरे दिन पुनः कुंड पानी से भरा रहता ।

कुछ स्त्रियां गंगासागर तीर्थ में जाकर विशेष विधि से पूजन के पश्चात् बच्चे को एक छोटी-सी पटिया में रखकर उसे समुद्र में बहा देतीं । कथाकार बंकिमचन्द्र के 'कुंडला' नामक उपन्यास में इस प्रथा का वर्णन है । रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविता 'देवतार ग्रास' में भी इस प्रथा का संदर्भ है । सन् १८०२ में लॉर्ड वेलेसली ने इस जघन्य प्रथा को कानून द्वारा बंद किया । आजकल संतान-विसर्जन की बात सुनने-देखने में नहीं आती । हां, इतना अवश्य है कि तीर्थयात्री पैसा, सोना, चांदी, फल-फूल, नारियल आदि अन्य तीर्थों की भांति यहां भी सागर में अर्पण करते हैं । कुछ पंडे-पुजारी सागरतट पर उनसे पूजा कराते मिल जाएंगे ।

प्राचीन समय में गंगासागर की यात्रा सहज नहीं थी । अब काफी सुविधा हो गयी है । हम जून के अंत में गये थे । गरमी थी । वर्षा कम थी । कलकत्ता से बस द्वारा 'हाडू प्वाइंट' (हार्डवुड प्वाइंट) तक आये । यह बस कलकत्ता बस स्टेशन से नामखाना तक थी । नामखाना की दूरी है ११३ कि.मी. । आप चाहें तो कलकत्ता से डाइमंड हार्बर तक आ जाएं । वहां से ५३ कि.मी. काकद्वीप या कुछ और चलकर नामखाना पहुंच सकते हैं । काकद्वीप या हाडू प्वाइंट से कुछ हटकर सागर तट है । वहां से आधे घंटे के जल-सफर से दूसरे तट पर उतर जाएंगे । नामखाना से भी लांच द्वारा चेमागाड़ी उतर जाएंगे । हम हाडू प्वाइंट से लांच द्वारा आधे घंटे के सफर के बाद उस पार कचुबेड़िया पहुंचे । कचुबेड़िया से बस मिल गयी थी, जिसने ३० कि.मी. चलकर हमें गंगासागर जा उतारा था । यहां बस स्टैंड के पास ही था, 'भारत सेवा आश्रम', जिसमें हमारे ठहरने की सुंदर व्यवस्था थी ।

इन दिनों यहां भीड़ नहीं रहती । पचास-सौ यात्री कभी-कभार आते रहते हैं । हम तो पूरे दस दिन रहे । इन दस दिनों में आसपास के गांव भी देखे । यहां के निवासी बहुत सीधे-सरल हैं । गरीबी की मार से मुरझाये, किंतु प्रकृति के आंगन में खेलते अपने लिए प्रकृति से जीवन के साधन जुटा लेते हैं । यहां पान की खेती खूब होती है । बांस की बनायी गयी पानवाड़ी में सहेजकर 'पालते' हैं, पान की बेलों को । सूर्यबिंदा गांव के विमचरन गिरि बताते हैं कि बहुत परिश्रम और जोखिम की खेती होती है पान की । बृहस्पतिवार के दिन एक स्थानीय हाट में गये तो देखा पान, मछली, बांस की टोकरियां, सूप, मछली मारने के यंत्र, आलू, लालमिर्च, केले, आम आदि बिक रहे थे । लालमिर्च और तंबाकू की खेती भी यहां पर्याप्त होती है ।

यह हमारे लौटने की सुबह से पूर्व की शाम थी । खुली ठेली या रेहड़ीनुमा साइकिल-रिक्शा पर बैठे हुए हम सड़क पर खुली हवा खाते हुए लौट रहे थे । गांव के लोग यत्र-तत्र मछली पकड़ने के जाल बुन रहे थे । किसी-किसी घर के लोग घर के पास बने ताल से मछली पकड़ रहे थे । जेनरेटर से कुछ घंटों के लिए बिजली



कपिल मुनि मंदिर

मिल जाएगी तब रोशनी होगी और सड़क किनारे के इस गांव में बना वीडियो 'सिनेमाघर' मनोरंजन करने लगेगा । आठ कि.मी. चलकर मैं गंगासागर लौट रहा हूं । सागर पर सुरमई अंधेरे की चादर उतरने लगी है । गहराते अंधेरे में धीरे-धीरे कुछ रोशनियां उभरने लगी हैं । आकाश के अंधेरे में भी तारे रजनीगंधा और चमेली के फूलों की तरह तैरने लगे हैं ।

— पो. बॉक्स-२०, श्रीनगर (गढ़वाल)-२४६१७४

सभी पारदर्शी: लेखक



बाजार में लाल मिर्च



सागर तट पर स्नानार्थी



डीलक्स हट, बाहर



देशी भोजन कक्ष

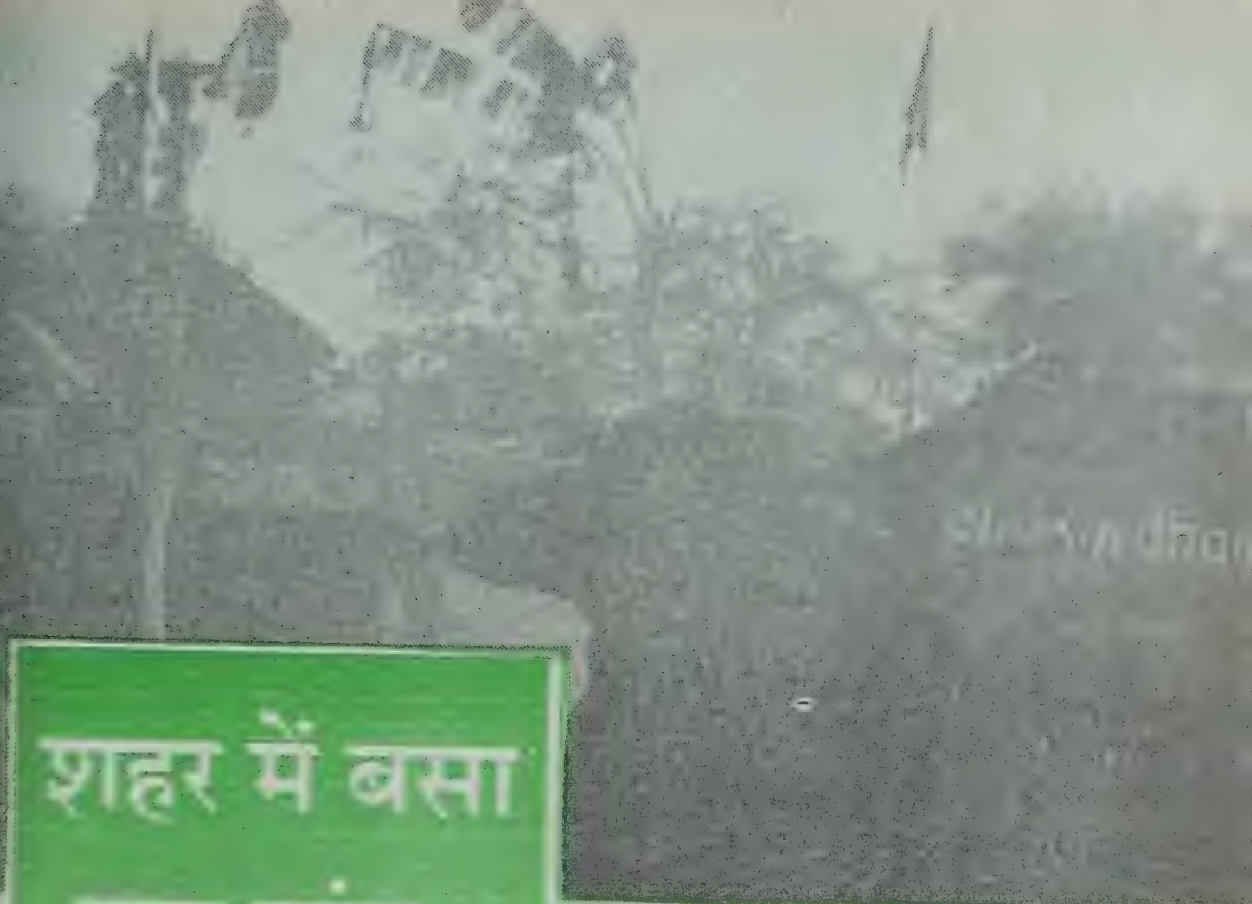


भोजन कक्ष का पृष्ठ भाग



स्वीमिंग पुल

(सभी चित्र—लियाकत अली भट्टी)



शहर में बसा एक गांव : चोखी ढाणी

● कनीज भट्टी

राजस्थानी शब्दों के मेल से बना है 'चोखी' अर्थात अच्छी और 'ढाणी' अर्थात एक छोटा-सा गांव । जयपुर शहर से लगभग १२ कि.मी. बाहर, टौंक रोड पर बसा है ये, राजस्थान का आईना—चोखी ढाणी ।

१८ एकड़ भूमि में राजस्थान की लोक-संस्कृति की खुशबू, गारे और मिट्टी से बनी लिपी-पुती झोपड़ियां और एक पूरी टीम जो राजस्थानी संस्कृति के पारंपरिक पहनावा, धोती-कुरता और साफे में, हाथ जोड़कर नमस्कार करते हुए, आपकी सेवा में, सत्कार स्वरूप तैयार मिलती है । पूरे आदरभाव के साथ आपको वह इज्जत बख्शी जाती है, जो किसी समय में खास मेहमानों को बख्शी जाती थी ।

जब आप चोखी ढाणी के मुख्य-द्वार में प्रवेश करेंगे तो अभिवादन के साथ, चौकीनुमा (डेस्क) के सामने पालथी मारकर गद्दे और मसनद पर बैठे, मुनीम के वेश में बैठे दो कर्मचारी आपसे सदस्यों की संख्या पूछकर कच्ची रसोई, यानी राजस्थानी भोजन का एक सौ रुपये प्रति थाली के हिसाब से टिकिट काटकर देंगे । इसमें वाहन-शुल्क शामिल नहीं है, किंतु चोखी ढाणी में घूमने तथा मनोरंजन का शुल्क शामिल है । हल्के ठंडे मौसम में ठंडी बयार, फिजां में गांव की सौंधी खुशबू, हजारों लालटेनों में टिमटिमाते बल्बों की रोशनी, [illegible]

लगता है जैसे, आप किसी 'दीवाली-गांव' में आ गये हैं। यह पिछले छह वर्षों से जयपुर के पचास कोस की दूरी पर बच्चों के लिए एकमात्र मनोरंजन स्थल है। चोखी ढाणी घूमने के बावजूद भी बच्चे बार-बार देखना-घूमना और जाना पसंद करते हैं। इसका एकमात्र कारण है, उनको मिलनेवाला भरपूर मनोरंजन—जैसे कठपुतली का तमाशा, ऊंट तथा घोड़े की सवारी, नट का तमाशा, भालू का तमाशा, भविष्यफल बतानेवाला तोता, यूनान का डुप्लीकेट घंटा, बंदर-बंदरिया का खेल, विभिन्न प्रकार के झूले, पुराने बरतन और पुराने अस्त्र-शस्त्रों का नया अजायबघर।

खेल-तमाशों के बाद अब आप आमंत्रित हैं—देसी रसोड़े में, जहां एक लड़का आपके जूते लेकर आपको निःशुल्क टोकन देगा। क्योंकि, रसोई में खाना बैठकर खाना है। यहां 'बुफे' सिस्टम नहीं है। जूते रखने के पश्चात एक लड़का तांबे के गंगासागर से आपके हाथ धुलवाएगा।

भोजन कक्ष में जमीन पर बैठने के लिए टाट-पट्टी, भोजन सामग्री रखने के लिए लकड़ी की चौकी, ढाक के पत्तों से बनी पत्तल और तीन दोने तथा दो मिट्टी के कुल्हड़ रखे मिलेंगे।



मनोरंजन

इस भोजन कक्ष में डेढ़ सौ व्यक्तियों के बैठने की व्यवस्था है। अब सिलसिला शुरू होता है भोजन परोसने का। सबसे पहले लोटे से जीरे की छाछ कुल्हड़ में, डाली जाती है, जो स्वास्थ्य के लिए उत्तम और शुभ मानी जाती है।

छाछ के बाद भोजन में कढ़ी, एक मौसमी-सब्जी, गट्टे की सब्जी, सांगरी की सूखी सब्जी, लहसुन-प्याज की तली चटनी, मक्खन, बूरा-खांड—देसी घी, सलाद, गेंहू, बेसन और मक्का की रोटी, पापड़, मोठ-बाजरे की खिचड़ी और अंत में जलेबी परोसी जाती है। हर चीज बार-बार, मनुहार करके, बड़े प्यार से जबरन दी जाती है।

चोखी ढाणी : शहर में गांव

चोखी ढाणी को बनाने का सपना देखा था गुलराज वासवानी ने। वासवानी पेशे से सिविल इंजीनियर हैं और यू.ए.ई. में बिल्डिंग-कंस्ट्रक्शन तथा दुबई में व्यापार भी करते हैं। वह चोखी ढाणी के चेयरमैन हैं और सुभाष वासवानी मैनेजिंग डायरेक्टर है। गुलराज वासवानी अपनी घुमक्कड़ प्रवृत्ति के कारण, राजस्थान के गांवों में काफी घूमे-फिरे हैं, गांवों से प्रभावित हो उन्होंने अपने सपने को इस रूप में साकार किया है। अट्ठारह एकड़ जमीन पर बसी इस चोखी ढाणी की हर दरो-दीवार से राजस्थान की मिट्टी, कला-संस्कृति की ख्रुशबू आती है। इसे बनाने



विश्राम के लिए जगह • डीलक्स हट

का कार्य सन् १९८८ में शुरू किया गया। दो साल में यह एक गांव-रूपी रिजॉर्ट बनकर तैयार हुआ। इसमें इकतीस कच्ची झोंपड़ियां बनायी गयीं, जिनमें पर्यटकों के लिए सभी सुविधाएं उपलब्ध करायी गयीं। इन झोंपड़ियों को गारे से लीप कर चूने तथा गेरू की पुताई और इन पर राजस्थानी संस्कृति के द्योतक मांडणे बनाये गये हैं। इनके दरवाजे तथा खिड़कियां और उनमें लगी 'आगल' और कुंडियां बिलकुल गांव के घरों-जैसी हैं। बिजली, पानी की पूरी सुविधा है, आरामदेय बिस्तर हैं। एक झील भी बनायी गयी है, जिसमें नाव से सैर भी की जा सकती है। एक तरफ दस्तकार हस्तशिल्पों का निर्माण व प्रदर्शन करते हैं, जिसमें लाख की चूड़ियां, कठपुतलियां, ब्लू पौट्री तथा कपड़े पर छपाई आदि होते हैं।

सन १९९४ में चोखी ढाणी के शेष भाग पर भवन-निर्माण से एक हवेली-ब्लॉक बनाया गया। हवेली में प्रथम एवं द्वितीय तल पर पूर्णतया सुसज्जित तथा वातानुकूलित आठ सूइट्स बनाये गये। हवेली के पास ही एक स्वीमिंग पूल है, जिसके चारों तरफ ऊंची दीवारें हैं। पार्टी के लिए खुला लॉन, अमरीकन तथा यूरोपियन-प्लान के अनुसार भोजन-व्यवस्था, बुकिंग ऑफिस, रिसेपृशन तथा बार लगभग सौ व्यक्तियों के बैठने का तथा खाने के लिए रेस्टोरैंट, शॉपिंग कांपलेक्स, कांफ्रेंस हॉल तथा पचास व्यकितयों के बैठने का लाउंज बनाया गया।

चोखी ढाणी की मूल अवधारणा, वास्तु परिकल्पना एवं बाह्य एवं अंतःसज्जा का श्रेय राजस्थान के सुप्रसिद्ध चित्रकार प्रो. चिन्मय मेहता को जाता है, जिन्होंने पांच वर्ष के अथक सृजनात्मक प्रयास से यह अनूठी संरचना सृजित हो सकी है।

नजारा : पांच सितारा होटल

सुभाष वासवानी का कहना है, "हम लोग एन.आर.आई. हैं पर हमें अपने देश से प्यार है। मैंने और गुलराज वासवानी ने उस सपने को साकार किया है, जो पांच सितारा होटलों की बहुमंजिली इमारतों के घुटनभरे वातावरण से दूर, एक अलग तरह का है। मैं इसको पर्यटकों के लिए एक यादगारी अनुभव बना देने के लिए प्रयत्नशील हूं।

—आर. टी. डी. सी. स्टाफ फ्लैट्स-११
जी. पी. ओ. के सामने, जयपुर-३०२००१

आइए चलें जंगल की ओर

तुंग शशक

(पाइका : हिमालयी चूहा खरगोश)

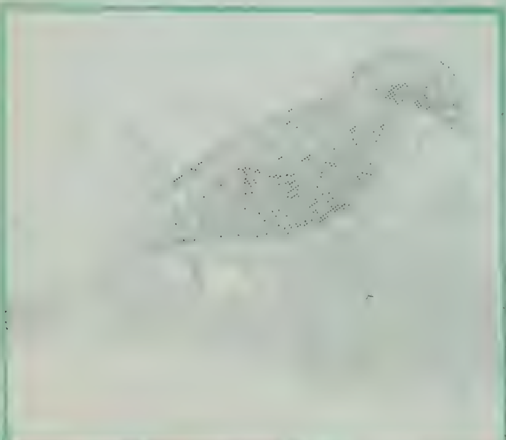
देखने में चूहे के समान शरीर तथा खरगोश के समान पैरवाला, ललछोंही भूरे रंग का यह पंद्रह सेंटीमीटर लंबा एक आकर्षक पहाड़ी जीव है । इसका अपना अलग कुल है, जो खरगोश के कुल से भिन्न है । इसकी पूंछ नहीं के बराबर होती है । तेतीस से तेतालीस हजार मीटर ऊंचे पहाड़ों या उसकी हरी-भरी घाटियों में ये या तो कॉलोनी बनाकर रहते हैं या फिर छोटे समूहों में । यह सारे हिमालय में इन्हीं ऊंचाइयों में पाये जाते हैं । इसीलिए इसका नाम तुंग शशक भी है । इनके बिल लगभग एक मीटर लंबी सुरंग के अंत में आरामदेह गोलाकार होते हैं । बिल में ये सरदी के मौसम के लिए अपना भोजन इकट्ठा करके रखते हैं तथा सरद मौसम में बिल से बाहर नहीं निकलते ।



केसरिया लटोरा

(रूफस बैक्ड श्राइक)

अपने मझोले कद पच्चीस सेंटीमीटर के बरअक्स यह केसरिया लटोरा बहुत लड़ाकू पक्षी है । वैसे तो लटोरा वंश अपेक्षाकृत लड़ाकू ही होता है और कसाई वंश के नाम से



भी जाना जाता है । लटोरे भोजन के लिए न केवल कीड़ों का शिकार करते हैं, वरन उन्हें कांटों में फंसाकर इकट्ठा भी करते हैं । ये अन्य छोटे पक्षियों का शिकार भी करते हैं तथा अपने से बड़े पक्षियों से भी लड़कर उनका शिकार उनके मुंह से छीन लेते हैं । सभी लटोरों की तरह इसका सिर अपेक्षाकृत बड़ा होता है । इसकी चोंच भी मोटी, चौड़ी, छोटी तथा अंकुड़ीदार होती है । इनकी आंखों पर मोटा, काला, लंबा काजल-सा लगा होता है । जिसे एक प्रकार से 'नकाब' कहा जा सकता है । इसके सिर, गरदन तथा ऊपरी पीठ भस्मी, निचली पीठ तथा कटि केसरिया, टोड़ी तथा कंठ सफेद तथा वक्ष और उदर केसरिया रंग के होते हैं । 'भस्मी सिर केसरिया लटोरा' इसका प्रचलित नाम है ।

कचनार

(वेरीगेटैड बोहिनिया)



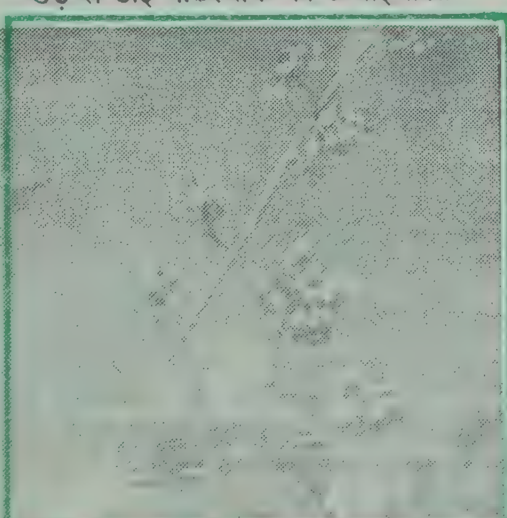
इस वृक्ष का अनुपम सौंदर्य इसके असाधारण रंगों— गुलाबी, सफेद, बैंगनी, जामुनी रंगों की विविधता लिये तथा कमनीय पंखुड़ियोंवाले बड़े-बड़े फूलों में हैं । इसका अनोखापन इसके हृदय के आकार के जुड़वां पत्तों में है । मझौले कद के इस वृक्ष की पींड़ कत्थई रंग की और काफी चिकनी होती है । शिवालक की पहाड़ियां इसका मूल स्थान हैं, और यह लगभग सारे भारत में होता है । लगभग पत्तहीन वृक्ष में फरवरी में इसके फूल जैसे बसंत का झंडा फहरा देते हैं । इसके फूल अप्रैल माह तक खिलते हैं ।

इसकी कोंपलें, मुकुल, फूल तथा बीजों के नन्हें शिंब— सभी शाक या रायते के रूप में खाये जाते हैं । इसकी छाल रंगने तथा चमड़ा पकाने के काम में आती है इस वृक्ष के सभी हिस्सों की औषधियां बनती हैं । बौद्ध विहारों में इसे लगाने की परंपरा है । इसकी मजबूत लकड़ी से खेती के उपकरण बनते हैं ।

छाता फूल

(होमस्क्योल्डिया सैंग्युनी)

डेढ़ से ढाई मीटर तक की ऊंचाईवाली



झाड़ी— इसकी लंबी, सीधे बढ़ सकनेवाली शाखाएं बाग-बगीचे की शोभा बढ़ाती हैं । मुख्य तने से सम्मुख शाखाएं फूटती हैं तथा शाखाओं में सम्मुख पत्तियां तथा सम्मुख फूल खिलते हैं । इसके पत्ते चिकने, नुकीले, अंडाकार तथा साढ़े सात सें.मी. तक लंबे होते हैं । यह झाड़ी अपने छाते के आकार के लाल तथा नारंगी रंग के फूलों से पूरी शीत ऋतु में सजी-धजी रहती है । रेतीली, हल्की उपजाऊ भूमि व धूपदार स्थानों में कलम अथवा बीज से इसे लगाया जाता है । देश के सभी मैदानी क्षेत्रों में यह पायी जाती है ।

—विश्वम्

कहानी

ज़िंदगी

• दिव्या माथुर

विवेका की दबी-दबी कराहटों से तो उसका पति अशोक वाकिफ था, पर उसकी चीखों से नहीं । हर प्रसव से पहले अशोक की मां और विवेका रिक्शा से अस्पताल पहुंच जाती । प्रसव के बाद मां का फोन आता तो अशोक पहले से मां द्वारा तैयार कर रखा गया झोला उठाये अनमना-सा अस्पताल पहुंच जाता । फिर मां यह कहकर कि, 'वहां मरदों का क्या काम' अशोक को मौका ही नहीं देती विवेका से मिलने का । और न ही उसे विवेका से मिलने की इच्छा या उत्कंठा होती ।

विवेका का आक्रोश शायद, इसीलिए था कि दोनों प्रसवों के दौरान अशोक उसके पास तक नहीं फटका । बच्चों को भी बस दूर से एक नजर भर देख और विवेका को पूरी तरह अनदेखा कर लौट जाता ।

विवेका जब-तब पत्रिकाओं में छपे लेखों को पढ़कर अशोक को यह जताती, कोंचती कि न केवल विदेशों में अपितु, अपने देश में भी किस तरह प्रसव की विभिन्न स्थितियों में पति अपनी पत्नियों के साथ रहते हैं, उनका दुःख-सुख बांटने की कोशिश करते हैं । पति द्वारा गर्भवती की देखभाल, उनके प्रति चिंता व स्नेहमय व्यवहार प्रसव की पीड़ा को कम कर देता है । पिछले ही सप्ताह विवेका एक लेख पढ़ रही थी, जिसमें एक कृत्रिम गर्भ का वर्णन किया गया था । जिसमें ये कृत्रिम गर्भ भावी पिता की कमर पर पेटी से बांध दिया गया ताकि, वह महसूस कर सके कि पत्नी नौ मास तक इतना भार लटकाये कैसा महसूस करती रही होगी । अशोक एक कान से सुनता, दूसरे कान से निकाल देता या टी.वी. देखने में इतना मगन हो जाता कि सुनता ही नहीं । हां, मां के कान में भनक पड़ जाती तो वह जरूर कह उठती, 'हाय राम,कैसी बेहया हो गयी हैं बहुएं । हमने तो कभी नाम तक नहीं लिया, न पांव भारी होने पर और न बच्चा होने पर । जब अशोक पेट में था, तो पहले तीन महीने तो हमें खुद ही नहीं पता लगा, जब लगा तो कैसे लुके-छिपे डोले कि कहीं किसी को पता न लग जाए ! आज की बहुओं को देखो, पहले महीने से शोर मचा दे हैं । चाहें हैं कि मरद पीछे-पीछे



डोला फिरे ! पेट दिखा-दिखाकर ऐसे चले हैं कि राम जाने कोई किला जीत लिया हो ।'

इस बार अशोक विवेका के साथ अस्पताल आया था । उसे बड़ा अजीब लग रहा था । लेबर रूम में उभरती एक चीख ने सबका ध्यान अपनी ओर खींच लिया था । हालांकि, विवेका के चीखने का आज कोई कारण नहीं था क्योंकि, डॉक्टर ने पहले ही बता दिया था कि गर्भपात में अधिक कष्ट नहीं होता । बस, कमर के नीचे का हिस्सा सुन्न कर दिया जाता है ।

अशोक के निकट बैठा एक ग्रामीण मजे से बीड़ी पी रहा था । बोला, 'बाबूजी, घबराओ मत, मजबूत जून होवें हैं औरत की, रामजी भली करेंगे सब ।' शायद, अशोक के चेहरे पर उड़ती हवाइयां उसकी घबराहट का जिक्र ग्रामीण से कर बैठी थीं । ग्रामीण कुछ देर इस प्रतीक्षा में चुप रहा कि शायद, वह कुछ बोले । फिर खुद ही बोला, 'म्हारी घरवाली आठ के



बाद मानी । साहेब, थारे किते हैं ?' अशोक झल्ला उठा था उस पर ।

☆ ☆ ☆

विवेका ने कितना झगड़ा किया था अशोक से । पुरुषों के ऑपरेशन के लिए डॉक्टरों की एक टीम मुहल्ले में आयी थी, मुफ़्त में ऑपरेशन और ऊपर से सौ रुपये दे रही थी । अशोक बिफर उठा था, 'क्या बेहूदा बात करती हो ?' मां भी बोल उठी, 'सुना है, मर्द-मर्द नहीं रहवे है इस ऑपरेशन के बाद !' वह स्वयं भी जाना नहीं चाहता था । अगर चला जाता तो यह दिन नहीं देखना पड़ता । सौ रुपये अलग से मिल जाते । अब तो गर्भपात के ऑपरेशन में अलग पैसे खर्च करने पड़ रहे हैं ।

कल रात बेचैनी, बेसब्री और कलह में बीती थी ।

रात को सोते समय विवेका ने सहमते-सहमते बात उठायी थी, "तो क्या गिरा दें ?"

"जो जी में आये करो ।"

"मेरे जी का तो कभी कुछ होता नहीं । तुम कभी मेरी सुनते हो क्या ?"

"बेशर्मी की भी कोई हद होती है ।"

"हद की क्या बात है ? जो बात आप बिस्तर में अपनी पत्नी के साथ करने में कतरा रहे हैं, वही बात जब कल डॉक्टर-नर्सों के सामने कहनी-सुननी होगी, तब तुम्हें शर्म नहीं आएगी क्या ?" वह सिसक उठी । अशोक झुंझला उठा, "तुम सारा दोष मुझ पर ही क्यों मढ़े दे रही हो ?"

"तो फिर किस पर मढ़ूं ?" क्रुद्ध हो आयी वह !

"तुम भी तो सावधानी बरत सकती थीं ?"

"दिन-रात सावधानी से मैं ही रहूं कि न जाने कब लाट साहब का मन आ जाए ? आप ही क्यों तैयारी से नहीं आते ?" वह फुफकार उठी ।

"जुबान तुम्हारी खूब चलती है ।"

"मशीन-सा चलता मेरा शरीर किसी को नहीं दिखायी देता ?"

"चुप रहो, मां सुन रही होंगी ।" अशोक ने सोचा मां का डर उसे चुप करा देगा ।

पर वह तो भरी बैठी थी । बोली, "उन्हें पता है । वह नहीं चाहतीं कि गर्भपात कराया जाए ।"

"तो मत कराओ ।"

"कमाके तुम खिलाओगे या तुम्हारी अम्मा ?"

"फिर क्या करें, जो चाहे करो । तुम्हारा शरीर है । तुम नहीं चाहती, तो गिरवा दो ।"

"जब मैं नहीं चाहती, तब भी आप बाज नहीं आते । तब क्या मेरा शरीर मेरा नहीं होता ?"

"क्या पति को इतना भी हक नहीं ।"

"हक सुख-दुःख दोनों में होना चाहिए न ?"

"अब सो जाओ, सुबह बात करेंगे ।" वह बोला । फिर एकाएक उसे कुछ याद आया । बोला, "सुना, तुम्हारी बहन आयी थी ?"

"हां, आयी थी । कह रही थी कि बच्चा न गिराऊं, उन्हें गोद दे दूं", वह डरते-डरते बोली ।

विवेका की बहन के कोई संतान न थी । लेकिन विवेका जानती थी कि अशोक और उसकी मां बच्चे को गोद नहीं देने देंगे, वह भी उसकी बहन को ।

"तो दुनिया में ढिंढोरा पिट गया ?"

"ढिंढोरा मैंने नहीं, आपकी मां ने पीटा है । वह उन्हें देवी के मंदिर में मिली थीं ।" विवेका तिलमिला उठी ।

"वह कौन होती है, हमारे बीच में दखल देनेवाली ?" अशोक फूट पड़ा ।

"वही, जो आपकी मां होती है । खैर, पाप और पुण्य के भागी आप हैं मेरे, न कि आपकी मां या मेरी बहन ।

कहते हैं, पत्नी सिर्फ पुण्यों की भागीदार होती है, पति के पापों की नहीं ।"

"पुरुष ही कौन-सा स्त्री के पापों या अपराधों में काम आता है ।" विवेका भी तपाक से बोल उठी ।

"छोड़ो, ये इधर-उधर की बातें । जब तुम इसे पाप मानती हो, तो क्यों गिराना चाहती हो ? मत गिराओ, मां की भी बात रह जाएगी ।"

"मां की बात रह जाए, चाहे बच्चे भूखे मरें ।"

"भगवान जब जन्म देता है, तो उसका भाग्य पहले बना देता है ।" अशोक ने अपनी मां का जुमला दोहराया ।

"आपके होने के समय भी यही कहा था । मैंने तो आज तक एक फूटी कौड़ी भी आते नहीं देखी ।"

"[illegible] तुम्हारे कोई कितनी भी [illegible] ।"

"[illegible] जन्म दे दें, तो मुझे कोई शौक नहीं [illegible] कराने का । [illegible] हो जाते हैं । बाद में तो डॉक्टर भी हाथ खींच लेंगे ।"

स्वयं मानसिक, शारीरिक, आत्मिक कष्ट सहकर भी विवेका अपनी संतान को कष्टों से बचाने के लिए छटपटा उठी । बच्चों की नन्हीं-नन्हीं ख्वाहिशों का गला घोटते-घोटते वह तंग आ चुकी थी । बच्चों को दूध तक तो नसीब नहीं होता था । एक और बच्चा आ गया, तो कैसे गुजारा होगा ।

"ठीक है, मैं मां को समझा लूंगा, अब चलो सो जाओ ।"

दोनों चुप हो गये । पर विवेका को नींद नहीं आयी । सोचती रही कल सुबह के बारे में, डॉक्टर-नर्सों के बारे में । ईर्ष्या से भरी थी वह अशोक के प्रति कि अब वह मां को भी मना लेगा । जब खुद के ऑपरेशन कराने की बात थी तो, मां को नहीं मना पाया था । तब ये ही बात बेहूदा थी । न जाने कब तक वह समाज को, खुद को, अशोक को बारी-बारी से कोसती रही, रोती रही । अशोक भी नहीं सो पाया था शायद, बोला, "तुम मां के साथ अस्पताल चली जाना, मैं बच्चों को स्कूल से ले आऊंगा ।" उसने अपने बचने की तिकड़म लगायी । वह बोला भी शायद, इसलिए था कि अहसानतले विवेका दब जाएगी और वह आराम से इंग्लैंड और भारत के बीच 'वन डे मैच' देख लेगा । पर विवेका को मालूम था उसका कार्यक्रम, बोली, "छुट्टी लेकर क्रिकेट देखोगे टी.वी. पर, पर मेरे साथ अस्पताल चलने में आपको शर्म आयेगी । मां के घुटनों में दर्द है मुझे कुछ हो गया तो मां कहां भागती फिरेंगी, ये भी सोचा है ?"

"अच्छा बाबा, मैं ही चला जाऊंगा ।"

एक स्ट्रेचर बाहर लाया जा रहा था । कई लोग खड़े हो गये । एक सफेद चेहरा, सफेद चादर से झांकता, जीवित बच निकल आने पर उत्तेजित-सा । अशोक के दिमाग में मां का चेहरा उभर आया ! वह चौके से आंगन के अनगिनत चक्कर लगाते हुए , बड़बड़ाती रही थीं, 'अरे हत्या है, जे हत्या, भगवान का काम भी अपने हाथ ले लिया । अशोक, अपनी औरत के कहने में आ गया रे तू ?' किसी अनिष्ट से उसका मन कांप उठा । जब भी विवेका नजरों से दूर होती या बीमार होती तो अशोक मन ही मन प्रतिज्ञा करता कि वह

प्रसव की पीड़ा अलग बात है । पीड़ा के अंत में एक सुखद प्राप्ति की भावना वेदना को सहने योग्य बना देती है । पर, नसबंदी के बाद क्या ? जाने ये पाप है कि क्या ?

विवेका को चाहने की कोशिश करेगा । पर, विवेका के ठीक होने की दुआ तक नहीं मांगी । प्रेम किसी से किया नहीं जा सकता । मां ने गलत कहा था कि ब्याह कर ले, प्रेम तो हो ही जाएगा । पढ़ी-लिखी, सुंदर, कमाऊ बीवी आएगी तो सब ठीक हो जाएगा । पर इसमें विवेका का क्या दोष ?

'तुम्हें आना-जाना पड़े, तो पता लगे', एक औरत के शब्द उसे वर्तमान में खींच लाये । वह अपने पति को झिंझोड़ रही थी और पति

उसे चुप कराने की कोशिश कर रहा था। किंकर्त्तव्यविमूढ़-सा पति इधर-उधर ताकता पत्नी की निंदा झेल रहा था। और सहानुभूति तलाश रहा था, जो उसे केवल पुरुषों की आंखों में ही मिल सकती थी। कई स्त्रियां पुरुषों को शत्रुता भाव से देखने लगी थीं। मानो उनकी इस हाल का जिम्मेदार पुरुष वर्ग ही है। पुरुषों को भी लगा शायद, स्त्रियां ठीक ही सोच रही हैं।

स्मार्ट-सी पोशाक पहने एक श्रीमतीजी तभी हॉल में दाखिल हुईं, अपने दब्बू-से पति के साथ, जो उनका बैग व अन्य सामान उठाये उनके पीछे-पीछे चल रहा था। श्रीमतीजी बेहद तमतमायी हुई थीं। पति के बढ़े हुए हाथ को वह 'बास्टर्ड, यू ऑल मैन' कहकर डॉक्टर के कमरे में दाखिल हो गयी। पति बेचारा सिटपिटा कर बाहर खड़ा रह गया। अशोक को यकायक अपने दफतर की श्रीमती मेनन का ध्यान हो आया। वह छह महीनों से विद-पे मेडिकल लीव पर चल रही है। पहले एम.टी.पी. की छुट्टी मिली, फिर कुछ कांप्लीकेशंस हो गया और अब उनकी कमर में दर्द रहना लगा है। उसकी इस छुट्टी से कई साथी जले जा रहे थे, कहते कि मजे कर रही है। डॉक्टर जान-पहचान का होगा। औरतों को सरकार नौकरी पर रखेगी, तो यही होगा। इन औरतों के तो मजे हैं। अन्य महिलाएं लज्जावश चुप और सोचतीं कि मेनन को वापस आ जाना चाहिए। अशोक ने सोचा कि विवेका को भी यदि करीब डेढ़ महीने की छुट्टी मिल जाए, तो मजा आ जाए। पर विवेका को इतनी छुट्टी शायद ही मिले, प्राइवेट ऑफिस में जो है। चलो जितनी भी मिले, मुफ्त में क्या बुरी है छुट्टी, विवेका को आराम मिल जाएगा, मुझे बच्चों की चिल्ल-पौं से शांति।

☆ ☆ ☆

हर बार नर्स जब कमरे में आती, तो विवेका सोचती कि उसे लेने आयी है। पर वह किसी और को लेकर चली जाती। पर अब जब स्वयं की बारी आयी तो लगा कि किसी और को ले जाए। अंदर ले जाये जानेवाली हर स्त्री के चेहरे पर ऐसे भाव होते, जैसे बकरे को हलाल करने ले जाया जा रहा हो। प्रसव के लिए आयी हुई महिलाओं की चीखें जब-तब पासवाले कमरों से निडर घुस आतीं। प्रसव की पीड़ा अलग बात है। पीड़ा के अंत में एक सुखद प्राप्ति की भावना वेदना को सहने योग्य बना देती है। पर गर्भपात के बाद क्या ? जाने ये पाप है कि क्या ? यंत्रणा। शारीरिक नहीं, मानसिक है। भले ही स्वयं की स्वीकृति से दी जा रही है। सही है या गलत— हर कदम पर टोकनेवाली आत्मा भी अचकचा गयी है यहां।

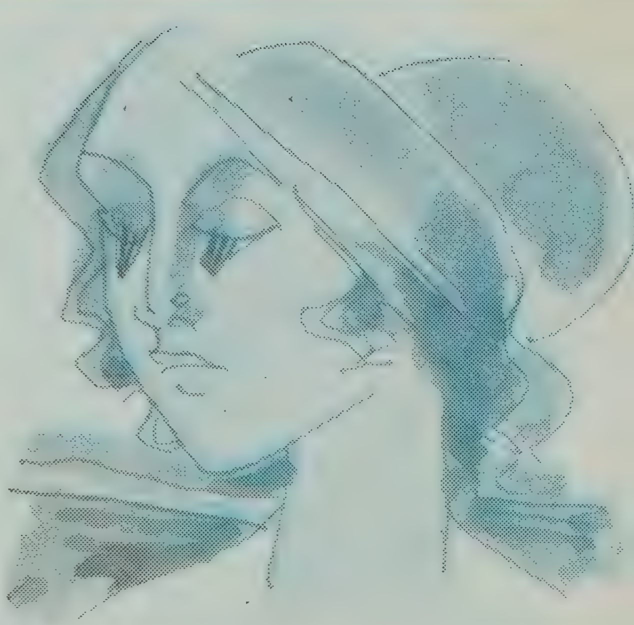
'आर यू रेडी माई डियर ?' डॉक्टर ने पूछा। कभी भी तैयार होगा कोई इसे लिए ? सिर हिलाकर 'हां' कर दी है विवेका ने। नर्स ने सहारा देकर उसे मेज पर लिटा दिया। ओ.टी. में घुसते ही उसे लगा था कि भाग ले, पर कहां ? कब तक ?

सोच लिया, इस ऑपरेशन के बाद बच्चा नहीं होने को सकता', नर्स ने विवेका को जताया है। नर्सें-डॉक्टर अपनी भाषा में कुछ कह-सुन रहे हैं। औजारों की अवाजें तैयारी की सूचना दे रही हैं। कहां एक नन्हीं-सी जान, कहां ये तीखे औजार ? दूर खड़े दो पुरुष

सहायकों से उसे लज्जा महसूस हुई, कल ये लोग सड़क पर मिल गये, तो कैसा लगेगा ? उसकी दोनों टांगों को स्ट्रेप्स के जरिये दो तरफ खड़ी स्टील की शालाकाओं से बांध दिया गया है । अब तो वह भाग भी नहीं सकती । मुंह पर मॉस्क लगा दिया गया है, लंबी सांस लेने को कहा जा रहा है । अब कोई विरोध नहीं किया जा सकता । वह चाहती है कि उस पर पूरी तरह से बेहोशी छा जाए ताकि, इस अपमानजनक स्थिति को वह देख-सुन न सके । कुछ जोड़ी हाथ उसके शरीर पर रेंगनी लगे हैं । 'ढीला छोड़ो' एक हाथ पेट पर थपककर कह रहा है । कैसे ढीला छोड़ दें, अपने निर्वस्त्र शरीर को, अजनबियों के बीच ? कमर के नीचे का हिस्सा सुन्न है पर सारे स्पर्श उसे अंदर तक 'छूते' महसूस हो रहे हैं । टुकड़े-टुकड़े गिर रहा है कुछ नीचे बरतन में ।

पैरों को खोल दिया गया है । मॉस्क हटा दिया है । पर, अब कहने को बचा ही क्या ? सब-कुछ निबट गया । वह जिंदा थी, कोई दुर्घटना भी नहीं हुई, जिसका कि उसे डर था ।

'वेरी गुड...यू आर वेरी ब्रेव' जैसे छोटे-छोटे वाक्य हवा में तैर रहे थे । उसे अच्छा लगा । नींद के झोंके मजबूती से हमला बोल रहे हैं । पर आवाजें उसे परेशान कर रही थीं । वह बेखबर सो जाना चाहती थी । इस समय उसे न बाहर बैठे पति की याद है, न चार बजे बच्चों के आने की । सबसे विलग, कहीं किसी दूसरी दुनिया में विचर रही थी विवेका । उसे लग रहा था कि वह कहीं ऊंचाई पर है जहां से वह डॉक्टरों और नर्सों को देख रही है । एक शरीर पर झुके, गिद्ध-से टुकड़े-टुकड़े गोश्त नोंचते ।



ये शरीर उसका अपना ही तो था, जो स्ट्रेचर पर असहाय, निर्जीव-सा पड़ा था । शायद, वह मर चुकी है, तो फिर ये हलकी-हलकी आवाजें कैसी ? शायद, मौत से पहले ऐसी ही अनुभूति होती हो, गहरी नींद की, शांति की ।

स्ट्रेचर वार्ड में लाया गया और एक बिस्तर पर उसे लुढ़का दिया गया था । चंद आवाजें उसे बेहद क्षुब्ध कर रही थीं । वह क्रुद्ध हो रही थी अंदर ही अंदर पर, कुछ भी बोल नहीं पा रही थी । दिमाग में मानो रुई भरी हो । उसकी खाली-खाली आंखें खिड़की से बाहर रिक्त आकाश को विरक्त भाव से तकने लगीं ।

कुछ ही घंटों में चेहरे का रंग सामान्य हो जाएगा । आंखें भर उठेंगी । बात-बात पर क्रोधित जीवन उस पर ताबड़तोड़ हावी हो जाएगा, पिछले घंटों की शिथिलता का हिसाब मांगता हुआ कि जो कुछ हुआ वह गलत, पाप था या पुण्य । द्वंद्व दूभर कर देगा बाकी की बची खुची जिंदगी ।

काल जितना क्रूर है उतना कायर भी

● रतनलाल जोशी

अगर जरूरत की बैतरणी मनुष्य के मार्ग में नहीं आती, तो हमारे सुख-दुःख के स्वाद में कोई फर्क नहीं आता । प्राचीन मिस्री कवि जिओप ने शायद, अपने पूर्वजों के अनुभवों को ही दोहराते हुए कहा था कि 'जरूरत का नाम ही जन्म है ।'

प्राचीन जापान की एक कहानी है । विधाता ने सृष्टि बनायी । नर बनाये । नारियां बनायीं । फिर एक रोज विधाता ने दर्पण में अपना मुख देखा तो उसका मर्म ईर्ष्या से जल उठा । मनुष्य मुझसे कितना सुंदर है ? —विधाता सोच-सोचकर बेचैन होने लगा । उन्होंने अपनी सहचरी प्रकृति से अपने मन की सारी व्यथा कह सुनायी । प्रकृति ने कहा, 'सुंदरता मन के माधुर्य की डाली का फूल है । यदि किसी की सुंदरता छीननी हो, तो उसके मन का माधुर्य सूख जाए, ऐसी कुछ माया रच डालो । आदमी ठूंठ हो जाएगा । फूल से चेहरे पर राख बिखरने लगेगी ।'

विधाता ने सुना तो उनकी बांछें खिल गयीं । बड़ी उत्सुकता से पूछा, 'तो देवि, अब वह माया भी बता दो, जो मनुष्य को पूनम के चंद्रदेव के बजाय ग्रहण का मरा-मरियम चांद बना दे ।' प्रकृति कुछ उदास हो गयी, मगर कर्तव्य-बुद्धि से प्रेरित होकर बोली, 'तुम्हारे पिटारे में जरूरत नाम की जो जड़ी है, उसे तुम पीसकर मनुष्य के रक्त में मिला दो, फिर न मनुष्य चैन से बैठेगा और न उसे कभी तृप्ति मिलेगी । और, एक दिन यह जरूरत उसे चांद से कोयला बनाकर रख देगी ।'

खलील जिब्रान कहता है कि जब मनुष्य धरती पर आने लगा तो ईश्वर ने उसके कान में कह दिया, 'मैंने तुझे सबसे अनोखा और अनुपम बनाया है, तू मेरी ही तरह अद्वितीय है ।' बस, यहीं से जिंदगी के साथ बखेड़ों की विष-बेलें जुड़ गयीं । आदमी को ईश्वर ने अद्वितीय कहा था, किंतु भूल ईश्वर की यह हो गयी कि अपने द्वारा बनाये हर आदमी को वह 'अद्वितीय' कहता गया । नतीजा यह हुआ कि दुनिया में आकर प्रत्येक मनुष्य अपने को दूसरे से श्रेष्ठ घोषित करने लगा और इस प्रकार श्रेष्ठताओं में परस्पर संघर्ष छिड़ गया । ईश्वर की गलती कौन सुधारे ? इसलिए गलती का परिणाम सबको भोगना पड़ रहा है । श्रेष्ठताओं के नाम पर आज यहां धूर्तताएं-मूर्खताएं आपस में टकरा रही हैं ।

आदमी की अद्वितीयता एक बार कवि

'फिराक' गोरखपुरी के हृदय में उमड़ी तो अपनी ताकत बयान करने में, मानो उनके पास शब्द ही नहीं थे । बेचारे बूढ़े बाबा की दाढ़ी को बार-बार नोचकर भी उन्हें जैसे संतोष नहीं होता था—

न तू मेरी मजबूरियों
में क्या कस बल
मशीयतो (विधाताओं) की
कलाई मरोड़ सकता हूं
उबल पड़े अभी आबे-
हयात (अमृत) के चश्मे,
शरार-ओ-संग (शोले-पत्थर)
को ऐसा निचोड़ सकता हूं
मेरे ही सीने में लहरा रही
हैं बर्के-सहर (सूर्याभा)
शवे-सियाह (अंधेरी रात)) की
जंजीर तोड़ सकता हूं
'फिराक' देख बदलती
हैं मंजिले-आफाक (क्षितिज)
कि मेहओ-माह (सूर्यचंद्र))
की मैं बाग मोड़ सकता हूं

स्वयं सर्वशक्तिमान ईश्वर के सामने भी नग्न-खड्ग लेकर संग्राम के लिए चुनौती के मूड में खड़े हो जानेवाले कवि 'फिराक' एक दिन अचानक देखते हैं कि न जाने किसने यह ज्वार उतार दिया है और 'अद्वितीयता का दर्प' उदासी में परिणत होकर मन को खाने लगा है—

जिंदगी क्या है आज इसे ऐ दोस्त
सोच लें और उदास हो जाएं

ऐसा क्यों हो गया ? आसमान नीचे घुटने टेककर वह जमीन की शरणागत क्यों आ गया ? प्रेमचंद के शब्दों में इसका उत्तर यही है कि 'कोई जरूरत बीच में आ गयी होगी,' और फिराक के ही शब्दों में इस जरूरत की वाणी सुनिए—



सुनो तो अर्ज करें
मान लो तो क्या कहना
तुम्हारे पास हम
आये थे एक जरूरत से

लाओत्ज़े कहता है कि जरूरत हमारी सबसे बड़ी पूर्ति है, तभी तो वह हमारे जीवन के साथ अटूट रूप से जुड़ी हुई है । जरूरत-बेलि में हम पानी देकर दुःखी क्यों होते हैं ? बेकाम की शिकायत क्यों करते हैं, मार्ग से भटकने या दुनिया में फंस जाने का तूमार क्यों बांधते हैं ? क्या कहने हमारी मूर्खता के ! जरूरत को सींचकर तो हम जिंदगी को ही सींचते हैं । क्या

चीनी कवि प्येन-चो ने गलत कहा है—

प्यास ही जिंदगी है
आग ही रोशनी है
एक बुझ गयी तो खाक
दूसरी बुझ गयी तो राख

राबर्ट फ्रास्ट का कहना है कि जिंदगी और जुल्म कभी-कभी तो एक ही सिक्के के दो पहलू हो जाते हैं । सत्ता और धन अगर आदमी पर इतना जुल्म नहीं करते तो, आज इनसान अपनी महिमा को इस गहराई से कभी अनुभव नहीं कर पाता—अपने स्वाभिमान में इस खुशी से कभी जाग नहीं उठता—

> ***सुंदरता मन के माधुर्य की डाली का फूल है । यदि किसी की सुंदरता छीननी हो, तो उसके मन का माधुर्य सुखा दो । आदमी ठूंठ हो जाएगा । फूल से चेहरे पर राख बिखरने लगेगी ।***

मेरा हौसला कलम करनेवालो
तुम्हें धन्यवाद
मैं ईसा को भूल गया हूं
मेरी प्रार्थनाएं सूख गयी हैं
मैं आज तुमसे हिसाब
मांगने के लिए तनकर
हजारों साथियों सहित
निर्भीक खड़ा हूं

मेरी कारोली कहती है कि असल में जुल्म के प्याले का स्वाद तो हमारी जबान पर निर्भर है । दिल की आग में जलती जबान को अमृत भी अंगारे-जैसा लगेगा । मगर, वही जबान अगर प्रेम के शहद को चाट चुकी है, तो उसे अंगारे के भीतर भी चांदनी की शीतलता का स्वाद आयेगा ।

'अकबर' इलाहाबादी की एक फब्ती है, जो प्रेम के हर जुल्म को जिंदगी की सार्थकता मानती है—

वे तोड़ते हैं तो कलियां शिगुफ्ता होती हैं
वे रौंदते हैं तो सब्जा निहाल होता है

कहावत है कि काल सब को खा जाता है, मगर मिस्र के पिरामिड काल को भी खा गये हैं । यह कहावत जब मिस्र के प्रज्ञाचक्षु विद्वान तहा हुसैन के सामने रखी गयी तो वे बोले, 'फैसला तो फैसले के दिन ही होगा । मगर, जब फैसला करनेवाला मनुष्य ही नश्वर है, तो फिर डींग हांकने से क्या फायदा ? काल के सामने किसी की अगर चली है, तो मनुष्य के प्रति मनुष्य के प्रेम की ही चली है । प्रेम का एक क्षण क्या काल की अनंतता को श्मशान बना देनेवाला चमत्कार नहीं है ?'

महिमा काल की

हमारे यहां महाभारत में 'मौसल पर्व' में काल की महिमा यों गायी है—

कालमूलमिदं सर्वजगद्बीज धनंजय
काल एव समादत्ते पुनरेब यदृच्छया
स एव बलवान भूत्वा पुनर्भवति दुर्बलः

— काल सबका मूल है, जड़ है । काल जगत के उत्थान का बीज है । काल ही उसको नचा-नचाकर खा भी जाता है । किंतु, काल

इनके भी क्या जुदा-जुदा

बादे फजा फजूल है नामो-निशां की फिक्र
जब हम नहीं रहे तो रहेगा मजार क्या

—चकबस्त

यह किस गरीब का दिल बुझ गया है महफिल में
चराग जलते हैं और रोशनी नहीं होती

—महिंदर सिंह बेदी 'सहर'

तू खुदा है न मेरा इश्क फरिश्तों-जैसा
दोनों इंसां हैं तो क्यों हजाबों में मिलें

—अहमद फराज

रगों में दौड़ते फिरने के हम नहीं कायल
जब आंख ही से न टपका तो फिर लहू क्या है

—गालिब

'कतील' अपना मुकद्दर गम से बेगाना अगर होता
तो फिर अपने पराये गम से पहचाने कहां जाते

—कतील शिफाई

जो मनाएंगे तेरी मौत का गम तेरे बाद
वही रौंदेंगे तेरे नक्शे-कदम तेरे बाद

—दिवाकर राही

न किसी जिस्म का जादू न घटा गेसू की
प्रेम क्यों रूठ गये प्रेमनगर से बादल

—प्रेमवार बर्टनी

जहने दिल में खुशबुएं बस जाएंगी
ध्यान की खिड़की से बाहर देखना

—जकी तारिक

शाखों से टूट जाएं वह पत्ते नहीं हैं हम
आंधी से कोई कह दे कि औकात में रहे

—राहत इंदौरी

लफ्ज़ मर जाएंगे इजहार की शिद्दत से इमाम
हुस्न को हुस्न के परदे से उभरता देखूं

—इफ्तिखार इमाम

खुदाया ! तू ही देख अपनी खुदाई
मोहब्बत मेरी बेजुबां हो रही है

—सादिक टौंकी

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

कभी समान भी नहीं रहता । कभी बलवान बनकर मनुष्य पर हावी हो जाता है और कभी मनुष्य बलवान बनकर उसकी नाक में नकेल पिरो देता है ।

एक सूफी संत ने समय अर्थात काल के केंचुल को दूर फेंक जब कहा कि 'साकी उठ, मेरा जाम भर दे और मेरे दुख के दिनों को गर्क कर दे,' तो काल स्वयं कांपकर दूर खड़ा हो गया ।

साकिया बरखे जो
दरदेह जाम रा
खाक बर सर कुन
गये अय्याम रा

गेटे ने कहा है कि काल जितना क्रूर है, उतना ही कायर भी । हर क्रूर अपनी असलियत में कायर ही होता है ।

—१२, फीरोज गांधी मार्ग,
लाजपतनगर-३, नयी दिल्ली-११००२४

आणविक हथियारों की यात्रा-कथा

● योगेश चंद्र शर्मा

छह अगस्त, १९४५ को जापान के हिरोशिमा शहर पर प्रथम अणु बम डालकर नृशंस हत्याकांड को जन्म देनेवाले अमरीका को ही सामान्यतः आणविक हथियारों का जनक माना जाता है। किंतु, उनके बीज अमरीका में नहीं, जरमनी में पनपे थे। हिटलर के यहूदी विरोधी रवैये और अमानवीय अत्याचारों से आतंकित जब यूरोप के अनेक वैज्ञानिक अमरीका पहुंचे, तो उनके पास उनके उन परीक्षणों का अनुभव भी था, जिनसे परमाणु को तोड़कर भयानक विध्वंसकारी ऊर्जा उत्पन्न की जा सकती थी।

उन्हें आशंका थी कि उनके परीक्षणों से प्राप्त अनुभवों के आधार पर जरमनी के अन्य वैज्ञानिक आणविक हथियार बनाकर कहीं मित्र-राष्ट्रों को भयानक क्षति न पहुंचा दें। इसलिए मित्र-राष्ट्रों को जल्दी से जल्दी आणविक हथियार बना लेने चाहिए। इन वैज्ञानिकों ने सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. अल्बर्ट आइंस्टाइन के नेतृत्व में अगस्त, १९३९ में अमरीकी राष्ट्रपति रुजवेल्ट से संपर्क किया। रुजवेल्ट ने प्रारंभ में वैज्ञानिकों की इन बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया। लेकिन, बाद में उन्होंने उसके महत्त्व को समझा। फलतः ६ दिसंबर, १९४१ से इस दिशा में अमरीका में विधिवत कार्य प्रारंभ हो गया। डॉ. लियो ज़िलार्ड तथा डॉ. फर्मी व्यक्तिगत रूप में परमाणु को विखंडित करने के सफल प्रयोग इससे पहले ही कर चुके थे।

८ मई, १९४५ को जरमनी ने आत्म-समर्पण कर दिया। इससे यह स्पष्ट हो गया कि उस समय तक जरमनी ने आणविक हथियारों को बनाने की दिशा में कोई कार्य नहीं किया। अब अमरीका में यह चर्चा चलने लगी थी कि निर्माणाधीन परमाणु बम का प्रयोग जापान के विरुद्ध किया जाए, क्योंकि वह आत्मसमर्पण नहीं कर रहा। पर, अधिकतर वैज्ञानिकों ने इसका विरोध किया क्योंकि, जरमनी की पराजय के बाद, यूरोप से आये वैज्ञानिकों का अणु बम के प्रति उत्साह काफी मंद पड़ गया था। लेकिन, उस समय तक अणु बम का निर्माण-कार्य काफी आगे तक बढ़ चुका था और धन भी काफी व्यय हो चुका था, इसलिए अमरीका इसे स्थगित करने के लिए कतई तैयार नहीं था।

पहला परीक्षण

१६ जुलाई, १९४५ को अमरीका ने अणु बम का प्रथम परीक्षण किया, जिसे देखकर स्वयं उसके निर्माता वैज्ञानिक भी स्तंभित और आतंकित रह गये । उन्होंने राष्ट्रपति रूजवेल्ट से पुनः लिखित निवेदन किया कि इस कार्य को अब स्थगित कर दिया जाए तथा जापान या किसी भी देश पर इसे हर्गिज न गिराया जाए । मगर अब चिड़िया उनके हाथ से निकल चुकी थी । अततः ६ अगस्त, १९४५ को अमरीका ने हिरोशिमा और नागासाकी पर अणुबम गिरा ही दिया ।

इस बम को लेकर अमरीका का एक उद्देश्य यह भी था कि सारे संसार पर उसकी शक्ति का सिक्का जम जाए और कोई भी देश, कभी उसके विरुद्ध जाने का साहस न कर सके । उसका यह भी विचार था कि अणु बम के निर्माण में उसी का एकाधिकार रहेगा । मगर, उसकी यह गलतफहमी बहुत शीघ्र ही, उस समय दूर हो गयी जब उस समय के सोवियत संघ ने भी इसका तकनीकी ज्ञान प्राप्त कर लिया और सन् १९४९ में अपने प्रथम अणुबम का सफल परीक्षण कर लिया । इसके बाद तो सन् १९५२ में इंगलैंड ने, सन् १९६० में फ्रांस ने, सन् १९६४ में चीन ने तथा सन् १९७४ में भारत ने आणविक विस्फोट परीक्षण करके, अणुबम के निर्माण में अपने तकनीकी ज्ञान का प्रमाण दे दिया । लेकिन विश्व की दो महान शक्तियों अमरीका तथा सोवियत संघ में आणविक हथियारों की जो होड़ शुरू हुई, जो इनकी घातक क्षमता को बढ़ाती चली गयी ।

दो महाशक्तियों में होड़

जापान पर जो अणु बम डाले गये थे, उनकी कुल विस्फोट-क्षमता लगभग ३४.५ किलो टन थी, उसे इस होड़ ने बढ़ाकर हजारों किलो टन पहुंचा दिया । इसके बाद अधिक से अधिक घातक हथियारों की खोज की जाने लगी । उसी खोज से आया--- उद्जन बम यानी आणविक हथियारों का अगला पड़ाव ।

आणविक हथियारों के निर्माण के मूल में यह सामान्य-सा सिद्धांत है कि परमाणु विखंडित होकर अत्यधिक शक्तिशाली हो जाता है । परमाणु बम में विखंडन की यह प्रक्रिया निरंतर अबाध गति से चलती रहती है और अंत में भयानक विस्फोट होता है । इसी दिशा में आगे बढ़कर भारी उद्जन के परमाणुओं को मिलाकर हीलियम गैस बनाने और उसके विस्फोट करने के परीक्षण किये गये । पता चला कि इस विस्फोट से उत्पन्न होनेवाली शक्ति अणु बम से भी कहीं अधिक खतरनाक होती है । लेकिन, इसमें कठिनाई यह पायी गयी कि

आणविक बम के परीक्षण का एक दृश्य



उद्जन बम का विस्फोट करने के लिए दस लाख डिग्री सेंटीग्रेड से भी अधिक तापमान की आवश्यकता है । यह तापमान केवल अणु बम के विस्फोट से ही उत्पन्न हो सकता है । इसलिए प्रारंभ में यह विचार किया गया कि पहले उद्जन बम डालकर, फिर उस पर अणु बम का विस्फोट किया जाए, लेकिन, ऐसा करना न तो सुविधाजनक था और न सुरक्षित । इसलिए अणु बम के चारों ओर उद्जन बम का मसाला रखा गया । ताकि, पहले अणु बम फटे और उसकी ऊष्मा से उद्जन बम । इस उद्जन बम को जन्म देने का श्रेय था अमरीकी वैज्ञानिक डॉ. एडवर्ड टेलर को । सन् १९५२ को प्रशांत महासागर के एक छोटे-से द्वीप पर जब इसका परीक्षण किया गया तो, समूचे द्वीप का नामोनिशान ही मिट गया । अमरीका के बाद सोवियत संघ ने भी उद्जन बम का निर्माण कर लिया और उसके बाद इंगलैंड, फ्रांस तथा चीन भी पीछे नहीं रहे । अमरीका का बनाया पहला उद्जन बम केवल दस मेगावाट क्षमता का था । बाद में सन् १९६१ में सोवियत संघ ने ५७ मेगाटन की क्षमता तक के उद्जन बम का परीक्षण किया । मगर यह बम गंदा (डर्टी) उद्जन बम था । प्रश्न उठता है कि यह गंदा बम क्यों होता है?

गंदा बनाम साफ-सुथरा बम

अणुबम में यूरेनियम २३५ या प्लूटोनियम २३९ का मसाला भरा जाता है । यूरेनियम २३५ शुद्ध किया हुआ संशोधित यूरेनियम होता है । इसका मूल स्वरूप होता है यूरेनियम २३८, जो साधारण तापमान पर विखंडित नहीं होता । इससे यह अनुमान लगाया गया कि यूरेनियम २३८ की क्षमता अत्यधिक होगी । लेकिन, समस्या उसके विखंडन की थी । परीक्षणों से यह पता चला कि उद्जन बम के विस्फोट से उत्पन्न तापमान में यूरेनियम २३८ भी विखंडित हो सकता है । तब नये बम निर्माण की प्रक्रिया यह तय की गयी कि सबसे नीचे अणुबम और उसका खोल, इसके बाद उद्जन बम का मसाला और उसका खोल । इन दोनों से ऊपर यूरेनियम २३८ तथा सबसे ऊपर का खोल । विस्फोट की प्रक्रिया इस प्रकार रही । सर्वप्रथम अणुबम का विस्फोट फिर उससे उत्पन्न तापमान से उद्जन बम का विस्फोट और उसके तापमान से यूरेनियम २३८ वाले भाग का विस्फोट । मार्च, १९५४ को जब इस नये बम का परीक्षण किया गया तो परीक्षण स्थल से १३५ किलोमीटर दूर खड़े नाविक भी इसके विकिरण के शिकार हो गये । इसकी अत्यधिक विकरण क्षमता के कारण इसे 'डर्टी बम' (गंदे बम) की संज्ञा दी गयी ।

उद्जन बम की विकास यात्रा का अगला कदम था—न्यूट्रान बम । न्यूट्रान परमाणु कणों की खोज सन् १९३२ में इंगलैंड के वैज्ञानिक जेम्स चैडविक ने की । इसके बाद इसमें शोध कार्य निरंतर आगे बढ़ता रहा । न्यूट्रान बम की विशेषता यह है कि इससे निकलनेवाले न्यूट्रान अपने प्रभावित क्षेत्र में किसी भी जीवधारी को जीवित नहीं छोडते, लेकिन संपत्ति या जमीन-जायदाद को अधिक क्षति नहीं पहुंचाते । उद्जन बम या अणुबम में घायल होनेवाले तथा मरनेवालों का औसत तीन तथा एक का था, जबकि न्यूट्रान बम का अनुपात इसके विपरीत अर्थात तीन मरते हैं और एक घायल होता है । चूंकि, यह बम संपत्ति को

नुकसान नहीं पहुंचाता, इसलिए अमरीका ने इसे साफ-सुथरा बम माना ।

इसी क्रम में सोवियत संघ ने नया बम बनाया—गिगाटन बम । यह अब तक उपलब्ध सभी तरह के बमों से १०० गुना अधिक शक्तिशाली था । इसकी क्षमता लगभग एक अरब टी.एन.टी. टन के बराबर थी ।

बमों के बाद राकेट

अब तक बमों को गिराने के लिए हवाई जहाज काम में लाये गये । लेकिन बम ले जा रहे हवाई जहाज को रास्ते में ही शत्रु द्वारा मार कर गिराया जा सकता था अथवा वह स्वयं भी दुर्घटनाग्रस्त हो सकता था । इसलिए बमों को ले जानेवाले यानों यानी राकेटों का आविष्कार किया गया । अंतरिक्ष की खोज के नाम पर राकेटों की अच्छी प्रगति हुई थी । फिर इनके अनुरूप ऐसे स्वचालित प्रक्षेपास्त्र बनाये गये, जो अपने साथ हथियार लेकर जाएं और निश्चित स्थान पर डाल दें । इन प्रक्षेपास्त्रों में सुधार करके फिर यह व्यवस्था की गयी कि एक ही प्रक्षेपास्त्र में अनेक आणविक हथियार हों और वे सब अपने निश्चित लक्ष्य पर जाकर डाल दिये जाएं । बाद में इन प्रक्षेपास्त्रों में और भी सुधार किये गये । तदनुसार, ये नये प्रक्षेपास्त्र निश्चित स्थान पर जाकर कई टुकड़ों में बंट सकते हैं तथा उनमें से प्रत्येक टुकड़ा, अपने-अपने अलग लक्ष्य पर पहुंच कर आणविक हथियारों को गिरा सकता है । आवश्यकता के अनुसार राकेटों की अनेक किस्में विकसित की गयीं । मसलन, भूमि से आकाश में मार करनेवाले, आकाश से भूमि पर मार करनेवाले, आकाश से आकाश में मार करनेवाले, समुद्र से धरती पर मार करनेवाले, समुद्र से समुद्र में मार करनेवाले तथा एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप तक मार करनेवाले आदि । इनमें ऐसी प्रणालियां लगायी गयीं कि निशाने में रत्ती भर भी चूक न हो ।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से ही परमाणु विखंडन और परमाणु विस्फोट को भौतिक शास्त्र में अध्याय के रूप में स्वीकार कर लिया गया । बाद में यह विज्ञान का स्वतंत्र विभाग हो गया । इस विषय पर बहुत काम हुआ । सन् १९५४ और १९६४ के बीच अमरीका ने परमाणु शक्ति के शांतिमय उपयोग की दृष्टि से कुछ गोपनीय जानकारी भी प्रकाशित कर दी ।

परमाणु हथियारों की होड़ और फिर उनके परिसीमन के लिए की गयीं संधियां ऊपरी तौर पर बड़ी आकर्षक व उत्साहजनक लग सकती हैं, परंतु, वास्तव में वे हैं नहीं । इनकी होड़ आज भी जारी है, और भी जारी रहेगी ।

जिसका परिणाम यह हुआ कि सैद्धांतिक रूप में परमाणु हथियार बनाना कोई असंभव कार्य नहीं रह गया । अमरीका के एक साधारण-से छात्र एरिस्टोटल फिलिप्स ने बाजार में उपलब्ध पुस्तकों के आधार पर ही परमाणु बम बनाने का बिलकुल सही रूप अपने शोध-ग्रंथ में प्रस्तुत करके डॉक्टरेट भी प्राप्त कर ली । जहां तक साधनों का प्रश्न है, परमाणु भट्टियां तथा अन्य यंत्र भी तनिक प्रयत्न करने पर अंतरराष्ट्रीय बाजार में उपलब्ध हो सकते हैं । यूरेनियम

अथवा प्लूटोनियम की चोरी के तो समाचार आये दिन पढ़ने-सुनने को मिलते ही हैं । ऐसी स्थिति में यदि किसी दिन कोई आतंकवादी दल सुविधाएं बटोरकर आणविक हथियार बना ले, तो कोई आश्चर्य नहीं होगा ।

पाबंदी लगाने का दौर

इन हथियारों की बढ़ती भयानकता के साथ ही उन पर नियंत्रण लगाने की मांग भी उठने लगी । राष्ट्रसंघ के माध्यम से जब कोई खास सफलता नहीं मिली, तब दोनों महाशक्तियों अमरीका और सोवियत संघ ने आपस में सीधे बातचीत शुरू की । सन् १९९१ में इन दोनों में एक संधि (स्टार्ट फर्स्ट) हुई, जिसके अंतर्गत लंबी दूरी तक मार करनेवाले नाभिकीय प्रक्षेपास्त्रों में तीस प्रतिशत की कटौती की गयी । पर, इसमें सोवियत संघ को अधिक हथियार नष्ट करने पड़े और अमरीका को कम । फिर भी सोवियत संघ के पास इतने हथियार बचे रहे कि वह संपूर्ण अमरीका को केवल तीस मिनट में राख के ढेर में बदल दे । लेकिन अमरीका फिर भी उससे अधिक शक्तिशाली बना रहा क्योंकि, समुद्र से दागे जानेवाले अमरीकी क्रूज प्रक्षेपास्त्र इसमें शामिल नहीं थे ।

जनवरी, १९९३ में अमरीका और रूस के बीच परमाणु परिसीमन संधि (स्टार्ट सैकिंड) हुई, जिसमें परमाणु हथियारों के जखीरे में वर्ष २००३ तक दो तिहाई की कमी करना तय किया गया । यह भी तय किया गया कि दोनों देश जमीन पर तैनात बहुमुखी प्रक्षेपास्त्रों को बिलकुल नष्ट कर देंगे । इसके उपरांत भी इनमें से प्रत्येक के पास तीन हजार से साढ़े तीन हजार परमाणु प्रक्षेपास्त्र बचते हैं । अमरीका अपनी पनडुब्बियों से छोड़े जा सकनेवाले परमाणु प्रक्षेपास्त्रों को भी इस संधि के अंतर्गत नष्ट नहीं करेगा । यह उल्लेखनीय है कि अमरीका की पनडुब्बियों और बम वर्षकों पर क्रमशः ५५ प्रतिशत तथा २२ प्रतिशत प्रक्षेपास्त्र हैं, जबकि रूस के पास क्रमशः २२ और ९ प्रतिशत । इस प्रकार परमाणु क्षेत्र में अमरीकी प्रभुत्व यथावत रहेगा ।

जनवरी, १९९४ में अमरीका और रूस के बीच हुए समझौते में यह निर्णय लिया गया कि दोनों देश उन आणविक प्रक्षेपास्त्रों को हटा लेंगे, जो एक-दूसरे की ओर निशाना लगाये हुए हैं । इसके साथ सोवियत संघ से अलग हुए राज्य युक्रेन ने भी इस बात पर अपनी सहमति व्यक्त की कि वह भी अपने १८०० प्रक्षेपास्त्रों को नष्ट कर देगा ।

परमाणु हथियारों के परिसीमन के लिए की गयी ये सभी संधियां ऊपरी तौर से बड़ी आकर्षक और उत्साहजनक लग सकती हैं, परंतु वास्तव में हैं नहीं । फिर ये संधियां पूरी तरह से लागू हो पाएंगी, यह कहना भी मुश्किल है । दूसरी बात, ये समझौते केवल रूस और अमरीका के बीच हैं अन्य परमाणु शक्ति संपन्न देश इनसे बंधे हुए नहीं हैं । चीन के परमाणु परीक्षण निरंतर जारी हैं । फ्रांस भी परमाणु परीक्षण की एक श्रृंखला पूरी कर चुका है । अन्य अनेक देश भी परमाणु-शक्ति बनने के मार्ग पर हैं । हमारा पड़ोसी देश पाकिस्तान भी इस दिशा में काफी आगे बढ़ चुका है । इस प्रकार परमाणु हथियारों की होड़ आज भी जारी है और निश्चित ही आगे भी निरंतर जारी रहेगी ।

—१०/६११ मानसरोवर, जयपुर-३०२०२०



राजस्थानी संस्कृति में पाग-पगड़ी

● तरुण कुमार दाधीच

भारत विशेषकर, राजस्थान की संस्कृति में साफा, पाग व पगड़ी का एक विशेष सांस्कृतिक महत्त्व है । प्राचीनकाल से लेकर आज तक सिर पर धारण किये जानेवाले इस परिधान की यात्रा अनवरत है । आज पाश्चात्य प्रभाव के कारण प्रचलन कम होता जा रहा है । राजस्थान में ही नहीं अपितु, देश के विभिन्न अंचलों में पागों, पगड़ियों, साफों आदि के धारण करने में कुछ मौलिक अंतर अवश्य है परंतु, शिरोधार्य परिधान के रूप में इसकी मूल-आत्मा सर्वत्र समान है ।

इस संबंध में कोई पुष्ट प्रमाण तो उपलब्ध नहीं है कि सर्वप्रथम पाग-पगड़ी की शुरुआत कब और कहां हुई परंतु, सिंधु घाटी सभ्यता, अजंता के भित्तिचित्रों, प्राचीन मूर्तियों व चित्रों और अरबी पांडुलिपियों में इन्हें देखा जा सकता है ।

सिर पर साफा-पगड़ी धारण करने के पीछे मूल धारणा यही हो सकती है कि इससे अधिक गरमी या सरदी से बचा जा सके । इस परिधान के प्रचलन में आने के बाद इसने अपना विशिष्ट स्थान बनाया । इस परिधान के प्रति आकर्षण का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि राजस्थान ही में पाग-पगड़ी बांधने के लगभग चार सौ तरीके हैं । इतना ही नहीं, यह राजपूती आन-बान का प्रतीक रही है ।

मध्य काल में सामाजिक प्रतिष्ठा की प्रतीक बन चुकी पगड़ी को जब राज्याश्रय प्राप्त हुआ, तब इसकी प्रतिष्ठा में काफी वृद्धि हुई । राजा-महाराजाओं के यहां कुशल बंधेरे अर्थात् 'छाबदार' हुआ करते थे, जो साफा-पगड़ी बांधने के लिए नये-नये तरीके खोजा करते थे । नये-नये तरीकों से पहने जानेवाली पगड़ियों की शान कलगियों और आभूषणों ने और बढ़ायी । पगड़ियों पर तरह-तरह के रत्न-आभूषण सजाये जाने लगे । पगड़ियों पर रत्नाभूषण टांकने का श्रेय उदयपुर के महाराणा उदयसिंह को है । हर क्षेत्र में पगड़ी की अपनी एक शैली और विशिष्ट पहचान बन गयी और अलग-अलग नामों से जानी जाने लगी । जयपुर की पगड़ी खातेदारी और सलीमशाही कहलाने लगी, तो देवगढ़ की

पगड़ी जसवंतशाही ।

रंग अनेक : रूप अनेक

पाग-पगड़ियों को बांधने के अलग-अलग तरीकों को मुख्यतया तीन तरीकों में बांटा जा सकता है—साफा, पगड़ी तथा पाग । साफा और पगड़ी लगभग नौ मीटर लंबे और चार फीट चौड़े कपड़े की होती है और पाग लगभग अठारह मीटर लंबे और पौन फीट चौड़े कपड़े की । पाग के लिए कपड़े को बटकर लपेटा जाता है ।

राजस्थान में धर्म, जाति, क्षेत्र और परंपरा के आधार पर पाग-पगड़ियों के अलग-अलग नाम हैं ।

लंबाई में बड़ी है तो उसे पाग कहा जाता है और छोटी है तो पगड़ी । यदि कपड़े का सिरा अलग रंग का होता है, तो उसे छेला कहा जाता है । यदि अंतिम छोर जरी के बने हुए हों तो उसे पेचा । पेचा सिर्फ एक रंग का होता है, यदि वह बहुरंग हो तो उसे मोलिया कहा जाता है । यदि पाग के दोनों किनारों की पूरी लंबाई तक सुनहरी जरी की लंबी पट्टी हो, तो उसे भदील कहा जाता है । यदि हाथ भर का कपड़ा सिर पर बांधा जाता है, तो उसे चिंदी कहा जाता है । लोक भाषा में पाग-पगड़ी के अनेक नाम जैसे, फालियो, फैंटो, सेलों, लपेटों, पोतीयो, अमलों, शिरोत्राण आदि हैं ।

पाग-पगड़ियां भारतीय समाज में मान-सम्मान का प्रतीक रही हैं, राजस्थान में तो विशेषकर । पाग-पगड़ी की महत्ता इसी से समझी जा सकती है कि युद्ध-भूमि में वीरगति प्राप्त पति के शव के न मिलने पर क्षत्राणियां पति की पगड़ी के साथ सती हो जाती थीं ।



समय और अवसर के अनुसार

राजस्थान में ऋतुओं के अनुसार भी पाग-पगड़ियों का चयन होता था । बसंत ऋतु में गुलाबी, वर्षा ऋतु में लाल चंदन—जैसी मलयगिरी, ग्रीष्म ऋतु में हलकी गुलाबी, शरद ऋतु में गुल-ए-अनार, हेमंत ऋतु में विभिन्न रंगों का मोलिया और शिशिर ऋतु में केसरिया रंग की पाग-पगड़ियों को बांधने की परंपरा थी । ऋतुओं के साथ-साथ प्रत्येक माह के लिए भी अलग-अलग रंग की पाग-पगड़ियों को पहनने की प्रथा थी । चैत्र में गुलाबी, वैशाख में जवाई, ज्येष्ठ में फूल-गुलाबी, आषाढ़ में भामाशाही, श्रावण में लहरिया, भाद्रपद में मलयगिरी, आसोज में कसुंबल, कार्तिक में सिंदूरिया, मिगसर में मौलिया, पौष में हलका केसरिया और फाल्गुन में फागणिया रंगों की पाग-पगड़ियां पहनी जाती थीं ।

रीति-रिवाजों के अनुसार भी पाग-पगड़ियों

और साफों को पहनने की परंपरा थी । विवाह के समय केसरिया रंग का साफा बांधा जाता है । रक्षा-बंधन के दिन बहन अपने भाई के लिये मोठड़ा साफा लाती थी । किसी घर में मृत्यु होने पर पहले सफेद रंग का साफा (पाग) बांधा और बारहवें दिन गुलाबी रंग का साफा बांधने का रिवाज आज भी समाज में प्रचलित है ।

जाति विशेष के आधार पर भी साफे बांधने की परंपरा रही है, जो आज भी जारी है ।

पाग-पगड़ियों के व्यापक प्रचलन के कारण इसका लोक-जीवन पर व्यापक प्रभाव रहा है । आम बोल-चाल की भाषा, मुहावरों, कहावतों और लोकगीतों में भी इसे देखा जा सकता है । कई कहावतें प्रसिद्ध हैं । जैसे, 'साफो बांधो जिता सगला ही आदमी नहीं व्हे' अर्थात, साफा बांधना बड़ा सहज है किंतु, इसकी लाज रखना मर्दों का ही काम है । मुहावरे भी बेहद लोकप्रिय हैं । पगड़ी सम्मान का तो पर्याय है ही, साथ ही 'पगड़ी उछलना' या 'पगड़ी गिराना' अर्थात अपमान करना, 'पगड़ी पांव में रखना' अर्थात समर्पित होना, 'पगड़ी बांधना' अर्थात उत्तराधिकारी बनना, किसी के साथ 'पगड़ी बदलना' सच्ची मित्रता का प्रतीक लोक-प्रचलित मुहावरे हैं ।

पगड़ी के साथ सती

राजस्थान में पाग-पगड़ियों से संबंधित अनेक परंपराएं थीं । यहां की क्षत्राणियां अपने योद्धा मृत पति के साथ सती हो जाती थीं । परंतु यदि पति का शव युद्ध-भूमि से प्राप्त नहीं होता था, तो वे मृत पति की पगड़ी को गोद में रखकर सती हो जाया करती थीं । किसी



अपनी-अपनी अलग प्रकार की पगड़ियां पहने राजस्थान के वर्तमान राज्यपाल, मुख्यमंत्री और मंत्रिगण

अतिथि के घर आने पर उसका पगड़ी बांधकर स्वागत किया जाता था । नंगे सिर आना-जाना अपशकुन और अपमानजनक माना जाता था । पगड़ी को रेहन (गिरवी) भी रखा जाता था ।

राजस्थानी साहित्य में भी पाग-पगड़ियों का अच्छा चित्रण हुआ है ।

इस प्रकार पाग-पगड़ियां अपने महत्त्व के कारण राजस्थानी साहित्य व कला और लोक-जीवन में व्यापक रूप से व्याप्त रहा है ।

—६ स्टेशन रोड,
मावली जंक्शन, उदयपुर (राज.)-३१३२०३



पड़ोसी का बिजली बिल

सतेन्द्र माथुर, देहरादून: मेरी दुकान किराये की है और मेरे पड़ोसी की भी । दोनों दुकानों में बिजली का ज्वाइंट कनेक्शन है । पड़ोसी ने कुछ महीने दुकान बंद रखने के बाद मकान-मालिक के दबाव में आकर दुकान खाली कर दी है । उसने बिजली के बिल का भुगतान नहीं किया है । मकान-मालिक मुझ पर दबाव डाल रहा है कि बिजली के पूरे बिल का मैं ही भुगतान करूं अन्यथा, वह मुझसे जबरन दुकान खाली करा लेगा ।

बताइए, मैं क्या करूं ? क्या मकान-मालिक मुझसे दुकान खाली करा सकता है ? मैं पड़ोसी से बिजली का भुगतान कैसे प्राप्त कर सकता हूं ?

बिजली के बिल का भुगतान उन दोनों व्यक्तियों को जिन्होंने बिजली का उपभोग किया है, करना चाहिए । आपके पत्र से यह स्पष्ट नहीं है कि बिजली का मीटर किसके नाम है ? जिसके नाम पर मीटर है उसी को बिल का भुगतान करना होगा । बिजली कंपनी उसी से लेनदार है ।

जहां तक पड़ोसी द्वारा उपभोग की गयी बिजली के बिल की अदायगी का प्रश्न है, **वह आपका उत्तरदायित्व नहीं है और इस आधार पर मकान मालिक को आपसे दुकान खाली करवाने का अधिकार भी नहीं है ।**

यदि मीटर आपके नाम है, तो आप पड़ोसी दुकानदार से उसके हिस्से के बिजली के बिल का भुगतान प्राप्त करने हेतु कार्यवाही कर सकते हैं ।

रजिस्ट्री दबा ली है

चंद्रकांत सिंधी, जावरा (म.प्र.) : मकान जिसमें हम रह रहे हैं, हमारे दादाजी के नाम पर है । दादाजी का स्वर्गवास हो चुका है । मकान की रजिस्ट्री के कागजात एक रिश्तेदार के कब्जे में हैं, जो हमें वापस नहीं दे रहा । लगता है उसने शायद रजिस्ट्री कागजात द्वारा मकान कहीं गिरवी न रख दिया है । हमें क्या करना चाहिए ?

मकान की रजिस्ट्री एक ही होती है, पर उसकी प्रति पंजीकार के कार्यालय में रहती है । उक्त कार्यालय से आवश्यक शुल्क देकर आप रजिस्ट्री की प्रतिलिपि प्राप्त कर सकते हैं ।

रजिस्ट्री वापस करने के लिए उक्त रिश्तेदार को जिसके कब्जे में रजिस्ट्री है, नोटिस दे दें । रिश्तेदार के विरुद्ध दीवानी न्यायालय में दावा कर न्यायालय से उस रिश्तेदार द्वारा रजिस्ट्री वापस करवाने की प्रार्थना की जा सकती है । यह प्रमाणित होने पर कि मूल रजिस्ट्री उक्त रिश्तेदार के पास है, न्यायालय उसे रजिस्ट्री वापस करने का आदेश दे सकता है ।

अनधिकृत कब्जा

ओमप्रकाश चांदना, दिल्ली : गाजियाबाद विकास प्राधिकरण ने स्व-वित्त योजना में मुझे संजय नगर में एक फ्लैट आवंटित किया । मैंने फ्लैट की पूरी रकम अदा कर दी । पांच माह पूर्व जी.डी.ए. ने कब्जा लेने हेतु मुझे प्राधिकार-पत्र भी प्राप्त हो गया है, परंतु फ्लैट में पहले से ही एक व्यक्ति जी.डी.ए. के स्टाफ की सांठगांठ से अनधिकृत कब्जा किये बैठा है । उसने एक झूठा दावा भी कोर्ट में डाल दिया है कि वह मेरा किरायेदार है, अतः जी.डी.ए. द्वारा कब्जा खाली कराने का कोई औचित्य नहीं है । इससे न तो जी.डी.ए. उसे खाली करा पा रहा है और न ही मुझे कब्जा मिल पा रहा है । कृपया, परामर्श दें कि मैं क्या कार्यवाही करूं ?

कब्जाधारी ने किस आधार पर जी.डी.ए. से फ्लैट का कब्जा प्राप्त किया, क्या वह आपका किरायेदार है या नहीं— आदि सभी प्रश्नों का निर्णय न्यायालय में चल रहे दावे में होना है । आपको इस दावे में इस आशय का प्रमाण देना है कि आपको प्राधिकरण ने कब्जा दिया था या नहीं और आपने वर्तमान कब्जाधारी को आबाद नहीं किया । वर्तमान कब्जाधारी किस रूप में या किसके अधिकार से कब्जे में आया — यह प्रमाणित करना उसका काम है ।

हमारा हक

क.ख.ग. : पिताजी की स्व-अर्जित लाखों की संपत्ति,मकान-दुकान आदि के मालिक पिताजी के बजाय बड़े भैया बन बैठे हैं । हम चार भाई हैं, जिनकी शादी और बिजनेस आदि पिताजी ने जमाया है । सब भाई अलग-अलग रहते और अपना-अपना बिजनेस करते हैं । हम लोग पिताजी को हाथ खर्च के लिए प्रति माह अच्छी-खासी रकम देते हैं, परंतु भैया-भाभी और भतीजियां उसे भी बड़ी चालाकी से अपने पर ही खर्च करा लेती हैं । कृपया, कोई उपाय बताइए ताकि हम भाइयों को पिताजी की संपत्ति में से बराबर का हिस्सा मिल सके ।

आपके अनुसार सारी संपत्ति पिताजी द्वारा स्व-अर्जित है, इसलिए पिताजी के जीवनकाल में उनके किसी भी बेटे को उनकी संपत्ति में से हिस्सा मांगने का अधिकार नहीं है ।

निर्णय सुरक्षित है

पुरुषोत्तम कर्ण, पटना : याचिका की अंतिम सुनवायी हो जाने के बाद उच्च न्यायालय में न्यायाधीश द्वारा कितने दिनों तक निर्णय सुरक्षित रखा जा सकता है ? अधिक समय तक निर्णय सुरक्षित रखने में क्या 'जस्टिस डिलेड : जस्टिस डिनायड' का सिद्धांत लागू नहीं होता ? अगर निर्णय को सुरक्षित रखते हुए एक वर्ष से अधिक हो गया हो, तो क्या करना चाहिए ?

उच्च न्यायालय में याचिका की सुनवायी के बाद निर्णय सुरक्षित रखा जा सकता है । उच्च न्यायालय द्वारा सुरक्षित रखा गया निर्णय कितने समय में दिया जाए, इसके लिए नियमों में कोई सीमा निर्धारित नहीं है ।

निर्णय सुरक्षित रखे हुए एक वर्ष व्यतीत हो जाने का उल्लेख करते हुए उच्च

न्यायालय से निर्णय को शीघ्र घोषित कराये जाने की प्रार्थना की जा सकती है ।

प्लाट का रजिस्ट्रेशन

क.ख.ग., जबलपुर : क्या मकान हेतु प्लाट के क्रय-विक्रय के सौदे में रजिस्ट्रेशन (पंजीकरण) कराना आवश्यक होता है ?

एक सौ रुपये या उससे अधिक मूल्य की अचल संपत्ति के विक्रय के सौदे के दस्तावेज अर्थात विक्रय-पत्र का पंजीकरण कराना नियमानुसार अनिवार्य है ।

भाई का हिस्सा बेचा

विद्यासागर, मुजफ्फरपुर : एक भाई जमीन बेचते समय अपने भाई का हिस्सा भी बेच देता है । इस हालत में वह दूसरा भाई अपने हिस्से को प्राप्त करने के लिए क्या करे ? वह अपना हिस्सा भाई द्वारा बेचने से रोकने के लिए क्या करे ? यदि दूसरा भाई अपना हिस्सा नहीं छोड़ता है, तो उस स्थिति में क्रेता क्या करेगा ?

संपत्ति का स्वामी या अधिकृत व्यक्ति ही संपत्ति को बेच सकता है । कोई भी व्यक्ति उतना अधिकार ही दूसरे व्यक्ति को दे सकता है, जितना उसे स्वयं प्राप्त हो । संपत्ति बेचनेवाला व्यक्ति संपत्ति पर स्वयं को प्राप्त अधिकार से अधिक अधिकार क्रेता को नहीं दे सकता । एक और कानून का मान्य सिद्धांत है कि क्रेता को किसी भी संपत्ति को खरीदने से पूर्व संपत्ति तथा बेचनेवाले के अधिकार की भली प्रकार जांच कर लेनी चाहिए । ऐसा न करने पर क्रेता को परेशानी उठानी पड़ सकती है । क्रेता को अनधिकृत रूप में बेचे हिस्से पर

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ —रामप्रकाश गुप्त

कोई अधिकार प्राप्त नहीं हो सकता । बेच दिये जाने की स्थिति में उक्त जमीन के स्वामी को अधिकार है कि वह अपनी संपत्ति की रक्षा करे और क्रेता को अधिकार है कि वह उस व्यक्ति के विरुद्ध, जिसने अनधिकृत रूप से जमीन बेची है, कानूनी कार्यवाही करे ।

जमीन अपने नाम करायें

तारा देवी, देवरिया : मेरे पति ने पांच रुपये के स्टांप पेपर पर वसीयत लिखी कि मेरी जमीन मेरी पत्नी (यानी मेरे नाम) के नाम कर दी जाए । यह वसीयत उन्होंने अपनी मृत्यु से नब्बे दिन पूर्व लिखी थी । इस बात को पांच साल हो गये । मैं वसीयत के अनुसार जमीन को अपने नाम नहीं करा पायी । क्या अब जमीन मेरे नाम हो सकती है,वसीयत का पंजीयन नहीं हुआ है ।

वसीयत का पंजीकरण आवश्यक नहीं होता । नियमानुसार लिखी गयी वसीयत पंजीकरण नहीं होने पर भी वैध रहती है । पांच वर्ष का समय बीत जाने से वसीयत पर कोई फर्क नहीं पड़ता । मृत्यु से नब्बे दिन पूर्व लिखी होने के कारण भी वसीयत अवैध नहीं होती । वसीयत के आधार पर जमीन का स्वामित्व अपने नाम कराने के लिए आपको कार्यवाही करनी चाहिए ।●

जब एक ब्राह्मण-कुमारी ने स्वयंवर रचाया

● डॉ. शोभा निगम

कभी हमारे देश की कन्याएं अपना स्वयंवर रचाकर मनोनुकूल श्रेष्ठ वर का वरण किया करती थीं । सामान्यतया स्वयंवर की प्रथा क्षत्रियों में विशेषकर राजपरिवार में थी, किंतु ऐसे भी प्रसंग मिलते हैं जब ब्राह्मण-कुमारियों ने स्वयंवर द्वारा अपने वर चुने । ऐसा ही एक प्रसंग महाभारत में महर्षि देवल की कन्या सुवर्चला का है । इसका स्वयंवर इसलिए उल्लेखनीय है कि सुवर्चला इसे विशेष वर की प्राप्ति हेतु आयोजित करती है । इस स्वयंवर से सुवर्चला का वैदुष्य तो झलकता ही है, साथ ही यह भी सिद्ध होता है कि प्राचीन भारत में महिलाएं किस प्रकार अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व एवं इच्छा रखती थीं ।

समस्त शुभ लक्षणों से युक्त सुवर्चला के युवा होते ही महर्षि देवल उसके लिए योग्य वर हेतु चिंतित रहने लगे तो सुवर्चला ने कहा, ' आप मुझे ऐसे पति के हाथ सौंपिए, जो अंधा भी हो और आंखवाला भी हो ।'

कहीं तुम उन्मत्त तो नहीं हो गयी हो पुत्री !'' किंचित् दुःखी होकर महर्षि ने पूछा । इस पर सुवर्चला ने शांत भाव से कहा, '' नहीं पिता ! मैं उन्मत्त नहीं हुई हूं । मैं खूब सोच-समझकर ही कह रही हूं । ऐसा ही व्यक्ति मेरे लिए योग्य वर हो सकता है ।''

''किंतु ऐसा व्यक्ति मिलेगा कैसे ?''

''आप अपनी इच्छानुसार मेरे योग्य ब्राह्मणों को बुलवाइए, मैं उनमें से अपने योग्य वर का चुनाव स्वयं कर लूंगी ।''

उन्होंने अपने शिष्यों को दूर-दूर देशों में भेजकर ब्राह्मण युवकों को बुलवाया । एक दिन महर्षि देवल का आश्रम एक से बढ़कर एक ब्राह्मण युवकों से भर गया ।

ऐसे उत्सुक ब्राह्मणों की भीड़ में महर्षि सुवर्चला को लेकर पहुंचे । प्रत्येक से सुवर्चला का परिचय कराया और घोषणा की कि उपस्थित ब्राह्मण-समुदाय में से मेरी कन्या जिस किसी को पसंद करेगी, उसे मैं जामाता के रूप में स्वीकार करूंगा ।

तब महर्षि देवल की उस यशस्विनी कन्या ने समस्त ब्राह्मणों को सादर नमन कर विनम्रतापूर्वक कहा — **यद्यस्ति समितौ विप्रो ह्यंधोऽनंधः स मे वरः** । अर्थात् 'इस ब्राह्मण सभा में मेरा पति वही हो सकता है, जो अंधा हो

और अंधा न भी हो !'

यह विचित्र शर्त सुनकर सभी ब्राह्मण एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे कि सुवर्चला कहीं विक्षिप्त तो नहीं हो गयी है । या फिर महर्षि ने हमारा अपमान कराने के लिए हमें यहां बुलाया है ?

प्रत्यक्ष में तो किसी ने कुछ नहीं कहा किंतु मन-ही-मन सब पिता-पुत्री की निंदा करते हुए अपने-अपने देश लौट गये । सुवर्चला कुंवारी ही अपने पिता के घर रह गयी । महर्षि दुःखी तो थे पर उन्होंने सुवर्चला को कोई उलाहना नहीं दिया । वैसे, स्वयं सुवर्चला भी मनोनुकूल वर प्राप्त न होने से निराश थी । फिर भी वह अपनी शर्त पर दृढ़-प्रतिज्ञ थी ।

कुछ दिनों पश्चात् महर्षि देवल एक तेजस्वी ब्राह्मण-कुमार को साथ लिये सुवर्चला के पास पहुंचे और कहा कि "यह महर्षि उद्दालक के पुत्र श्वेतकेतु हैं— समस्त वेद-वेदांगों में पारंगत ।"

लाख वेद-वेदांगों में पारंगत हों, पर क्या यह अंधे होकर भी अंधे नहीं है ? सवर्चला अभी मन-ही-मन यह सब सोच ही रही थी कि श्वेतकेतु जिसे सुवर्चला की शर्त मालूम थी, बोल उठा— **सोऽहं भद्रे समागतः।** अर्थात् भद्रे, मैं वही हूं, जिसे तुम चाहती हो ! मैं तुम्हारे लिए ही यहां आया हूं । मैं अंधा हूं यह यथार्थ है क्योंकि मैं अपने मन में अपने को सदा ऐसा ही मानता हूं, फिर भी मैं संदेह-रहित हूं, अतः मैं अंधा नहीं भी हूं ।

आगे श्वेतकेतु अपनी बात की सिद्धि के लिए कुछ प्रमाण देते हैं, 'जिस परमात्मा की शक्ति से जीवात्मा सब-कुछ देखता, ग्रहण करता, स्पर्शादि करता है, वह परमात्मा ही चक्षु कहलाता है । जो इस चक्षु से रहित है, अर्थात परमात्मा को नहीं जानता, वह प्राणियों में अंधा है... मैं यह जानता हूं, अतः मैं अंधा नहीं हूं । किंतु इस मायने में मैं अवश्य अंधा हूं कि जगत जिन आंखों से देखता, जिस कान से सुनता, जिस त्वचा से स्पर्श करता, जिस नासिका से सूंघता, जिस रसना से रस ग्रहण करता है और जिस लौकिक चक्षु से सारा बरताव करता है, उससे मेरा कोई संबंध नहीं है । इसलिए मैं अंधा भी हूं ! अतः भद्रे ! तुम मेरा वरण करो । मैं तुम्हारा भरण-पोषण करने में समर्थ हूं— अतः तुम मेरा वरण करो ।'

श्वेतकेतु की बातों से संतुष्ट हो सुवर्चला बोल पड़ी— **मनसासि वृतो विद्वन्, शेषकर्त्ता पिता मम ।** अर्थात् विद्वन् ! मन से मैंने आपका वरण किया । शेष कार्य की पूर्ति, अर्थात विवाह-कार्य करनेवाले मेरे पिता हैं । अब आप मुझे उनसे मांग लीजिए— **एष्य वेद विधिक्रमः** अर्थात् यही वेद मर्यादा है ।

और तब पिता महर्षि देवल ने प्रसन्नतापूर्वक सुवर्चला और श्वेतकेतु का विवाह-संस्कार संपन्न करवा दिया ।

महाभारत के इस प्रसंग में विवाह के बाद सुवर्चला और श्वेतकेतु के मध्य हुए कुछ सुंदर संवाद हैं । इनसे एक आदर्श दंपती की झांकी तो मिलती ही है, कुछ गूढ़ आध्यात्मिक प्रश्नों का समाधान भी होता है । साथ ही यह भी विदित होता है कि उस काल की नारियां कितनी सूक्ष्मता से आध्यात्मिक विषयों पर चिंतन-मनन करती थीं । दोनों के मध्य हुए संवाद के कुछ अंश देखिए—

'शोभने ! वेदों में जिन शुभ कर्मों का विधान है, मेरे साथ रहकर तुम उन सबका

यथोचित रूप से अनुष्ठान करो और यथार्थ रूप से मेरी सहधर्मचारिणी बनो । तुम मेरी इच्छा के अनुसार काम करो, फिर मैं तुम्हारा प्रिय करूंगा । हम दोनों ममता, अहंकारादि से रहित होकर लोक-व्यवहार की सिद्धि एवं आत्म-कल्याण के लिए कर्मों का अनुष्ठान करेंगे ।' और सुवर्चला ने प्रसन्नतापूर्वक ऋषि का अनुसरण किया ।

पालन गृहस्थ धर्म का

कुछ काल पश्चात् दोनों के मध्य हुआ संवाद—

सुवर्चलाः द्विजश्रेष्ठ ! आप कौन हैं ?

श्वेतकेतुः देवि ! तुमने मुझे द्विजश्रेष्ठ कहकर संबोधित किया है, फिर तुम किससे पूछ रही हो ?

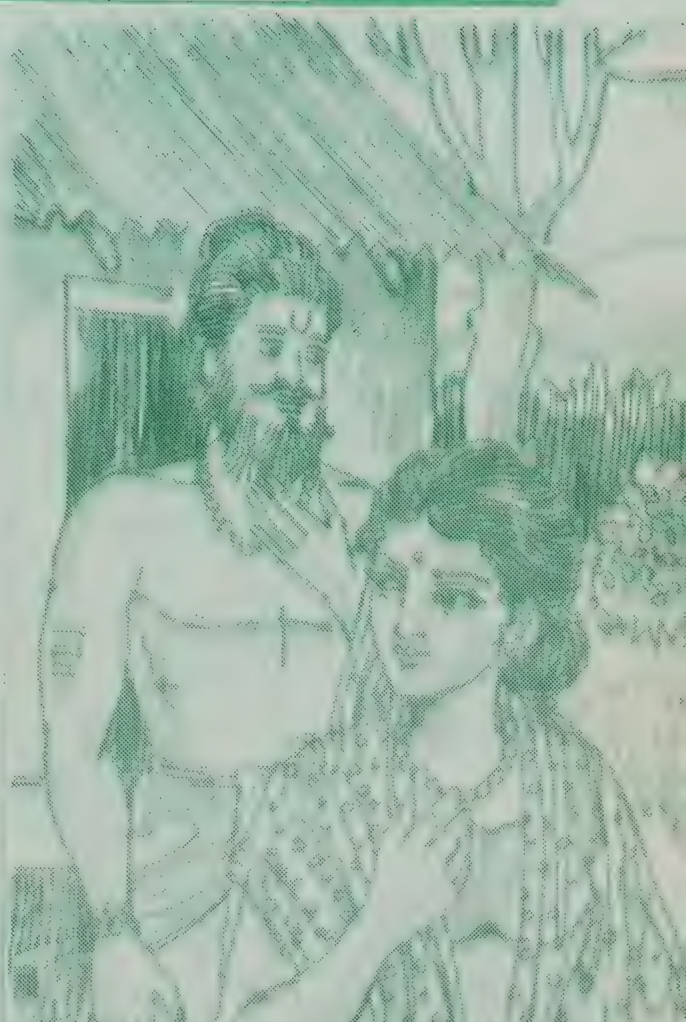
सुवर्चलाः महात्मा ! मैं हृदय-गुफा में शयन करनेवाले महात्मा से पूछ रही हूं ।

श्वेतकेतुः भामिनी ! वह तो कुछ कहेगा नहीं, क्योंकि, वह आत्मा नाम और गोत्र से रहित है । जिसे हम अहं (मैं) कहते हैं, वह हृदय-गुफा में स्थित परमार्थ-तत्त्व नहीं है ।

सुवर्चलाः ब्रह्मर्षि ! फिर आप नाना प्रकार के क्रिया-कलाप (गृहस्थ धर्म) में क्यों पड़े ? इससे तो आपका ज्ञान लुप्त हुआ जा रहा है ।

श्वेतकेतुः प्रिये ! श्रेष्ठ पुरुष जो-जो आचरण करता है, वही दूसरे लोग भी करते हैं । हम अपने गृहस्थ धर्म का पालन न करें, तो वर्ण-संकरता फैल जाएगी, जिससे धर्म में भी संकीर्णता आ जाएगी, किंतु ईश्वर को यह पसंद नहीं है ।

इस लंबे संवाद के अंत में श्वेतकेतु परमात्मा के विषय में बताते हैं कि वह क्या है ? 'वह



परमात्मा न तो स्त्री है, न पुरुष है और न ही नपुंसक है । वह केवल ज्ञान-स्वरूप है । उसी के आधार पर यह संपूर्ण संसार प्रतिष्ठित है । परमात्मा का ऐश्वर्य नाना रूपों में दिखायी देता है, किंतु उस तक वायु की पहुंच नहीं है । सूर्य और अग्नि उसे प्रकाशित नहीं कर सकते । परमात्मा से ही संपूर्ण जगत परिपूर्ण है और वे प्रत्येक प्राणी के हृदय में आत्म-रूप से निवास करते हैं ।'

—विभागाध्यक्ष दर्शनशास्त्र
शास. छत्तीसगढ़ महाविद्यालय, रायपुर

जो स्थान पंजाब में हीर-रांझा, बंगाल में कपाल-कुंडला और राजस्थान में ढोला-मारू की लोक कथाओं का है, वही स्थान सौराष्ट्र में सोन-हलामण की लोक कथा को प्राप्त है। इस अनुपम प्रेम-कहानी से सौराष्ट्र के ग्रामों की चौपालें आज भी मुखरित रहती हैं। जिस प्रकार सौराष्ट्र के पुरुष अपनी आन-बान-शान, वीरता और दानशीलता के लिए इतिहास प्रसिद्ध हैं, इसी प्रकार यहां की रमणियां अपने सौंदर्य और प्रत्युत्पन्नमति के लिये।

सोनलदे से विवाह योग्य वर की तलाश में राढ़िया ने दसों दिशाओं में दूत भेजे। देश और विदेश से धनी-मानी, शूर-वीर राजपुत्रों के विवाह संदेश भी प्राप्त हुए। परंतु सोनलदे ने पिता द्वारा की गयी इस व्यवस्था से विवाह करना अंगीकार नहीं किया। महाकवि कालिदास की विद्योत्तमा की भांति उसने प्रण किया कि जो भी बुद्धिमान पुरुष उसके द्वारा उठायी गयी समस्या की सही-सही पूर्ति लिख भेजेगा, वह उसी को वरेगी अन्यथा कुमारी ही रहेगी।

गुजरात की प्रणय लोक कथा

वह जलती चिता में जलकर सती हो गयी

● डॉ. रामसिंह यादव

सोन-हलामण की प्रणय-गाथा उसी अलबेले सौराष्ट्र की अनुपम धरोहर है। वह प्रणय-प्रसंग आज से कई सौ वर्ष पूर्व घटित हुआ था।

काठियावाड़ की मेर जाति के प्रिय प्रदेश बरड़ा में मेरणु गांव का अधिपति था— मूल राढ़िया। वह एक वीर राजपूत था साथ ही शूरवीर और दानी भी था, जिसकी वीरता तथा दानशीलता की कथाएं आज भी सौराष्ट्र में कही-सुनी जाती हैं। उसकी केवल एक ही कन्या थी। उसका नाम उसने उसके स्वर्णिम देह-वर्ण के कारण—सोनलदे रखा था।

समस्या थी—

घड़-वण घड़ियां, अेरण आभड़ियां नहिं

अर्थात, ऐसा कौन-सा आभूषण है, जो हथौड़े के बिना घड़ा गया हो, और जिसे आभूषण बनाने के औजार एरन ने भी न छुआ हो?

स्नेहवश पिता सोनलदे की बात न टाल सके। उन्होंने अपने चारणों को देश-विदेश में भेजा, ताकि कोई मनुष्य उसकी बुद्धिमान पुत्री द्वारा उठायी समस्या का हल लिख भेजे। परंतु, कोई भी इसकी सही पूर्ति न कर सका तो राढ़िया हताश हो गया।

एक स्वामिभक्त वृद्ध दूत अपने स्वामी के परिताप को न देख सका और वह अशक्त होते हुए भी समस्या की पूर्ति करनेवाले की खोज में उत्तर दिशा की ओर चल पड़ा । चलते-चलते अनेक दुर्गम पहाड़ों और जंगलों को लांघकर वह धूमली नगर में पहुंचा । धूमली में शियाजी नामक क्षत्रिय नरेश का राज्य था । शियाजी ने सोनलदे की रूपश्री की चर्चा सुनी हुई थी । उस वृद्ध दूत ने उसके दरबार में समस्या सुना दी । शियाजी ने कुछ दिनों बाद समस्या की पूर्ति दूत को लिख दी कि—

सोनलदे ने उपर्युक्त पूर्ति पढ़ी । उसका अंतर आनंद से खिल उठा । वह आनंद मग्न होकर पूर्तिकर्ता शियाजी से विवाह हेतु असंख्य दास-दासियां और सैनिकों को लेकर धूमली के लिए चल पड़ी ।

धूमली पहुंचकर सोनलदे ने फिर परीक्षा लेनी चाही, जिससे किसी प्रकार के ऐसे धोखे का अंदेशा न रहे, जैसा विद्योत्तमा के साथ हुआ, इसलिए उसने नगर के बाहर एक बगीचे में अपना डेरा डाला और फिर एक छंद लिख भेजा, जिसमें उसने पूछा था कि—

[illegible] समस्या के दौरान समस्या की जो पूर्ति सोनलदे को मिली, उसका रहस्य मालूम होने पर सारी स्थिति ही उलट गयी । धोखा खाने से तो बच गयी सोनलदे पर वह [illegible] को फिर भी न पा सकी ।



धड़-वण घड़िया, एरण आभड़ियां नहिं
सखड़ स्वात तणां, मड़े तो मोती नीपजे
माता मेरामण बसे, पिता बसे कैलास
जोवे तो जूनां मोकलुं, नवां तो आसो मास

अर्थात, जो हथोड़े से नहीं घड़े जाते और एरन भी जिसे नहीं छूता, वह आभूषण है— स्वाति-नक्षत्र की बूंद से उत्पन्न मोती । हे सुंदरी यदि तुम्हें ऐसे आभूषणों को देखने की इच्छा हो, तो अभी तो वे पुराने ही मिल सकेंगे, कहो तो भेज दूं और यदि नये मोती चाहिए तो उसके लिए कवार मास तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगे, क्योंकि इनकी माता— सीप तो सागर में रहती है, और पिता— मेघ कैलाश पर्वत पर ।

'हे श्रेष्ठ, तुम्हारे विवाह समारोह में चौपाए, चौरस आकारवाले, स्त्रीवाचक पदार्थ की जरूरत है । बताओ वह कौन है ?
... पंखवाला है, पर्वतों पर रहता है और विवाह-कार्य में वर के आगे रहकर भी वह तोरण पर चढ़ता है । बताओ, वह कौन है ?'

शियाजी ने उक्त पहेलियों के भी उत्तर भेज दिये । उत्तर थे— चौकी और मोर ।

सोनलदे को पूर्ण विश्वास हो गया कि उसका विवाह-संबंध अत्यधिक मधुर, निराला और सफल होने जा रहा है लेकिन नहीं । विधाता ने तो उसके भाग्यलेख में कुछ और ही लिख रखा था । विवाह की तैयारियां हो रही थीं । इसी

तब एक दिन सोन की दासियां पनघट पर शियाजी के भतीजे कुंवर हलामण की दासियों से उलझ पड़ीं। इसी झगड़े में कुंवर हलामण की दासियों द्वारा एक भयंकर रहस्य का उद्घाटन हो गया, जिसने सारी परिस्थिति ही उलट दी—

[illegible], [illegible]
[illegible], सोन [illegible]

अर्थात, 'बेटा बूढ़े ताऊ हमारे के मान को देते हैं। भाग्य की लीला तो देखो, समस्या की पूर्ति लिखकर भेजता है हमारा कुंवर हलामण और विवाह करने जा रहा है शियाजी।

रहस्य को जानकर सोनलदे ने इसकी सत्यता ज्ञात करने के लिए कुमार हलामण के पास विवाह के लिए एक समस्यायुक्त प्रस्ताव भेजा। तुरंत ही पहलेवाली शैली में ही उत्तर पाकर उसे विश्वास हो गया कि पहली समस्या-पूर्ति कुंवर हलामण ने ही की थी।

विवाह रुक गया। सोनलदे बगीचे में अपना डेरा डाले पड़ी रही। कुछ समय पश्चात, बगीचे में ही हलामण और सोनलदे का अपूर्व प्रेम-मिलन हुआ। लेकिन विधाता को यह भी मंजूर नहीं था। हलामण और सोनलदे के मिलन की सूचना पाकर शियाजी की आंखें लाल अंगारे उगलने लगीं। भतीजे हलामण को उसने तुरंत ही देश निकाला दे दिया। काला परिधान धारण किये हलामण नगर से दो-चार कोस की दूरी पर ठहर गया इस आशा से कि शायद, शियाजी का हृदय-परिवर्तन हो जाए। परंतु, आशा के विपरीत उसे शियाजी का यह संदेश मिला कि 'हलामण, सोनलदे की प्रीत छोड़ दे और देश लौट आ।'

हलामण ने दूत के हाथों कहलवा भेजा

बदले तीनं लोक, बरड़ा दूत बदले नहिं
लागे कुड़ायां खोट, [illegible] करे हलामणो

अर्थात, और लोग ही अपनी बात से पलट सकते हैं, मैं नहीं। मैं बरड़ा का राज-पुत्र हलामण अपने वचन को नहीं तोड़ सकता। यदि मैंने सोन को दिया अपना वचन भंग कर दिया, तो हमारे कुल में खोट लग जाएगी।

अंत में निराश हो हलामण देश छोड़ वन-वन भटकता हुआ अपनी बुआ के राज्य सिंधु देश जा पहुंचा। बुआ ने बहुत समझाया कि वह सोनलदे को भूलकर यहां की सर्वश्रेष्ठ सुंदरी से शादी कर ले, पर सोनलदे का सच्चा प्रेमी हलामण नहीं माना।

उधर सोनलदे ने भी शियाजी द्वारा भेजे विवाह संदेश और अगिणित धन, वस्त्रों को ठुकराकर कहला भेजा कि मैं तो पति के रूप में हलामण को वर चुकी हूं और सोनलदे भी अपने प्रियतम हलामण की खोज में वन-वन भटकने लगी। अंत में, उसे यह दुःखद संदेश मिला कि हलामण अक्षय तृतीया के मेले में पहाड़ी झूले पर से झूलता हुआ गिरकर मर गया है। सोनलदे उस पहाड़ी पर पहुंची और व्याकुल होकर उसने कहा—

हाबानी हदपांय, [illegible] भर्या पीअड़ियो
[illegible], [illegible] हलामणो

अर्थात, इस हाबा नामक पहाड़ी के वक्ष में हल्दी लगे शरीरवाला हलामण सोया हुआ है। विधाता बड़ा क्रूर है। अब तो हमारे कंगन श्मशान-भूमि में ही खुलेंगे। और एक पतिव्रता पत्नी की भांति सोनलदे हलामण के शव को गोद में लेकर चिता में जलकर सती हो गयी।

—१४, उर्दूपुरा, उज्जैन

बुद्धि विलास

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सभी प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प

— संपादक

१. गणित के क्षेत्र में प्राचीन भारत की मुख्य देन क्या थी ?

२. क. पृथ्वी से सूर्य की दूरी कितनी है ?

ख. सूर्य की किरणों को पृथ्वी तक पहुंचने में कितना समय लगता है ?

३. अमरीकी इतिहास में कब, कहां तथा किसने चार सौ एकड़ जमीन शराब के एक प्याले में खरीदी थी, जिसमें वह बस गया ?

४. क. 'क्रिसमिस ट्री' क्या होता है और यह कब लगाया जाता है ?

ख. यह किसका प्रतीक है ?

ग. किसकी याद में लगाया जाता है ?

५. क. झूठ पकड़नेवाला मशीन का क्या नाम है ? इसका आविष्कार किसने किया था ?

ख. इस मशीन द्वारा क्या होता है ?

६. क. हस्तशिल्प वस्तुओं का रेकॉर्ड निर्यात कब और कितना हुआ है ?

ख. पिछले ३० वर्षों में देश में कॉफी के उत्पादन और निर्यात में कितनी वृद्धि हुई है ?

ग. लोकसभा के चुनाव में महिलाओं का सर्वाधिक प्रतिशत कब रहा ?

८. निम्नलिखित पुरस्कार किसे मिले हैं :—

क. १९९६ का अंतरराष्ट्रीय गांधी शांति पुरस्कार

ख. १९९५ का के.के. बिड़ला फाउंडेशन खेलकूद पुरस्कार

ग. मध्यप्रदेश का १९९६-९७ का राष्ट्रीय कबीर सम्मान, तुलसी सम्मान, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान।

९. क. पाकिस्तान के क्रिकेट कप्तान वसीम अकरम ने टेस्ट मैच में दो नये विश्व रेकॉर्ड कौन-से कायम किये हैं ?

ख. एकदिवसीय क्रिकेट मैच में सबसे तेज शतक बनाने में किसने नया विश्व रेकॉर्ड कायम किया है ?

१०. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए कि यह क्या है—



ऐसी थीं हमारी निर्वाचन परंपराएं

● डॉ. मीनाक्षी जोशी

हमने संविधान की संरचना करते समय विश्व की प्रायः समस्त संविधान परंपरा का अध्ययन किया और अपने संविधान की एक अनुपम विशेषता 'गुण ग्राहकता' के नाम पर उन सभी संविधानों से गुणात्मकता का ऋण ले एक भानुमती का पिटारा तैयार किया और उसे भारतीय संविधान का नाम दिया। एक प्रश्न उठता है कि यदि विश्व की लगभग समस्त परंपराओं का जनक पूर्व का यह उपमहाद्वीप भारत रहा है फिर संविधान में वर्णित नियमों-उपनियमों के लिए यह पश्चिम का गहन अध्ययन क्यों ? जो परिस्थिति, देश, काल व वातावरण तथा सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश इस देश का है उसमें दूसरे परिवेश की अनुकूलतम परिस्थितियों को लादना कहां तक न्यायसंगत है ? यदि हम अपनी ऐतिहासिकता और पुरातनकालवादी परंपराओं पर दृष्टिपात करें तो मेरा दावा है इतनी सुंदर, सुगठित और सुचारू प्रशासनिक परंपराएं अपनी महिमा व गरिमा से परिपूर्ण हैं कि यदि उस पर गंभीरतापूर्वक विचार करते हुए अपने संविधान का उन्हें अंग बनाया जाता तो भविष्य में व वर्तमान में घटनेवाली अनेक समस्याओं का सामना ही नहीं करना पड़ता।

निर्वाचन की परंपरा

चुनाव जिसे संवैधानिक भाषा में 'निर्वाचन' कहते हैं। इसकी भी बड़ी ही सुंदर व अपनाये जाने योग्य भारतीय परंपरा रही है। राजतंत्र होते हुए भी प्रजा राजा का वरण करती थी। राजा के निर्वाचन में प्रत्येक युग में प्रजा ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से भागीदारी की है। और राजा या प्रशासन का प्रमुख प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रजा के प्रति उत्तरदायित्वपूर्ण रहा है।

हम इस निर्वाचन एवं उत्तराधिकार के नियम की यात्रा वैदिक युग से प्रारंभ करते हैं जिससे हम यह निश्चित कर सकें कि हमारी परंपराएं प्रारंभ से कितनी पूर्ण और सर्वांगीण और सार्वकालिक हैं।

वैदिक युग में राष्ट्र या जनपद का मुखिया राजा होता था। वस्तुतः राजा के पुत्र को पिता की मृत्यु के पश्चात राजा का पद दिया जाता था किंतु यह आवश्यक था कि उस राजा के पुत्र का वरण 'विशः' या प्रजा करे। यदि राजा का पुत्र राजा के रूप में प्रजा को योग्य प्रतीत होता तो

प्रजा उसे ही वरण कर लेती, योग्य पुत्र के अभाव में प्रजा को यह अधिकार था कि वह राजवंश के किसी अन्य व्यक्ति या कुलीन परिवारों के किसी व्यक्ति का राजा के पद के लिए वरण करे ।

आरंभ में 'आर्य विश सभा-समितियों' के माध्यम से 'विशपति' को चुनते थे । शत्रु पर विजय प्राप्त करने के लिए उन्हें पराक्रमी राजा का नेतृत्व अपेक्षित था । ऋग्वेद में एक स्थल पर विशों द्वारा राजा के निर्वाचन का उल्लेख है —ता ई विशो न राजानं वृणाना
बीभत्सुवो अप वृत्रादतिष्ठन् ।

(ऋ. १०-१२४-८)

अर्थात्— वृत्र से अवरुद्ध नदियों के जल इंद्र का आश्रयं लेते हैं । इंद्र उन प्रसन्न नदियों में आकर रहता है । जैसे शत्रु से भीत विशों ने प्रतिरक्षा के लिए राजा को चुना वैसे ही मुक्त होने के लिए इंद्र को चुना ।

राजा के निर्वाचन या वरण को सूचित करने के लिए अथर्ववेद में मंत्र के माध्यम से कामना की गयी है—

त्वा विशो वृणुतां राज्याय
त्वामिमः प्रदिशः पंचदेवी
वर्ष्मन् राष्ट्रस्य ककुदि
श्रयस्व ततो न उग्रा विभजा वसूनि ।

प्रजा (विशः) राज्य के लिए तुम्हारा वरण करती है, सब दिशाओं के लोग तुम्हारा वरण करते हैं । तुम राष्ट्र रूपी शरीर के सर्वोच्च स्थान पर आसीन रहो और वहां रहते हुए उग्र शासक के समान सब में संपत्ति का विभाजन करो । इसका तात्पर्य यही हुआ कि राजा का निर्वाचन सबकी सम्मति एवं स्वीकृति पर प्रजा (विशः) अथवा जनता ही करती थी । एक मंत्र में राजा देवताओं से प्रार्थना करता है कि वे उसके प्रतिद्वंद्वी सजात कुलीनों के विरोध का दमन करें और प्रार्थी को राजा बनाएं—

ह्वयंतु त्वा प्रतिजनाः, प्रतिमित्रा अवृषत् ।
इंद्राग्नि विश्वेदेवास्ते विशि क्षेममदीधरन् ।।
यस्ते हवं विवदत सजातो यश्च निष्ट्यः ।
अपोचमिंद्र तं कृत्वाऽथम् मिहागमय ।।

(अथर्ववेद ३.३.५/६)

इससे प्रकट होता है कि राजा को सजात कुलीनों की अनुमति अपेक्षित थी । वे जिसका अनुमोदन करते वही राजा होता था । राजा के निर्वाचन के संबंध में ही अन्य अनेक मंत्र उपलब्ध होते हैं, जो कि अत्यधिक महत्त्वपूर्ण

उक्त प्रमाण से अभिव्यक्त होता है कि भले ही वर्तमान मतदान की तरह की पद्धति वैदिक काल में न रही हो किंतु राजा को विशों और सजातों की अनुमति प्राप्त करना अत्यावश्यक था । वंशानुगत राज्यों में भी इनकी अनुमति प्राप्त करना अनिवार्य था क्योंकि ये राज्याभिषेक का अंग बन चुका था ।

है ।

सहर्ष हम तुम्हें अपने बीच में आह्वान करते हैं । तुम हमारे बीच में अविचल रूप से तथा ध्रुव होकर स्थिर रहो । सब प्रजा तुम्हें चाहे, तुमसे राष्ट्र का अधिकार कभी न छीनना पड़े । यहीं रहकर तुम उत्कर्ष करो, कभी तुम्हारा पतन न हो, कभी विचलित न हो । इंद्र के समान ध्रुव होकर तुम रहो और इस राष्ट्र को धारण करो । ये पर्वत सुदृढ़ रूप से स्थिर रहें, यह पृथ्वी भी स्थिर है, यह सारा जगत् ध्रुव रूप से स्थिर है, यह द्यु लोक भी भली-भांति स्थिर है, इसी प्रकार प्रजाओं का यह राजा भी ध्रुव रूप से स्थिर रहे । राजा वरुण देव बृहस्पति, इंद्र और अग्नि इस राजा को ध्रुव रूप से राष्ट्र को धारण करने की शक्ति दें—

आ त्वाहार्षेमतरेधिर्ध्रुवास्तिष्ठाविवाचलिः
विशस्त्वा सर्वा वाञ्छंतु मा त्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत्
इहैवैधि मापच्योष्ठाः पर्वत इवा विवाचलिः
इंद्रे हैव ध्रुवस्तिष्ठेह राष्ट्रमुधारय ।

(अथर्ववेद ६/८७/११-२)

अथर्ववेद के इन मंत्रों में राजा से संबंधित धारणाएं स्पष्ट हो जाती हैं । प्रथमतः तो यह कि प्रजा राजा के ध्रुव रूप में राज्य करने की इच्छुक थी, उसकी सामूहिक इच्छा यह थी कि वरुण बृहस्पति आदि देवता राजा को सृष्टि पर्यंत कार्य करने की शक्ति प्रदान करें जिससे वह भी पृथ्वी, द्युलोक, पर्वत आदि की भांति ध्रुवरूपेण स्थिर रह सके । यहां एक बात ध्यान देने योग्य है कि राजा के स्थायित्व की इच्छुक प्रजा होने पर भी वह राजा से 'राष्ट्र' में बने रहने का अधिकार छीन भी सकती थी,इसका प्रमाण मंत्र में कहे गये शब्द '**मा त्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत**' से है । अर्थात जहां प्रजा को राजा को सिंहासीन करने का अधिकार था वहीं वह उसे पदच्युत करने की भी अधिकारिणी थी । इसके साथ ही साथ यह भी आवश्यक था कि 'राजा' पद के लिए वही व्यक्ति निर्वाचित होता था जो उसी विशेष 'जन' का हो जिससे राष्ट्र का निर्माण हुआ हो । इसके लिए अथर्ववेद में एक स्थान पर कहा गया है— 'मैं राजा राष्ट्र का अपना व्यक्ति हूं,मैं अपने को अवश्य उत्तम बनाऊंगा' ।

'अहं राष्ट्रस्यमीवर्ग निजो भूयासमुत्तमः

(अ. ३/५/२)

एक अन्य मंत्र में राजा को अंतरभूः कहा गया है । जिसका तात्पर्य श्री सत्यकेतु विद्यालंकार कहते हैं 'राजा अपने अंदर का है' । अथर्ववेद के साथ-साथ यजुर्वेद के कुछ मंत्र हैं जिनमें प्रजा द्वारा राजा के वरण के संकेत मिलते हैं । सब देव लोग महान फल के लिए सबसे ज्येष्ठ होने के लिए इस व्यक्ति को प्रतिस्पर्धा से विरहित करते हैं—

'इमंदेवा असपत्रं सुवध्वं महते क्षत्राय
महते ज्येष्ठाय महते जानराज्यायेंद्रस्येंद्राय

(यजु. ९/४०)

"राजा का निर्वाचन प्रजा इसी प्रयोजन से करती है कि वह सब प्रकार की विपत्तियों से प्रजा की रक्षा करे, वह सबसे ज्येष्ठ होकर रहे अर्थात सर्वोपरि हो,उसके नेतृत्व में जनता का प्रभुत्व कायम रहे और वह इंद्रों का भी इंद्र बनकर रहे ।" (यजु.)

राजा का सर्वोच्च स्थान

यजुर्वेद में वर्णित मंत्रों से यही स्पष्ट होता है कि प्रजा राजा को सर्वोच्च स्थान देने की इच्छुक है । वह उसके नेतृत्व में अपने प्रभुत्व का भार राजा को देती है । इसके साथ ही साथ इस मंत्र

में ऐसे सर्वोत्तम, सर्वोपरि राजा की नियुक्ति उत्तम देवजनों द्वारा हो इसकी स्वीकृति व निर्देश भी मिलता है ।

वैदक युग में प्रजा जिस राजा का वरण करती थी उससे यह अपेक्षा रखती थी कि वह ध्रुव रूप में स्थिर होकर सृष्टि पर्यंत कार्य करे, उसका कार्यकाल किसी अवधि की सीमा-रेखा में बंधा नहीं था । इसके लिए अथर्ववेद के मंत्र में कहा गया है—

दशमीमुग्रः सुमतावराहे

(अथर्ववेद ३/४/७)

'हे राजन् तू सुप्रसन्न रूप से राष्ट्र में दसवीं अवस्था तक शासन करता रहे' ।

यहां दशमी से तात्पर्य है नब्बे वर्ष से ऊपर की आयु सीमा । अर्थात राजा वृद्धावस्था तक राज्य भार संभालता रहेगा । पर कभी-कभी ऐसी भी स्थिति हो सकती थी कि जब राजा दशमी अवस्था तक राज्य भार नहीं संभाल पाता था । प्रजा उसे कुछ कारणों से पद से निर्वासित भी कर सकती थी और यदि प्रजा उसे पुनः पदासीन करना चाहे तो उसे वापस भी बुलाया जा सकता था । अथर्ववेद में इस प्रकरण के संबंध में कहा है, 'वह जो अन्य क्षेत्र में विचरण कर रहा है या वहां पर अवरुद्ध है, वह श्येन द्वारा पराये स्थान से पुनः यहां ले आया जाएगा । अश्विन् उसके लिए मार्ग सुगम कर देंगे सब सजात उसके चारों ओर एकत्र होंगे ।

अनुकूलता का प्रतीकः पर्णमणि

इस प्रकार वैदिकयुग में राजा का चुनाव विशों की अनुमति पर निर्भर था । ब्राह्मण काल में विशों की संप्रभुता नहीं रही । वह क्षत्र सजातों के हाथ व अधिकार क्षेत्र में आ गयी, समाज का वर्ण विभाजन इसका कारण था । ये क्षत्र-सजात अपने में से श्रेष्ठ व्यक्ति को (सजात) राजा चुनने लगे ।

अथर्ववेद में 'पर्णमणि' का वर्णन मिलता है । राजा, रानियों के घर अभिषेकपूर्व जाता था । वे उसे पर्णमणि देती थीं । यह पर्णमणि उनकी अनुकूलता की प्रतीक थी ।

उक्त प्रमाण से अभिव्यक्त होता है कि भले ही वर्तमान मतदान की तरह की पद्धति वैदिक काल में न रही हो किंतु राजा को विशों और सजातों की अनुमति प्राप्त करना अत्यावश्यक था । वंशानुगत राज्यों में भी इनकी अनुमति प्राप्त करना अनिवार्य था क्योंकि ये राज्याभिषेक का अंग बन चुका था ।

— ९७५, दक्षिण सिविल लाइंस, जबलपुर-४८२००१

अद्भुत कीट : प्लैनेरियन

प्लैनेरियन करीब २ सेंटीमीटर लंबा कीड़ा होता है जो नदियों में पायी जानेवाली काई खाकर जिंदा रहता है । उसकी विशेषता यह है कि अगर उसका शरीर कई टुकड़ों में काट दें तो थोड़ी ही देर में उसके शरीर का हर एक टुकड़ा पूरा नया प्लैनेरियन बन जाता है । यहां तक कि उसकी छोटी-छोटी आंखें भी नयी बन जाती हैं । उसकी आंखें मनुष्य की आंखों से काफी मिलती हैं ।

● **विनोद कुमार सोनी**

व्यंग्य

डॉक्टर ने मरीज की पूरी तरह जांच करने के बाद कहा, ''यह कोई बहुत पुरानी बीमारी है जो आपका स्वास्थ्य और मानसिक शांति नष्ट कर रही है ।'' रोगी ने गिड़गिड़ाते हुए कहा, ''भगवान के लिए धीरे बोलिए डॉक्टर साहब, वह बीमारी बाहर ही बैठी है ।''

●

पति-पत्नी घर-बार की बातों पर चर्चा कर रहे थे कि एकाएक पति ने कहा, ''हर परिवार में यह होता आया है कि पिता की बुद्धिमानी बच्चे की उन्नति में बाधक बन जाया करती है ।'' पत्नी ने शांति से उत्तर दिया, ''शुक्र है भगवान का, हमारे बच्चे के मामले में यह बाधा नहीं आएगी ।''

● पुष्पेश कुमार पुष्प



अजय, ''मेरी बीवी के दिल में मेरी जो बात एक बार बैठ गयी तो समझो पूरे जीवन के लिए बैठ गयी ।''

विजय, ''बहुत खुशनसीब हो ।''

अजय (गुस्से से), ''क्या खाक खुशनसीब हूं । शादी से पहले मैंने उससे कहा था कि आजीवन तुम्हारा गुलाम रहूंगा, सो अब तक वह मुझे गुलाम ही समझे हुए है ।''

●

अशोक ने दिनेश से कहा, ''यार, दुनिया ऐसे लोगों से भरी पड़ी है जो अपनी मूर्खता पर भी जश्न मनाते हैं ।''

दिनेश, ''वह कैसे ? मैं तुम्हारी बात समझ नहीं पाया ।''

अशोक (समझाते हुए), ''सीधी-सी बात है, लोग पहले तो शादी करते हैं और फिर वर्षगांठ भी मनाते हैं ।''

● नरेन्द्र सिंघवी

एक फौजी के कोट पर ढेर सारे पदक देखकर एक युवक ने पूछा, ''आप बहुत बहादुर रहे होंगे, जो इतने पदक मिल गये ?''

फौजी, ''दरअसल यह जो सबसे बड़ा पदक है, यह मुझे गलती से दे दिया गया था । शेष सारे छोटे-छोटे तो मुझे बड़े पदक के कारण मिले हैं ।''

●

प्रेमिका, ''डियर, आखिर तुम्हारा दिवाला कैसे निकल गया ?''

प्रेमी (खीझकर), ''तुम जैसी तेज रफ़्तार महिलाओं और सुस्त रफ़्तार घोड़ों के कारण !''

● सुभाष बुड़ावनवाला

''आखिरकार बेवकूफों की गणना कैसे की जाती होगी ?'' एक मित्र ने दूसरे से प्रश्न किया ।

''क्यों, क्या आपके पास कोई नहीं आया ?'' मुंह लगे दोस्त ने उसकी बात का उत्तर देते हुए कहा ।

●

''डॉक्टर साहब कुछ दिन से मेरी बीवी ने बोलना बिलकुल छोड़ दिया है, वह चौबीसों घंटे खामोश रहती है, उसका इलाज कर दीजिए ।'' श्याम ने डॉक्टर से कहा ।

''किस बात का इलाज, जाइए अपने घर जाइए और अपनी किस्मत को सराहिए । तुम तो वाकई भाग्यशाली पति हो ।'' डॉक्टर ने उत्तर दिया ।

● प्रो. शरद नारायण खरे

तरंग

नीलकंठ

जनता को सफेद धन की
सुधा पिलाकर नेताजी
नीलकंठ-सा जी रहे हैं
भ्रष्टाचार के सागर से निकले
काले धन का विष
पी रहे हैं ।

बाढ़

देश की सभी
राजनीतिक पार्टियों के
नेता हैं बादल,
जिनके कैलेंडर में
हर महीना है आसाढ़ ।
तभी तो आ रही है
घोटालों की बाढ़ ।

● उमाशंकर यादव

प्रमाण

भावुक पलों में
लेखिका ने
प्रेमी से कहा—
''मुझे स्वीकारो
मैं तुम्हारी हूं
अब तक
मौलिक, अप्रकाशित
और
अप्रसारित हूं ।

● राकेश साहू

घोटाला

घोटाले पर घोटाला
बाप बेटे से भी काला ।

दौलत

बेहिसाब दौलत का
हिसाब यों बताया
ईश्वर ने इसे
छप्पड़ फाड़कर गिराया ।

● माया प्रसाद

सत्ताधारी

संपूर्ण प्रजा
क्षुधा-ग्रस्त
सत्ताधारी
मस्त-मस्त ।



सत्ता

हाथ लगी
तो चांदी
वरना
फूटी हांडी ।

कुरसी

रही पुकार
बार-बार
करो नियंत्रण
भ्रष्टाचार ।

● पुनीत कुमार पांडेय

कहानी

संदेह का कुहासा

● यशपाल जैन

ओफ क्या हो गया है, इस दिल्ली नगरी को ! न समय पर टैक्सी मिलती है, न ऑटो । नलिन को निजामुद्दीन स्टेशन जाना था । बड़ी मुश्किल से उसे एक टैक्सी मिली । ड्राइवर ने मनमाना किराया मांगा । देना पड़ा । स्टेशन पहुंचकर घड़ी देखी तो गाड़ी छूटने में सिर्फ पंद्रह मिनट बाकी थे । उसने लंबी सांस ली और वातानुकूलित डिब्बे की अपनी आरक्षित सीट के नीचे सामान रखवाकर ऐसे बैठ गया, मानो उसने कोई बड़ा भारी मोरचा फतह कर लिया हो । सोचने लगा, अगर टैक्सी मिलने में थोड़ी देर और हो गयी होती तो वह गाड़ी चूक जाता और तब समय पर विदिशा पहुंचना संभव न होता । सारे [illegible] कितनी हैरानी में पड़ जाते ?

सोचते-सोचते उसकी निगाह अचानक सामने की सीट पर गयी । अधेड़ उम्र की एक महिला और एक लड़का बैठे [illegible] रंग की महिला अपने भारी बदन को साड़ी में समेटे ऐसे बैठी थी—जैसे कोई नव-वधू हो । लड़का बीस-बाईस साल का रहा होगा । दोनों बड़े निश्चिंत भाव से बैठे थे ।

"कहां जा रहे हैं ?" नलिन ने पूछा ।

"सूरत ।" लड़के ने उत्तर दिया । महिला ने मुसकराते हुए नलिन की ओर देखा ।

"वाह ! तब तो विदिशा तक आप लोगों का साथ रहेगा ।" नलिन ने संतोष के स्वर में कहा ।

गाड़ी चल पड़ी । थोड़ी देर में रेल का परिचायक आया । बोला, बिस्तर चाहिए । नलिन के पास अपना बिस्तर था । उसने इंकार कर दिया । लड़के ने दो बिस्तरों की मांग की ।

इसके बाद नलिन कुछ समय अपने में खोया रहा । फिर उठा । चौड़ी सीट को गिराकर अपना बिस्तर फैलाया, जाकेट उतारी और तह करके तकिये के नीचे रख दी । कुरते को खूंटी पर टांग दिया और बिस्तर पर लेट गया । लेटे-लेटे उसने लड़के से कहा, "एक काम करोगे ?"

"क्या ?"

[illegible] सूटकेस को जंजीर से बांध दो ।" इतना कहकर वह उठा और उसने अपने बैग में से जंजीर और ताला निकालकर लड़के की ओर बढ़ा दिया । लड़के ने उन्हें लेकर कुंडे में जंजीर डालकर उसके सूटकेस को बांध दिया और ताला लगाकर चाबी उसकी ओर बढ़ा दी ।

नलिन ने देखा कि उसने अपने सूटकेस को छोड़ दिया है । जंजीर काफी लंबी थी । उसमें उसका अपना सूटकेस भी आ सकता था ।

"अरे, तुमने अपने सूटकेस को क्यों नहीं बांधा ?" नलिन ने चिंता के साथ कहा, "आजकल का वक्त बड़ा खराब है । जरा आंख झपकी नहीं कुछ भी हो सकता है ।"

"आप ठीक कहते हैं लेकिन मेरी मां कभी किसी चीज के लिए तो कभी किसी चीज के लिए बार-बार सूटकेस खुलवाती रहती हैं ।" युवक ने एक सांस में कह दिया । महिला की मुसकराहट कुछ और चौड़ी हो गयी ।

नलिन थका था, सो जाना चाहता था लेकिन तभी महिला ने बटुआ खोलकर कुछ दवाइयां निकालकर लड़के की ओर बढ़ा दीं । लड़के ने उनमें से गोलियां चुनकर महिला से कहा, "लो, इन्हें ले लो ।"

कई गोलियां देखकर नलिन ने स्वाभाविक जिज्ञासा से पूछा, "यह क्या बीमार हैं ?"

अब लड़के की मुसकराने की बारी थी । उसने महिला पर उड़ती निगाह डालते हुए कहा, "यह बीमार नहीं हैं, तंदुरुस्त रहना चाहती हैं ।"

भरे बदन की महिला खासी तंदुरुस्त दिखायी दे रही थी । नलिन ने कहा, "वाह ! कहीं [illegible]

[illegible]

[illegible] थी ।

"तुम लोग कितने भाई-बहन हो ?" नलिन [illegible]

लड़के ने कहा, "मैं अकेला हूं और भाई-बहन कोई नहीं है ।"

"तुम्हारी शादी नहीं हुई ?"



"नहीं । यह चाहती हैं कि घर में बहू आ जाए ।"

"ठीक तो है । तुम शादी क्यों नहीं कर लेते ?" नलिन उठकर बैठ गया । उसकी दिलचस्पी देखकर महिला ने सिर उठाकर उस पर एक रहस्यभरी निगाह डाली और फिर सिर झुका लिया ।

लड़के ने उत्सुकता से पूछा, "यह बताइए कि लड़की के चुनाव में किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?"

बड़ा अजीब-सा प्रश्न था । नलिन ने थोड़ा सोचते हुए कहा, "लड़की सुंदर हो । पढ़ी-लिखी हो तो अच्छा लेकिन उससे भी ज्यादा जरूरी है कि वह संस्कारवान हो ।"

नलिन आगे कुछ कहे कि लड़के ने कहा, "इसका पता कैसे लगे कि लड़की संस्कारवान है या नहीं ?"

"यह मालूम करना थोड़ा कठिन जरूर है, पर असंभव नहीं है । परिवार को देखकर इसका अंदाज हो सकता है । पड़ोसियों से भी जानकारी मिल सकती है ।"

कुछ रुककर नलिन ने आगे कहा, "तुम्हारी मां कैसी लड़की चाहती है ?" महिला को संबोधित करते हुए नलिन ने पूछा, "क्यों, बहनजी ?"

महिला ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया । पर उनके चेहरे पर मुसकराहट यथावत बनी रही ।

रेल तेजी से आगे बढ़ रही थी । सुनसान रात गाढ़ी होती जा रही थी । बाहर घना अंधकार फैला था । डिब्बे का प्रकाश उसे और गहरा कर रहा था । डिब्बे के यात्री सोने की तैयारी कर रहे थे ।

बातचीत का सिलसिला आगे चले कि महिला ने नीचे रखा थैला उठाया, उसमें से खाने का डिब्बा निकाला और वे दोनों खाना खाने लगे ।

नलिन लेट गया । वह घर से खाना खाकर चला था । उसने घड़ी देखी । ग्यारह बजे थे । वह दस बजे तक सो जाया करता था । उसने कलाई से घड़ी उतारी और सीट से कुछ ऊपर लगी पॉकेट में उसे रख दिया । तभी लड़के ने कहा, "शादी की बात दो-एक जगह चल रही है, पर हम लोग तय नहीं कर पा रहे हैं ।"

नलिन फिर उठकर बैठ गया । बोला, "जल्दी करने की जरूरत नहीं है । पर इस बात का ध्यान रखना कि यदि लड़की ऐसी-वैसी आ गयी तो तुम्हारे और तुम्हारी मां के बीच में दरार पैदा कर देगी ।"

लड़के ने हाथ के ग्रास को बिना मुंह में रखे कहा, "यही तो हमारी परेशानी है । अब तक कई रिश्ते हमारी दुविधा के कारण लौट गये हैं ।"

नलिन ने पूछा, "तुम करते क्या हो ?"

लड़के ने थोड़ा चुप रहकर कहा, "मैं शेयर का काम करता हूं ।"

"पढ़ाई कहां तक की है ?"

"बारहवीं तक ।"

"आगे क्यों नहीं पढ़े ?"

"क्या फायदा था ! नौकरी तो करनी नहीं थी ।"

"आमदनी कितनी हो जाती है ।"

"घर का खर्चा चल जाता है ?"

अब नलिन ने समझा कि वे लोग सामान्य स्थिति के हैं । जैसी वे चाह रहे थे, वैसी लड़की

उन्हें मिलने की नहीं । अगर लड़का किसी अच्छी नौकरी पर होता या अपना कोई धंधा कर रहा होता तो रिश्ता जुड़ने में देर न होती । आखिर लड़कीवाले भी तो कुछ देखते हैं । लड़की सुखी रहे, इसकी चिंता उन्हें होती है ।

वे दोनों अब खाने में व्यस्त थे । महिला ने खाना खाते-खाते कुछ गोलियां फिर खायीं । नलिन ने समझ लिया कि शरीर उसका भले ही स्थूलता की ओर झुका हो, वह पूर्ण स्वस्थ नहीं है ।

पर उस समस्या को लेकर उन अजनबियों से उलझे रहने में कोई तुक नहीं थी । वह लेट गया । पर उसे एक साथ नींद नहीं आयी । उन दोनों ने खाना निबटाया । लड़के ने मां का बिस्तर लगा दिया - पहिला लेट गयी । लड़के ने उसे कंबल उढ़ा दिया और उसके पैरों के पास बैठ गया ।

नलिन ने कहा, "अब रात काफी हो गयी है । बत्ती बंद कर दो और तुम भी सो जाओ ।"

लड़के ने अपना बिस्तर ऊपर की सीट पर डाल दिया और फिर अपनी जगह पर बैठ गया ।

नलिन करवट लेकर सोने का प्रयत्न करने लगा । उसने देखा, लड़का बैठा है और बत्ती जल रही है ।

पता नहीं, लड़का कब तक बैठा रहा और नलिन को कब नींद आ गयी ?

अचानक बीच में गुसलखाने जाने के लिए नलिन की आंख खुली तो बत्ती बंद थी और लड़का अब भी बैठा था । गुसलखाने से लौटकर नलिन फिर सो गया ।

सवेरे उसकी आंख खुली तो दिन का उजाला डिब्बे में झांक रहा था । मुसाफिरों की हलचल शुरू हो गयी थी । सामने से गुजरते आदमी से नलिन ने पूछा, "कौन-सा स्टेशन आ रहा है ?"

"विदिशा ।"

नलिन उठ बैठा । उसने बिस्तर बांधा । गाड़ी की रफ़्तार धीमी हो रही थी । उसने खूंटी पर से उतारकर कुरता पहना, जाकेट पहनी । अंत में उसने घड़ी निकालने के लिए सीट की

नलिन के मन पर संदेह का कुहासा छाया था । उसे जहां वह लड़का अपराधी दिखायी दे रहा था, वहां उसे यह भी लगता था कि शायद कोई ताक में बैठा हो और मौका मिलते ही उसने घड़ी पर हाथ साफ कर दिया हो ।

पॉकिट में हाथ डाला तो सन्न रह गया । वहां चश्मा रखा था, घड़ी गायब थी । घड़ी बड़ी कीमती थी । पिछली बार जब वह जापान गया था तो उसने टोकियो से चार हजार रुपये में उसे खरीदा था । उसमें दिन, तारीख, मास, एलार्म, सब कुछ था । उसने पॉकिट को फिर एक बार अच्छी तरह देखा । संभव है कि पॉकिट से गिरकर बिस्तर में लिपट गयी हो । उसने बिस्तर को खोला । पूरी तरह टटोला, पर घड़ी वहां होती तो मिलती । उसने तेज आवाज में कहा, "मेरी घड़ी यहां से कहां चली गयी ?"

परदा हटाकर उसने परिचारक को जगाया ।

वह सामने की सीट पर सो रहा था । नलिन ने उसे झकझोरकर उठाया । खीझकर बोला, ''यह देखो, तुम लोगों के यहां होते मेरी घड़ी किसी ने उड़ा ली !''

वह निकलकर गलियारे में आया और उसने कंडक्टर को आवाज दी । कंडक्टर कहीं पास में ही था । निमिषभर में आ गया । परिचारक ने कहा, ''यह साहब कहते हैं कि इनकी घड़ी चोरी चली गयी । बड़ी कीमती थी । सोते समय इन्होंने सीट की पॉकेट में रख दी थी ।''

कंडक्टर ने घूरकर नलिन को देखा । कड़ककर बोला, ''घड़ी आपकी थी न ?''

नलिन का पारा चढ़ गया । चीखकर बोला, ''आप क्या कहना चाहते हैं ?''

उसी लहजे में कंडक्टर ने कहा, ''यही कि घड़ी आपकी थी तो आपको संभालकर रखनी चाहिए थी ।''

मारे गुस्से के नलिन आपे से बाहर हो गया । बोला, ''मतलब ?''

''यही कि साहब, चीज आपकी थी तो उसकी चिंता आपको रखनी चाहिए थी ।''

''आप लोग किसलिए हैं ? सोने के लिए ?''

''जी, इस डिब्बे में इतने मुसाफिर हैं । हम सबकी एक-एक चीज पर कहां तक निगाह रख सकते हैं ?''

नलिन ने कहा, ''मैं कुछ नहीं जानता । आपको मेरी घड़ी का पता लगाना होगा ।''

गाड़ी की रफ़्तार धीमी हो गयी थी । विदिशा स्टेशन आ रहा था । नलिन ने कहा, ''शिकायत का रजिस्टर लाइए ।''

''क्या होगा उससे ?'' कंडक्टर ने कहा, ''चोरी हुई है तो उसकी रपट आपको पुलिस में दर्ज करानी होगी ।''

डिब्बे में इतना शोर मचा था कि अधिकांश यात्री वहां इकट्ठे हो गये थे लेकिन नलिन को आश्चर्य हो रहा था कि उसके दोनों साथी ऐसे सो रहे थे, मानो उन्होंने नींद की गोलियां खा रखी हों ।

कंडक्टर कह रहा था, ''आप फिजूल नाराज हो रहे हैं । आजकल किसी पर भरोसा नहीं किया जा सकता । इनसान के भीतर शैतान छिपा रहता है ।''

नलिन के मन में-जैसे बिजली कौंधी । ''कहीं यह उस लड़के की ही तो करतूत नहीं है, जो रात को बहुत देर तक बैठा रहा था । उसके सामने ही तो उसने अपनी कलाई से घड़ी उतारी थी और सीट की पॉकेट में रखी थी । और किसे घड़ी का पता था ?

नलिन ने सिर झटका । पर विचार की धारा नहीं टूटी । जरूर उसने इतनी बातें इसीलिए की होंगी कि वह अपनी भलमनसाहत का सिक्का उस पर जमा दे और महिला यह सोचकर मुसकरा रही होगी कि लड़के की चालाकी अपना काम कर रही थी लेकिन बातचीत से तो वे संभ्रांत लगते थे । तब ?

नलिन के मन पर संदेह का कुहासा छाया था । उसे जहां वह लड़का अपराधी दिखायी दे रहा था, वहां उसे यह भी लगता था कि शायद कोई ताक में बैठा हो और मौका मिलते ही उसने घड़ी पर हाथ साफ कर दिया हो-जैसा कि रेल में आजकल अकसर हो जाता है ।

—सस्ता साहित्य मंडल
ए-७७ कनॉट सर्कस, नयी दिल्ली-११०००१

औरतों से जन्मे चिंपाजी

• प्रमोद भार्गव

बंदर या वनमानुष की चार प्रजातियां चिंपाजी, वनमानुष, गोरिल्ला और गिब्बन मनुष्य जाति के बेहद निकट हैं; इनमें भी चिंपाजी अपनी बौद्धिक व शारीरिक विशिष्टताओं व क्षमताओं के कारण मनुष्य के एकदम निकट है। यही कारण है कि जो औरतें चिंपाजी के संपर्क में आकर शारीरिक संबंध बना बैठीं, उन्होंने गर्भधारण कर चिंपाजी शिशुओं को जन्म दिया है। ये अनूठी घटनाएं हाल के कुछ वर्षों में घटी हैं।

आदमी से मिलते-जुलते: चिंपाजी

चिंपाजी अफरीका के वर्षा-वनों और उष्ण-कटिबंधीय जंगलों में पाये जाते हैं। पूर्ण वयस्क चिंपाजी का वजन छत्तीस से पचास किलोग्राम तक होता है। नर चिंपाजी मादा की तुलना में भारी-भरकम होता है। इनका पूरा शरीर काले घने बालों से ढंका होता है। बाल लंबे और चमकीले होते हैं। इसका चेहरा लंबा और आगे की ओर निकले हुए जबड़ेवाला होता है। इसके होंठ बेहद पतले और लचीले होते हैं। इसके कान बड़े होते हैं, जो चेहरे की तुलना में लंबे होते हैं। कानों का रंग हलका काला होता है। इसकी भुजाएं लंबी होती हैं। अंगुलियों की तुलना में अंगूठा बेहद छोटा होता है। इसकी छाती चौड़ी होती है। बंदर-जैसा दिखने व आदतोंवाला होने के बावजूद चिंपाजी की पूंछ नहीं होती। इसीलिए इसे मनुष्य के निकट माना जाता है। चिंपाजी के पैर लंबे होने के साथ टखनों से उभरे होते हैं।

सर्वाधिक बौद्धिक क्षमता

चिंपाजी जब खाली होते हैं तो जंगलों से निकलकर खुले मैदानों में आकर थोड़ी-थोड़ी देर के लिए समय गुजारते हैं। चौपाया बनकर घूमते हैं। पेड़ों की शाखाओं पर चढ़ते हैं और पत्तियां खाते हैं। शाखाओं को ये अपनी भुजाओं से मजबूती से पकड़कर रखते हैं।

चिंपाजी अफरीका के सभी जंगली क्षेत्रों और देशों में पाये जाते हैं। चिंपाजी जांबिया, गुआना, सीरिया, लीओन, सूडान, यूगांडा, रवांडा और तंजानिया में पाये जाते हैं। दुनियाभर के चिड़ियाघरों में भी इन्हें देखा जा सकता है। भारत में कानपुर के चिड़ियाघर में चिंपाजी का एक जोड़ा है। ये पर्वतों पर सात सौ से ग्यारह सौ फुट तक की ऊंचाई तक खूब देखे गये हैं। चिंपाजी की 'पान ट्रोग्लोडाइट्स' प्रजाति ही सबसे बड़े भू-क्षेत्र में फैली हुई है। इनके आकार, रंग और विविध मुखाकृति के अनुसार इन्हें चार उपप्रजातियों में बांटा गया है। 'पिगनी' प्रजाति के चिंपाजी सबसे छोटे

होते हैं लेकिन इनमें बौद्धिक क्षमता सबसे ज्यादा होती है ।

जोड़ा बनाने के समय मादा लगातार पैंतीस दिन तक कामोत्तेजित अवस्था में रहती है । इस दौरान इसका आचरण चिड़चिड़ा और झगड़ालू हो जाता है । नर व मादा एकांत में जाकर सहवास क्रिया करते हैं । इस समय यदि इनका कोई नवजात शिशु होता है तो ये उसे भी समूह के साथ छोड़कर एकांत में चले जाते हैं । गर्भधारण के दो सौ पचीस दिन बाद मादा एक शिशु को जन्म देती है । अपवाद स्वरूप ही ये दो या अधिक शिशुओं को जन्मती हैं । इन शिशुओं का रंग शुरू में तांबई अथवा मांस-जैसा होता है । जैसे-जैसे ये वयस्क होते हैं त्वचा का रंग काला होता चला जाता है ।

नवजात चिंपाजी की दिनचर्या

शिशु चिंपाजी मां की कोख से कसकर चिपका रहता है । कसकर चिपकने की इनमें स्वस्फूर्त प्रवृत्ति होती है । शिशु को मां अनेक मरतबा पीठ पर बिठा लेती है । शिशु जब भूख का अहसास कराता है, तब उसे खाने को फल-पत्तियां देती है अथवा अपना दूध पिलाती है । जब मादा किसी कार्य में व्यस्त रहती है तो शिशु को किसी वृक्ष की शाखा से टांग देती है । शिशु ऐसे में जोर-से चीखते-चिल्लाते हैं लेकिन वह कतई परवाह नहीं करती । इस वक्त मादा चिंपाजी और उनके समूह के अन्य चिंपाजी इतने व्यस्त रहते हैं कि उन्हें शिशु के अधर में लटके रहने का अंदाज ही नहीं रहता है । शिशु चिंपाजी जब तक आत्मनिर्भर नहीं हो जाता अथवा उसके बाद जन्मा शिशु एक साल का नहीं हो जाता तब तक मां और बच्चे के संबंध परस्पर आत्मीयता से परिपूर्ण रहते हैं । किशोर चिंपाजी अपनी मां के आवास के निकट ही अपना नया घोंसला बनाना शुरू कर देते हैं और समूह के हमउम्र चिंपाजियों से घुलना-मिलना शुरू कर देते हैं । ऐसे में ये खेलते हैं, कुश्ती लड़ते हैं और एक-दूसरे को दौड़कर पकड़ते हैं । इनकी यही दिनचर्या होती है ।

चिंपाजी का मुख्य भोजन फल, फूल, पत्तियां, छाल और मेवा है । पर ये चींटियां, दीमक और मांस भी चाव से खा जाते हैं । ये कोलंबस प्रजाति के बंदरों और शिशु हिरणों का सामूहिक रूप से शिकार करते हैं । इनके शिकार का तरीका बेहद क्रूर व निर्मम होता है । ये पकड़े गये प्राणी को उछालकर गेंद की तरह चट्टान पर पटकते हैं और जब तक वह मर नहीं जाता पटकते रहते हैं । खुले मैदानों में रहनेवाले चिंपाजियों में प्रायः ऐसा देखा गया है ।

शोर-गुल पसंद चिंपाजी

चिंपाजी शोरगुल पसंद जीव है । ये इतना हो-हल्ला मचाते हैं कि इनकी आवाजें दो मील तक के दायरे में आसानी से सुनायी देती रहती है । इनके समूह का कोई मुखिया नहीं होता है । लेकिन बुजुर्ग चिंपाजियों को सम्मानजनक दरजा प्राप्त होता है । ये परस्पर बहुत कम झगड़ते हैं । इन्हें एक-दूसरे पर जानलेवा हमला करते नहीं देखा गया है । एक समूह के दो नर जब कुछ दिनों बाद मिलते हैं तो प्रसन्नता में उसकी एक भुजा ऊपर होती है और दूसरी भुजा हाथ मिलाने की मुद्रा में आगे बढ़ी रहती है ।

पकड़कर चिड़ियाघरों में रखे गये चिंपाजियों के अध्ययन से पता चला है कि ये अपनी

बौद्धिक क्षमताओं का परिचय बंदी जीवन में स्वाभाविक जीवन की अपेक्षा ज्यादा देते हैं। चिंपाजी किसी एक कार्य को लंबे समय तक नहीं करते, जबकि इनकी तुलना में गोरिल्ला में लंबे समय तक एक ही कार्य करते रहने की इच्छाशक्ति ज्यादा होती है। इसीलिए गोरिल्ला कठिनाइयों से छुटकारा पाने के लिए लंबे समय तक जूझते रहते हैं। ऐसे ही बुद्धिमतापूर्ण कार्यों के कारण चिंपाजी और गोरिल्ला को वनमानुष और गिब्बन की अपेक्षा मनुष्य के ज्यादा निकट माना गया है। आदतों व कार्य-व्यवहार में भी ये मनुष्य के ज्यादा निकट होते हैं।

चिंपाजी और नारी संपर्क

पिछले एक दशक के भीतर दो ऐसी घटनाएं सामने आयी हैं कि दो औरतों ने चिंपाजी के शिशुओं को जन्म दिया। हालांकि भारतीय मिथक में मानव, देवता, राक्षस और प्राणी योनियों में प्रणय संबंधों की अविश्वसनीय व रोमांचकारी कथाएं सुनने व पढ़ने में आती हैं लेकिन इधर विदेशों में वास्तव में दो ऐसी घटनाएं सामने आयीं जिनमें लॉस एंजिल्स (कैलिफोर्निया) की किटी मार्टिन और जोहांसवर्ग (दक्षिण अफरीका) की अत्रिका ने चिंपाजी शिशुओं को जन्म देकर भारतीय पौराणिक साहित्य में उल्लेखित घटनाओं की पुष्टि कर दी।

उनत्तीस साल की किटी मार्टिन एक युवती थी तब सन् १९८७ में वह 'माउंट रेनियर नेशनल पार्क' में सैर करने के लिए गयी थी। पार्क में वह बिगफिट नाम के एक युवा नर चिंपाजी के संपर्क में आयी। प्रारंभ में किटी चिंपाजी से भयभीत रही। कुछ दिनों की



चिंपाजी

लगातार मुलाकात के बाद जब दोनों में परस्पर अंतरंगता कायम हो गयी तो किटी का भय जाता रहा और अनायास ही किटी के अंतर्मन में चिंपाजी के प्रति प्रणय भावों का जन्म होने लगा। ऐसी ही मनःस्थिति बिगफिट की थी। लिहाजा दोनों में स्पर्श की शुरुआत हुई और फिर प्रणयावेग में किटी ने बिगफिट से शारीरिक संबंध भी बना लिये। परिणामस्वरूप २८ अप्रैल १९८८ को किटी ने एक शिशु को जन्म दिया। जिसका नाम किली केंडाल रखा गया। किली का चेहरा हू-ब-हू अपने पिता की शक्ल का है लेकिन चेहरे के अलावा शेष शरीर अपनी मां किटी की तरह सुंदर व मांसल है।

आश्चर्यजनक चेहरेवाले किली ने जब नर्सिंग होम में जन्म लिया तो उसकी भयानकता को देखकर नर्स व अन्य कर्मचारी भयभीत होकर प्रसूति कक्ष से बाहर निकल गये थे। किली

स्वस्थ, हट्टा-कट्टा व तंदुरुस्त है । उसका चेहरा भले ही पिता विगफिट पर गया हो, पर दिमाग अपनी मां की तरह तेज है । किलो केंडाल अब आठ साल का है । वह गणित में बेहद तेज है । उसका आचरण विनम्र व भावप्रवण है । किटी को अपने बच्चे से कोई शिकायत नहीं है । वह उसका पूरा खयाल रखती है और उस पर गर्व करती है । किटी माह में एक मरतबा किलो केंडाल को पिता विगफिट से मिलाने पार्क में जरूर ले जाती है ।

औरतों की कोख से जन्मे चिंपाजियों ने यह साबित कर दिया है कि मनुष्य और चिंपाजी के शारीरिक लक्षण बहुत-कुछ मेल खाते हैं इसीलिए चिंपाजियों का जन्म स्त्रियों की कोख से संभव हुआ ।

दक्षिण अफरीका के जोहांसवर्ग की अन्त्रिका कोयेटजी की शादी पीटर से हुई थी । विवाह के आठ साल बाद भी जब अन्त्रिका मां नहीं बन पायी तो उसने डॉक्टर से जांच करायी, डॉक्टर ने पीटर दंपति को कृत्रिम गर्भधारण की सलाह दी । अन्त्रिका ने 'वीर्य बैंक' से बौद्धिक क्षमतावाले व्यक्ति के शुक्राणु के प्रत्यारोपण के बाद गर्भधारण किया । वीर्य बैंकवालों ने भरोसा जताया था कि ये शुक्राणु ऊंची सोसायटी के बुद्धिमान व्यक्ति के हैं ।

गर्भधारण के नौ माह बाद अन्त्रिका ने जब प्रसव वेदना झेलने के बाद बच्चे को जन्म दिया तो वह शिशु चिंपाजी निकला । अन्त्रिका के सपनों पर पानी फिर गया । दरअसल 'शुक्राणु बैंक' की लापरवाही से अन्त्रिका के गर्भ में या तो चिंपाजी के शुक्राणु प्रत्यारोपित कर दिये गये थे या फिर भूलवश कई व्यक्तियों के शुक्राणु परस्पर मिल गये थे ।

अन्त्रिका ने जब शिशु चिंपाजी को अपनी कोख से जन्मा देखा तो बेहोश हो गयी । जब उसे होश आया तो वह तत्काल शिशु को अस्पताल में ही छोड़कर पति के साथ अपने घर चली गयी । बाद में कुछ दिन सोचने-विचारने के बाद उसमें ममत्व की भावना उत्कृष्ट हो उठी और शिशु चिंपाजी को पालने की भावना भी जागी । उसने मां के दायित्व का निर्वाह किया और शिशु चिंपाजी को अपने घर ले आयी । अन्त्रिका ने चिंपाजी को अपने आंचल का दूध पिलाया । इस दुग्धपान से उसे असीम संतुष्टि हुई और उसने इस विचित्र बालक का नाम रोल्फ रख दिया । शिशु चिंपाजी अब करीब एक साल का है । वह घर में उछल-कूद तो करता ही है, गुस्से में सामान की तोड़-फोड़ डालता है । अन्त्रिका को चिंपाजी के जन्मने का दुख भी है, बावजूद इसके वह अपने कर्तव्य का निर्वाह पूरी जिम्मेदारी व ईमानदारी से कर रही है । बहरहाल औरतों की कोख से जन्मे चिंपाजियों ने यह साबित कर दिया है कि मनुष्य और चिंपाजी के शारीरिक लक्षण बहुत-कुछ मेल खाते हैं इसीलिए चिंपाजियों का जन्म स्त्रियों की कोख से संभव हुआ ।

— शाही निवास, राजेश्वरी मार्ग,
शिवपुरी (म.प्र.)-४७३५५१

बंबई आने का यह मेरा पहला अवसर नहीं है। दो अवसर मुझे पहले भी प्राप्त हो चुके हैं। मरीन ड्राइव पर पाव-भाजी खा चुका हूं तथा रात्रि में अनेक रंगों के असंख्य प्रकाश-पुंजों से निर्मित 'क्वींस नेकलेस' का अद्‌भुत दृश्य देख चुका हूं एवं शीतकालीन शांत समुद्र में प्रकाश-पुंजों की लंबी-लंबी-सी प्रतिच्छाएं भी देख चुका हूं। पचीस वर्ष पूर्व जब जुहू बीच पर गंदगी के अंबार नहीं लगते थे, अपनी पत्नी के साथ दूर किनारे पर बैठकर समुद्र की लहरों का सायंकालीन संगीत भी सुन चुका हूं, जो लय-ताल-विहीन होते हुए भी न केवल कर्णप्रिय वरन् आत्मा तक को विभोर करनेवाला था। सन् १९६४ में जब सेंट्रल पुलिस ट्रेनिंग कॉलिज माउंट आबू में प्रशिक्षणाधीन आई. पी. एस. अधिकारियों को भारत दर्शन हेतु ले जाया गया था तो सर्वप्रथम बंबई आकर एम. एल. ए.'ज. होस्टल में रुका था। पी. शंकर मेरे कमरे में ही रुका था। माउंट आबू में भी हम दोनों की खूब छनती थी क्योंकि दोनों को नक्की लेक की परिक्रमा करने का शौक था और पी. शंकर जिसे मैं बेतकल्लुफी में पागल शंकर कहता था, को सुंदर लड़कियों को अपनी कल्पनाओं में लाकर उनके साथ कल्पना में घटित घटनाओं को यथार्थ की घटनाओं के समान सुनाने की आदत थी, जिसमें मुझे बड़ा रस मिलता था। कभी-कभी तो वह बीती रात किसी सुंदरी के उसके कमरे में आकर हमबिस्तर तक हो जाने की कल्पना को ऐसे प्रस्तुत कर देता था कि नया

कहानी

वह समंदर के भीतर जी रहा है

● महेश चंद्र द्विवेदी



श्रोता उसके भाग्य पर ईर्ष्या करने लगता था ।

उस दिन हम लोगों को एलीफैंटा गुफाएं दिखाने ले जाया जा रहा था । गेटवे ऑव इंडिया से जिस 'मरमेड' नामक फेरी पर मैं सवार हुआ था उसी पर पी. शंकर भी सवार हुआ और मेरे बगल में किनारे की सीट पर आकर चुपचाप बैठ गया और शांत भाव से उठती-गिरती लहरों को निहारने लगा था । मैं चूंकि प्रथम बार समुद्र यात्रा कर रहा था अतः मन में भयमिश्रित उद्विग्नता थी । हममें से अधिकतर ऐसा दृश्य प्रथम बार देखकर मंत्रमुग्ध हो रहे थे परंतु हमारी इस तल्लीनता को फेरी से टकरानेवाली ऊंची हिलोर अथवा हवा के साथ आनेवाली वर्षा की फुहार भंग कर जाती थीं । जब एक ही दिशा से कुछ देर तक फुहारें मेरे ऊपर आती रहीं, तो उससे बचने हेतु मैं अपनी सीट छोड़कर दूसरे किनारे पर जाने लगा । जाते-जाते मैंने पी. शंकर से भी चलने को कहा परंतु वह अपनी तन्मयता में खोया रहा और मैं उसे अकेला छोड़कर दूसरी ओर चला गया । फिर जब हम लोग 'एलीफैंटा केव्ज' में पहुंच गये और हममें से अधिकतर गुफाओं के अंदर निर्मित भीमकाय मूर्तियों का दर्शन-निरीक्षण करने लगे अथवा समुद्री टापू की छटा का आनंद लेने लगे, तब पी. शंकर मुझे गुफा के पीछे की तरफ एकांत में ले गया और वृक्षों के घने झुरमुट में जाकर गंभीर मुद्रा में बैठ गया । वह बड़े शांत भाव से बोला, ''जानते हो आज मेरे साथ क्या हुआ ? समुद्र में जब तुम मुझे छोड़कर फेरी के दूसरे किनारे चले गये थे और तभी एक बहुत ऊंची लहर आयी थी जिससे फेरी मेरेवाले किनारे पर बहुत झुक गयी थी, तब मैं पानी में गिर गया और लहर के साथ बहने लगा । मैं प्राण रक्षा हेतु तुम सबको पुकार ही रहा था कि किसी ने धीरे-से मेरे नीचे आकर अपनी पीठ पर मुझे चिपका लिया और तैरते हुए मुझे पानी के अंदर अपने साथ ले जाने लगा । मुझे आश्चर्यमिश्रित भान हुआ कि मुझे पानी में श्वांस लेने में कोई कठिनाई नहीं हो रही है और मैं किसी स्त्री की पीठ पर मुंह के बल लदा हुआ हूं । स्त्री की कुंतल-केश राशि मुझे स्पष्ट दिखायी दी । उसके कंधे पुष्ट थे एवं बांहें सुडौल । उसने पानी के अंदर— जैसे ही अपनी गति तेज की और मैंने छूट जाने के भय से अपनी दोनों बांहों में उसे जकड़ा तो मेरे दोनों हाथों में उस नवयौवना के उभरते वक्ष आ गये । मैं रोमांचित हो गया और मुझे उत्तेजना हो गयी, परंतु तभी मुझे लगा कि मेरी दोनों जांघों में कोई वस्तु ऐसे चुभ रही थी-जैसे कोई उल्लसित मछली अपनी पूंछ को फड़फड़ा रही हो । अचानक मेरे कोमल अंगों में उसकी पूंछ की असह्य चोट लगी और मैं पीड़ा से चिल्लाया और तभी किसी ने मुझे फेरी पर वापस फेंक दिया । फेरी रुक गयी और मैं सबके साथ उतरकर यहां आ गया ।'' मैंने कहा, ''पागल ! तुम दिवास्वप्न सुंदर देखते हो । तुम तो फेरी पर ही किंकर्त्तव्यविमूढ़सम बैठे हुए थे । कहीं गये ही नहीं ।'' परंतु पी. शंकर ने अपनी बात की विश्वासपूर्वक पुष्टि करते हए कहा, ''मैं सही कहता हूं महेश, मेरे साथ यह घटना घटी है, तुम चाहे मानो या न मानो !''

इस बार बहुत वर्षों बाद बंबई आया तो यहां प्रथम बार सर पोचखानवाला रोड, वर्ली

सी-फेस पर स्थित महाराष्ट्र पुलिस मेस में ठहरने का अवसर मिला । मेस और समुद्र के बीच बिल्डिंगों की केवल एक कतार है । चूंकि मैं ऊपरी मंजिल पर रुका हुआ था अतः यहां से समुद्र का फैलाव दूर-दूर तक दिखायी पड़ता था । बरसात का मौसम होने के कारण आजकल समुद्र में लहरें उफान पर हैं । रात्रि में बादल नहीं थे और चांदनी छिटकी थी । असीम को बांहों में भरने की अपनी नैसर्गिक लालसा के कारण मैं देर रात तक अपने कमरे से समुद्र को निहारता रहा । कभी-कभी दूर से आते अथवा सुदूर क्षितिज में खोते हुए जहाज भी अतीव आकर्षण का केंद्र बन जाते थे । मैंने पीछे की खिड़की के शीशे खोल दिये जिससे समुद्र की लहरों के हाहाकार की ध्वनि भी सुनायी दे जाती थी । पता नहीं अर्धरात्रि के कितनी बाद मेरी आंख लगी तो प्रातः तभी खुली जब मेस के बेयरे ने बेड-टी लाकर दरवाजा खटखटाकर कहा, ''साहब आठ बज गये हैं । बेड-टी लाया हूं ।'' मैं बेड-टी लेकर शीघ्रता से नित्य कर्म से निवृत्त होकर डायनिंग हॉल गया और पराठा-आलू का नाश्ता किया । बाहर आते ही पुलिस के ड्राइवर ने आकर स्मार्ट सैल्यूट देते हुए कहा ''साहब, गाड़ी ले आया हूं ।'' मैं गाड़ी में बैठकर अपने बैचमेट और मित्र साहनी के कार्यालय उससे मिलने चला गया । औपचारिकताएं निभाने के बाद जब बात चली तो मैंने साहनी से पी. शंकर के विषय में पूछा कि वह अब किस पद पर हैं ? उसने मुझे घूरकर देखते हुए कहा, ''अरे तुम्हें उसके विषय में नहीं मालूम ! वह तो तुम्हारा घनिष्ठ था ।'' मैंने कहा, ''उसने वर्षों से मेरे पत्रों का उत्तर देना बंद कर दिया है । यहां तक कि उसकी पत्नी पार्वती जिसे मैंने कभी देखा नहीं है परंतु फिर भी जो कभी-कभी उसके पत्रों में अपनी ओर से कुछ लिख देती थी, ने भी अनेक वर्षों से संपर्क पूर्णतः तोड़ दिया है ।'' साहनी के चेहरे पर विषाद का भाव आ गया और बोला, ''पी. शंकर की दुःखभरी कहानी है । आजकल वह 'मेंटल एसाइलम' में है और जीवन के अंतिम दिन गिन रहा है । उसकी पत्नी की मृत्यु हुए वर्षों बीत चुके हैं । एक रात्रि गेटवे ऑव इंडिया के सामने ही समुद्र में गिरकर वह सदैव के लिए जल में समा गयी थी । उसकी लाश का कुछ पता नहीं चला । उस समय उसके साथ पी. शंकर भी था । यद्यपि पी. शंकर के स्वभाव को जानने के कारण मुझे विश्वास नहीं होता है परंतु कुछ लोगों को संदेह है कि पी. शंकर ने ही उसे समुद्र में ढकेल दिया था । उन दिनों उसके सिने-जगत की एक सुधा नाम की नवोदिता एक्ट्रेस से इश्क के चर्चे जोरों पर चल रहे थे । कभी-कभी दोनों को साथ-साथ किसी रेस्ट्रां में और कभी समुद्र के किनारे एकांत में देखा भी गया था । बंबई में हर व्यक्ति अपने में ही मगन रहता है, परंतु एक बार एक टेलीफोन अर्दली, जो पहले पी. शंकर के यहां काम करता था और बाद में मुझे मिला, ने अवश्य बातचीत के दौरान हिंट दिया था कि शंकर साहब के यहां गृह-कलह चरम-सीमा पर है और कभी कुछ भी घटित हो सकता है । परंतु सबसे आश्चर्यजनक बात तो यह हुई कि पी. शंकर की धर्म पत्नी की जीवित जल समाधि के एक माह के अंदर ही सुधा 'एलीफैंटा केव्ज़' जाते हुए फेरी से गिरकर समुद्र में डूब गयी थी ।'' इस

पर मैंने कहा, "यह तो आश्चर्यजनक संयोग था ।" साहनी के मुंह पर घृणा के भाव आ गये । उसने कहा, "यह संयोग नहीं था । फेरी में बैठे अन्य लोगों ने पी. शंकर द्वारा सुधा को पानी में धक्का देते देखा था । उन्होंने उसे पकड़कर पुलिस के हवाले भी कर दिया था परंतु दूसरे दिन जब वह एक गाड़ी में मैजिस्ट्रेट के सामने पेश करने हेतु लाया जा रहा था तो कोलाबा में एक क्रासिंग पर गाड़ी रुकने पर उसमें से कूदकर किसी गली में भाग गया । सिपाहियों के काफी तलाश करने पर नहीं मिला । उसमें से एक हवलदार व एक सिपाही तो निलंबित भी चल रहे हैं । फिर दो दिन बाद वर्ली में समुद्र के किनारे वह बेहोशी की हालत में पड़ा मिला । वहां कपड़े धोनेवाले कुछ धोबियों ने पुलिस को खबर की । पुलिस ने उसे पहचान लिया और अपनी हिरासत में अस्पताल में दाखिल कर दिया । मुझे पता लगने पर दूसरे दिन मैं उसे अस्पताल में देखने गया । मेरे सामने ही उसे होश आया तो मुझे देखते ही वह बोला, 'साहनी ! मुझे सुधा से बचा लो । मैंने उसे नहीं धकेला था फिर वह मेरे पीछे क्यों पड़ी है ? मुझे उससे बचा लो ।' और यह कहकर वह फिर बेहोश हो गया । बाद में कई दिन तक इसी स्थिति में रहकर वह पूर्णतः होश में तो आ गया पर पागलों-जैसी बातें करने लगा । पुलिस ने उसका परीक्षण पागलों के डॉक्टरों से भी कराया जिनकी संस्तुति पर उसे 'मेंटल असाइलम' में रखा गया है ।"

उसके बाद मेरा मन उस दिन सरकारी कामकाज में कम ही लगा । पी. शंकर से अविलंब मिलने की अदम्य लालसा मन में जाग उठी । मेरे अनुरोध पर साहनी ने 'मेंटल एसाइलम' के सुपरिंटेंडेंट से मेरी पी. शंकर से मुलाकात की अनुमति प्राप्त कर ली । शीघ्रता से काम निपटाकर मैं पी. शंकर से मिलने चल दिया । सुपरिंटेंडेंट ने मेरा स्वागत कर मेरी पी. शंकर से मुलाकात हेतु अलग एक कमरे में प्रबंध कर दिया । जब मैं कमरे में घुसा तो पी. शंकर का कंकाल सामने एक कुरसी में धंसा हुआ नजर आया । यदि उसकी स्मृति मेरे मस्तिष्क में स्पष्ट न होती और यदि मुझे पहले से न ज्ञात होता कि पी. शंकर से ही मिलना है तो

स्टेशन पर उतरकर मैंने दो रुपये में समाचार-पत्र खरीदा और डिब्बे में आकर पढ़ने लगा । तीसरे पृष्ठ पर यह शीर्षक "आई. पी. एस. अधिकारी ने वर्ली-सी-फेस पर समुद्र में छलांग लगायी ।"

उसे पहचान पाना लगभग असंभव था । मुझे देखकर उसके चेहरे पर तुरंत कोई भाव नहीं आया वरन् वह नजर गड़ाये देर तक मेरे चेहरे को देखता रहा । स्मृति पटल पर मेरा चित्र स्वच्छ होने पर उसके चेहरे पर हलकी-सी मुसकराहट आयी और वह बोला, "अरे महेश ! क्या तुम इस पागल से मिलने आये हो ?" उसकी बात सुनकर मैं कठिनाई से अपने अश्रुओं को आंखों में रोक सका और बोला, "पागल ! यह सब कैसे हुआ ?" वह निर्लिप्त भाव से मुझे देर तक देखता रहा और

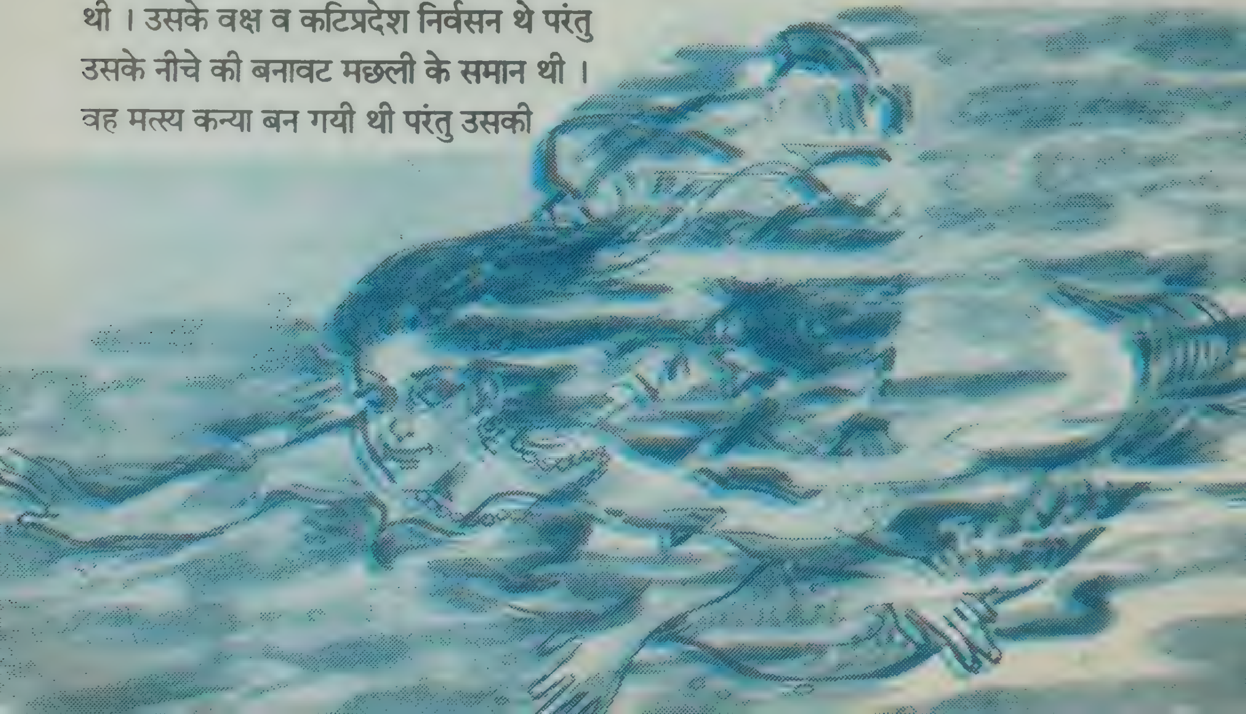
फिर जैसे कुछ याद आ गया हो ऐसे स्वतः बड़बड़ाने लगा, "मैं सच कहता हूं मैंने उनमें से किसी को नहीं ढकेला था । मैं समुद्र के किनारे बनी बाउंड्रीवाल पर पार्वती के कंधे पर हाथ रखकर चल रहा था । वह समुद्र की ओर थी । उसने अचानक तीखे शब्दों में सुधा के विषय में मुझसे प्रश्नों की झड़ी लगा दी और पता नहीं किस अनियंत्रित शक्ति के प्रभाव से मेरे हाथ ने उसके कंधे को ऐसा अचूक झटका दिया कि वह सीधी नींचे गिर गयी और पलभर में गहरे जल में अदृश्य हो गयी । मेरी चीख-पुकार पर सहायता देने आये हुए सभी व्यक्तियों के हाथ निराशा ही लगी । पार्वती न जीवित मिली और न मृत । पार्वती की मृत्यु पर मैं उसकी तेरहवीं होने तक मन की अतीव गहराइयों से दुःखी रहा, परंतु तदोपरांत एक रात्रि जब सुधा अपना दुःख प्रकट करने मेरे कमरे में आ गयी तो उस रात्रि वापस न ज्ञा सकी । अपने वक्ष में मेरा मुख रखकर उसने मेरी संपूर्ण पीड़ा हर ली ।" इतना कहकर वह दम लेने को रुका, और उसने एक गिलास पानी मांगा । पानी पीकर वह चुप हो गया और शून्य में निहारने लगा ।

उसे प्रकृतिस्थ होने का समय देकर मैंने पूछा, "और सुधा कैसे मरी ?"

उसने मुझे घूरकर देखते हुए कहा, "मरी ? उनमें से कोई नहीं मरी ? एक दिन जब मैं सुधा के साथ फेरी पर 'एलीफैंटा केव्ज' घूमने जा रहा था तो बीच में एक तूफान आया । सुधा मेरे बगल में फेरी के किनारे की सीट पर बैठी थी । मैं उसके कंधे पर हाथ रखे समुद्री तूफान का आनंद ले रहा था । उसी समय एक तेज लहर के आने से फेरी उस तरफ पानी में काफी झुक गयी जिधर हम दोनों बैठे थे । मुझे लगा कि सुधा पानी की ओर खिंचती चली जा रही है । मैं उसका कंधा पकड़कर उसे गिरने से रोकने का प्रयत्न कर रहा था और सुधा चिल्ला रही थी कि अरे शंकर यह क्या कर रहे हो ? और एक झटके के साथ सुधा पानी में गिरकर जलमग्न हो गयी ।"

एक घूंट पानी और पीने के बाद वह रूआंसे भाव से बोला, "मैंने फेरी में सबको बहुत समझाने का प्रयत्न किया कि मैंने सुधा को नहीं धकेला है पर किसी ने मेरी एक न सुनी । मेरी बात पर थानेवालों ने भी विश्वास नहीं किया और मैं उसी थाने में बंद कर दिया गया जिसका डिप्टी कमिश्नर था । दूसरे दिन पुलिस कमिश्नर के आदेश से मुझे हवालातियों के वाहन के बजाय जीप में बिठाकर कोर्ट ले जाया जा रहा था । एक भीड़भरी क्रॉसिंग में-जैसे ही गाड़ी रुकी, मुझे लगा कि अपनी निरपराधिता साबित करने हेतु मेरे पास एक यही अवसर है और मैं चुपचाप उतरकर एक गली में से दूसरी में होते हुए दिनभर अपने को पुलिस की निगाहों से छिपाता रहा । रात होने पर मैं समस्त घटनाओं पर पुनर्विचार हेतु गेटवे ऑव इंडिया जाकर समुद्र के किनारे बाउंड्री पर बैठ गया और सोचने लगा कि मेरी किस मानसिक विवशता की अवस्था में पार्वती को यहीं मेरा धक्का लगा था और मैं क्यों अपने को नियंत्रित नहीं कर सका था परंतु उस संपूर्ण परवशता का कारण समझ में नहीं आ रहा था । दिनभर की थकावट के कारण मैं इसी उधेड़बुन में सोने लगा था कि अचानक किसी ने हाथ बढ़ाकर मुझे पानी में खींच लिया और अपनी पीठ पर लिटाकर पानी

में ले चला । जब परिस्थिति का भान मुझे हुआ तो यह सोचकर आश्चर्य हुआ कि मुझे श्वास लेने में कोई कठिनाई नहीं हो रही है । तभी मुझे पार्वती की मधुर आवाज सुनायी दी । वह कह रही थी, 'तुमने मुझे पहचाना नहीं ! मैं हूं तुम्हारी पार्वती । मैं जानती हूं कि तुमने अपने होशो-हवाश में मुझे समुद्र में नहीं धकेला था । तुम-जैसे भावुक व कोमल हृदयवाला व्यक्ति ऐसा कर ही नहीं सकता, पर तुम आवेश के क्षणों में तुम कब रह जाते हो ? मैं तुम्हें उतना ही प्यार करती हूं जितना पहले करती थी ।' मैंने अनुभव किया कि मेरे मन का समस्त विषाद छट गया है और मेरे मुंह से स्वतः निकला कि पार्वती तुम कहां हो ? अचानक पानी में तैरनेवाले व्यक्ति ने अपने को उलट लिया । मैंने आश्चर्यमिश्रित आह्लाद से देखा कि पार्वती का चेहरा मेरे चेहरे के सामने है और उसके चित लेटे हुए बदन पर लेटा हुआ मैं समुद्र की अथाह गहराइयों की सैर कर रहा हूं । पार्वती की घनी काली केशराशि पानी में लटक रही थी । उसके मदमाते नयन मुझे अपलक देख रहे थे और उसके होंठों पर विजय की मुसकान थी । उसके वक्ष व कटिप्रदेश निर्वसन थे परंतु उसके नीचे की बनावट मछली के समान थी । वह मत्स्य कन्या बन गयी थी परंतु उसकी सुंदरता में अप्रतिम वृद्धि हो गयी थी । मुझे अपनी बांहों में भरकर वह समुद्र की अथाह गहराइयों में लिये जा रही थी । यद्यपि मैं पार्वती के सौंदर्य का रसपान करने में विभोर था तथापि गहरे समुद्र का अनोखा दृश्य बीच-बीच में मेरा ध्यान आकृष्ट कर लेता था । अनेक आकार व रंगों की मछलियां, केकड़े, घोंघे, शैवाल, पौधे हमारे दायें-बायें, ऊपर-नीचे दिखायी दे रहे थे । श्वास लेते पत्थर, लहराती काई, जगमगाती मछलियां अप्रतिम दृश्य प्रस्तुत कर रहे थे । इसी बीच एक शार्क हमारी तरफ आती दिखायी दी और पार्वती बड़ी चतुराई से और गहराई में हमें ले गयी । अंत में पार्वती हमें एक अदभुत गुफा में ले गयी जिसके अंदर अनेक मत्स्य-कन्याएं तैर रहीं थीं । वे पावी के साथ मुझे देखकर ऐसे प्रसन्नता प्रकट कर रहीं थीं-जैसे मेरे विषय में पहले से जानती हों । पार्वती उनकी ओर ध्यान दिये बिना मुझे सीधे एक ऐसी मत्स्य कन्या के पास ले गयी जो अन्य मत्स्य कन्याओं से अधिक सुंदर, सुडौल एवं वृहत आकार की थी । पार्वती ने उसके सामने मुझे उतारकर उस मत्स्य कन्या को प्रणाम किया



और मुझसे मत्स्य-रानी को प्रणाम करने को कहा । मैंने यंत्रवत प्रणाम किया और मत्स्य-रानी में मुझे अभयदान-जैसा आशीर्वाद दिया । फिर पार्वती मत्स्य-रानी की आज्ञा लेकर मुझे अपनी व्यक्तिगत कंदरा में ले गयी और हम दोनों ने तृषितों की भांति जी भरकर प्यार किया । उसने बताया कि जब वह गेटवे ऑव इंडिया के पास जल में गिरी थी तो मत्स्य-रानी वहां उपस्थित थी । उसमें किसी भी स्त्री को मत्स्य-कन्या बनाने की क्षमता है और उसने पार्वती को भी अविलंब मत्स्य-कन्या बना दिया था । यद्यपि वह अथवा पार्वती किसी को मत्स्य-पुरुष बनाने में सक्षम नहीं हैं परंतु वे किसी भी पुरुष को जल में श्वास लेने व निर्द्वंद्व विचरण कराने में सक्षम हैं । पार्वती ने मेरे साथ संपूर्ण जीवन जीने की कसम खाते हुए कहा कि अब हमें कोई अलग नहीं कर पाएगा । फिर वह मेरे लिए भोजन लाने को कहकर चली गयी । उसके जाने पर मैं अपने भाग्य पर इतराता हुआ आनंदातिरेक में डूब रहा था कि अचानक रक्तिम नेत्रों से घूरती हुई एक मत्स्य-कन्या दिखायी पड़ी । मैं जब तक पहचान पाया कि वह सुधा है, उसने मुझे पीठ पर बैठा लिया और अत्यंत तीव्र वेग से गुफा से निकालकर समुद्र तल की ओर ले उड़ी । मुझे होश ही नहीं रहा कि कब उसने उसी वेग से मुझे जल के बाहर फेक दिया और मैं वर्ली-सी-फेस पर समुद्र तल के किनारे बेहोशी की हालत में पाया गया । होश आने पर मैंने जब सबको अपने-आप पर बीती कहानी बताने का प्रयत्न किया तो मुझे पागल करार कर 'मेंटल असाइलम' में बंद कर दिया गया । महेश ! मुझे यहां से मुक्ति दिला दो । मैं अपनी पार्वती के पास जाना चाहता हूं । मैं यहां जी नहीं सकता ।'' यह कहकर वह फूट-फूटकर रोने लगा । मैं कुछ देर तक उसके कंधे पर हाथ रखे रहा, परंतु उसके नेत्रों से अविरल अश्रुधारा बहती रही । वह अब किसी ऐसी दुनिया में खो चुका था कि उसे मेरी उपस्थिति का भान ही नहीं था । मैं चुपचाप वहां से बाहर निकलकर पुलिस आफिसर मेस चला आया ।

रात्रि में मैं अपने बिस्तर पर लेटा समुद्र की गर्जना सुन रहा था और पी. शंकर की अनोखी कहानी में दत्तचित्त होकर विचारमग्न था । कभी सोचता कि यह भी उसका एक वैसा ही दिवा-स्वप्न होगा-जैसे दिवा-स्वप्न देखने का उसका युवावस्था से स्वभाव रहा है परंतु उसकी वाणी में ऐसा विश्वास झलकता था कि उसे असत्य मानने को भी मन तैयार नहीं होता था । चूंकि निद्रारानी नयनों से कोसों दूर थी अतः मैं बिस्तर से उठकर कमरे से बाहर आया और धीरे-धीरे टहलते हुए वर्ली-सी-फेस पर समुद्र के किनारे बनी बाउंड्रीवाल पर जाकर बैठ गया । चांदनी रात में लहरें ज्वार पर थीं और कभी-कभी बाउंड्रीवाल को भी छू जाती थीं ।

मेरा ध्यान पुनः पी. शंकर की कहानी पर केंद्रित हो गया और मैं सोचते-सोचते अर्धनिद्रित हो गया कि तभी मुझे लगा कि समुद्र से मुझे कोई ऐसी आवाज में पुकार रहा है जो लंबी बांस की नलकी से आती प्रतीत होती थी । ध्यान देने पर मैंने सुना कि कोई स्त्री मुझे पुकार कर कह रही है, ''महेश ! तुम, अपने पागल शंकर के मित्र हो । मैंने तुम्हें उसके साथ फोटो में देखा था । मैं तुम्हें पहचान गयी हूं । मैं

तुम्हारे पागल की पार्वती हूं । सुधा ने जब शंकर को गुफा से समुद्र तल पर फेक दिया था, मैंने मत्स्य-रानी की अनुमति से उसी दिन उसका काम तमाम कर दिया था । मैं उस दिन से रोज रात्रि शंकर की प्रतीक्षा में यहां आती हूं परंतु निराश लौट जाती हूं । मुझे उससे मिला दो, महेश !'' मैं भौंचक्का-सा समुद्र की ओर देख रहा था परंतु ऊंची उठती और किनारे पर झाग छोड़कर लौटती लहरों में मुझे कोई मानव अथवा मानवी दिखायी नहीं दे रही थी । तभी उसी कातर भाव से फिर से मुझसे वही याचना की गयी । मैंने भी अर्धसुप्तावस्था में ही आश्वासन दे दिया, ''पार्वती ! मैं अवश्य तुम्हें पागल से मिलाऊंगा ।'' फिर वह आवाज आना बंद हो गयी और मैं उसी मुग्धावस्था में अपने कमरे में आकर सो गया ।

प्रातः बेयरे के चाय लाने पर ही नींद खुली । रात्रि की संपूर्ण घटना याद आ गयी और अपना आश्वासन याद आया । किसी अज्ञात शक्ति के वशीभूत मेरा मस्तिष्क केवल कार्य करने लगा और स्वतः एक योजना समझ में आयी । मैंने साहनी से फोन मिलाकर उससे मिलने की इच्छा प्रकट की । उसने तुरंत नाश्ते पर घर पर बुला लिया । वहां मैंने साहनी से अन्य बातें छिपाकर केवल इतना कहा, ''यार, 'मेंटल एसाइलमवाले' तो पी. शंकर को मार ही डालेंगे । उसे वे एकांत में बंद रखते हैं और बाहर भी नहीं घूमने देते । वह कृशकाय हो गया है । यदि उसे बाहर लॉन में टहलने की आजादी मिले तो मेरे विचार से वह न केवल शारीरिक रूप से वरन् मानसिक रूप से भी स्वस्थ हो सकता है । तुम्हें अपने प्रभाव का



प्रयोग कर इतना तो करना ही चाहिए ।'' साहनी ने ऐसा करने का आश्वासन दिया ।

उसी रात मैं कुशीनगर एक्सप्रेस से लखनऊ के लिए रवाना हो गया । भोपाल पहुंचने पर सबेरे आंख खुली । स्टेशन पर उतरकर मैंने दो रुपये में समाचार-पत्र खरीदा और डिब्बे में आकर पढ़ने लगा । तीसरे पृष्ठ पर यह शीर्षक ''आई. पी. एस. अधिकारी ने वर्ली-सी-फेस पर समुद्र में छलांग लगायी ।'' देखकर मेरा पूर्ण ध्यान उसी समाचार पर केंद्रित हो गया । मुंबई के संवाददाता ने लिखा था कि पी. शंकर नाम का एक वरिष्ठ आई. पी. एस. अधिकारी, जो कुछ समय से विक्षिप्त था, 'मेंटल असाइलम' के लॉन में टहलते हुए अचानक भाग निकला । उसे पकड़ने का प्रयास किया गया परंतु गलियों में छिपते हुए सीधा वर्ली-सी-फेस पहुंचकर उसने समुद्र में यह कहते हुए छलांग लगा दी, ''पार्वती मैं आ रहा हूं । मुझे अब कोई तुमसे जुदा नहीं कर सकता है ।'' मैं इस समाचार को ऐसे पढ़ रहा था-जैसे मुझे संपूर्ण घटना का पूर्वाभास रहा हो और मैं ही इसका सूत्रधार हूं ।

— ए-८१ विजय खंड-२ गोमती नगर
लखनऊ-२२६०१०

गोष्ठी

आदित्य नारायण शुक्ल, कानकार्ड (अमरीका)

प्र. कृष्ण ने अपनी बहन सुभद्रा का विवाह अपने फुफेरे भाई अर्जुन से कर दिया था, क्या यह अनुचित संबंध नहीं था ?

☐ **कृष्ण की पटरानी रुक्मिणी ने भी अपने पुत्र का विवाह अपने भाई की पुत्री से किया था । इस प्रकार के वैवाहिक संबंधों को उस काल में मान्यता प्राप्त रही होगी, जो अब हमारे (हिंदू) समाज में नहीं है । किंतु दक्षिण भारत के हिंदुओं में आज भी इस प्रकार के विवाह होते हैं ।**

सुभद्रा वर्मा, नीमच

प्र. भोजन के बाद हमें तुरंत नींद क्यों आती है ?

☐ **भोजन करते समय हमारे पेट में पहुंचे अन्न का उपयोग हमारा शरीर तुरंत नहीं कर लेता है । इस अन्न को हमारी कोशिकाएं अवशोषित कर सकें इसके लिए उसे एक निश्चित रासायनिक प्रक्रिया से गुजरना होता है और पाचन की इस क्रिया के लिए पेट और आंतों की कोशिकाओं को ऊर्जा की आवश्यकता होती है । इस ऊर्जा की पूर्ति हमारे रक्त में विद्यमान ऑक्सीजन तथा अन्य पोषक तत्त्व करते हैं । अतः भोजन के तुरंत बाद रक्त बहुत तेजी से आंतों की ओर प्रवाहित होने लगता है जिससे शरीर के अन्य भाग में रक्त का प्रवाह धीमा पड़ जाता है । इसकी अनुभूति मस्तिष्क को होती है**



मधुमोदक विद्यार्थी, धनबाद

प्र. खजुराहो कहां है और उसके मंदिर क्यों प्रसिद्ध हैं ?

☐ **मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में खजुराहो स्थित है । यह एक गांव है जो नवीं से तेरहवीं शताब्दी तक चंदेल राजाओं की राजधानी रहा था । इन राजाओं ने ९५० और १०५० के बीच के वर्षों में यहां लगभग ८५ मंदिर बनवाये थे । इनमें से अब केवल २० शेष रह गये हैं । ये सभी मंदिर शिव, विष्णु, ब्रह्मा और जैनियों के हैं । अब ये समस्त मंदिर [illegible]**

जिसके फलस्वरूप हमें नींद आ जाती है ।

रमेश रंजन पाटनी, अजमेर

प्र. कंप्यूटर संबंधी साफ्टवेयर और हार्डवेयर क्या होते हैं ?

□ **कंप्यूटर साफ्टवेयर का तात्पर्य है किसी विशेष कार्य के लिए कंप्यूटर को निर्देश देने के उद्देश्य से प्रोग्राम बनाना, जबकि कंप्यूटर हार्डवेयर का सीधा संबंध इसकी यांत्रिकी से है— जैसे उसके कलपुरजे और रखरखाव आदि ।**

डिगेश्वर कुशवाहा, पूरबडीह (गोला)

प्र. संयुक्त राष्ट्र घोषणापत्र पर ५० राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर किये थे, किंतु उसके संस्थापक सदस्य ५१ थे ?

□ **संयुक्त राष्ट्र घोषणापत्र पर हस्ताक्षर ५१ देशों के प्रतिनिधियों ने किये थे (२६ जून, १९४५ को) न कि ५० ने । ये सभी संस्थापक सदस्य थे । भारत भी इनमें एक था ।**

अरविंद शिंदे, ग्वालियर

प्र. भारत में कितने धार्मिक समुदाय हैं ?

□ **भारत में आठ प्रमुख धार्मिक समुदाय हैं : हिंदू (८२.७२%), मुसलिम (११.२०%), ईसाई (२.५९%), सिख (१.८९%), बौद्ध (०.७१%), जैन (०.४८%) और यहूदी तथा अन्य (०.४१%) । देश में कश्मीर घाटी तथा लक्षद्वीप समूह को छोड़कर, जहां मुसलमान क्रमशः ६५.८% और ९४.४% हैं, अन्य सभी स्थानों में हिंदुओं की प्रधानता है । ईसाइयों की अधिकतर आबादी केरल, तमिलनाडु, गोवा, पांडिचेरी, दादरा एवं नगर हवेली, मणिपुर, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय और असम में है । सिखों की बहुतायत पंजाब में है, किंतु हरियाणा, जम्मू और दिल्ली में भी उनकी संख्या काफी है ।**



नीना जॉर्ज, बेगूसराय

प्र. संगीतकार रेमो फर्नांडीज कहां के हैं और कब से चर्चित हैं ?

□ **मई १९५३ में जन्मे और 'बांबे' फिल्म के सुपरहिट गीत 'हम्मा, हम्मा' से सुर्खियों में आये रेमो फर्नांडीज की जन्मस्थली गोवा है । एक अच्छे पॉप संगीतकार तथा गायक रेमो का फिल्मी सफर श्याम बेनेगल की 'त्रिकाल' और गुल आनंद की 'जलवा' से शुरू हुआ ।**

रमा प्रसाद सिंह, जमालपुर

प्र. औद्योगिक क्रांति क्या है, कब शुरू हुई ?

□ **मनुष्य के जीवन में वास्तविक परिवर्तन मशीनों के विकास से हुआ । मानव इतिहास के इस उत्साहजनक काल को 'औद्योगिक क्रांति' कहते हैं । औद्योगिक क्रांति इंगलैंड में सन् १७५० में शुरू हुई**

थी । मशीन युग का ही दूसरा नाम औद्योगिक क्रांति है ।

विद्या सिन्हा, समस्तीपुर

प्र. अस्पतालों का अस्तित्व कब से है ?

□ इतिहास से यह जानकारी मिलती है कि ई.पू. ४३७ में श्रीलंका में अस्पताल का अस्तित्व था । इससे पूर्व बौद्धकालीन भारत में भी अस्पताल बनवाये गये थे । सम्राट अशोक द्वारा ई.पू. तीसरी शताब्दी में १८ चिकित्सा प्रतिष्ठान निर्मित कराये गये थे जो आधुनिक अस्पतालों-जैसे थे । इस समय संसार का विशालतम अस्पताल शिकागो में है जो ४७८ एकड़ भूमि में फैला हुआ है और इसमें ५६०० बिस्तर हैं ।

अमरेश अजय, लहेरियासराय

प्र. किंगफिशर पक्षी क्या खाता है और कहां घोंसला बनाता है ?

□ कोई १२-४५ सेंटीमीटर लंबा तथा नीला, गुलाबी और अन्य रंगों का किंगफिशर पक्षी अधिकतर मछली पकड़कर खाता है, किंतु मौका पाने पर मेंढक के बच्चे को भी खा लेता है । अपनी लंबी चोंच का उपयोग यह नदी या जलाशयों के किनारे मिट्टी खोदकर उसमें बिल बनाता है और यही उसका घोंसला होता है ।

अमरनाथ बिजौलिया, सरदारशहर

प्र. 'जंक फूड' किसे कहते हैं ?

□ 'जंक-फूड' उन खाद्य पदार्थों को कहते हैं जिनमें ऊर्जा (कैलोरी) होती है किंतु विटामिन, खनिज, आदि नहीं होते, और ये परिष्कृत (रिफाइंड) होते हैं । केक, बिस्कुट, चाकलेट, सफेद डबल रोटी, नूडल्स आदि इसी श्रेणी में आते हैं । ये मैदा से बनते हैं जिसमें पौष्टिक तत्त्वों की कमी होती है । इसके अतिरिक्त इसमें चीनी, चरबी तथा प्रिजर्वेटिव अधिक मात्रा में होते हैं । ऐसे पदार्थ फ्रि-रेडिकल्स के उत्पादन को बढ़ाते हैं और प्रतिरक्षात्मक क्षमता को घटाते हैं ।

रवीन्द्र कुमार लखोटिया, पिलानी

प्र. प्रातःकालीन धूप विटामिन 'डी' युक्त और दोपहर की हानिकारक क्यों ?

□ क्योंकि दोपहर की धूप में अल्ट्रावायलट किरणें होती हैं जो त्वचा के लिए हानिकारक पायी गयी हैं ।

अजित भांबी, अंबाला

प्र. ब्रिटेन में एशियाई मूल के लोगों की संख्या काफी बढ़ चुकी है फिर भी पुलिस में उनका प्रवेश क्यों नहीं ?

□ पुलिस में उनका प्रवेश बहुत पहले ही हो चुका है । अब उनकी संख्या बढ़ रही है । मोहम्मद तारिक गफूर नामक व्यक्ति तो अब सहायक चीफ कांस्टेबल (उपायुक्त के समकक्ष) के पद पर पहुंचनेवाला पहला एशियाई है ।

चलते-चलते

प्रश्न : नया साल किसलिए मनाया जाता है ?

उत्तर : पुराने साल का कूड़ा-करकट दूसरों के सिर डालने के लिए ।

—सूत्रधार

भारतीय एकता और अखंडता का प्रतीक- सर्प

● कमलेश माथुर

आदिकाल से ही भारतीय संस्कृति में सर्पों का विशिष्ट स्थान रहा है । प्राचीन पुराणों, वेदों, साहित्य, लोक कथाओं, धार्मिक, पौराणिक गाथाओं, परंपराओं व आस्थाओं पर आधारित विश्वासों से जुड़ी सर्प संबंधी भय और समर्पण की भावनाओं को प्रमाणित करती अनेकों विचारधाराएं प्रचलित हैं । नागपूजा का त्यौहार किसी-न-कसी रूप में भारत के विभिन्न भागों में अलग-अलग ढंग से मनाने की प्रथा है । श्रावण शुक्ला पंचमी को नागपूजा से संबद्ध लोक कथानुसार इस दिन नागों को प्रसन्न करने के लिए दूध पिलाया जाता है, क्योंकि महाभारत के अनुसार नागपूजा का संबंध मनसा देवी की पूजा से है । मनसा देवी स्वयं सर्पराज वासुकि की बहन थी जिसका विवाह जरतकारु ऋषि से हुआ । वह अस्तिका की मां थी । जब जनमेजय सर्प नष्ट करने का यज्ञ कर रहा था तब अस्तिका ने ही इन सांपों को विनाश से बचाया था अतएव मनसा को विषहारी कहा जाता है एवं कहीं-कहीं सुनहरे रंग की सुंदर स्त्री के रूप में जल कुमुदनी के बीच सर्पों से आच्छादित दर्शायी जाती है ।

सर्पपूजन के प्रयोग

राजस्थान में तेजादशमी के नाम से सर्पपूजा की जाती है । जाट समुदाय के विशेष आराध्य देव तेजाजी के उपासक अपने गले में अश्वारूढ़ हाथ में नंगी तलवार लिए जीभ पर डसते सर्प चित्रित तेजाजी की लघु प्रतिमा बांधे रहते हैं । राजस्थान के पठारी भू-भाग में श्रवण-भादवां में प्रायः जहरीले सर्प विचरते हैं ऐसे में पशुपालक तथा व्यापारी पशुओं की स्वास्थ्य कामना हेतु लोक-देवता तेजाजी की तांती (धागा) बांधते हैं । यहां तक कि तेजाजी का श्रद्धापूर्वक गुणगान करने हेतु स्थानीय गायकों ने 'तेजाराम' ही बना डाली । इसी प्रकार चौहान वंशज गोगाजी को राजस्थान के पांच पीरों में से एक हिंदू देव एवं मुसलिम पीर के रूप में पूज्यनीय माना जाता है । गोगामेड़ी नामक स्थान पर गोगापीर की समाधि पर प्रतिवर्ष विशाल मेला लगता है । लाखों लोग देश के कोने-कोने से यहां आते हैं । राजस्थान में गोगाजी की विविध रूपों में मान्यता है । गोगानवमी पर हरे रंग के गोबर से दीवारों पर सर्पांकन किया जाता है ।

नाग काटने की अचूक दवा

बिहार में स्त्रियां इस दिन घर को रंगों से सजाकर दूध, खील से शेष नाग पूजती हैं, पटना में गोबर पांचे और भागलपुर में बेहड़ा पांचे के नाम से नागपूजा होती है । उत्तर

प्रदेश में परिवार का सबसे बड़ा बुजुर्ग स्नान के बाद अपने शयनकक्ष की दीवार पर सांपों की दो आकृतियां बनाता है तथा ब्राह्मण को दान-दक्षिणा देता है या सामान्यतः लोग आठ नाग सरदारों की पूजा करते हैं अथवा प्रातः घास को सांप की तरह बांधकर इसकी पूजा करते हैं। लड़कियां नदी-तालाब या जल-सरोवर में गुड़िया तैराती हैं जिन्हें गांव के लड़के लंबी-लंबी लकड़ियों से पीटते हैं। इस प्रथा का संदर्भ जनमेजय की नागकथा से मिलता है। गढ़वाल के लोग लिपी-पुती जमीन पर चंदन और हल्दी से सर्प की आकृतियां बनाकर उनके समक्ष दीपक जलाते हैं। नेपाल में यही त्यौहार चंगुनारायण नामक स्थान पर मनाते हैं। कहा जाता है कि प्रति वर्ष यहां गरुड़ देवता की मूर्ति पसीज उठती है और वहां का पुजारी एक रुमाल से मूर्ति पोंछकर उस रुमाल को राजा को भेंट करता है। इस विशिष्ट रुमाल के एक-एक धागे में भी सांप काटने की अचूक दवा की शक्ति निहित होती है। पंजाब में इस दिन घर की दीवार पर काले रंग से बनी नाग आकृति को इस विश्वास से बनाते हैं कि इसके कारण काला सर्प घर में नहीं घुस सकता। वस्तुतः भारतीय पौराणिक एवं लोककथाओं में वर्णित नाग कोई सामान्य सर्प न होकर देव श्रेणी में स्थापित फणधर सर्प स्वीकार किया गया है।

दीर्घायु कामना के लिए

उल्लेखनीय है कि प्राच्य विद्यापीठ एवं जयपुर संग्रहालय के प्रन्यास के म्यूजियम ऑव इंडोलॉजी में लगभग एक हजार से भी अधिक सर्पाकल्पना एवं सर्पाधारित चित्र संग्रहीत हैं तथा आठ मुक्ताओं में से एक सर्प मुक्ता भी मौजूद है। सर्प संबंधी पौराणिक कथाओं में जनमेजय द्वारा यज्ञ में सर्पों की आहुतियां शिव के शरीर पर लिपटे नाग, श्रीमद्भागवत व गर्ग संहिता में श्री कृष्ण द्वारा यमुना में कालिया नाग को नाथने की कथा अथवा नाग पंचमी पर्व पर नाग को पुत्रदान या शिव समान श्रेष्ठ पति की कामना के रूप में पूजा षष्ठी देवी नामक नागदेवी पूजा जिसे छठी पूजन कहते हैं, जो कि बालक की सुरक्षा व मंगल कामना से संबद्ध है अथवा नागपूजन से जुड़ी यह धारणा कि सर्प गुप्त धन का रक्षक है तथा पूर्वजों के प्रतीक के रूप में प्रत्येक परिवार का अपना एक पितर-नाग देवता होता है, तदनुसार बहू के पुत्र-जन्म या मुंडन संस्कार के समय घर की दीवार पर सर्पाकृतियों की पूजा करना या समुद्र मंथन कथा अथवा क्षीर सागर में अनेक फणोंवाले सांप शय्या पर विश्राम करते भगवान विष्णु के चित्र गणेशजी के हाथ में नागबाण

दुर्लभ सर्प



नामक शस्त्र को पकड़ते चित्र, योग विधि में कुंडलिनी योग की परम शक्ति को कुंडलीमारे सर्प की आकृति में दर्शाना प्राचीन मुद्राओं में राजकीय चिह्नों में नागों की आकृति आदि सभी नागपूजा या उपासना द्वारा संकट मुक्ति अथवा सर्पों से अभयदान पाने की याचना आदि से जुड़ी ऐसी परंपराएं हैं जो कि जनमानस में नागपूजा की धारणा को बल देती हैं। अतएव नागविषयक-गाथा, साहित्य, कला, भय और आकर्षण के द्वंद्व की अभिव्यक्ति है वहीं वह सुंदर और भयावह भी है, जीवन है और मृत्यु भी है, अमृत और जहर जैसें द्वंद्व की अभिव्यक्ति दंडनीय भी है और पूज्यनीय तो है ही। चंबा और कांगड़ा घाटी में तो नागों के नामों पर अनेक मंदिर हैं। शेष नाग, बासक नाग, तख्त नाग, प्रितमनाग, साबिरु नाग, कर्कोटक नाग, कर्शनाग, इंदुनाग, संतननाग तथा अन्य अनेकों नागों की विशिष्टता यह है कि इनमें से हर एक के ऊपर तीन सिरोंवाला एक फण होता है और इन्हें यहां मानव के रूप में पूजा जाता है। चेनाब की घाटी में प्रायः परिवार के एक-न-एक पुरुष का नाम वासुकि के नाम पर होता है। चेनाब की घाटी में वासुकि के मंदिर में एक वजीर होता है जिसे जीमत वहान कहते हैं। कश्मीर राजाओं के प्रसिद्ध वंश के बारे में (ललितादित्य) यह धारणा है कि वह कर्कोटक नाग से ही प्रारंभ हुआ था। सौराष्ट्र में हर गांव में एक सर्प मंदिर होता है जिसे समेंलिया कहते हैं। मैसूर राज्य में संतान, लक्ष्मी, वर्षा और दीर्घायु की कामना के लिए कुंडली मारे सर्प की मूर्त्तियां पीपल के वृक्ष के नीचे रखकर पूजते हैं।

सांपों को नमस्कार

संस्कृत काव्य में भी सर्पों की विशेषताओं के अनेकों रोचक उल्लेख हैं। सर्पापिवंति पवनं न च दुर्बलास्ते से लेकर विष्णु स्तुति के शांताकांर भुजग शयनं अथवा शिव कवचम में शिव स्तुति शिव पंचाक्षर, शिवस्तकम्, देवी स्त्रोतम के अलावा वेदों में ऋग्वेद में (वृत्रासुर) अहि अर्थात सर्प का इंद्र ने वध किया था, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद में सांपों के विविध संदर्भ मिलते हैं। सांपों को नमस्कार करते हुए भूत-चुड़ैलों के बाणों में उनका वास बताया गया तथा जादू-टोनों के ऐसे मंत्रों का उल्लेख भी है जो सर्पदंश से बचाते हैं।

रामायण में जब हनुमान उड़कर लंका जा रहे थे तब उनकी शक्ति की परीक्षा लेने नाग माता सुरसा राक्षसी वेश में प्रकट हुई थी। जब सीता पृथ्वी की गोद में समायी तब पृथ्वी को अनंत ज्योति से जगमगाते नागों के फणों पर टिका हुआ कहा गया। महाभारत में कृष्ण के बड़े भाई बलराम शेषनाग के अवतार थे। अर्जुन ने नाग कन्या उलुपि से विवाह किया था। महावंश में राजा अशोक की पुत्री संघमित्रा ने नागों की जादुई शक्ति हरण करने के लिए गरुड़ का रूप धारण किया था। ये नाग बोधिवृक्ष की उस शाखा को लेकर भागना चाहते थे जिसे वह लंका ले जा रही थी। बौद्ध धर्म में प्रायः भगवान बुद्ध को सात सिरोंवाले नाग फणों के नीचे दिखाया जाता है। पुराणों में पाताल (नर्क) लोक को नागों का प्रिय स्थान कहा गया है। सर्प लोक के अनेकानेक आकर्षणों में विशिष्ट आकर्षण नाग कन्या कही जाती है, जो कि पुरुषों को मोहपाश में जकड़ कर उनमें

कामोत्तेजना उत्पन्न करती है । कालिदास कृत रघुवंश के १६वें कांड में एक रोचक कथानुसार जब अगस्त्य मुनि द्वारा दिया गया जादुई ताबीज राजा से खो गया तब समझा गया था कि वह ताबीज नदी के कुंड में रहनेवाले नाग कुमुद ने ले लिया था जिसे प्राप्त करने के लिए राजा ने शक्तिशाली गरुड़ शस्त्र चलाया । फलस्वरूप शीघ्र ही नागों का राजा अपनी सबसे छोटी बहन सुंदरी कुमुदवती सहित प्रकट हुआ और वह रत्न उसने अपनी बहन के विवाह में लौटा दिया ।

भारतीय कला में सर्प

अधिकांश भारतीय मंदिरों में अजंता की गुफाओं में, मोहनजोदड़ो, हड़प्पा एवं सिंधु घाटी सभ्यता में भी नागपूजा के विविध प्रमाण मिले हैं । जैन मत के २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ की मूर्त्ति के सिर पर सात फणोंवाला नाग बोधचिह्न के रूप में दिखायी देता है । प्रयाग संग्रहालय में बुद्ध भगवान की पादुकाओं की रक्षा पांच फणोंवाले नाग द्वारा करते दर्शायी गयी है । सांची स्तूप के पूर्वी तोरण पर जंगल के प्राणियों द्वारा जिनमें गरुड़ के बगल में पांच शीर्षवाला नाग भी है, बोधि वृक्ष की पूजा करते हुए दिखाया गया है । एक अन्य चित्रांकन में नागराज कलिका को वंदना में गौतम बुद्ध को ज्ञान प्राप्ति की भविष्यवाणी करते दर्शाया गया है । बीकानेर लघु चित्र शैली (सन् १६८६) में बसंत ऋतु में संगीत मुग्ध पशु-पक्षी एवं प्रेमी युगल सहित सपेरे द्वारा सर्प को चित्रांकित किया गया । बूंदी चित्र शैली (सन् १७७५) में चित्र 'सर्प प्रेमी कन्या और सपेरा' राष्ट्रीय संग्रहालय में संग्रहित है । जयपुर स्थित दूल्हा हाउस की एक छतरी में लगभग दो सौ वर्ष पुराना 'नाग लीला' का भित्ति चित्र तथा जयपुर के आदर्शनगर श्मशानों में चांपावतों की छतरी में शेष शयनम् भगवान विष्णु का भित्ति चित्र दर्शनीय है । देवी सर्प अनेक सिरोंवाले होते हैं । चित्रों में प्रायः इन फणों की संख्या सदैव विषम रहती है जैसे तीन, पांच या सात, धर्म ग्रंथों में ५ फणों की उपमा मनुष्य की बाहु से की गयी है जिसके सिरे पर पांच अंगुलियोंवाला पंजा होता है । हाथ की फैली हुई अंगुलियां नागफण का बोध है । इसलिए प्रायः नाग को ५

राजस्थान में तेजादशमी के नाम से सर्पपूजा की जाती है । जाट समुदाय के विशेष आराध्य देव तेजाजी के उपासक अपने गले में अश्वारूढ़ हाथ में नंगी तलवार लिए जीभ पर डसते सर्प चित्रित तेजाजी की लघु प्रतिमा बांधे रहते हैं । राजस्थान के पठारी भू-भाग में श्रवण-भादवां में प्रायः जहरीले सर्प विचरते हैं, ऐसे में पशुपालक तथा व्यापारी पशुओं की स्वास्थ्य कामना हेतु लोक-देवता तेजाजी की तांती (धागा) बांधते हैं ।



सर्पों का प्रणय

फणों के रूप में ही चित्रित किया जाता है ।

अन्य देशों में सर्प संस्कृति

आदिकाल से चली आ रही सर्प पूजा केवल भारत तक ही सीमित नहीं थी, यूनानवासी, फोनिक्स तथा बेबीलोनवासियों के अलावा सर्प पूजन के चिह्न एशिया के अन्य भागों में ईसा के प्रारंभिक युग में भी मिलते हैं । मिस्र में (यूरियस) राजा के मुकुट या सरताज में फणदार सर्प के प्रतीक को बादशाही सुरक्षा व सम्मान का चिह्न मानते थे । ऐबिसीनियां के नरेश का खिताब नेगस को नागों के खिताब से संबंधित माना जाता है जो कि सांपों के उपासक हैं । चीन तथा पड़ोसी देश में सर्प और सूर्य पूजावाद की धार्मिक परंपरा है जिसके संदर्भ में वहां की राक्षसी गोधिका को वहां के साम्राज्य की रक्षक कहा जाता है, गोधिका नृप लि वांग (नागराज) से संबंधित अनेक तीर्थस्थान हैं । कोरियावासी सर्पों को अपने घर के रक्षक के रूप में पूजते हैं । तिब्बत में नदी, झील, झरनों को नाग देवताओं के वश में माना जाता है । उनका विश्वास है कि राजा [illegible] पालती झील के तली में स्थित शीशमहल में रहता था ।

मध्य एवं पश्चिमी अफरीका में सर्प व कछुए को सूर्य वंश का गण चिह्न माना जाता है । वहां सांप को इतना अधिक पवित्र और चमत्कारिक माना जाता है कि सांप के सम्मुख बिना पूजा व बलि के कोई भी शुभ कार्य शुरू नहीं होता । ऐसी भी मान्यता है कि अनीश्वरवादी टंत्रों में भी सर्प ही सबसे प्राचीन है ।

राजकुमारी का सर्प से विवाह

चीनी यात्री ह्वेनसांग द्वारा राजा उदयन की कथा में नाग कुमारी से उदयन के विवाह-प्रसंग का रोचक वर्णन किया गया है । कथानुसार जब भी उदयन नाग कुमारी के साथ होता था तो एक नौ सिरोंवाला नागफण तुरंत राजकुमारी के सिर में से बाहर निकल आता था ।

उल्लेखनीय है कि उत्तर भारत के नाग मंदिर नाग सर्प को समर्पित नहीं हैं अपितु मुख्यतः उन नाग राजाओं शासकों को समर्पित हैं जो कि इस जाति के प्राचीन शासक थे । जैसे शेषनाग, कार्कोटक नाग आदि मानव स्वरूप पूज्यनीय हैं । पौराणिक कथानुसार नाग शासकों ने पाताल, प्राग्ज्योतिष, तक्षशिला, मगध, मथुरा विलासपुर आदि नगरों में राज्य किया ।

पौराणिक कथाओं तथा ऐतिहासिक संदर्भों



नागपूजन

से यह तो सिद्ध हुआ ही है कि भारत में सर्प और विशिष्टतः नाग जहां एक तरफ जन मानस में व्याप्त जनास्था के सशक्त प्रतीक हैं वहीं दूसरी तरफ युग-युगीन नाग संस्कृति के अभिन्न अंग हैं । चाहे नाग पूजा की परंपरा का लक्ष्य नाग उपासना द्वारा संकट मुक्ति पाना हो अथवा अभयदान पा लेने की याचना से संबद्ध आस्था हो 'नागयुग' युगों से भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की अखंड एकता का द्योतक रहा है ।

— जी-११, जनपथ,
श्याम नगर, जयपुर



विभिन्न प्रकार के सर्प



सर्पों के ढाण

सभी पारदर्शी: सूरज एन. शर्मा



द्रौणागिरि गांव का एक दृश्य

उत्तराखंड के दुर्गम पर्वतों पर बसा एक गांव ऐसा भी है, जहां के लोग आज भी रामभक्त हनुमान से सख्त नाराज हैं । कारण यह है कि हनुमान ने उन लोगों के आराध्य देव पर चोट पहुंचायी और उनका सरासर अहित किया है । यह आराध्य देव कोई और नहीं स्वयं साक्षात् 'पर्वत' ही है, जिसका नाम है— द्रौणागिरि ।' सभी जानते हैं कि इस पर्वत में संजीवनी बूटी विद्यमान होने से हनुमान इसका एक भाग



एक देवयात्रा का दृश्य

गांव के प्राचीन मकान



सभी चित्रः लेखक

तोड़कर ले उड़े थे, इसी पुराण-प्रसिद्ध द्रौणागिरि पर्वत की छांव में बसे हनुमान से नफरत करनेवाले गांव का नाम है— द्रौणागिरि ।

द्रोणगिरि तक

गढ़वाल में बद्रीनाथ धाम से ४७ किलोमीटर पूर्व सीमांत क्षेत्र का प्रमुख नगर पड़ता है—जोशीमठ । ऋषिकेश से लगभग ढाई सौ किलोमीटर दूर बारहों महीने यात्री व पर्यटक यहां आते रहते हैं देश-विदेश से । जोशीमठ से एक सड़क बद्रीनाथ जानेवाली सड़क से कटकर उत्तर की ओर चली जाती है । यह सड़क तिब्बत की सीमा से सटे हुए नीति घाटी तक चली जाती है । इसी मार्ग पर जोशीमठ से ३० किलोमीटर की दूरी पर एक छोटी बस्ती है—जुम्मा । जुम्मा से पैदल १० किलोमीटर की भयावह विकट चढ़ाई के बाद द्रौणागिरि गांव के दर्शन होते हैं । गांव की ऊंचाई है—१२,००० फीट । यकीनन गढ़वाल में सबसे ऊंचाईवाला यह एक अकेला गांव है । इस प्राचीन गांव के दक्षिण पूर्व में २३,१७० फ़ीट ऊंचाई पर प्रसिद्ध द्रौणागिरि चोटी स्थित है ।

इस गांव के आस-पास बर्फानी नदियां व झरने उछलकूद मचाते रहते हैं । कहीं-कहीं अलसाये हुए से ग्लेशियर पसरे हुए हैं । भोजपत्र के सुंदर वृक्षों के झुरमुट में ठंडी हवा बहती रहती है । जड़ी-बूटियों, जंगली फूलों से हरी-भरी ऊंची पहाड़ी पर स्थित है यह अनूठा गांव । साल के ५-६ माह यह गांव बर्फ की मोटी तह से ढका रहता है । तब यहां के लोग नीचे गरम घाटियों में रहते हैं । जहां इनके शीतकालीन गांव होते हैं । मई में जब बर्फ हट

हनुमान यहां से संजीवनी ले गये थे !

● *प्रकाश पुरोहित 'जयदीप'*



जाती है तब ये लोग अपने डोरडंगर माल असबाब सहित इस निर्जन पड़े गांव में पहुंच जाते हैं । यूं तो अब कई परिवार निचली घाटियों में स्थायी रूप से बस गये हैं । फिर भी द्रौणागिरि गांव पहुंचते हैं ४५-५० परिवार ।

भोटिया व्यापारी भी हैं

ये लोग 'भोटिया' कहलाते हैं । यह एक जनजाति है । सन् १९६७ से इन्हें अनुसूचित जनजाति में शामिल कर दिया गया है । भोटिया जनजाति में भी एक उपजाति है—तोलछा । इनका आखिरी गांव है—द्रौणागिरि । ये मंगोल मुखाकृति के होते हैं । इतिहासकारों ने इन्हें मंगोल जाति के मूल का माना है । सच्चे मायनों में ये पराक्रमी पर्वत पुत्र हैं । शौर्य, साहस और बहादुरी इन्हें विरासत में मिली है । ये प्राचीन समय से अत्यंत विकट हिमालयी दर्रों से गुजरकर तिब्बत के साथ व्यापार करते थे । यहां से गुड़ तंबाकू, चावल, कपड़ा, बरतन, तिब्बत ले जाकर उनकी जरूरत पूरा करते थे और तिब्बत से नमक, सुहागा, ऊन, याक की पूंछ, सोना, भेड़-बकरियों को लाते थे । सीमा व्यापार के कारण ये लोग तिब्बत के निकट बीहड़ पर्वतों व घाटियों में बस गये । गढ़वाल व कुमाऊं के सीमांत क्षेत्र में ५००० वर्ग मील के दायरे में बसे हैं—भोटिया जनजाति के लोग । पिथौरागढ़ व अल्मोड़ा जनपद में ये लोग शौका व जोहारी उपनाम से जाने जाते हैं, तो चमोली जनपद में इन्हें 'जाड़' कहा जाता है । मुख्यतः यह व्यापारिक कौम रही है ।

सदियों से चल रहे इस सीमा व्यापार को करारा झटका लगा १९६२ में । जब विस्तारवादी चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया । फिर तो यह व्यापार हमेशा-हमेशा के लिए बंद हो गया । इस भारी आघात से भोटिया अर्थव्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गयी । पर इन लोगों ने हिम्मत नहीं हारी । वे मेहनती थे । अपने ही देश में ऊन का कारोबार फैलाया, खेती शुरू की, कुटीर-धंधे चलाये, व्यापार किया फिर सरकारी सुविधाओं के कारण ये लोग समृद्ध होने लगे । द्रौणागिरि से आगे नीती घाटी में दर्जनों गांव आज भी आबाद हैं । यह बात दीगर है कि अब ये गांव धीरे-धीरे खाली होते जा रहे हैं । क्योंकि यहां आवागमन व अन्य सुविधाओं की कमी की तकलीफें बनी हुई हैं । साल के ४-६ महीने यहां बर्फ रहती है । कड़ाके की ठंड रहती है । नयी पीढ़ी के लोग तो अब निचली घाटियों में स्थायी तौर पर रहने लगे हैं । पुरानी पीढ़ी को अपने इस सीमांत क्षेत्र से बेहद लगाव, प्यार व अपनत्त्व है । उन्होंने ही इस सीमांत क्षेत्र को आबाद किया हुआ है ।

नीती घाटी स्थित द्रौणागिरि पर्वत के बारे में सर्वविदित मान्यता है कि हनुमानजी इसी पर्वत से संजीवनी बूटी ले गये थे । पौराणिक प्रसंग देखें तो लक्ष्मणजी को जब शक्ति लगती है व



कालीन पर सजावट का काम करती एक बाला



पर्वत देवता के उत्सव में एक स्थानीय लोक-नृत्य

वैद्यराज की सलाह पर हनुमान संजीवनी बूटी लेने हिमालय की ओर उड़ जाते हैं ।

हनुमान जड़ी-बूटी ले गये थे

इस बारे में द्रौणागिरि गांव में एक दूसरी ही मान्यता प्रचलित है । बताते हैं कि जब हनुमान जड़ी-बूटी लेने के लिए इस गांव में पहुंचे तो वे भ्रम में पड़ गये । उन्हें कुछ सूझ नहीं रहा था कि किस पर्वत पर संजीवनी बूटी हो सकती है ? तब इस गांव में उन्हें एक वृद्ध महिला दिखायी दे गयी । उन्होंने पूछा कि संजीवनी बूटी, किस पर्वत पर होगी ? तो वृद्धा ने द्रौणागिरि पर्वत की तरफ इशारा किया । हनुमान उड़कर पर्वत पर पहुंच तो गये पर बूटी कहां पर होगी यह पता न कर सके ? वे फिर गांव में उतरे व वृद्धा से बूटी वाली जगह बताने के बारे में अनुनय-विनय करने लगे । जब वृद्धा ने कहा ठीक है । मैं तुम्हें बताती हूं तब हनुमानजी वृद्धा को हथेली पर बैठाकर ले गये, वृद्धा ने बूटीवाला पर्वत दिखाया तो हनुमान ने उस पर्वत के काफी बड़े हिस्से को तोड़ लिया व वृद्धा को गांव में छोड़कर वे पर्वत खंड को लेकर उड़ते बने ।

फिर तो द्रौणागिरि गांववाले हमेशा के लिए हनुमान से नाराज हो गये । बताते हैं जिस वृद्ध महिला ने हनुमान की मदद की थी उसको भला-बुरा कहकर गांव से सामाजिक बहिष्कार कर दिया गया था । आज भी इस गांव में किसी महिला का बच्चा होता है तो प्रसव के दौरान उस स्त्री को गांव से अलग काफी दूर नदी के किनारेवाले स्थान में रखा जाता है । शिशु जनने के बाद ही वह गांव आ सकती है । इस दौरान. उसका पति, सास व अन्य परिवारजन उसकी मदद करते हैं । नदी किनारे झोंपड़ी या डेरा बनाया जाता है । इतनी पवित्रता रखी गयी है इस गांव में ।

जनता हनुमान से नाराज है

इस गांव का आराध्य देवता है तो 'पर्वत' ही । लोग तभी तो हनुमान से नाराज हो गये जब उनके देवता के एक अंश को तोड़कर वह

नीती घाटी स्थित द्रौणागिरि पर्वत के बारे में सर्वविदित मान्यता है कि हनुमानजी इसी पर्वत से संजीवनी बूटी ले गये थे । पौराणिक प्रसंग देखें तो लक्ष्मणजी को जब शक्ति लगती है व वैद्यराज की सलाह पर हनुमान संजीवनी बूटी लेने हिमालय की ओर उड़ जाते हैं ।



नीती घाटी की भोटिया महिलाएं

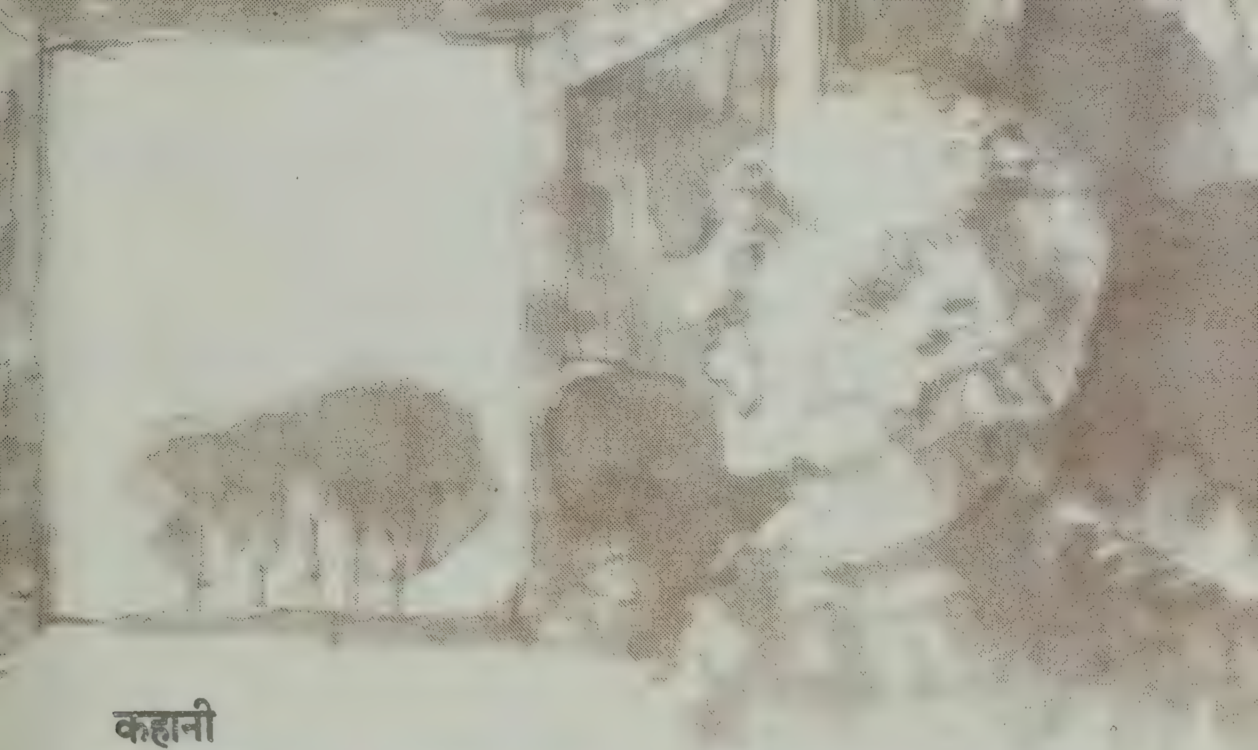
ले गये और देवता को चोट पहुंचायी। आज भी इस पर्वत का एक हिस्सा टूटा हुआ दिखता है। इस गांव में आज भी पूजा होती है तो द्रौणागिरि पर्वत की। इस पर्वत के प्रति इन लोगों में अटूट श्रद्धा और भक्ति है। श्रद्धा का इससे बड़ा क्या उदाहरण होगा कि गांव में किसी की मृत्यु हो जाए तो ये लोग मृतक का दाह-संस्कार नहीं करते बल्कि उसे जमीन के अंदर गाड़ देते हैं, ये लोग मानते हैं कि मृतक को जलाने से पर्वत देवता पर धुआं लग जाएगा व पवित्रता नष्ट हो जाएगी। पर्वत देवता के सहारे ये लोग १२,००० फीट ऊंचाई पर कठोर विषम परिस्थितियों के बीच हंसते-गाते रह पा रहे हैं, कितने ही अंधड़-तूफान आये, ग्लेशियर टूटकर गिरे, पर लोग हमेशा सुरक्षित रहे। कभी कोई खतरा आया भी तो ये लोग पर्वत की पूजा में लीन हो गये।

आज भी ये पर्वत पूजा करते हैं। साल में एक दिन भव्य पर्वत पूजन त्यौहार मनाया जाता है। उस दिन देवनृत्य होता है, देवता रोता भी है। अनाज का प्रसाद बंटता है। लोग नये-नये कपड़े पहनते हैं। हर घर के दरवाजे पर जंगली फूलों की कतार सजायी जाती है। अच्छा-खासा मेला जुट जाता है। मेले का यह दिन गांव के विद्वान बुजुर्ग लगन के अनुसार अगस्त-सितंबर माह के बीच में निकालते हैं।

पर्वत देवता का अवतारी प्रतिनिधि जो व्यक्ति होता है उसे 'पसवा' कहते हैं। इस व्यक्ति को ही पर्वत देवता मान लिया जाता है। विशिष्ट पूजा के बाद जब पसवा कांपने लगता है तब समझा जाता है उसमें देवअंश ने प्रवेश कर लिया है। फिर पसवा नाचने लगता है। चिल्लाने लगता है। पसवा भोजपत्र की छालों को शरीर पर लपेटे रहता है। फिर वह अपना बायां हाथ पीठ की तरफ मोड़कर सिसकता है। इससे यह भाव उजागर होता है कि हनुमान ने मेरा एक हिस्सा तोड़ लिया है। उपस्थित लोगों की आंखें नम हो जाती हैं। फिर पर्वत देवता शांत हो जाते हैं। अंत में पर्वत देवता सबको आशीर्वाद देता हुआ कठिन परिस्थितियों में उनकी रक्षा का वचन देता है।

देखनेवाली बात यह है कि इस दिन इस पूजा में लोग महिलाओं के हाथ का दिया हुआ नहीं खाते हैं। न महिलाएं इस पूजा में मुखर होकर भाग लेती हैं, क्योंकि प्राचीन काल में इसी गांव की वृद्ध महिला ने हनुमान की मदद की थी।

—मंदिर मार्ग, गोपेश्वर-२४६४०१ चमोली, गढ़वाल



कहानी

ठहरा समय

• कालिका चमोला

घना अंधेरा, न कहीं कोई आवाज, न ही लोगों के जिंदा होने का आभास । अकेला कृष्णानंद वबरी के कोने पर रजाई ओढ़े हुए खिड़की से एकटक बाहर देख रहा था । उसे लग रहा था मानो पूरा गांव भिन्न-भिन्न शक्लों में उसको खाने-नोचने दौड़ रहा हो, वह बैठा हुआ अंदर ही अंदर छटपटा रहा था, वह सोच रहा था कि मैंने तो पूरी तीन पीढ़ियां इस गांव की देखी हैं, क्या जमाना था वो ? जब किसी के भी दुःख-दर्द में सभी की आंखों में एक जैसी ही सुरखी छायी रहती थी । पर आज किसी को फुर्सत ही नहीं मेरा हाल पूछने की, खुद ही अपने को समझाता कि इसमें गांववालों का ही अकेला क्या दोष है ? मेरे सगे जो कितने अपने हैं । उसकी आंखें डबडबा जातीं, वह रजाई के अंदर उमड़-घुमड़कर भी अपने को नहीं बुझा पा रहा था, वह अपने से ही बातें करते हुए कहता—"क्या कुकर्म किये होंगे मैंने, जो इस उम्र में भी ये दिन देखने पड़ रहे हैं । वह अपने वर्तमान की नाव पर बैठा अतीत के भयानक तूफानी दौर से टकरा रहा था ।

बाहर हवा सर-सर बहने लग गयी, ऊंचे लंबे खड़ीक के पेड़ों से पक्षी फुदक-फुदककर अपने घोंसले छोड़ रहे थे, पत्तों की पड़-पड़ करती आवाज भी उसे उद्वेलित कर रही थी । वबरी के चारों कोनों पर नजर दौड़ाते हुए वह चुपचाप उठ गया तथा कपड़े पहनकर अपनी लाठी के सहारे बाहर निकल पड़ा । तथा कुछ ही देर में गार्डर पुल पर पहुंच गया । थोड़ा इंतजार कर हरिद्वार रोडवेज भी आ गयी । वह उसमें सवार हो गया ।

कृष्णानंद कमर झुकाये लाठी के सहारे बस से बाहर उतरा । चारों तरफ हफरा-दफरी मची

हुई थी, लोग दौड़ते-भागते चले जा रहे थे। वह थोड़ा-सा ठिठका, सोचने लगा कि कहीं कोई बवेला तो नहीं हो गया। उसके कानों के परदे पें-पें-गें-गें की आवाज से झनझना रहे थे। बसों की लंबी कतारें पहाड़ों की ओर पीठ किये ऐसे खड़ी थीं, मानो बिसोणी पर विश्राम कर रही हों वह इसी ताक में था कि यहां से चला जाऊं पर किधर। शिवू की मां ने तो सिर्फ यही कहा था कि वह भक्तियाणा रहता है, पर कहां होगा ये भक्तियाणा ! ऐसे ही में उसने एक व्यक्ति से पूछा, "साब, भक्तियाणा कख होगा" ? "सीधे आगे चले जाओ," जवाब मिला।

कृष्णानंद अब एक ही शंका से झुरा रहा था कि पता नहीं कैसी खबर वो देगा, उसके हृदय में उमड़-उमड़कर पानी के रौले बह रहे थे, तभी उसे सामने शिवू दिखायी दिया तथा शिवू को वह, शिवू देखते ही चौंक-सा गया। वे दोनों अपनी-अपनी चिंताओं में झुलसते जा रहे थे, साथ ही उनके बीच का फासला भी कम हो रहा था, शिवू ने कृष्णानंद की ओर आते हुए थोड़ी दूर से कहा—"काका प्रणाम, आज सवेर-सवेर !"

"बस उत्पात मां बाबू"

"कन उत्पात काका"

कृष्णानंद खांसने-सा लगा। वह अपने क्षीण साहस को बटोरने की कोशिश कर रहा था, एकदम रुंधे गले से उसने कहा।

"शम्भू की सत्त-खबर ही नी आयी, साल भर से ज्यादा बिटिन"

"ठीक च काका वो, घबड़ा ना"

"वे कू पता छः त्वेमू"

"हां काका"

कृष्णानंद यह सुनकर खुशी से गद-गद हो गया। उसकी आंखें छलकने लग गयीं, इतने ही में शिवू ने कहा—

"काका यो च शम्भू को पता"

उसको यह सुनकर ऐसा लगा कि मानो वह जेठ की दुपहरी में भारी बोझ पीठ पर लादे अचानक पिलटे (चीड़ की सूखी पत्तियां) पर फिसल गया हो तथा पांव रुकने का नाम ही न ले रहे हों, उसकी पीठ का बोझ भी उसे नीचे ही धकेल रहा हो, उसने कागज को जेब में रखते हुए कहा, "अच्छी बात त मैं चलूं फिर।"

"काका, जरा आराम करा, भात खेक जवा"

"ना-ना, मेरा भाग्य पर कख च आराम"

यह कहकर वह कमरे से बाहर निकल आया, वे दोनों सड़क की ओर आ रहे थे, इतने ही में शिवू ने कहा—

"काका, माना शम्भू वख नी मिली तो दुगड्डा रामप्रसाद भाई साहब भी रौन्दा, एकदम बस स्टेशन का पास, आप वख ऐ जया"

"अच्छा..."

सड़क पर पहुंचते ही बस आ गयी, कृष्णानंद उसमें बैठ गये, शिवू ने हाथ जोड़कर विदा ली, तथा सोचने लगा कि कितने कष्ट झेलने होंगे काका ने अभी और ! कहां से तो इन्होंने खर्च जुटाया होगा, शंभू को पढ़ाने के चक्कर में पहले ही कर्जे में डूबे हैं और ऊपर से खेत भी गिरवी, शंभू के तो हाल ही बुरे हैं, मैं क्या कहता काका से, पर वहां क्या करेंगे काका ?

घू-घू धुआं उड़ाती बस बाँज के पेड़ों की शीतल छाया को चीरकर आगे बढ़ रही थी। कृष्णानंद खिड़की से बाहर दूर बसे गांवों को

सड़क पर पहुंचते ही बस आ गयी, कृष्णानंद उसमें बैठ गये, शिबू ने हाथ जोड़कर विदा ली, तथा सोचने लगा कि कितने कष्ट झेलने होंगे काका ने अभी और । कहां से तो इन्होंने खर्च जुटाया होगा, शंभू को पढ़ाने के चक्कर में पहले ही कर्जे में डूबे हैं और ऊपर से खेत भी गिरवी, शंभू के तो हाल ही बुरे हैं, मैं क्या कहता काका से, पर यहां क्या करेंगे काका ?

देख रहा था । बस जैसे ही मुड़ते हुए दूसरी तरफ आने लगी ; सामने श्वेत, धवल पर्वत श्रृंखला से उसकी आंखें झिलमिला गयीं । एकटक देखते उसकी स्थिति भी ऐसी हो गयी जैसे वह निश्चल, मौन पर्वत जैसा ही सीट पर बैठा हो । उसके मन में कई तरह के सवाल उठ रहे थे, साथ ही वह शंभू को देखने के लिए अत्यंत बेचैन हो रहा था । वह उस घड़ी का इंतजार कर रहा था जब वह शंभू के साथ वापस घर अपने चौक में पहुंच जाए, देखते ही उसकी मां की सूखी आंख भी तर हो जाएं, उसके छोटे भाई-बहन दौड़-दौड़कर फैलायें गांव में खबर । "हमारा दिदा आया है घर, दिखा-दिखाकर चूसें लेमन, गुब्बारों को उड़ाते हुए उछलें-कूदें खुशी से ।" इस समय वह नन्हे से तुतलाते शंभू व साल भर पहले के शंभू की यादों में झूल रहा था । कृष्णानंद लाठी को हाथ में पकड़कर रिक्शे में बैठ गया । रिक्शा तेजी से सड़क पर दौड़ रहा था । जब तक कृष्णानंद इस शहर की बाहरी शक्ल को ठीक से देख पाता, रिक्शेवाले ने कहा—"उतरो बोडा"

काफी झगड़कर उसने रिक्शेवाले को दस रुपये दिये तथा वहां से चल दिया । गेट के सामने पहुंचकर उसे यह युक्ति नहीं सूझ रही थी कि गेट कैसे खोला जाए, वह बाहर से चिल्लाने-सा लगा—"ऐ जी भाई साहब, भाई साहब"

आवाज सुनकर बूढ़ा मकान मालिक रतन सिंह गेट की ओर आते हुए पूछने लगा—"हां जी, क्या बात है ?"

कृष्णानंद ने दोनों हाथ जोड़कर गजगजाते स्वरों में कहा—"साब, शंभू ग्रामसेवक यहीं रहता है ।"

रतनसिंह ने गेट खोलते हुए कहा—"हां, हां, आइए"

रतनसिंह यह समझ रहा था कि ये ग्रामसेवक के पास किसी काम से आया होगा, जबकि कृष्णानंद उस मकान को देखकर गर्व महसूस कर रहा था कि मेरा लड़का भी इतने अच्छे मकान में रहता है, बरामदे में पहुंचकर रतनसिंह ने कुरसी की ओर इशारा करते हुए कहा—"बैठिए, कोई काम है आपका उनसे ?"

कृष्णानंद को कुरसी पर बैठने में शर्म महसूस हो रही थी, रतनसिंह उसे एकटक देख रहा था, टल्लेदार पायजामा, कुहनियों पर फटा कुरता, जाल-जाल-सी बनी स्वेटर, उधड़ी टोपी, चेहरे पर पड़ी गहरी लकीरें, पांवों में खड्डुसी बिवंरियां, डोरी से बंधे चप्पल, फटा झोला,

रतनसिंह ने धीरे-से कहा—

"कहां से आये हैं, आप ?"

यह सुनकर कृष्णानंद के आंसू दोनों गालों पर पड़ी गहरी लकीरों से उसके गले में बहने लग गये। वह बोलने की कोशिश तो कर रहा था पर आंसू थम ही नहीं पा रहे थे, अत्यंत क्षीण स्वर—"कैसा है वो" रतनसिंह को सुनायी दिये, उसे लगा कि कहीं ये ग्रामसेवक के पिताजी तो नहीं।

रतनसिंह ने उसे तसल्ली देते हुए कहा, "अजी, ऐसे अधीरज मत होइए"

कृष्णानंद ने थोड़ा रुकते हुए कहा—"सालभर से इसकी चिट्ठी ही नहीं मिली, हम तो बड़े ही उत्पात में रहे साब"

रतनसिंह ने कहा, "चिंता मत कीजिए, सब ठीक हैं, पर अभी तो वो टूर पर गये हैं, शायद शाम तक आ जाएं।" इतने ही में गेट पर खड़-खड़ की आवाज आयी।

रतनसिंह ने तुरंत कहा, "चलो, वो आ गयी आपकी बहू।"

"बहू...," क्या साब !

"हां जी..."

"कहां की इसने शादी !" दोनों हाथों से मुंह ढककर वह सोचने लगा कृष्णा यही दिन देखने के लिए तू जिंदा था। घर में पंडितजी कई जन्मपत्री ले आये थे, ऊंची जातिवाले भी अपनी लड़की देने को तैयार थे। लोग घर की गरीबी नहीं, लड़के को देख रहे थे, हर एक की नजर लगी थी कि देखें ये कैसी बुआरी (बहू) लाता है, औजी, लुहार इंतजार में बैठे थे, डोले पर लाता मैं बुआरी को, गांव में भोज देता, पर इस कुपुत्र ने तो इज्जत ही मिट्टी में मिला दी, इससे अच्छा तो ये जन्म ही न लेता, अब करूं तो क्या ! घर वापस जाऊं तो किस मुंह से ! क्या कहूंगा वहां ?

"बेटी सरला, सुनो, घर से तुम्हारे ससुरजी आये हैं।"

"हैं, क्या कहा आपने ?" इस अप्रत्याशित भेंट से वह सकपका-सी गयी। नजदीक आकर उसने कृष्णानंद को सेवा लगानी चाही पर कृष्णानंद ने तुरंत अपने पांव वहां से हटा दिये तथा गुस्से में चीखते हुए कहने लगा, "मत लगाओ मुझे सेवा..."

क्रोध की पछाड़ से वह एक ही झटके में चित हो गयी।

शम्भू दुगड्डा बस स्टैंड पर खड़ा था। लंबी सिगरेट का कश खींचते हुए उसे लगा जब तक बस आती है भाई रामप्रसाद से मिल लूं। रामप्रसाद ने उसे देखते ही तुरत कहा—"अरे शंभू, तुम यहां, यार मैंने काका को आज गाड़ी में जाते देखा।"

"न...न..." शंभू ने सिगरेट फेंकते हुए कहा।

"हां भई, वो बस की खिड़की पर ही बैठे थे, मैं जैसे ही स्टेशन पर गया, बस जा चुकी थी।"

"पर, मेरा पता तो नहीं होगा उनके पास।"

"वो तो, वही जानें, पर तेरी बहू कहां है ?"

"है तो वहीं", शंभू ने गंभीर होकर कहा।

"भैया, तब तो तू जल्दी जा।"

शंभू खीझ-सा गया, तथा गुस्से की लौ उसके शरीर में सुलगने लग गयी। समय के साथ उसके हृदय में फैले संवेदना के बारीक तंतु भी सूखते जा रहे थे, उसके होंठ एकदम चिपक-से गये।

"तू क्या सोच रहा है, जल्दी जा।"

इतने ही में उसे गाड़ी का हॉर्न सुनायी पड़ा, शंभू दौड़कर बस स्टेशन पर आ गया, नजदीक आकर पता चला कि वो ट्रक था, वह उसी में सवार हो गया,

शम्भू अपने बालों पर हाथ फेरते हुए पुनः सिगरेट सुलगाने लग गया। वह सोच रहा था कि ये बुड्ढे न तो खुद रहेंगे चैन से और न ही हमें रहने देंगे। अब मैंने शादी कर ली तो वह आग-बबूला हो जाएंगे, पर क्या वो ऐसी लड़की ढूंढ़ देते मेरे लिए। लड़की सुंदर भी है, नौकरी भी करती है। अरे वो तो किसी ऊंची जाति वाले पंडित की लड़की ढूंढ़ते चाहे उसे अपना मुंह साफ करने की तमीज न हो !, पर कैसे समझाऊंगा उन्हें ! अब तक तो उन्हें आस-पड़ोस के भी कई लोग देख चुके होंगे, कैसी पोल खुली मेरी ?

ट्रक अब तक कोटद्वार पहुंच गया था। शंभू तेज-तेज कदमों से चलते हुए सड़क के दोनों ओर आ-जा रहे लोगों को ऐसे देख रहा था कि मानो इन सबको यह पता लग गया हो कि इसका बाप घर से आया हुआ है। लोग अपनी ही बातों में मशगूल हंसते-बोलते चल रहे थे। पर वह हर एक को देखकर यही सोच रहा था कि ये सब मुझ पर ही हंस रहे हैं। सड़क पर जहां-जहां अंधेरा फैला था वह उसी लीक पर चल रहा था। ऐसे ही में वह अपने कमरे पर पहुंच गया। गेट खोलते हुए उसने देखा कि उसके पिताजी रतनसिंह के साथ बैठे हैं तथा सरला वहीं पर दीवार से सटी खड़ी है, कृष्णानंद उसे देखकर गरमाया तो जरूर पर मन के भीतर कहीं एक शीतल-सी छाप छप से पड़ गयी। सिर्फ यह देखकर कि ये ठीक-ठाक है, शंभू उन्हें देखकर अजीब-सा भाव चेहरे पर



लिये तिरछे से हाथ जोड़कर अपने कमरे की तरफ चला गया। उसके पेट में एक भयानक-सी उथल-पुथल मची थी। उसे लग रहा था कि उसका माथा अभी फट जाएगा। अंदर पहुंचकर वह अपनी आंखों व चेहरे को मल रहा था, वह उन सारी बातों को अपने मानस पटल पर दुहरा रहा था। माहौल उदास था, हवा थम-सी गयी थी, टिमटिमाते बल्बों की रोशनी भी धुंधली-सी पड़ गयी थी। सभी के चेहरे फीके-से पड़े थे।

कृष्णानंद यह देखकर हक्-सा रह गया, उसके सामने झप-सा अंधेरा पड़ गया, बिजली का प्रकाश भी अचानक काला-सा। वह जड़, एकदम शून्य-सा हो गया। उसकी स्थिति उस चीड़ के वृक्ष की तरह हो गयी जिस पर तुरत बज्रपात हुआ हो। उसकी सारी आशाएं आकाश से टूटकर जमीन में धंस गयीं। वह बेहोश कुरसी पर लटक पड़ा।

यह देखकर रतनसिंह ने जल्दी उठकर उसको सहारा दिया तथा सामने रखी चौकी पर लिटा दिया। सरला दौड़ती हुई अंदर से पानी का लोटा ले आयी तथा पानी के छींटे मारने लगी। उसका माथा पसीने से डबडबा गया। शंभू अंदर तीक्ष्ण घुटन की ज्वाला में झुलस रहा था।

—सी-४६७ विकासपुरी, नयी दिल्ली-१८

व्यंग्य

एक गधे से वार्तालाप

● डॉ. पी. के. श्रीवास्तव

एक बार मैं शाम के समय एक सार्वजनिक उद्यान की बेंच पर बैठा उस उद्यान की सुंदर छटा को देख रहा था कि तभी अचानक मेरे कानों में आवाज आयी "हैलो, हाऊ आर यू ?"

मैंने आसपास नजर दौड़ायी, किंतु कहीं कोई इंसान नजर नहीं आया । अतः मैं अपने चिंतन में व्यस्त हो गया । अचानक फिर मेरे कानों में आवाज आयी, "हे इंसान, जिस आवाज को आपने अभी सुना, वह मेरी आवाज है, एवं मैं एक गधा हूं जो आपकी बेंच के पीछे खड़ा हुआ हूं ।"

यह सुनकर ज्यों ही मैंने पीछे की ओर देखा, तो पाया कि वाकई एक गधा वहां खड़ा है । मैंने गधे से कहा, "हे गर्दभराज क्या आप वाकई मुझसे बातें करना चाहते हैं ?"

"जी हां, मैं दरअसल आपको अपना इंटरव्यू देना चाहता हूं एवं यह भी चाहता हूं कि आप इस इंटरव्यू की बातें अखबारों में छपवाकर जनसाधारण तक पहुंचाएं ।" गधे ने कहा ।

"लेकिन क्यों ?" मैंने पूछा ।

"क्योंकि यह बहुत जरूरी है । आज दुनिया इतनी विचित्र एवं बदरंग हो गयी है कि अब वक्त आ गया है कि इंसान एवं गधे एक साथ बैठकर इस दुनिया को तबाह होने से बचाने के तरीकों के बारे में सोचें ।" गधे ने कहा । "तो ठीक है, गधे जी । मैं कल एक टेप रिकार्डर लेकर अपनी डायरी के साथ इसी समय यहां आ जाऊंगा एवं आप भी आ जाइएगा ताकि इत्मीनान से बातें हो सकें," मैंने कहा ।

"ओ. के. फाइन," कहकर गधे ने अपनी सहमति जतायी ।

दूसरे दिन जब मैं वहां पहुंचा, तो मैंने देखा कि गधे जी वहां पहले से खड़े हुए मेरा इंतजार कर रहे हैं । बेंच पर बैठकर मैंने अपना टेप रिकार्डर चालू किया एवं इंटरव्यू की शुरुआत कुछ इस प्रकार हुई—

"श्रीमान गधे जी, सबसे पहिले तो आप यह बताइए कि आप यह इंसानों— जैसी बातें कैसे कर रहे हैं ?" मैंने पूछा ।

"क्यों ? इसमें आश्चर्य की क्या बात है ? जब एक इंसान गधों-जैसी बातें कर सकता है, तो भला एक गधा इंसानों-जैसी बातें क्यों नहीं कर सकता ?" गधे के इस उत्तर ने मुझे निरुत्तर कर दिया ।

फिर भी मैंने पूछा, "ऐसा आप कैसे कह सकते हैं ?" "कल जब आप अपने मित्र के



साथ इसी बाग में टहल रहे थे तो मैंने सुना कि आप अपने मित्र से कह रहे थे कि तुम यह क्या गधों—जैसी बातें कर रहे हो । बताइए, आपने ऐसा कहा था या नहीं ?'' गधे ने प्रश्न किया ।

''हां'', मुझे मजबूरन सच्चाई स्वीकार करनी पड़ी ।

''अच्छा गधे महाराज, अब आप अपने एवं अपने गर्दभ समाज के बारे में कुछ बताइए ।'' मैंने कहा ।

''हम गधे बहुत ही सीधे-सादे प्रकृति के पशु हैं, एवं हमें इस बात का गर्व है । किंतु आजकल संपूर्ण गधा समाज एक भयंकर महामारी की चपेट में धीरे-धीरे आता जा रहा है ।'' गधे ने चिंतातुर होकर कहा ।

''वह कैसे ?'' मैंने बड़ी उत्सुकता से पूछा ।

''ज्यों-ज्यों इंसान जानवर बनता जा रहा है, एवं गधों-जैसी हरकतें करने लगा है, त्यों-त्यों हम गधों में भी इंसानियत के कीटाणु बड़ी तेजी से फैलते जा रहे हैं ।'' गधे ने कहा ।

''किंतु इसमें डरने की क्या बात है । इंसानियत तो एक ऐसी नियामत है जो बहुत ही दुर्लभ चीज है । ऐसी चीज पाकर तो गधों को खुश होना चाहिए ।'' मैंने कहा ।

''इसी बात का तो रोना है । यदि यह सच्ची इंसानियत होती, तो कोई चिंता की बात नहीं थी, किंतु आज का इंसान तो वास्तव में एक ऐसा हैवान है, जो इंसान के वेश में घूमकर हैवानियत का ऐसा खेल दिखाता है, कि जिसे देखकर शायद हैवान भी शर्मा जाए ।'' गधे ने बताया ।

''ठीक है, गधे जी । आपकी बातों में काफी दम है । अब आप कृपया 'गधा पचीसी' का अर्थ समझाइए ।'' मैंने कहा ।

''गधा पचीसी इंसानी चरित्र का वह पहलू है जो उसकी युवावस्था से जुड़ा हुआ है । युवावस्था में जब कोई लड़का एवं लड़की एक-दूसरे को देखते हैं तो प्रथम दृष्टि में ही एक-दूसरे को अपना दिल दे बैठते हैं बिना यह जाने कि दूसरे पक्ष की जाति क्या है, धर्म क्या है, उसके घर की आर्थिक हालत कैसी है,

आमदनी का जरिया क्या है, कितना शिक्षित है, स्वभाव कैसा है, जन्म कुंडली मिलती है या नहीं आदि-आदि । इस अंधे प्यार को ही आप लोग गधा पचीसी कहते हैं, क्योंकि जहां इंसान पहली नजर में ही किसी दूसरे साथी को अपना दिल दे देता है, वहां कोई भी गधा किसी गधी को अपना दिल देने के पहले कम से कम पचीस बार सोचता है एवं इस दौरान वह इस दिल देने की विधा के संपूर्ण पहलुओं पर खुले दिल से विचार करता है एवं उसके बाद ही किसी नतीजे पर पहुंचता है ।'' गधे ने समझाते हुए कहा ''कितने आश्चर्य की बात है कि आप गधों में भी अक्ल होती है ?'' मैंने कहा ।

''क्यों ? जब इंसानों में गधापन हो सकता है, तो गधों में अक्ल होने पर आपको इतना आश्चर्य क्यों हो रहा है ?'' गधे ने पूछा ।

''बात यह है कि गधापन कुछ इंसानों में ही पाया जाता है, सबमें नहीं ।'', मैंने प्रतिवाद करते हुए कहा ।

''बिलकुल गलत बात कह रहे हैं आप । मैं गधा जरूर हूं, किंतु इंसानों के इर्द-गिर्द घूमते हुए इंसानी फितरत से अच्छी तरह वाकिफ भी हूं । मुझे मालूम है कि हर इंसान के अंदर एक गधा छुपा होता है एवं इसीलिए प्रायः हर शादीशुदा आदमी अपनी शादी के चंद वर्षों बाद ही यह अनुभव करने लगता है कि वह कितना बड़ा गधा था जो उसने शादी की । ऐसा ही गधीपन का बोध महिलाओं को भी तब होता है जब पतिदेव से उनकी अनबन हो जाती है ।'', गधे ने कहा ।

''देखो गधे भाई, तुम इस तरह की बेसिर पैर की बातें न ही करो तो अच्छा होगा ।'' मैंने गधे से कहा ।

''अच्छा तो सच-सच बताइए, क्या आपको स्वयं ऐसा नहीं लगता कि शादी करके आपने गधेपन का कार्य किया ?'' गधे ने पूरी संजीदगी के साथ पूछा । इसके उत्तर में मैं ''हें, हें, हें, ...'' कहता हुआ हंसने लगा ।

''आपके इस हंसने से मुझे अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया । ऐसे संवेदनशील मुद्दों पर एक शादी शुदा आदमी दांत निपोरने एवं हें, हें, हें करने के सिवाय और कर भी क्या सकता है'' गधे ने व्यंग्यपूर्वक कहा ।

''खैर, गधे जी अब आप अपने गधा समाज के बारे में कुछ और बातें बताने का कष्ट करें ।'' मैंने कहा ।

''हम सब गधे शांतिपूर्ण सहअस्तित्व में विश्वास करते हैं । हमारे समाज में न तो सांप्रदायिक दंगे होते हैं एवं न ही अन्य किसी तरह के झगड़े फसाद । हम सच्चाई एवं ईमानदारी के रास्ते पर चलते हैं एवं शायद इसीलिए आप इंसानों में से यदि कोई इन बातों पर विश्वास करता है एवं अमल भी करता है तो उसे तत्काल आप सभी लोग 'गधा' समझने लगते हैं ।'' गधे ने कहा । ''गधों में और कौन-कौन से गुण होते हैं ?'', मैंने पूछा ।

''गधा सीधी एवं सपाट बयानी में विश्वास रखता है । वह छल-प्रपंच से कोसों दूर रहता है । वह किसी की पीठ में खंजर नहीं भोंकता है । वह किसी की आस्तीन में सांप बनकर भी नहीं घुसता है । साथ ही वह उस पत्तल में छेद भी नहीं करता है जिसमें वह खाता है । मुंह से राम-राम कहते हुए भी वह बगल में छुरी नहीं रखता है ।'' गधे ने कहा । ''इस तरह की बातों से आप आखिर कहना क्या चाहते हैं ?'' मैंने कहा । ''मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूं कि

''गधा पचीसी इंसानी चरित्र का वह पहलू है जो उसकी युवावस्था से जुड़ा हुआ है । युवावस्था में जब कोई लड़का एवं लड़की एक-दूसरे को देखते हैं तो प्रथम दृष्टि में ही एक-दूसरे को अपना दिल दे बैठते हैं बिना यह जाने कि दूसरे पक्ष की जाति क्या है, धर्म क्या है, उसके घर की आर्थिक हालत कैसी है, आमदनी का जरिया क्या है, कितना शिक्षित है, स्वभाव कैसा है, जन्म कुंडली मिलती है या नहीं आदि-आदि ।

जो अच्छाइयां हम गधों में हैं, वे इस आधुनिक समाज के अधिकांश इंसानों में भी नहीं है । यही हम में एवं आप इंसानों में बुनियादी अंतर है । यदि संयोगवश ये अच्छाइयां किसी इंसान में हों एवं वह सच्चाई तथा ईमानदारी के रास्ते पर चलता हो, तो दूसरों की बात तो दूर, स्वयं उसके परिवार के सदस्य भी उसे गधा कहकर उसकी खिल्ली उड़ाने से बाज नहीं आएंगे ।'' गधे ने आवेश में आकर कहा ।

''गधों के बीच भी क्या राजनीतिक बातें होती हैं ? गधा समाज में भी क्या कोई प्रजातंत्रीय शासन प्रणाली है ?'' मैंने पूछा ।

''जी हां, किंतु हम गधे भी चुनाव में किसी गधे को अपना प्रतिनिधि चुनने के पहले इस बात की पूरी जांच-पड़ताल कर लेते हैं कि इस गधे में संपूर्ण गधापन है या नहीं जबकि आप इंसान अपने जनप्रतिनिधि को आंखें मूंदकर चुन लेते हैं बिना इस बात की परवाह किये कि उसमें इंसानियत नाम की चीज है भी या नहीं ।'' गधे ने कहा ।

''गधे एवं इंसान में और क्या अंतर है ?'' मैंने पूछा ।

''आज तक किसी गधे ने न तो किसी किस्म का घोटाला किया है एवं न ही हवाला । गधा भ्रष्टाचारी भी नहीं होता । इसीलिए एक सदाचारी इंसान को आप लोग गधा समझते हैं । गधा दलबदलू भी नहीं होता । वह अपने मालिक के प्रति पूर्णतः वफादार एवं निष्ठावान होता है । गधा दगाबाज एवं एहसान फरामोश भी नहीं होता। जबकि ये दोनों बातें आज के जमाने के अधिकांश इंसानों में कूट-कूटकर भरी हैं ।'' गधे ने मुझे समझाते हुए कहा ।

''अच्छा गधे जी, अब इस इंटरव्यू को यहीं समाप्त करते हुए अंत में मैं आपसे सिर्फ यह जानना चाहूंगा कि क्या आप आज के युग के इंसान के लिए कोई संदेश देना पसंद करेंगे ?'', मैंने कहा ।

''जी हां । मैं आज के इंसान से केवल यह कहना चाहूंगा कि वे हम गधों से थोड़ा गधापन उधार लेकर एवं उसमें सच्ची इंसानियत को मिलाकर तदनुसार आचरण यदि करें, तो इक्कीसवीं सदी काफी सुखद होगी, वरना सिवाय तबाही एवं बरबादी के इक्कीसवीं सदी में कुछ भी नहीं होगा ।'' गधे ने शांतिपूर्वक कहा ।

—ई—४७, इंजीनियरिंग कॉलेज कॉलोनी
रायपुर (म. प्र.)

निराला जन्मशती वर्ष के संदर्भ में विशेष



सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

काश ! निराला इंगलैंड में पैदा हुए होते !

● कमलाशंकर अवस्थी

कभी-कभी धरती पर ऐसी अतुलनीय प्रतिभा का उदय होता है, जिसका आंकलन उसके जीवनकाल में हो ही नहीं पाता और उसकी जीवन-लीला समाप्त होने के बाद अप्रत्याशित रूप से वह व्यक्तित्व संपूर्ण जनमानस पर छा जाता है । ऐसा ही अद्वितीय, विराट व्यक्तित्व है महाप्राण निराला का, जो बैसवारे की साहित्य रत्न गर्भा भूमि की हिंदी जगत को अनुपम देन है ।

हरीतिमा से युक्त बंगाल की शस्य श्यामला भूमि पर जन्मा यह व्यक्तित्व जहां संपूर्ण बंगाल की सरसता और कोमलता को अपने में समेटे था, वहीं बैसवारे के अपने पैतृक गांव गढ़ाकोला का ठेठ अक्खड़पन भी उसे विरासत में मिला था ।

साहसी निराला

गढ़ाकोला के सुर्यकांत त्रिपाठी से कब और कैसे वे निराला बने, यह साहित्य शोधकों के लिए तो खोज एवं चर्चा का विषय हो सकता है किंतु निराला वास्तव में निराले थे, इसमें संदेह नहीं । यथा नाम तथा गुण । कर्ण के समान दानी, कबीर के समान फक्कड़, जनक के समान

विदेह तथा अभिमन्यु के समान साहसी निराला की तुलना आधुनिक हिंदी के शीर्षस्थ रचनाकारों में निराला से ही हो सकती है ।

'करम वचन मानस विमल,
तुम समान तुम तात'

इतने विराट व्यक्तित्व को भी समकालीन विशिष्टजनों की उपेक्षा का दंश पीड़ा देता रहा फलस्वरूप—

'मैं ही बसंत का अग्रदूत,
ब्राह्मन समाज में ज्यों अछूत'

जैसी पंक्तियां लिखकर महाकवि ने अपनी पीड़ा को अभिव्यक्ति प्रदान की ।

साहित्यिक मठाधीशों की उपेक्षा, समाज के दबे-कुचले दीन-हीन तबके से जुड़ाव और ईर्ष्यालु प्रकृति के प्रहारों से निराला का विद्रोही स्वर और मुखर होता गया । जितना वे उपेक्षा के शिकार हुए उतना ही उनका विद्रोही स्वर सिंहनाद के रूप में परिणित होता गया । निराला का कोई सानी नहीं था । उनकी प्रतिभा बहुमुखी नहीं सर्वतोमुखी थी, जिसके कारण उनसे ईर्ष्या रखनेवाले भी अंत तक उनकी उपेक्षा का साहस नहीं जुटा सके । लोकप्रियता की दृष्टि से 'गीतिका' में संकलित 'वर दे वीणा वादिनि वर दे' रचना संपूर्ण हिंदी जगत में जन-जन का कंठहार हो गयी । शिल्प-संयत-संस्कृतनिष्ठ पदावली और राष्ट्रीय उन्मेष की मांगलिक आकांक्षा से युक्त यह रचना पारंपरिक वाणी वंदना की अवधारणा में एक नया आयाम प्रस्तुत करती है । निराला रचित एक लंबी कविता में 'सरस्वती' किसान की सरस्वती बन गयी है ।

गोस्वामीजी के बाद हिंदी साहित्य में निराला पहले व्यक्ति हैं जिन्हें शास्त्रस्वीकृति एवं लोकस्वीकृति एक साथ प्राप्त हुई है । रचनाकार की कालजयी सफलता के लिए दोनों स्वीकृतियां प्राप्त होना ही महत्त्वपूर्ण है । इस दृष्टि से निराला हिंदी साहित्य के सफलतम शीर्ष व्यक्तित्व हैं ।

> ***साहित्यिक मठाधीशों की उपेक्षा, समाज के दबे-कुचले दीन-हीन तबके से जुड़ाव और ईर्ष्यालु प्रकृति के प्रहारों से निराला का विद्रोही स्वर और मुखर होता गया । जितना वे उपेक्षा के शिकार हुए उतना ही उनका विद्रोही स्वर सिंहनाद के रूप में परिणित होता गया ।***

कालजयी सफलता

'अनामिका' में 'वह तोड़ती पत्थर', 'राम की शक्तिपूजा', 'सरोज स्मृति', 'भारति जय-विजय करे' जैसी रचनाएं साहित्य में मील के पत्थर हैं । वस्तुशिल्प की दृष्टि से ये रचनाएं हिंदी कविता की नवीन संभावनाओं के द्वार खोलती हैं । सूखे गमले में 'जूही की कली' को रोपित किया है । 'कुकुरमुत्ता' के माध्यम से धनिक एवं शोषक वर्ग पर ऐसी गहरी चोट पहले क्या आज तक नहीं हुई ।

निरालाजी जब अपने जीवन के बढ़ते चरणों में लिखते हैं—

'बांधो न नाव इस ठांव बंधु, सारा गांव बंधु'
पूछेगा

में तो निरालाजी अपने जीवन के विचारों की अप्रतिम अभिव्यक्ति करते हैं । करुणा के साथ वेदना, टीस और वैषम्यभरी विडंबना के स्वर लक्षित होते हैं । यहां मानवीय करुणा, आत्म-करुणा का रूप ले लेती है ।

संपूर्ण जीवन में निराला ने संघर्षों को जिया है । इस विद्रोही कवि ने विध्वंसात्मक क्रांतिकारिता का ही नहीं सृजनात्मक परिवर्तन का भी बिगुल फूंका है । वे युग चेतना के साथ ही युगांतर चेतना के कवि हैं :-

'जल्द पैर बढ़ाओ, आओ, आओ,
आज अमीरों की हवेली
किसानों की होगी पाठशाला
धोबी, पासी, चमार, तेली
खोलेंगे अंधेरे का ताला'
....किसानों का बैंक खुलवाओ,
....कांटे से कांटा लड़ाओ ।

निराला विद्रोही होते हुए भी आस्तिकता के कवि हैं । 'राम की शक्तिपूजा', 'तुलसीदास' तथा 'राम-कृष्ण के प्रति' सरीखी रचनाओं में उनकी आध्यात्मिक/दार्शनिक एवं धार्मिक आत्मा के दर्शन होते हैं । विवेकानंद और रामकृष्ण परमहंस की विचारधारा से महाकवि के धार्मिक संस्कार पहले ही पुष्ट हो चुके थे । राम की शक्ति पूजा में उनकी दृढ़ आस्था के स्वर हैं :-

'होगी जय, होगी जय पुरुषोत्तम नवीन,
कह महाशक्ति राम के बदन में हुई लीन'

संपूर्ण वांड्मय में किसी कलमकार ने अपनी पुत्री के श्रृंगार और सौंदर्य का वर्णन करने का साहस नहीं संजोया । निराला संभवतः ऐसे पहले रचनाकार हैं । 'सरोज स्मृति' में उन्होंने लिखा :-

'तुम पर शुभ पड़ा कलश का जल : देखती मुझे, तू हंसी मंद,
होंठों में बिजली फंसी-स्पंद'

इस रचना में उन्होंने क्षोभ के साथ बैसवारे के रूढ़िवादी कान्यकुब्जों के व्यवहार को भोगा, यथार्थ को परखा । जो भोगें वह निराला न गायें, न कहें, यह हो ही नहीं सकता :-

'यह कान्यकुब्ज कुल कुलांगार,
खाकर पत्तल में करें छेद
इनके कर, कन्या, अर्थ, खेद'

समालोचक, उपन्यासकार, कहानीकार, संपादक, निबंध लेखक, साहित्य की किस विधा में निराला नहीं हैं ?

उन्होंने कुल्ली भाट, चतुरी चमार, बिल्लेसुर बकरिहा—अपने जैसे सामान्य जीवनसाथियों को अपनी कलम के द्वारा अमरता प्रदान कर दी । उनके हृदय की संवेदनशीलता का आलंबन कौन है ? उत्तर—मैं लख न सका वे दृग विपत्र ।

क्रांतिकारी भी थे वह !

किसी धनपति, सत्तापति और सामंती व्यक्तित्व को उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रमुखता नहीं दी और न ऐसा उनके द्वारा संभव ही था ।

केवल कागजी क्रांतिकारी ही नहीं थे निराला । गढ़ाकोला में उन्होंने जनपद के किसान नेता पं. विश्वंभर दयालु त्रिपाठी से संपर्क साधकर किसानों को प्रेरणा दी, उनमें जाग्रति पैदा की । स्वाभिमानी निराला किसानों के हितों के लिए अधिकारियों से टकराया भी ।

संघर्ष, विद्रोह, अध्यात्म, धार्मिकता, स्वाभिमान, उदारता तथा हिंदी प्रेम की साकार मूर्ति थे निराला ।

यह निराला का जन्मशती वर्ष है । जन्मतिथि को लेकर यद्यपि कुछ विवाद है, लेकिन महाकवि की अपनी स्वीकारोक्ति के बाद संपूर्ण हिंदी जगत यह वर्ष निराला जन्मशती वर्ष के रूप में मना रहा है । जिसका समापन बसंत पंचमी विक्रम संवत् (२०५३) दो हजार तिरपन अर्थात ग्यारह फरवरी १९९७ को होगा ।

निराला की अनेक कृतियों की रचना स्थली उनका पैतृक ग्राम अभी भी उपेक्षित, उजाड़, खंडहर है । उनके गांव के मार्ग में पड़नेवाली लोन नदी जिसे निराला कभी तैरकर और कभी चलकर पार करते थे, का जर्जर पुल स्वयं में अपनी कहानी है । निराला के नाम पर किसी विश्वविद्यालय में निराला पीठ की स्थापना नहीं हुई और न उनकी स्मृति में कोई बड़ा संस्थान ही बना । आज भी वह उपेक्षा के शिकार हैं ।

निराला की प्रतिमा

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के निराला नगर में 'निराला' की एक प्रतिमा है, वह अपराजेय निराला की नहीं अपितु चंद्रकांता सीरियल के किसी अय्यार की मालूम होती है । आज ऐसे लोगों की कमी नहीं है, जिन्होंने न निराला को देखा, न सुना, न पढ़ा । लेकिन अपना महत्त्वसिद्ध करने के लिए उनसे जुड़े हुए और पूरी तरह गढ़े हुए संस्मरण सुना रहे हैं और निराला की जगह अपना महत्त्व दर्शा रहे हैं ।

इधर जन-सहयोग से गढ़ाकोला के निकट महाप्राण निराला महाविद्यालय का निर्माण तो हुआ है पर उसे भी शासकीय उदासीनता का अभाव झेलना पड़ रहा है । क्योंकि सत्ताधारियों की दृष्टि में निराला के नाम का कोई वोट बैंक नहीं है । इस महाविद्यालय में निराला की



गढ़ाकोला में निराला का पैतृक मकान

संगमरमर की आदमकद प्रतिमा की स्थापना भी हुई है ।

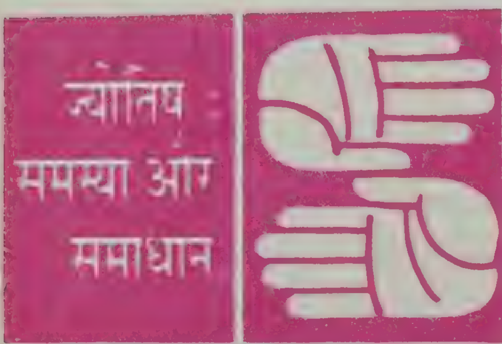
निराला यदि जनमानस में किंवदंतियों, अक्खड़पन और दानवीरता के बल पर जीवित रहेंगे तो विद्वानों, अध्येताओं में अपने साहित्यिक सामर्थ्य के बल पर । निराला की उपेक्षा चाहे जितनी हुई हो, लेकिन साहस के साथ साहित्य के दरबार में निराला ने जो अपना अंगद का पांव रोपा है उसे कोई न हिला पाया है न हिला पाएगा ।

जन्मशती वर्ष में उस महामानव की गरिमा के अनुरूप सत्ता या हिंदी जगत निराला स्मृति को चिरस्थायी बनाने हेतु क्या कुछ कर सकेगा ? निराला की जन्मस्थली महिपादल में निराला की स्मृति में क्या कुछ संभव हो सकेगा ? ये प्रश्न अनुत्तरित हैं, भविष्य के गर्भ में हैं ।

काश, निराला रूस, फ्रांस या इंगलैंड में पैदा हुए होते !

—१२५, आदर्श नगर,
रामलीला मैदान, उन्नाव (उ. प्र.)

शशिकांत सिंह, पटना
प्रश्न : जिंदगीभर कुंवारा रह सकूंगा या नहीं ?
उत्तर : आपकी कुंडली में शुक्र काफी सशक्त है । जब कुंडली में शुक्र सशक्त होता है तब विवाह अवश्य होता है ।
सुरेन्द्र कुमार भल्ला, सोलन (हि.प्र.)
प्रश्न : मेरा छोटा बेटा घर कब वापस आएगा ?
उत्तर : बेहतर होता यदि आप अपनी कुंडली के स्थान पर बेटे की कुंडली भेजते । फिर भी बेटे के बारे में सूचना जल्द ही मिलेगी ।



● अजय भाम्बी

अल्पना अग्रवाल, चंडीगढ़
प्रश्न : नौकरी कब लगेगी ?
उत्तर : जून से पूर्व ।
प्रदीप कुमार, बिजनौर
प्रश्न : ८ जून, १९९७ को होनेवाली सिविल सेवा प्रारंभिक परीक्षा में सफलता मिलेगी ?
उत्तर : इसमें तो सफलता मिल जाएगी ।
साधना, तिरुपति (आं.प्र.)
प्रश्न : अगली संतान कब तक ?
उत्तर : १९९७ में ।
संजय सिंह, कलकत्ता
प्रश्न : ब्याज पर पैसा देने से लाभ होगा ?
उत्तर : आपकी कुंडली में गुरु और बुध की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है लेकिन लग्नेश मंगल ठीक है । अतः कुछ हद तक लाभ होगा, बहुत अधिक नहीं ।
सोनिका, मोगा
प्रश्न : विवाह कब होगा ?
उत्तर : १९९७ में ।
तनु गोयल, मेरठ
प्रश्न : माता-पिता को मकान के मुकदमे से मुक्ति कब तक ?
उत्तर : अभी काफी समय लगेगा ।
अमित भारद्वाज, छारा (रोहतक)
प्रश्न : किस क्षेत्र में कैरियर की संभावना है ?
उत्तर : अंततः ग्लैमर के क्षेत्र में सफलता मिलेगी और बहुत धन अर्जित करेंगे ।
शैलजा पंत, लखनऊ
प्रश्न : स्वास्थ्य हेतु मुझे कौन-सा रत्न धारण करना चाहिए ?
उत्तर : नीलम धारण करना अच्छा है ।
राजकुमार त्रिपाठी, सिवनी
प्रश्न : क्या अंतरजातीय प्रेम-विवाह की प्रतिकूलताएं समाप्त होंगी । हां तो कब तक ?
उत्तर : अगले वर्ष से धीरे-धीरे अनुकूलता प्राप्त होने लगेगी ।
पीयूष पांडे, नयी दिल्ली
प्रश्न : पत्रकारिता में भविष्य कैसा है ?
उत्तर : भविष्य काफी अच्छा है ।
पायल, सोनीपत
प्रश्न : गृहस्थ जीवन आगे कैसा रहेगा ?
उत्तर : आगे आनेवाले समय में ठीक रहेगा ।
डॉ. सुरेन्द्र मोहन शर्मा, चंबा (हि.प्र.)

प्रश्न : कर्जयोग कब दूर होगा ?

उत्तर : अप्रैल, १९९८ के बाद ।

वागीश चन्द्र, नयी दिल्ली

प्रश्न : अपना मकान कब तक ? शुभ रत्न बतायें ?

उत्तर : नीलम धारण करें, मकान बनने में अभी थोड़ा समय और लगेगा ।

दयाशंकर शुक्ला, गोरखपुर

प्रश्न : नेत्र विकार पूरी तरह ठीक होगा कि नहीं ? कब तक ?

उत्तर : पूरी रोशनी तो नहीं जाएगी ।

अजय रावत, दिल्ली

प्रश्न : विदेश गमन कब तक ?

उत्तर : अगले वर्ष ।

वी.के. सिंह, हैदराबाद (आं.प्र.)

प्रश्न : आर्थिक दशा में सुधार व पदोन्नति कब तक ?

उत्तर : डेढ़ वर्ष के बाद ।

अर्पिता श्रीवास्तव, उज्जैन

प्रश्न : क्या इंजीनियरिंग के लिए चयन हो जाएगा ? किस वर्ष ?

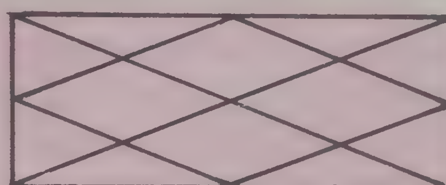
उत्तर : १९९७ में ।

चंद्रशेखर इंदोरिया, बीकानेर

प्रश्न : व्यापार में उन्नति कब तक ? उपाय सुझायें (रत्न) ?

उत्तर : नवम्बर से अच्छा समय प्रारंभ हो रहा है अब धीरे-धीरे इच्छित कार्य संपन्न होंगे

प्रविष्टि—१७६



नाम...

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) .... महीना .... सन ....

जन्म-स्थान...

जन्म-समय ....

वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण ....

पता..

आपका एक प्रश्न ....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें ....

संपादक (ज्योतिष विभाग)— प्रविष्टि—१७६ कादम्बिनी'

हिंदुस्तान टाइम्स भवन,

१८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

अंतिम तिथि : २० जनवरी, १९९७

जीव-जंतुओं में ध्वनि-संप्रेषण

केवल नर मेंढक ही टर्राता है

● मनीष मोहन गोरे

प्रकृति ने अपने जगत के सर्वश्रेष्ठ प्राणी-मानव को बोलने की सुविधा प्रदान की है। हिंदी, अंगरेजी, उर्दू, अरबी, फारसी आदि अनेक भाषाओं के माध्यम से वह अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सकता है। पशु-पक्षी यद्यपि बोल नहीं सकते, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि वे परस्पर संवाद-संप्रेषण में असमर्थ हैं। विभिन्न जीव-जंतु तरह-तरह की ध्वनियां उत्पन्न कर सकते हैं, और ये ही ध्वनि उनमें परस्पर संचार और संवाद का माध्यम हैं।

मच्छर के ध्वनि स्पंदन

मादा मच्छर की उपस्थिति का आभास नर मच्छर को उसके द्वारा पंख फड़फड़ाकर की गयी विशेष ध्वनि से हो जाता है। मादा मच्छर द्वारा उत्पन्न किये गये ध्वनि स्पंदनों को ग्रहण करते ही, नर मच्छर मादा के पास पहुंचकर यौन क्रीड़ा के लिए उत्प्रेरित करता है। यह एक आश्चर्यजनक तथ्य है कि हजारों अन्य आवृत्तियों के ध्वनि संकेतों में से अपनी ही प्रजाति विशेष और वह भी मादा मच्छर के ध्वनि संकेत को नर पहचान लेता है। नर मच्छरों के सिर के ऊपर जुटे दो संवेदनशील लंबे एंटेना इन ध्वनि संकेतों को ग्रहण करते हैं।

टिड्डों में वयस्क नर अपने संयुक्त पंखों को परस्पर रगड़कर ध्वनि पैदा करता है। यह ध्वनि तरंग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से टिड्डे के यौन-व्यवहार से जुड़ा होता है। टिड्डे द्वारा उत्पन्न इस ध्वनि तरंग की आवृत्ति १,५०० से १०,००० हर्ट्ज होती है, जो मानव की श्रवण शक्ति की सीमा के अंदर होती है।

बरसात के दिनों में पोखरों, कुएं, गड्ढों और नदी-नालों से मेंढकों के टर्राने की आवाज सुनायी देती है। मेंढकों का ये टर्राना यूं तो वर्षा ऋतु के आगमन का संकेत देता है, मगर क्या आपको पता है कि केवल नर मेंढक ही मादा मेंढक को आकर्षित करने के लिए अपनी विशेष टर्र-टर्र की आवाज का सहारा लेते हैं। मेंढक केवल वर्षा ऋतु में सक्रिय जीवन व्यतीत करते हैं और इसी दौरान ये प्रजनन क्रिया संपन्न कर लेते हैं। एक असमतापी अर्थात ठंडे रुधिरवाला प्राणी होने के कारण मेंढक के शरीर का तापमान वातावरण ताप के अनुसार परिवर्तित होता रहता है। इसी मुख्य वजह से मेंढक गरमी और जाड़े के मौसम में सुषुप्तावस्था का सहारा लेते हैं। सुषुप्तावस्था में मेंढक भूमि में तीन से चार फीट नीचे धंसकर निष्क्रिय जीवन गुजारते हैं, जिसमें वे अपना पोषण शरीर की वसा पिंडकों में संचित मुख्य भोज्य पदार्थ कार्बोहाइड्रेट से करते हैं। वर्षा

> *जिस प्रकार उच्च श्रेणी के जीव-जंतुओं की शारीरिक संगठन, श्वसन, प्रजनन, पोषण आदि जैविक क्रियाएं अपेक्षाकृत निम्न श्रेणी के जंतुओं से अधिक विकसित होती हैं ठीक उसी प्रकार उनमें ध्वनि संप्रेषण की क्षमता उन्नत होती है । स्तनधारियों में ध्वनि संप्रेषण की क्षमता सर्वाधिक विकसित अवस्था में होती है ।*

ऋतु में सुषुप्तावस्था से जागृत होने पर कुछ ही समय बाद नर मेंढक अपनी टर्र-टर्र की आवाज के माध्यम से अपनी गुहार मादा मेंढक तक पहुंचाता है । यह टर्राना भिन्न-भिन्न प्रजातियों के मेंढकों में भिन्न होता है । अंडे देने की स्थिति में होनेवाली वयस्क मादा मेंढक को नर मेंढक की आमंत्रणभरी टर्राहट अनायास ही आकर्षित कर लेती है ।

अलग प्रकार के ध्वनि स्पंदन

स्तनधारियों में मनुष्य को छोड़कर शेष जीव-जंतुओं में भी विभिन्न प्रकार की ध्वनियां उत्पन्न करने की अनोखी क्षमता व प्रवृत्ति होती है । अलग-अलग समय पर उत्पन्न की गयी ध्वनियां भिन्न-भिन्न भाव संप्रेषित करती हैं । उदाहरण के रूप में कुत्ते का गुर्राना, भौंकना, रोना और कूं-कूं करके दुम हिलाना सर्वथा अलग भावों को संप्रेषित करते हैं । जंगल में जब शेर या बाघ दिखायी पड़ते हैं तो लंगूर एक विशेष ध्वनि निकालते हैं । इसी ध्वनि संकेत को सुनकर हिरण और अन्य पशु संभावित खतरे का पूर्वानुमान लगा लेते हैं और बचकर निकल जाते हैं ।

समुद्री जीव-जंतुओं में छोटी व्हेल मछलियां बहुत चतुर पायी गयी हैं । इन पर किये गये गहन अध्ययन से कई रोचक तथ्य प्रकाश में आये हैं । ये मछलियां भी विशेष प्रकार की ध्वनि तरंगें उत्पन्न करती हैं । ये ध्वनि तरंगें भिन्न-भिन्न संदेशों और संकेतों को संप्रेषित करती हैं । प्रतिध्वनि के सिद्धांत का व्यावहारिक प्रतिपादन मछलियों के अतिरिक्त स्तनधारी वर्ग का प्राणी चमगादड़ भी बखूबी करता है । मनुष्य के कानों की श्रवण क्षमता २,००० हर्ट्ज तक है जबकि चमगादड़ २,००,००० हर्ट्ज की आवृत्ति से भी तीव्र ध्वनियों को पहचान सकते हैं । रात के घने अंधेरे में गुफाओं और खंडहरों के अंदर बिना दीवारों से टकराये उड़ लेते हैं, ये चमगादड़ क्योंकि इनके द्वारा विसर्जित पराश्रव्य तरंग दीवारों तथा अन्य अवरोधों से तत्क्षण परावर्तित होकर लौट आते हैं, जिससे चमगादड़ बिना दीवारों से टकराये बड़ी आसानी से उड़ता चला जाता है । पशु-पक्षियों द्वारा विभिन्न ध्वनियों का संप्रेषण प्रकृति की अनूठी देन है । वैज्ञानिकों ने यह भी निष्कर्ष निकाला है कि कुछ जीव-जंतुओं की विशेष ध्वनि तरंगें भविष्य में आनेवाले भूकंप की भी पूर्व जानकारी देते हैं । विभिन्न पशु-पक्षियों में ध्वनि-संप्रेषण के नये पहलुओं की खोज अनेक वैज्ञानिकों द्वारा जारी है ।

—द्वारा श्री चंद्रगोरे ४, स्टेशन रोड
देवरिया-२७४००१ (उत्तर प्रदेश)

मृत्यु तुम क्रूर नहीं

न जाने तुम कौन हो
हां, तुम सर्वव्यापक हो
सब कहते हैं तुम क्रूर हो
क्योंकि
तुम बिछुड़ाती हो स्वजनों को
रुलाती हो, प्रियजनों को
तोड़ती हो मधुर मानव-संबंधों को
माना यह सत्य है
लेकिन क्या यह भी सच नहीं कि
जीवन नहीं आधिपत्य किसी का
किराये का घर है यह
खाली तो करना ही होगा
तुम क्रूर नहीं
एक वरद् हस्त हो
उस कुपोषित शैशव के लिए
जो दो बूंद दूध को तरसता है
जो मात्र उदरपूर्ति को
जूठन के पत्ते पलटता है
और अभावों की भट्टी में स्वयं को झोंक
खो जाता है उस अंधी भाड़ में
जिसका न ओर है न छोर है
तुम वरदहस्त हो
उस यौवन के लिए
जो सुदूर क्षितिज में जाने के
दिवास्वप्न को साकार करने की
चाह तो करता है
लेकिन इस धरा पर
दो जून रोटी के जुगाड़ में
चहुं ओर भटकता है
तुम वरदहस्त हो
उस क्षीणकाय वार्धक्य के लिए
जो सादर नमनीय है
फिर भी बुढ़ापे के बोझ तले दबा
असहाय निरीह-सा ताकता है
और तरसता है
तुम्हारे शांत शयनागार में
चिरनिद्रित होने के लिए
तुम नव जीवनदायिनी हो
मृत्यु तुम क्रूर नहीं हो ।

● शशि शर्मा
सी डी-११ सी
हरि नगर, नयी दिल्ली

धीरे-धीरे



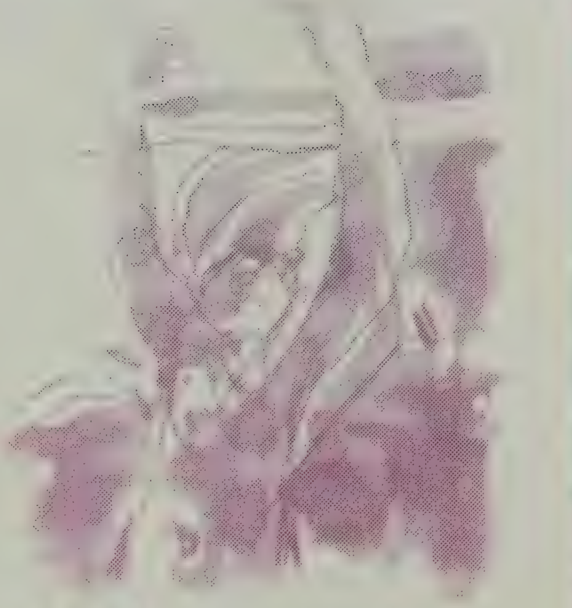
धीरे-धीरे बंद नयन कर सोने दे,
पलकों से आंसू जो ढरके होने दे
गहरे दाग लगे जो हैं, इस सीने पै
किसी तरह तो उन दागों को, धोने दे
न जाने कब कौन यहां कुछ, पा जाता
न जाने कब उलझे लट सुलझा जाता
ऐसे ग्रंथि पटल को निर्झर होने दे
करने दे इस जीवन को मधु स्निग्धमय
बढ़ने दे उन्मुक्त गगन के अतुलित पै
नित नवीनतम कार्यशील गति बोने दे
कंचन काया मृग मरीचिका की छाया
किसने हर दिन इस जीवन में रस पाया
कहे 'बैरख' निर्मल मधु नयन पिरोने दे ।

● देवकीनंदन बैरख
जिला भागलपुर (बिहार)

खो गया हूं

इस बड़े संसार में खो गया हूं !

ढूंढ़ता रहता स्वयं को जब से मैं आया यहां हूं,
पर नहीं यह जान पाया मैं यहां हूं या वहां हूं,
पूछता फिरता सभी से कोई कह दे मैं कहां हूं,
कभी लगता है सदा से मैं वहां हूं अब जहां हूं ।
मुझे क्या होना था मैं क्या हो गया हूं ।



अमावस की रात में होता ही है तम का बसेरा,
पर खटकता चार दिन की चांदनी में भी अंधेरा,
दीर्घतिमिरा यामिनी से भ्रमित होता है सवेरा,
सभी निश्चय अनिश्चित हैं है यही अनुमान मेरा ।

जागने की आस लेकर सो गया हूं ।

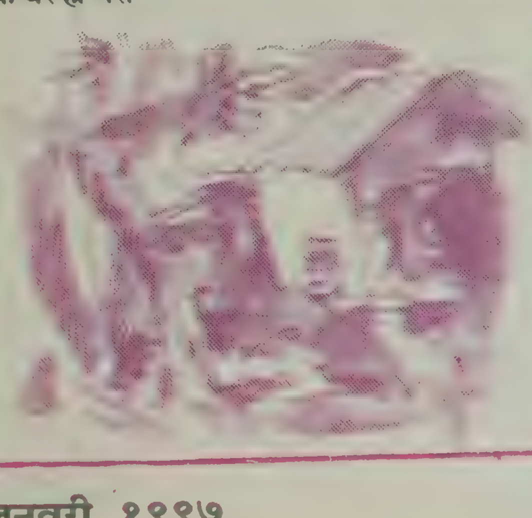
इस अचिर मिथ्या जगत में बदलता जीवन है प्रतिक्षण,
कौन हूं कैसा हूं मैं यह समझने का किया था प्रण,
देखता प्रतिबिंब कैसे मिले सब पाषाण-दर्पण,
यदि मुझे मैं मिल गया तो स्वयं कर दूंगा समर्पण ।

मैं कभी वैसा नहीं था आज जैसा हो गया हूं ।
खो गया हूं ।
इस बड़े संसार...

● सुधांशु
१७२, परमार्थ निकेतन
ऋषिकेश, हिमालय पो. स्वर्गाश्रम-२४९३०४

इच्छा

दूर अतीत में अकेला
एक घर हो मेरा



निर्जन पहाड़ों के ऊपर
संजीविन सरोवर के किनारे
क्षितिज की उस तह में सिर्फ एक वह
निकट हों उसके असंख्य फल-फूल
तोता, कोयल, हिरन, बबूल
खिड़की से कहीं दूर
बस दिखती रहे मानव बस्ती
उस निबिड़, निरवद्य शांति में
धीरे-धीरे कर लूं मैं
अपनी अवधि पूरी

—श्रीमती (डॉ.) शरद चंद्रा
सी-४/५३, सफदरजंग डेवलपमेंट एरिया
नयी दिल्ली-११००१६

ग्रह महीना और आपका भविष्य

● पंडित शिव प्रसाद पाठक

मेषः नवीन कार्यों की अधिकता होगी । आत्म विश्वास तथा साहसिक प्रयासों से जोखिमपूर्ण लाभदायी होंगे । उच्चाधिकारी वर्ग से सहयोग मिलेगा । संपत्ति समस्या का वांछित समाधान होगा । मास मध्य में स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता होगी । प्रवास में व्यर्थ पीड़ा होगी । मासांत में उत्साहदायी स्थितियों का उदय होगा । आकस्मिक धन लाभ से लंबित समस्याओं का समाधान होगा ।

वृषभः निकटजनों के सहयोग से शत्रु पक्ष से सुलह होगी । संपत्ति समस्या का मनोवांछित समाधान होगा । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्य में धन व्यय होगा । पारिवारिक वातावरण उत्साहदायी रहेगा । मित्रों तथा सहयोगियों से सावधानी रखें । गुप्त शत्रुता से पीड़ा होगी । जोखिमपूर्ण अथवा साझेदारी कार्यों में सजग रहें । मनोरंजन, भ्रमण अथवा आमोद-प्रमोद में व्ययों की अधिकता होगी ।

मिथुनः आत्म विश्वास तथा पुरुषार्थ से लंबित कार्यों में सफलता मिलेगी । प्रवास की अधिकता होगी । साहसिक तथा जोखिमपूर्ण प्रयासों से लाभ मिलेगा । प्रियजन की अस्वस्थता चिंतनीय होगी । न्यायालयीन कार्यों में व्यर्थ व्यवधान होंगे । शत्रु पक्ष से सावधानी रखें । उच्चाधिकारियों से व्यर्थ विवाद टालें । सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों की अधिकता होगी । आध्यात्मिक प्रवास अथवा सत्संग से सुखानुभूति होगी ।

कर्क : भौतिक उपलब्धियों के मनोनुकूल अवसरों का उदय होगा । उच्चाधिकारियों के सहयोग से लंबित योजना पूर्ण होगी । पारिवारिक दायित्वों में वृद्धि होगी । पारिवारिक विद्वेष से अकारण भावनात्मक पीड़ा होगी । न्यायालयीन कार्यों में अपेक्षित सफलता मिलेगी । शत्रु पक्ष का शमन होगा । आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी । परोपकारी कार्यों से यश वृद्धि होगी । मासांत में विशिष्ट यात्रा उपलब्धिदायी होगी ।

सिंहः पारिवारिक वातावरण उत्साहदायी होगा । आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा । उच्चाधिकारियों से संतुलन में संभाषण हितकर होगा । नवीन संपर्कों का लाभ मिलेगा । प्रवास में सावधानी रखें । व्यर्थ पीड़ा का सामना करना होगा । सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों में विरोधाभासी स्थितियों का उदय होगा ।

कन्याः आजीविका की दिशा में वांछित परिवर्तन होगा । नवीन दायित्वों से उत्साह वृद्धि होगी । आर्थिक स्थिति में सुधार होगा ।

ग्रह स्थिति

सूर्य १४ जनवरी से मकर में, मंगल कन्या में, बुध धनु में, गुरु मकर में, शुक्र ५ से धनु में, २९ से मकर में, शनि मीन में, राहु कन्या में, केतु मीन में, हर्षल नेप्च्यून मकर में, प्लेटो वृश्चिक राशि में भ्रमण करेंगे ।

मनोरंज़न, भ्रमण अथवा आमोद-प्रमोद में व्ययों की अधिकता होगी। रक्त संबंधियों से अकारण मतांतर से पीड़ा होगी। मास मध्य में प्रियजन को स्वास्थ्य पीड़ा होगी। प्रवास का योग होगा। मासांत में सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों से यश, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

तुला: पारिवारिक कार्यों की अधिकता होगी। उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा। आजीविका की दिशा में अतिरिक्त दायित्व बढ़ेंगे। लेखन, सृजन अथवा रचनात्मक कार्यों से विशिष्ट सम्मान प्राप्ति का योग उपस्थित होगा। प्रवास की अधिकता से अस्वस्थता का उदय होगा।

वृश्चिक: मास में धैर्य तथा संयम से कार्य करें। परोपकारी अथवा साझेदारी कार्यों से पीड़ा होगी। शत्रु पक्ष की क्रियाशील रहेगी।मास मध्य में उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलेगा। लंबित धन प्राप्ति से प्रसन्नता होगी। प्रियजनों के सहयोग से संपत्ति समस्या का समाधान होगा। मासांत में प्रवास से लाभ मिलेगा।

धनु: आत्म विश्वास तथा साहसिक भावना से लंबित कार्यों में सफलता मिलेगी। आजीविका की दिशा में वांछित परिवर्तन का योग होगा। साहसिक अथवा जोखिमपूर्ण कार्यों से लाभ मिलेगा। उच्चाधिकारियों से संभाषण में सावधानी रखें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। मासांत में प्रियजन की अस्वस्थता से चिंता होगी।

मकर: उच्चाधिकारियों के सहयोग से शत्रु पक्ष का शमन होगा। सामाजिक तथा रचनात्मक कार्यों में उदासीनता रहेगी। पारिवारिक कार्यों की अधिकता होगी। धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा। उदर अथवा रक्त विकार से पीड़ा होगी। उच्चाधिकारियों के सहयोग से लंबित योजनाओं की पूर्ति होगी।

कुंभ: लगन, परिश्रम तथा पुरुषार्थ से लंबित कार्यों में सफलता मिलेगी। आकस्मिक धन लाभ से कार्यों की पूर्ति होगी। स्वजनों के सहयोग से संपत्ति विवाद का समाधान होगा। शत्रु पक्ष से सावधानी रखें। उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से आजीविका संबंधी वांछित परिवर्तन होगा। प्रवास में सावधानी रखें।

मीन: आर्थिक कार्यों में अवरोध उत्पन्न होगा। भौतिक सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों की अधिकता होगी। वांछित पदस्थापना अथवा परिवर्तन का योग उपस्थित होगा। उच्चाधिकारियों के सहयोग से संपत्ति विवाद का समाधान होगा। शत्रु पक्ष की क्रियाशीलता से व्यर्थ चिंता होगी।

पर्व और त्यौहार

१-ईसाई नव वर्ष १९९७ प्रारंभ, २-कालाष्टमी, ५-सफला एकादशी, ७-भौम प्रदोष, ८-दर्श अमावस्या, ९-स्नानदान अमावस्या, १२-वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी, १४-मकर संक्रांति परम पुण्यकाल सूर्योदय से सूर्यास्त तक, १५-श्री गुरु गोविंद सिंह जयंती, १९-पुत्रदा एकादशी, २०-सोम प्रदोष, २३-स्नानदान पौषी पूर्णिमा, २६-भारतीय गणतंत्र दिवस, २७-संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी, २८-लाला लाजपत राय जन्म दिवस, ३१-स्वामी विवेकानंद जयंती।



कुंदन लाल सहगल

बाबुल मोरा नैहर छूटो जाए !

• डॉ. राम सिंह यादव

सन् १९३० के आसपास सवाक फिल्में बनना प्रारंभ हुईं । उसी समय से फिल्मों में संगीत का चलन प्रारंभ हुआ और एक ऐसी आवाज उभरकर सामने आयी, जिसका असर आज भी लोगों के दिलो-दिमाग पर छाया हुआ है । वह आवाज थी, कुंदनलाल सहगल की !

सहगल साहब का जन्म कश्मीर में ११ अप्रैल सन् १९०४ को हुआ था । उनके पिता श्री अमृतचन्द्र सहगल कश्मीर राज्य के कानून राज्य मंत्री थे । चार भाईयों में वे तीसरे थे ।

सहगल ने बचपन में किसी प्रकार की संगीत शिक्षा नहीं पायी थी । बाद में उन्होंने कुछ उस्तादों से समय-समय पर शिक्षा अवश्य ग्रहण की । वे बचपन से ही प्रतिभा संपन्न थे । उन्हें नायक बनने का बहुत शौक था । वे अकसर कश्मीर के मेलों में आयोजित संगीत सभाओं व नाटकों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया करते थे ।

बहुत पापड़ बेले

बहुत कम उम्र में ही पढ़ाई के दौरान वे एक बिजली की कंपनी में काम करने लग गये, परंतु जल्दी ही उन्होंने इस काम से त्यागपत्र दे दिया और पुनः अपनी पढ़ाई जारी कर दी । बाद में उन्होंने 'पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट' (पी.डब्ल्यू.डी.) में दिल्ली में काम किया । उसके उपरांत थोड़े प्रयासों के बाद उन्हें रेलवे में नौकरी मिल गयी और वे तीन वर्षों तक रेलवे से जुड़े रहे । परंतु वे अपने इस कार्य से भी संतुष्ट नहीं रहे और अंततः उन्होंने त्यागपत्र दे दिया । तत्पश्चात वे रैमिंगटन टाइपराइटर कंपनी में बतौर सेल्स एजेंट कार्य करने लग गये और इस पद पर करीब ढाई साल तक बरकरार रहे ।

संयोग से आये

फिल्म जगत में सहगल का आगमन एक संयोग मात्र था । सन् १९३० में सहगल टाइपराइटर सेल्स एजेंट की हैसियत से कलकत्ता में कार्यरत थे । एक दिन उनके कुछ मित्रों ने एक अनौपचारिक महफिल का आयोजन किया । इस महफिल में 'न्यू थियेटर्स' के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री बी.एन. सिरकार साहब भी आमंत्रित थे । उन्होंने सहगल का गाना सुना और उनकी आवाज व गाने के अंदाज पर मुग्ध हो गये । अगले ही दिन उन्होंने सहगल से अपनी थियेटर कंपनी में काम करने की पेशकश की । पहले तो सहगल ने इनकार किया, परंतु फिर सिरकार साहब व अपने मित्रों के बार-बार दबाव डालने पर वे थियेटर में काम करने को राजी हो गये । यहीं से न केवल 'न्यू थियेटर' की एक नयी शुरुआत हुई, बल्कि सहगल के रूप में फिल्म जगत को एक महान कलाकार मिल गया । सहगल पैदायशी कलाकार थे । वे न केवल एक बहुत अच्छे गायक थे, बल्कि एक कुशल अभिनेता भी थे । परंतु एक अभिनेता की अपेक्षा एक गायक के रूप में उन्होंने ज्यादा प्रसिद्धि प्राप्त की । उनके असंख्य चाहनेवालों में से कुछ तो सिर्फ इसीलिए उनकी फिल्में देखने जाते थे, क्योंकि उन फिल्मों में उन्हें उनके गाये हुए गाने सुनने को मिलते थे । परंतु सहगल ने अभिनय के क्षेत्र में भी पर्याप्त ख्याति प्राप्त की । उनकी कुछ प्रमुख फिल्में हैं— 'देवदास', चंडीदास', 'प्रेसीडेंट', 'दुश्मन', 'तानसेन', 'स्ट्रीट सिंगर' आदि ।

उस जमाने में आज की तरह रेकॉर्डिंग की आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध नहीं थीं । एक ही गाने को दो बार रिकॉर्ड करवाना पड़ता था । फिल्म की शूटिंग के लिए एवं बाजार में बिकनेवाले रिकॉर्डों के लिए रिकॉर्डिंग अलग-अलग होती थी । साजिंदे आज की तरह साउंडप्रूफ कमरों में न बैठकर गायक के साथ ही बैठते थे । गानों की रिकॉर्डिंग बिलकुल ऐसे होती थी, जैसे कि किसी घरेलू महफिल में गाने का कार्यक्रम चल रहा हो । ऐसी परिस्थितियों में सहगल ने जो गाने गाये हैं, उनकी जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है । ये गाने निश्चित रूप से उनकी बेहद दमदार व प्रभावशाली आवाज का ही नतीजा है ।

सहगल की खूबी थी कि हर प्रकार के गीत वे सरलतापूर्वक गा लेते थे उन्होंने एक ओर जहां गीतों में दर्द को साकार किया है तो दूसरी ओर रूमानी गीतों को भी उतने ही निराले अंदाज से गाया है । १८ जनवरी १९४७ को कुंदनलाल सहगल सबको बिलखता छोड़ गये ।



बाबुल मोरा नैहर छूटो जाए

हालांकि सहगल ने किसी भी शास्त्रीय संगीताचार्य से परंपरागत गुरु-शिष्य पद्धति से शिक्षा नहीं प्राप्त की थी, परंतु फिर भी उन्हें शास्त्रीय संगीत से बेहद लगाव था । उनके गानों में शास्त्रीय संगीत की झलक स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है । फिल्म 'स्ट्रीट सिंगर' का गीत 'बाबुल मोरा नैहर छूटो जाए' सहगल ने कुछ इस अंदाज से गाया कि उनके बाद उन पंक्तियों में वो भाव व सोज फिर कोई गायक नहीं भर पाया ।



एक बार इलाहाबाद में एक कार्यक्रम के दौरान उस्ताद फैयाज खां ने सहगल से शास्त्रीय संगीत पर आधारित गीत 'झुला झुलाओ' गाने की फरमाइश की । सहगल ने कुछ ऐसे अंदाज से यह गाना गाया कि वे भाव-विह्वल हो उठे ।

उनकी गायकी की यह विशेषता थी कि वे हर प्रकार का गाना बड़ी सरलतापूर्वक गा लेते थे । उन्होंने एक ओर जहां दुःख की अभिव्यक्ति करता गीत— 'दुःख के अब दिन बीतत नाही' बेहद दर्द भरे अंदाज में गाया है तो दूसरी ओर रुमानीभरा गीत— 'दो नैन मतवारे तिहारे हम पर जुल्म करे' भी उतने ही निराले अंदाज से गाया है ।

उनके गाये हुए भजनों में 'नैनहीन को राह दिखा प्रभु...ये कैसा अन्याय दाता', 'अवसर बीतो जात प्राणी तेरा', 'भज मन तू भाव से श्री गिरधारी', 'कदम चले आगे मन पीछे भागे' आदि मुख्य रूप से उल्लेखनीय है । चंडीदास की रचना, 'सुनो-सुनो हे कृष्ण काला' तो उन्होंने कमाल की गायी है । उनकी गायी हुई कुछ चर्चित फिल्मी गजलें हैं— 'जब दिल ही टूट गया, हम जी के क्या करेंगे', 'गम दिये मुस्तकिल कितना नाजुक है दिल, ये न जाना, हाय-हाय ये जालिम जमाना', 'ऐ कातिबे तकदीर मुझे इतना बता दे, क्यों मुझसे खफा है तू, क्या मैंने किया है' । उनकी कुछ बहुप्रसिद्धि प्राप्त गैर फिल्मी गजलें हैं— अकबराबादी की 'बकदरे शौक इकरारे वफा क्या', 'अब क्या बताऊं मैं तेरे मिलने से क्या मिला', गालिब की— 'फिर मुझे दीदा-ए-तर याद आया', 'हर एक बात पे कहते हो तुम के तू क्या है', 'वो आके ख्वाब में तस्कीने इज्तेराब तो दें', 'दुनिया में हूं दुनिया का तलबगार नहीं हूं', 'नुक्ताची है गमे दिल उसको सुनाये न बने', आदि ।

सहगल के कुछ अन्य प्रसिद्ध फिल्मी गाने हैं, 'एक बंगला बने न्यारा', 'सो जा राजकुमारी', 'दिया जलाओ', 'करूं क्या आस-निरास भयी', 'मेरे सपनों की रानी', 'बालम आय बसो मोरे मन में', 'छुपो न छुपो न ओ प्यारी सजनियां', 'हाय किस बुत की मोहब्बत में गिरफ़्तार हुए' आदि ।

गरज यह कि सहगल ने हर प्रकार के गाने गाये हैं । उनमें विशेषता यह थी कि वे हर तरह के गाने बड़ी ही सरलतापूर्वक गा लेते थे । जितना अच्छा भजन गाते थे, उतनी ही महारत

के साथ गजलें भी गाते थे । उनकी आवाज एक ऐसा जादुई एहसास जगा देती थी कि श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो उनकी गायकी में डूब जाते थे । इसका अंदाजा इसी बात से लगता है कि एक बार जब बंबई में वे एक अनौपचारिक महफिल में एक घर में गा रहे थे, तो घर के बाहर उनके चाहनेवाले जमा होकर उनका गाना सुनने लगे । धीरे-धीरे भीड़ काफी बढ़ गयी । तभी अचानक घनघोर वर्षा होने लगी, परंतु लोगों पर उस बरसात का कोई प्रभाव नहीं पड़ा और वे उसी प्रकार पानी में भीगते हुए बड़े ही शांतिपूर्ण ढंग से उनका गाना सुनते रहे । इस वाकये से सहगल की लोकप्रियता का सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है ।

गुरुदेव से भेंट

सहगल संगीत के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित थे । वे जो भी गाते थे दिल से गाते थे । एक बार बंगाल में जब वे रवीन्द्र संगीत गा रहे थे, तो उनके गाने में वो भाव नहीं उत्पन्न हो रहा था, जो कि कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के गाने में था । इस बात से वे स्वयं इतने असंतुष्ट हुए कि गुरुदेव के पास जाकर दुःखी हो, फूट-फूटकर रोने लगे ।

चार वर्षों के सफल फिल्मी जीवन के पश्चात सहगल ने कश्मीर घाटी की आशारानी से विवाह कर लिया । अपने व्यक्तिगत जीवन में वे अत्यंत सरल व मृदुभाषी थे । अपने जीवनकाल में वे अपनी मां, पत्नी व बच्चों के साथ अधिकांशतः कलकत्ता, बंबई व लाहौर में रहे ।

१८ जनवरी, सन् १९४७ को भारतीय संगीत जगत के बेताज बादशाह दुनिया से रुखसत हो गये । आज सहगल इस दुनिया में नहीं हैं, लेकिन उनकी स्वर लहरी युगों-युगों तक लोगों को उनकी याद दिलाती रहेगी । किसी ने क्या खूब कहा है—

सदाये मिट गयी सारी, सदा-ए-साज बाकी है ।
अभी दुनिया-ए-मौसीकी का कुछ एजाज बाकी है ।
जो नेमत तूने हमको दी वो नेमत कम नहीं सहगल ।
तू नहीं दुनिया में तेरी आवाज बाकी है ।

— १४, उर्दूपुरा, उज्जैन

दस-दस वर्ष के दो बालक

लोकमान्य तिलक पर हाईकोर्ट में एक मुकदमा चल रहा था । मुकदमे की सुनवाई के लिए आवाज लग चुकी थी लेकिन लोकमान्य के बैरिस्टर तक तक नहीं पहुंच सके थे और वह बहुत बेचैनी से उनका इंतजार कर रहे थे । इतने में दो नवयुवक बैरिस्टर उनके पास आये और बोले, ''आपके बैरिस्टर के आने में देरी हुई तो कोई बात नहीं, हम लोग आपकी मदद करने को तैयार हैं ।''
इस पर लोकमान्य ने उत्तर देते हुए कहा, ''यह तो ठीक है भाई, लेकिन क्या किसी सोलह वर्ष की बालिका के लिए बीस-बाईस वर्ष के युवक के स्थान पर दस-दस वर्ष के दो बालकों से काम चल सकता है ?''

प्रवेश

संस्कार

हर व्यक्ति का
अपना आसमान
होता है ।
चलने के लिए जमीन,
पर छूने के लिए
वह आसमान ही चाहता है ।
आसमान ऊंचा होता है,
व्यक्ति बौना रह जाता है ।
आकाश की ऊंचाई,
को छूना,
हर के लिए
संभव भी कहां होता है !
किंतु व्यक्ति होता है
अपने संस्कारों का दास !
इसलिए बुनियादी
पहचान पाने के लिए
वह शून्य में,
छलांग लगाता है,
आकाश की बुलंदी
को छूकर
अपने पांव पर
धरती पर
और मजबूती से
जमा लेता है ।



—चंद्रलेखा सिंह

आत्मकथ्य : मन में घुमड़ते विचारों को कलम साध लेती है । स्याही जैसे तभी सहेली बन जाती है । अनायास ही शब्द-शब्द वह कागज पर उतार देती है । मन की आंख तब खुली की खुली रह जाती है, जब दर्द की जगह मन में कविता जन्म लेने लगती है । कविता जीवन को सार्थक कर देती है ।

पता : बंगला नं. एफ-८३, रोरा बांध, पो. सिंदरी, एफ.सी.आई., जिला- धनबाद, बिहार, पिन- ८२८१२२

मात

शतरंज की बिसात
यह जिंदगी/और
हम सब हैं
मोहरे
परस्पर खेलतीं
संघर्षों को झेलतीं,
शह तय है
इस खेल में
किसी न किसी की
इस या उस नृपति की,
मगर/वही रणबांकुरा
एक अदना पियादा
पाता है जिंदगी/जो
चालों से बचते हुए
पहुंच जाता है
उस पार, और
बन जाता है वही
जो वह
बनना चाहता है
वजीर/हाथी या महारथी ।



—प्रीतिसिंह पंवार

आत्मकथ्य : कविता मेरी आत्मा है । आंतरिक संवेदनाओं की अभिव्यक्ति शब्दों में ढलकर स्वतः कविता का रूप ले लेती है ।

पता : ए-१३, अमृतपुरी, आर.ए.सी. रोड, 'अंकुर' के पास, जयपुव-३

संकल्प का बीज

मेरे मन का संकल्प
वह नन्हा-सा बीज है
जो, आज बोया गया है
कल उगेगा
और परसों तक
यदि सद्गुणों के जल से
भली-भांति
सींचा जाता रहा तो
पल्लवित भी होगा
फिर इस पर आशाओं के
सुगंधित फूल लेंगे
जिनसे वे आशाएं
यथार्थ में परिवर्तित होकर
अपना सुपरिणाम प्रदर्शित कर
एक फल का धारण करेंगी
जो अपने अच्छे स्वाद से
संपूर्ण विश्व की
वाहवाही लूट सकेंगी
और मेरे मन के संकल्प का
वह नन्हा-सा बीज
अपने जीवन की
असली सार्थकता को
सिद्ध करता हुआ
अंत में मेरे साथ ही
कहीं विलीन हो जाएगा ।



—कु. रीता

आत्मकथ्य : इस भौतिकवादी युग में भावनाओं या मानवीय मूल्यों को सनातन बनाये रखने की कल्पना ही कलम द्वारा कुछ शब्दों की रचना को प्रेरित करती है, वही शब्दों की रचना मेरी कविता है ।

पता : लाज वालों की गली, धामपुर (बिजनौर), पिन-२४६७६१ (उत्तर प्रदेश) ।

क्रंदन

रात के अंधियारे में
खोया कभी मैं
फिर सुबह के पाश में
बंधकर कभी मैं
दिन के उज्ज्वल प्रकाश में
डूब जाता हूं !
मैं डूब जाता हूं
गगन वाटिका के सुंदर साये में
प्रकृति की अनुपम छटा में/
मेघ की काली घटा में
डूब जाता हूं !
एकांत जीवन/मेरे शांत तन-मन
देखो गगन के मध्य में उस लालिमा को
जो प्रकृति के वेग को हिलकोरती है
प्राण को झकझोरती है
सुखद, सुंदर खग समूहों के
हृदय से गान खिलता
शून्य में किस रेख से प्राण
को नवज्योति मिलती
पर निरखता हूं सदा उस वेश को
जो हृदय की लालिमा को
मृत्यु के आकाश में ढक
जीव के क्रंदन को
बार-बार जगाना चाहता है !



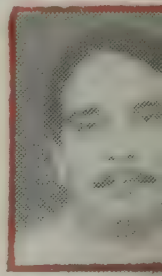
—शंभु कुमार ठाकुर 'भारद्वाज'

आत्मकथ्य : जब-जब हृदय की भावनाएं असंतुलित हो उठीं, कविता संतुलन बनाये स्वतः ही कोरे कागज पर लिख गयी ।

पता : द्वारा— दुलाल चंद्र धन, ५१/+, डा. ए.के. पाल रोड, बेहला, कलकत्ता-७०००३४

विसंगतियां

जीरो पावर का बल्ब
रंग-बिरंगा
अंधेरे उजाले के बीच
कमरे की वीरान छत से
रंगीन मुस्कराहटें बिखेरता
कमरा डरा-सा थका-सा
जवाबी मुसकान से खेलता
निंदिया रानी का बड़ा चहेता
सवेरा होते ही
जीरो पावर का बल्ब
वृद्धा के माथे पर चिपका
रंगीन बिंदिया-सा
मुस्कराता है
मगर हाथ स्विच की ओर बढ़ता है ।
डिब्बे से उतरा आदमी
पलटकर सहयात्री को हाथ हिलाता है
डिब्बे पर चढ़ता आदमी
पलटकर छोड़नेवालों को हाथ हिलाता है
इंजन के साथ डिब्बा चल देता है
उतरा यात्री खुश है
चढ़ता यात्री खुश है
कितना सहज है
कितना कठिन है ।



रोने के बाद
मन हलका-हलका
हंसने के बाद
मन डरा-डरा
शाश्वतता !
क्षण भंगुरता ।।

—सुजय कुमार शरण

आत्मकथ्य : मैं कविता लिखता नहीं हूं,
संवेदनशील मन स्वयं शब्दों के माध्यम से अपने आपको
अभिव्यक्त कर देता है ।
पता : विक्रांत भवन, जरहाभाठा, बिलासपुर (म.प्र.)
पिन-४९५००१

हम क्या होते !

सोचो तो जरा हम क्या होते
अगर हम बैल होते तो
खेतों में जोते जाते ।
अगर हम घोड़े होते तो
सड़कों पे दौड़ लगाते, कोड़े खाते ।

अगर हम बंदर या भालू होते तो
मदारी संग नाच दिखाते ।
अगर हम सर्प होते तो,
सपेरे के पिंजरे में बंद होते ।
अगर हम चिड़िया होते तो,
बहेलियों से जान बचाते ।
अगर हम मछली होते तो,
जाल में फंसकर जान गंवाते ।
सोचो तो जरा हम क्या होते ।
यदि हम एक अच्छे इनसान
होते और कर्म से
भाग्यवान होते तो
त्याग और प्रेम का पाठ पढ़ाते ।
प्यार से एक-दूसरे को गले लगाते ।
सोचो तो कितना अच्छा होता,
यह धरती भी स्वर्ग से सुंदर बन जाती ।



—रमेश कुमार

आत्मकथ्य : जब मेरे अपने और पराये मेरी आत्मा
को ठोकर मारते हैं तो मेरी आत्मा कुछ कहने के बजाय
लिख देती है ।
पता : ग्राम+पो.— घोड़ासहन (पूर्वी चंपारण) बिहार



तुम्हीं मेरे चांद

चांदनी में चमक आ गयी है बहुत,
आज मेरे लिए तो तुम्हीं चांद हो ।

देखकर दंग मैं पूर्णिमा की छटा
हर जगह व्याप्त है रूप-रस की घटा

फूल में भी गमक आ गयी है बहुत,
आज मेरे लिए तो तुम्हीं चांद हो !

लोचनों में ललित प्यार का द्वार है
एक दिल में छिपा स्वप्न-संसार है

पायलों में झनक आ गयी है बहुत,
आज मेरे लिए तो तुम्हीं चांद हो ।

बह रही सांस में अब रसीली हवा
झूमने भी लगी है नशीली हवा

बात में भी सनक आ गयी है बहुत,
आज मेरे लिए तो तुम्हीं चांद हो ।

रूप की रात में प्रेम की धूप है
देखता हूं जिधर, रूप-ही-रूप है

कामना में दमक आ गयी है बहुत,
आज मेरे लिए तो तुम्हीं चांद हो ।

● पोद्दार रामावतार अरुण
पेठियागाछी
समस्तीपुर-८४८१०१ (बिहार)

अनुगीत

नाच रही धूलि

नाच रही धूलि चक्रवात से लिपटकर
बस नाद-क्रम की कहानी-कहानी
हर एक कण में है संपुटित हलचल
वायु को उमेठती जवानी-जवानी

घास-फूस जीव-जंतु चक्कर में ऐसे पड़े
चाहते कि इसी में रहें औ छूट जाएं
हंसने का आसरा लगाये हुए खो रहे हैं
मूढ़ता भी बुद्धि भी सयानी-सयानी

भूमि-अंतरिक्ष-बीच, ऊर्ध्वमुखी उठके जो
नीर की तरंग-सी खड़ी हो गयी है
परिचित चाल-ढाल उस अग्नि-सर्पिणी की
किंतु वेशभूषा है अजानी-अजानी

पत्थरों से कुटता है सिर, दाह वक्ष में है
कांटे बिंधे पैर, हाथ कोल्हू के हवाले
अंग-अंग के हैं भिन्न-भिन्न दुःख नये-नये
हाय पीड़ा वही है पुरानी-पुरानी

शक्ति नहीं संज्ञा-शून्य होकर शरीर पड़ा
सांस आ रही तो सभी कहते हैं जिंदा
हवा के प्रचार मात्र का है नाम जीवन, कि
चेतना या चित्त की रवानी-रवानी

वाक्य टकराहट से हवा गरम हो रही थी
शीतलता आ गयी है मौन के सहारे
नानुकूल क्रिया-फल से भी यह तोष मिला
समझी तो बात है न मानी न मानी

● डॉ. मोहन अवस्थी
८/४, बैंक रोड,
इलाहाबाद-२११००२

प्रेरक-प्रसंग

भय से ही दुःख आते हैं । भय से ही मृत्यु होती है और भय से ही बुराइयों का जन्म होता है । भय एक तरह से गुलामी है । गुलाम, आजाद होने के लिए तड़पता है, वैसे ही भयग्रस्त व्यक्ति भी मन-ही-मन तड़पता है । कुछ लोग अकेले में बहादुर होते हैं या बहादुरी की बातें करते हैं, लेकिन जब मुखर होने का समय आता है, तब चुप्पी साध जाते हैं, इधर-उधर देखने लगते हैं । इस समय उनके मन में तरह-तरह के प्रश्न उठ रहे होते हैं, शंकाओं से बोझिल प्रश्न । अप्रत्याशित डर से वे मौन जरूर रह जाते हैं, किंतु उनकी आत्मा उन्हें धिक्कारती है । इस धिक्कार की प्रतिक्रिया में वे अकेले में एक्शन करने लगते हैं, क्रोधित हो उठते हैं, गालियां बकने लगते हैं । अव्यक्त मन की यही परिणति होती है । नकारात्मक चिंतन गुण नहीं अवगुण है । सच को सच कहने का साहस मनुष्य की पहचान होना चाहिए । यही गुण उसे श्रेष्ठ बनाता है । इस गुण के अभाव में मनुष्य भीरु बन जाता है । भीतर से कमजोर व्यक्ति कभी साहसी नहीं होता ।

(स्वामी विवेकानंद)

कला, संगीत, अध्ययन और सामयिक विषयों की जानकारी से हमारे ज्ञानकोष में वृद्धि होती है । ऐसा करने से मनुष्य संकीर्ण विचारों के दायरों से बाहर निकलता है, दुर्गुण दूर होते हैं, भावना शुद्ध होती है । संगीत और कला से उसके स्वभाव में परिवर्तन आता है । व्यक्ति सुरुचिपूर्ण बनता है । समाज में उसकी इज्जत बढ़ती है और वह सम्मान का अधिकारी हो जाता है । कला-संगीत के ज्ञान के कारण उसके मेल-जोल का दायरा सज्जन व्यक्तियों में बन जाता है । पुस्तकों के अध्ययन से ज्ञान-चक्षु खुलते हैं । दुनियां में कहां क्या हो रहा है, इसकी जानकारी सामयिक विषयों से मिलती है । इस तरह उसे व्यक्तित्व के विकास में सहायता मिलती है । सोने को आग में तपाकर निखारा जाता है, व्यक्ति कला-संगीत और अध्ययन से निखरता है ।

(जेनकाऊल)

बेंजामिन फ्रैंकलिन के प्रारंभिक दिनों की घटना है । वह कभी 'पेंसिलवानिया गजट' नामक अखबार निकालते थे । उसी दौरान एक बार उन्हें कुछ धन की आवश्यकता

हुई । एक मित्र से उन्होंने बीस डॉलर उधार लिये ।

जब उनका काम चल निकला तो वह मित्र को रकम वापस करने गये । मित्र ने पैसा लेने से इन्कार करते हुए कहा कि इस पैसे को आप अपने पास ही रखें और किसी जरूरतमंद की इससे सहायता करें । यदि वह ईमानदार होगा, तो रकम वापस करने जरूर आएगा । तब आप भी यही बात उससे कहें कि वह इस रकम से किसी अन्य जरूरतमंद की मदद करे । इस तरह मेरे बीस डॉलर से जरूरतमंदों की सहायता होती रहेगी ।

बाद में फ्रैंकलिन इस कथन पर अमल करने लगे और इस प्रकार हर संकटग्रस्त की सहायता कर उसे भी यही हिदायत देते ।

('वैज्ञानिकों के रोचक और प्रेरक प्रसंग'—शुकदेव प्रसाद)

कामचलाऊ चातुर्य और ऊंची किस्म का उत्साह काम में सफलता दिलाता है, जबकि ऊंची किस्म के चातुर्य और कामचलाऊ उत्साह से सफलता मिले, यह जरूरी नहीं । जिंदगी संघर्षों से भरी हुई है । हर दिन एक नयी चुनौती सामने होती है । हर व्यक्ति जीतने की आशा करता है और उसके लिए प्रयास भी । फिर हम जीतने के लिए उत्साह के साथ काम क्यों न करें ?

(प्रो. लेविस टेरमेन)

हमारी सबसे बड़ी शान कभी न गिरने में नहीं है, बल्कि जब-जब गिरें, हर बार उठने में है । हार को जीत में बदलने का यही मंत्र है । इसी को संकल्प कहते हैं । संकल्प के साथ अनुभूतियों के सागर में गोता लगाने पर हाथ खाली नहीं रहेंगे, रत्नों से भरे होंगे । लेकिन किनारे बैठकर मोती की आस करना व्यर्थ है ।

(कन्फ्यूशियस)

पर-निंदकों की चिंता मत करो । इनके बारे में ज्यादा मत सोचो । लोग अनर्गल कहें, तो उसकी परवाह मत करो और न बुरा मानो । जिस तरह सूरज की तरफ पीठ करने से सूर्य नहीं छिप जाता, उसी तरह मनुष्य के सद्‌गुणों की सुगंध स्वतः ही फैल जाती है । जो लोग निंदा के बीज बोते हैं उन्हें निंदा की ही फसल काटनी होती है । निंदा नागिन की तरह है । संपोलिया पैदा करती है और उसी को खा जाती है ।

(जार्ज इलियट)

अमरीका के वाल्ट डिस्ने प्रोडक्शन ने गांधी पर एक एनिमेशन फिल्म बनायी है, जिसमें पॉप संगीत और नृत्य है तथा गांधी बने पात्र को आवाज दी है माइकल जैक्सन ने ।

याद रहे कि सुभाष की जन्म-शती पर माइकल जैक्सन के एक गाने की कामना की गयी थी, पता नहीं पूरी हुई या नहीं । मगर, अब यह फिल्मवाली बात अजीब लग रही है और डर सता रहा है कि इससे कहीं पूज्य बापू की छवि तो खराब नहीं हो जाएगी ? ठीक भी है बापू के सपूतो ! आपका चिंतित होना स्वाभाविक है क्योंकि, बापू की मार्केटिंग का सर्वाधिकार आपके पास ही है । मगर, जब गांधी को गोली मारी गयी, तब आप कहां थे ? जब गांधी को गाली निकाली जाती है, तो वोट बैंक की सुरक्षा की खातिर आपके मुंह पर ताले लग जाते हैं । जब हरिजन के छूने से अपवित्र हुए राजघाट को धोया जाता है, तब आपको उसका अर्थ समझ में नहीं आता । शराब बंदी में आपको राजस्व का घाटा नजर आता है । बहुराष्ट्रीय कंपनियों के वकीलों का-सा आचरण करते हैं । दिन में विरोध कर शाम के धुंधलके में इसलिए मिल लेते हैं कि आपको भी पांच साला चुनावी बेटी के हाथ पीले करने हैं । टी-शर्ट पहनकर कोल्ड ड्रिंक पीते हुए घर के लॉन में डांडी मार्च इसलिए करते हैं कि आपको प्रगति और भक्ति दोनों का भ्रम पैदा करना है । भगवाधारियों से इसलिए दोस्ती रखे हुए हैं कि दलाली के बिना राजनीति नहीं चलती । आज स्वदेशी की याद इसलिए आ रही है कि मेरी

व्यंग्य

महात्मा और माइकल

● रमेश जोशी



सरकार उस फिरंगी के साथ घर बसा बैठी, जिसके साथ आपका आंख-मटक्का था । सेम पित्रोदा ने (संत सिंह उर्फ सेंट सन स्टाइल में) गांधीजी के हाथ में शैंपेन थमा दी, तो आपको इसलिए अस्वाभाविक नहीं लगा कि आपको समय से पहले ही इक्कीसवीं सदी में जाना था । जब खुशवंत सिंह के संपादकत्व में नीरद चौधरी अपने लेखों में गांधी को यौन-विकारग्रस्त सिद्ध करने में लगे हुए थे, तब आप इसलिए नहीं बोले क्योंकि, आप अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के उपासक हैं । जब समलैंगिक अशोक कवी गांधी को बास्टर्ड कह रहा था, तब आप निक्की वालिया की नारी-मुक्ति के ग्राफ का अध्ययन करने में व्यस्त थे । यदि अब भी कोई संस्कार उस बूढ़े का कराना बाकी रह गया हो, तो चूकना मत । वैसे, आपके गांधी-ज्ञान का आलम यह है कि २ अक्तूबर, १८६९ को जन्मे गांधी की १२५वीं जयंती १९९५ में मना रहे थे, जबकि १२५वीं जयंती २ अक्तूबर, १९९३ को थी । अखबार, टी. वी., रेडियो, विज्ञापन-विभाग किसी ने भी हिसाब लगाने की आवश्यकता नहीं समझी ।

अमरीका या किसी अन्य देश द्वारा गांधी के अपमान की चिंता करने की आपको आवश्यकता भी नहीं है और न ही आपके पास चिंता करने की पात्रता ही रह गयी है । गांधी लफ्फाजी नहीं है, वह आचरण है और आपके आचरण का उससे कोई मेल नहीं है । वैसे, गांधी को आपके सहारे की आवश्यकता है भी नहीं, क्योंकि, वह तो अकेला ही जानिबे मंजिल चला था—अपने खोजे सच का प्रयोग करने के लिए ।

संसार की सबसे बड़ी औपनिवेशिक ताकत ने प्रथम श्रेणी का टिकिट होते हुए भी उसे जिस ट्रेन से बाहर फेंक दिया—गोरे रंग के दंभ में— आज उसी ट्रेन का नामकरण गांधी के नाम पर कर दिया है, डाक टिकिट भी जारी किया है । आज उसी देश में रंग-भेद अंतिम सांसें ले रहा है ।

अब गांधी अमरीका में पहुंच गया है, अच्छा है । वैसे भी, उसका अलग मुकाम वहीं होना था । सोचिए, वाल्ट डिस्ने प्रोडक्शन की फिल्म में ज्यादा से ज्यादा क्या हुआ होगा ?

संसार की सबसे बड़ी औपनिवेशिक ताकत ने प्रथम श्रेणी का टिकिट होते हुए भी उसे जिस ट्रेन से बाहर फेंक दिया था—गोरे रंग के दंभ में—आज उसी ट्रेन का नामकरण गांधी के नाम पर कर दिया है, डाक टिकिट भी जारी किया है । आज उसी देश में रंग-भेद अंतिम सांसें ले रहा है ।

(मैंने तो देखी नहीं)—गांधी को मिकी माउस बना दिया होगा । कोई बात नहीं, सरोजिनी नायडू ने भी मजाक में गांधी को एक बार मिकी माउस कहा—संभवतः, उनके बड़े-बड़े कानों के कारण । रामवृक्ष बेनीपुरी के अनुसार गांधीजी के कान लोगों के दुःख-दर्द सुनने के लिए बड़े थे । औरंगजेब ने भी आजादी का झंडा उठानेवाले शिवाजी को पहाड़ी चूहा ही कहा था । गणेशजी का बोझ उठाना चूहे के ही बस की बात है । कृष्ण की बारात का आगे

बढ़ना चूहों ने ही हराम कर दिया था । शेर भी डरता है चूहे से कि कहीं सोते में वह उसके केसर न कुतर जाए । मगर, शेर को जाल से भी चूहा ही निकालता है । और तो और चूहे से तो औरतें तक भी डरती हैं । उपनिवेशवाद के रावण को फूंकने के बाद यह चूहा उपभोक्तावाद के शेर के केसर कुतरने अमरीका पहुंच गया है, बस देखते जाइए ।

यूरोप और अमरीका में यौन-विकार, रहस्य-रोमांच, विवाद और अफवाहों के सहारे साहित्य और खबरें बेची जाती हैं । गांधी के साथ भी इंगलैंड-अमरीका ऐसा कर चुके हैं, मगर इसमें डरने की कोई बात नहीं है क्योंकि, आदमी तमाशा थोड़ी देर ही देखता है फिर उसके बाद सच की दुनिया में लौट आता है । और फिर हम भी कौन से कम हैं ? यहां भी तो गणेश बीड़ी और तुलसी जर्दा महापुरुषों का बाजारीकरण ही है । रही बात गांधी के सिद्धांतों की—तो उसके बारे में चिंता करने की कोई बात ही नहीं है क्योंकि, आप अपने स्वार्थ के लिए गांधी को मानने से इनकार कर सकते हैं, पर उसे गलत नहीं कह सकते । उसे अव्यावहारिक कह सकते हैं मगर, असत्य नहीं । उसके सिद्धांतों का व्यापारिक उपयोग भी नहीं हो सकता । आप उसके नाम से न शराब बेच सकते, न क्रीम, न पाउडर, न सूटिंग-शर्टिंग, न जूते, न विग, न टी. वी., न फ्रिज—कुछ भी नहीं । आप उसके अनुसार चल सकते हैं या उसके अनुसार चलने में असमर्थता जाहिर कर सकते हैं या फिर इनकार कर सकते हैं ।

वैसे, इस दुनिया को जो विलासिता की अति से क्षरित हो चुकी है, स्वार्थ के कारण अकेली हो गयी है, तृष्णा की दौड़ में थक चुकी है, उसे अपनी हर समस्या के समाधान के लिए देर-सवेर गांधी के पास आना ही पड़ेगा क्योंकि, गांधी के अतिरिक्त आज तक विश्व में कोई ऐसा महापुरुष नहीं हुआ, जिसने जीवन को संपूर्णता से छुआ हो—धर्म, अर्थ, स्वास्थ्य, शिक्षा, नीति, आचार आदि ।

वैसे भी लगता यही है कि अमरीका को ही गांधी की सबसे ज्यादा जरूरत है, जीवन की सार्थकता जानने के लिए क्योंकि, जिसे सफलता कहते हैं, उसे तो वह हासिल कर चुका है । जो अभी पैप्सी और केंटुकी से रोमांचित हैं, उन्हें गांधी तक पहुंचने में समय लगेगा ।

क्या यह संयोग ही है कि कुछ समय पहले माइकल जैक्सन ने कहा था कि वह अपने बच्चों को नचनिया नहीं बनाएगा बल्कि, किसी अच्छे काम में लगाएगा और भविष्य में सत्कार्यों में धन खर्च करेगा । कहीं उसके मुंह से गांधी ही तो नहीं बोल रहा है ?

—केंद्रीय विद्यालय नं. १
दिल्ली कैंट-११००१०

अमृतफल : आमलकी

इसे 'अमृत फल' भी कहा जाता है । इसके फल का प्रयोग चिकित्सा कार्य के लिए किया जाता है, जिसकी मात्रा फल रस १०-२० मि.लि., चूर्ण ३-६ ग्राम है । इसके औषधि योग में च्यवनप्राश, धात्री रसायन, ब्रह्म रसायन विशेष लोकप्रिय है । इटली के वैज्ञानिक प्रो. पीराप्रति का विचार है कि यह एनावोलिक (धातु पोषक) है ।

"मैं राजपथ पर ही चलूंगा, यहां से नहीं हटूंगा", व्यक्ति ने दृढ़ स्वर में कहा ।

और जब राजसेवकों ने उससे राजपथ से हटने का आग्रह किया, तो वह और कठोर स्वर में बोला, "राजा की सुविधा के लिए प्रजा के आवश्यक कार्यों को रोकना अनुचित है । मैं राजपथ से नहीं हटूंगा ।"

मिथिला नगरी में राजा जनक की शोभायात्रा राजपथ पर निकल रही थी और एक व्यक्ति राजपथ पर चला जा रहा था, उसने हटता नहीं था । राजसेवकों के आदेश को उसने अवहेलित कर दिया । राजाज्ञा की अवहेलना के अपराध में उस व्यक्ति को बंदी बनाया गया ।

राजा जनक के सामने उसे पेश किया गया । उस व्यक्ति की बातें सुनकर मिथिलेश प्रभावित हुए बिना न रहे और कहा, "जिस राज्य में राजा को दंडित करनेवाले भी सत्पुरुष विद्यमान हों, वह देश महान है ।" राजा ने उस व्यक्ति से क्षमायाचना की और उससे अनुरोध किया कि

अष्टावक्र : आठ जगह से टेढ़े थे !

● डॉ. निजामउद्दीन



वह मिथिला के 'राजगुरु' बन जाएं, ताकि राजा को अन्याय-पथ से बचा सकें। वह सत्पुरुष थे ऋषि 'अष्टावक्र'।

'अष्टावक्र' का शाब्दिक अर्थ है— आठ जगह से टेढ़ा। तो क्या ऋषि अष्टावक्र आठ जगह से टेढ़े थे ? हां, सचमुच, वह आठ जगह से टेढ़े थे। उनका शरीर टेढ़ा था, तभी तो 'अष्टावक्र' कहलाये। यह शब्द कोई मुहावरा नहीं, न वह दुर्वासा के समान क्रोधी थे कि कहीं क्रोधातिरेक के कारण उन्हें 'अष्टावक्र' कहा जाने लगा हो। वास्तव में मुनि अष्टावक्र जन्मजात ही 'अष्टावक्र' थे। यह भी एक रोचक प्रसंग है।

गर्भ में ही अष्टावक्र होने का शाप

कहते हैं उनके पिता कहोल रात-दिन वेदाध्ययन में लीन रहते थे। गर्भस्थ अष्टावक्र ने पिता का इस बात के लिए उपहास किया। पिता ने अपने को अपमानित समझकर गर्भस्थ बालक को शाप दिया कि 'तू अष्टावक्र हो जा।' कहोल बड़े विद्वान थे, उन्होंने राजसभा में मुनि याज्ञवल्क्य के साथ शास्त्रार्थ भी किया था। कहोल की पत्नी सुजाता ने जब बालक को जन्म दिया, तो पिता द्वारा शापित वह 'अष्टावक्र' निकला, यानी आठ जगह से टेढ़ा। कैसी विचित्र बात है कि पिता अपने बेटे को गर्भावस्था में ही अभिशापित कर देता है। अभिशाप के प्रसंग तो हमारी संस्कृति में असंख्य मिलेंगे। अहल्या को पति ने अभिशापित किया था, यह रामायण का बहुविश्रुत प्रसंग है। कालिदास ने दुर्वासा द्वारा शापित शकुंतला का चित्रण किया है।

गर्भावस्था में बालक पर बाह्य परिस्थिति का प्रभाव अवश्य पड़ता है। लोकमान्यता है कि चंद्रग्रहण के समय गर्भिणी स्त्री को चलते-फिरते रहना चाहिए, नहीं तो बालक अपंग होता है जिसे 'गहनवा' भी कहा जाता है और गर्भ में बालक का बात करना भी इसी भांति मान्य हो सकता है, जैसे अभिमन्यु को अर्जुन द्वारा 'चक्रव्यूह' का भेदन करने का कौशल सिखाना।

"आप मुझ पर हंस रहे हैं ? इस नश्वर शरीर पर हंस रहे हैं ? आपने इस नश्वर शरीर से परे नित्य सत्य को जानने की कोशिश की है ? वही सत्य तो परमतत्त्व है। आप परमतत्त्व को देखिए।"

वदान्य ऋषि की कन्या सुप्रभा से विवाह

अष्टावक्र बड़े हुए, विवाह-योग्य तो उन्होंने वदान्य ऋषि की कन्या सुप्रभा से विवाह करना चाहा। भला वदान्य ऋषि अपनी सुंदर कन्या को उस कुरूप 'अष्टावक्र' को कैसे दे सकते थे ? उन्होंने अष्टावक्र के प्रस्ताव को टालने के लिए कहा कि 'जाओ, पहले हिमालय में तपस्यारत वृद्धा स्त्री से आशीर्वाद लेकर आओ।' वदान्य ने यही सोचकर कहा होगा कि यह टेढ़े-मेढ़े शरीरवाला न वहां तक जाकर आ सकेगा और न मेरी कन्या का इस कुरूप व्यक्ति से विवाह होगा। लेकिन वदान्य अष्टावक्र के दृढ़-संकल्प को न भांप सके। अष्टावक्र ने

वदान्य की शर्त पूर्ण की और सुप्रभा से विवाह किया। वदान्य ऋषि उद्दालक मुनि के समकालीन थे।

'आप नश्वर शरीर पर हंस रहे हैं'

अष्टावक्र अपने समय के महादार्शनिक थे। एक बार वह श्वेतकेतु के साथ मिथिला के जनकवंशी राजा महावशी की राजसभा में पहुंचे। उनके टेढ़े-मेढ़े यानी अष्टावक्र शरीर को देखकर सभासद हंस पड़े। अष्टावक्र विद्वान ऋषि थे, उन्होंने सभासदों के उपहास का बुरा नहीं माना, न अपमानित महसूस किया और न ही सभासदों पर क्रुद्ध हुए। बड़े आदमी धरती की भांति सहनशील और आकाश के समान विशाल यानी विशालहृदय होते हैं। उन्होंने सहज भाव से कहा, ''आप मुझ पर हंस रहे हैं ? इस नश्वर शरीर पर हंस रहे हैं ? आपने इस नश्वर शरीर से परे नित्य सत्य को जानने की कोशिश की है ? वही सत्य तो परमतत्त्व है। आप परमतत्त्व को देखिए।'' अष्टावक्र की इस गंभीर वाणी का सभासदों पर गहरा प्राव पड़ा। सभी स्तब्ध रह गये। अष्टावक्र ने जनक की राजसभा में कई बार आध्यात्मिक संवाद किये, जो उनकी विद्वत्ता का दृष्टांत हैं। शरीर की नश्वरता पर उनके संवाद अकाट्य हैं। कबीर, तुलसी आदि संत कवियों ने भी शरीर को क्षणभंगुर माना है। तुलसी कहते हैं कि सात धातुओं से यह शरीर बना है— रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र। अतः अपवित्र है, नश्वर है—

सातैं सहाधातु-निर्मित, तनु करिय बिचार
तेहि तनु केर एक फल, कीजै पर-उपकार

(विनयपत्रिका, २०३)

'जनक' एक उपाधि थी

राजा जनक के विषय में कहा जाता है कि राजा निमि के शरीर का मंथन कर ऋषियों ने जिस युवक को उत्पन्न किया उसी का नाम 'जनक' पड़ गया। चूंकि वह माता के उदर से उत्पन्न नहीं हुए इसलिए उन्हें 'विदेह' कहा गया। उनके शरीर का मंथन किया गया, इस कारण 'मिथिल' कहे जाने लगे। इस कुल में उत्पन्न राजाओं को 'जनक' अथवा 'विदेह' कहा गया, यानी 'जनक' एक नाम नहीं था, वरन उपाधि थी। ये सभी 'जनक' राजा महाज्ञानी, परमसहिष्णु, कर्मशील तथा भगवद्भक्त थे।

सीता के पिता 'सीरध्वज' जनक भी महाधर्मात्मा थे। जिस निमि के शरीर-मंथन से जनक का आविर्भाव हुआ, उसका तुलसी ने 'रामचरितमानस' में एक बार उल्लेख किया है।

राम-सीता एक-दूसरे को प्रेमाप्यायित नयनों से देख रहे हैं। उस समय जनक के पूर्वज निमि दृगंचल से हटकर दूर चले गये। भला अपनी लड़की और दामाद के प्रेम-अनुराग को कैसे देख सकते थे ? वह स्वयं ही लजाकर दूर चले गये, तभी तो राम-सीता अपलक एक-दूसरे को निहारते रहे। कहते हैं निमि का वास प्रत्येक व्यक्ति की पलकों पर होता है। इसी कारण पलकें भार से नीचे झुकती रहती हैं। तुलसीदास ने इस ओर अच्छा संकेत दिया है—

भए बिलोचन चारु अचंचल,
मनहुं सकुचि निमि तजे दिगंचल।

—मोहल्ला साम्जगरीपोरा,
श्रीनगर-१९००११ (कश्मीर)

शिर्डी वाले सांईबाबा के चमत्कार

● मनोज मराठे



वर्तमान में इसे अंधश्रद्धा कहें या कि भारतीय संस्कृति एवं परंपरानुसार अभिव्यक्त अद्‌भुत प्रेम और विश्वास, जिसको मूर्त रूप प्रदान करते हैं वे हजारों श्रद्धालु जो हजारों मील दूर से कई घंटों की प्रतीक्षा के बाद बहुत ही अल्प समय के लिए, उस महान आत्मा की समाधि और मूर्ति दर्शन हेतु लालायित रहते हैं । यह दृश्य है महाराष्ट्र राज्य के सर्वाधिक चर्चित, राष्ट्रीय एकता को प्रदर्शित करनेवाले धर्मस्थान शिर्डी का, जहां सांईबाबा के मंदिर में दर्शन करने प्रतिदिन हर राज्य, धर्म और वर्ग के श्रद्धालुजन अपनी-अपनी मन्नतें लेकर आते हैं ।

शिर्डी वाले सांईबाबा के नाम से पूर्व में फिल्मकारों ने फिल्में भी बनायी हैं । फिल्मी कलाकारों के लिए भी यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण रहा है, यहां मनोज (भारत) कुमार ने एक बड़े होटल का निर्माण भी करवाया है । आज शिर्डी इतना विकसित हो चुका है कि यहां पर पांच सितारा स्तर के होटलों से लेकर धर्मशालाएं आदि सभी उपलब्ध हैं । विभिन्न समाज के लोगों ने अपनी-अपनी धर्मशालाएं बना रखी हैं, तो 'सांईबाबा ट्रस्ट' ने भी बहुत बड़ी सर्वसुविधायुक्त धर्मशाला बना रखी है । यही कारण है कि हर वर्ग का व्यक्ति यहां अपने स्तर की सुविधा प्राप्त कर लेता है । यहां के अथवा बाहर से यहां आये निवासियों द्वारा दुकानों, होटलों के माध्यम से अच्छा-खासा व्यवसाय भी चलाया जा रहा है । खाने के लिए ट्रस्ट की ओर से लंगर तो चलता ही है, फिर भी यहां का हर होटल और रेस्टोरेंट हमेशा भरा होता है । प्रसाद एवं पूजा सामग्री के अलावा सांईबाबा की तसवीरें, मूर्तियां, आभूषण आदि भी बहुत लोकप्रिय हैं । जिन्हें प्रत्येक दर्शनार्थी यहां से खरीदकर ले जाता है ।

भोर होते ही 'काबड़ आरती', जो सुबह ५ बजे होती है, के दो घंटे पहले से ही श्रद्धालु कतारबद्ध होने लगते हैं । श्रद्धा का यह भाव सांईबाबा के भक्तों को नया उत्साह प्रदान करता है ।

बाबा का शिर्डी आगमन

'सबका मालिक एक' और श्रद्धा,

सबूरी—जैसे शब्दों को देख या सुनकर सिर्फ एक ही तसवीर मनोमस्तिष्क पर अंकित होती है, वह है सांई बाबा की तसवीर । सांईबाबा कौन थे, कहां से आये, कब और किस जाति में जन्मे, इस संबंध में कोई निश्चित जानकारी प्राप्त नहीं है और न ही कोई इसे जानने की इच्छा रखता है । फिर भी जब बात बहुत पुरानी न हो और इसी सदी की, यही कुछ ७५ से सवा सौ साल पहले की हो, तो ऐसे अवतारी पुरुष के बारे में जिज्ञासा उत्पन्न होना स्वाभाविक है ।

कुछ लोगों के अनुसार वह किशोरावस्था में शिर्डी आये । बदन पर सफेद लंबा कुरता, कमर में कमरबंद, बगल में बटुआ, एक हाथ में भिक्षा पात्र और दूसरे हाथ में एक थैली । सर पर पीछे की तरफ गांठ मारकर बांधा हुआ सफेद कपड़ा और पैरों में कुछ भी नहीं । इस तरह था किशोर सांईबाबा का रूप ।

कुछ लोगों के अनुसार वह किशोरावस्था में शिर्डी आये । बदन पर सफेद लंबा कुरता, कमर में कमरबंद, बगल में बटुआ, एक हाथ में भिक्षा पात्र और दूसरे हाथ में एक थैली । सर पर पीछे की तरफ गांठ मारकर बांधा हुआ सफेद कपड़ा और पैरों में कुछ भी नहीं । इस तरह था किशोर सांईबाबा का रूप ।

वह कहते 'हम तो सांई हैं, बहुत दूर से आये हैं ।' एक नीम के वृक्ष के नीचे बैठे रहते । धरती उनका बिछौना और आकाश उनका ओढ़ना था । बाद में मसजिद में भी रहे और हिंदू संतों से शास्त्रार्थ भी करते । भजन-पूजन में व्यस्त रहनेवाले बाबा को कोई हिंदू तो कोई मुसलिम मानता था, पर वे किसी धर्म विशेष से बंधे हुए नहीं थे । उनके शिष्यों में भी हिंदू, मुसलिम, ईसाई और पारसी सभी थे । बड़े-बड़े व्यवसायी, डॉक्टर, वकील, सरकारी अधिकारी उनके शिष्य थे । बंबई के सुप्रसिद्ध सालीसिटर काका साहेब दीक्षित ने वहां एक इमारत बनवायी, जिसमें भक्तजन शिर्डी आकर रुक सकें । नागपुर के एक साहूकार ने यहां मुरलीधर मंदिर के नाम से एक भवन बनवाया । परंतु मुरलीधर की मूर्ति के बजाय वहां बाबा की समाधि का निर्माण हुआ ।

यहां पर एक बंद कमरे में बाबा द्वारा उपयोग में लायी जानेवाली वस्तुएं जैसे उनके जूते, कपड़े, खाने के बरतन, मटकी, चिलम, आसन, छत्र एवं और भी कई जीवनोपयोगी वस्तुएं संग्रह के तौर पर दर्शनार्थ रखी हुई हैं, जो कि बाबा की याद ताजा कर देती हैं ।

बाबा द्वारा देह त्याग

नागपुर के एक धनवान बाबा साहेब बूटी के द्वारा निर्मित मंदिर में १५ अक्तूबर, १९१८ को सांईबाबा परमात्मा में विलीन हो गये ।

हिंदू, मुसलिम भक्तों द्वारा अपनी-अपनी तरह से अंतिम क्रिया करने की इच्छा के विरुद्ध अंत में समाधि निर्माण पर समझौता हुआ, जहां पर सभी धर्म के लोग दर्शनार्थ आ सकें ।

रामनवमी के दिन यहां पर विशेष आयोजन सांईबाबा के समय से ही उनकी इच्छानुसार

किया जाता रहा है । मुसलिमों द्वारा अपने रिवाज के अनुसार बाबा का 'संदल उत्सव' भी उसी रात मनाया जाता है ।

बाबा के चमत्कार

बाबा के बारे में कई चमत्कारिक घटनाओं का विवरण पुराने लोगों द्वारा बताया गया, जिन्हें फिल्मों और पुस्तकों के माध्यम से दर्शाया जा चुका है । एक जनश्रुति के अनुसार बाबा को शाम के वक्त मसजिद में बहुत से दीपक जलाकर रोशनी करने का शौक था । इतने दीपकों के लिए तेल भी बहुत चाहिए था । वे बनियों से तेल मांगकर लाते थे,परंतु एक बार उन्हें खाली हाथ लौटना पड़ा । बाबा ने दिये में तेल के बदले पानी डाला, अपने सर पर बांधे हुए रुमाल को फाड़कर बत्तियां बनायीं और दिये जलाये । रातभर दिये जलते रहे । बहुत से लोग मजाक उड़ाने तथा तमाशा देखने वहां इकट्ठे हो गये, पर यह चमत्कार देखा, तो सभी ने बाबा से क्षमा मांगी । एक बार बाबा धूनी के पास बैठे हुए थे, धूनी जल रही थी, एकाएक उन्होंने धूनी में हाथ डाल दिया । बहुत देर तक किसी का भी ध्यान उस ओर नहीं गया । एक भक्त ने जब देखा, तो दौड़कर आया और बाबा का हाथ जलती धूनी से निकालकर बाहर किया । हाथ काफी जल गया था । सभी ने बाबा से जब इसका कारण पूछा, तो बाबा ने कहा कि लुहार की पत्नी भट्टी में धोंकनी से हवा दे रही थी, इतने में उसकी गोद का बालक भट्टी में जा गिरा, मैंने उसे बाहर निकाला है । मेरा हाथ जल गया, तो कोई बात नहीं, परंतु लड़का तो बच गया । दो दिन बाद लुहार अपनी स्त्री और बच्चे को लेकर बाबा के दर्शन करने आया, उसने सारी घटना लोगों को सुनायी, तो सभी आश्चर्य चकित रह गये कि बाबा ने सच कहा था ।

इसी तरह एक बार शिर्डी में प्लेग फैला, कई लोग मारे गये । जब बाबा को यह बात मालूम हुई, तो वह दुःखी हो गये । दूसरे दिन बाबा की कोख में छह गांठें निकल आयीं, बुखार भी बढ़ गया । सभी भक्त घबरा गये । उन्होंने बाबा से औषधि लेने के लिए कहा, बाबा बोले, "सुनो लोगो ! शिर्डी से प्लेग चल गया है और वह मुझे लग गया है, इसके बाद शिर्डी में प्लेग से एक भी आदमी नहीं मरेगा ।" यही हुआ, इस दिन के बाद शिर्डी में प्लेग से कोई नहीं मरा, यहां तक कि जिन्हें रोग हो गया था, वे भी अच्छे हो गये ।

ऐसे और बहुत से चमत्कार सांईबाबा के नाम से जुड़े हैं, जिन पर आज का आधुनिक समाज एकाएक विश्वास नहीं कर पाता, परंतु जिन लोगों के समक्ष यह हुआ, उन्होंने इन स्मृतियों को किसी तरह सहेजकर रखा । कुछ भी हो सांईबाबा हमारी श्रद्धा के प्रतीक हैं, जहां पर सिर्फ उनके प्रति आस्था और विश्वास को ही यदि लोगों की मन्नतों को पूरा करने का आधार माना जाए, तो इसमें कोई बुराई नजर नहीं आती । आज हर धर्म, हर जाति का व्यक्ति बिना संकोच, श्रद्धा के साथ सांईबाबा के दर्शन करने आता है, तब शिर्डी में अनेकता में एकता के दर्शन होते हैं । आज जबकि हमारे दिलों के बीच मनमुटाव और कड़वाहटभरा माहौल निर्मित हो रहा है, तब ऐसे में इस तरह के धार्मिक स्थल इस वातावरण को सुधार देते हैं ।

—किला गेट सेंधवा, जि.-खरगो

कर्मयोगी संत स्वामी विवेकानंद ने दासत्व भाव के परित्याग तथा मातृभूमि की सेवा को सर्वोपरि कर्त्तव्य घोषित किया । 'अगले पचास वर्षों तक हमारी महान भारत मां पर ही हमारा ध्यान केंद्रित होना चाहिए । फिलहाल अन्य समस्त निरर्थक देवताओं को अपने मानस से हटा दो । यही हमारा एकमात्र जाग्रत देवता है ।' (कंप्लीट वर्क्स, वाल्यूम ३, पृ. ३००) । जीवित है ।' (वि. सा. दशम खंड, पृ. ३-४) । 'भारत का मेरुदंड राजनीति नहीं है, सैन्यबल भी नहीं है, व्यावसायिक आधिपत्य भी नहीं है और न यांत्रिक शक्ति ही है, वरन धर्म है— केवल धर्म ही हमारा सर्वस्व है और उसी को हमें रखना भी है ।' (वि. स., पंचम खंड, पृ. ३५) । 'भले ही आज हम अधःपतित और पथभ्रष्ट हो गये हैं, परंतु यह निश्चित है कि यदि आज हम

जन्म दिवस (१२ जनवरी) स्वामी विवेकानंद



उठो ! जागो !

● शैलेन्द्र प्रसाद पांथरी

धर्म देश का मेरुदंड

तत्कालीन पराधीनताजनित निराशा एवं अवसाद के बावजूद स्वामीजी भारत को मृत नहीं मानते थे, क्योंकि 'इस जाति की सजीवता, इस देश का ध्येय धर्म है और क्योंकि धर्म पर कभी आघात नहीं हुआ, इसलिए यह जाति अपने धर्म के लिए तत्परता से कार्य-संलग्न हो जाएं तो हम अपना गौरव पुनः प्राप्त कर सकते हैं ।' (वि. स., पंचम खंड, पृ. ३६) ।

देश के अतीत से प्रेरित स्वामीजी देश के उज्ज्वल भविष्य के प्रति आशावान ही नहीं

आस्थावान भी थे । उन्होंने कहा था कि 'अतीत तो हमारा गौरवमय था ही, मेरा हार्दिक विश्वास है कि भविष्य और भी गौरवमय होगा ।' (वि. सा., तृतीय खंड, पृ. ३२२) । भविष्य के निर्माण में अतीत की महत्त्वपूर्ण भूमिका का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा— 'जहां तक हो सके अतीत की ओर देखो, पीछे तो चिंतन-निर्झर बह रहा है, आकंठ उसका जल पियो और उसके बाद सामने देखो और भारत को उज्ज्वलतर, महत्तर और पहले से भी ऊंचा उठाओ । हमारे पूर्वज महान थे । पहले यह बात हमें याद करनी होगी । हमें समझना होगा कि हम किन उपादानों से बने हैं, कौन-सा खून हमारी नसों में बह रहा है... इस विश्वास और अतीत के गौरव के ज्ञान से हम अवश्य एक ऐसे भारत की नींव डालेंगे जो पहले से श्रेष्ठ होगी ।' (वि. सा., पंचम खंड, पृ. १७९-८०) । 'यथासमय देश में कम तत्परता और आत्मनिर्भरता अवश्य आएगी । मैं स्पष्ट देख रहा हूं । दूसरी कोई गति ही नहीं...। श्री रामकृष्ण के जन्म ग्रहण के समय से ही पूर्व आकाश में अरुणोदय हुआ है, समय आते ही दोपहर के सूर्य की प्रखर किरणों से देश अवश्य आलोकित हो जाएगा ।' (वि. सा., षष्ठ खंड, पृ १२६) ।

देश की दशा से क्षुब्ध

देश की समकालीन दशा से वे अत्यंत क्षु थे । १९०० ई. में अपनी दूसरी विदेश यात्रा दौरान इस योद्धा संन्यासी ने कहा था— 'भा खंडहरों में ढेर पड़ी हुई विशाल इमारत के सदृश है ।... यह एक भग्नावशिष्ट और विगत राष्ट्र है... । अब भारत राजनीतिक शक्ति नहीं आज वह दासता में बंधा हुआ है । अपने ही प्रशासन में भारतीयों की कोई आवाज नहीं, उनका कोई स्थान नहीं, वे हैं केवल तीस करो गुलाम और कुछ नहीं । भारतवासी की औस आय डेढ़ रुपये प्रतिमाह है । अधिकांश जनसमुदाय की जीवनचर्या उपवासों की कह है और जरा-सी आय कम होने पर लाखों काल-कवलित हो जाते हैं । छोटे-से अकाल का अर्थ है 'मृत्यु' । इसलिए मेरी दृष्टि उस जाती है तो मुझे दिखायी पड़ता है— नाश, असाध्य नाश ।' (वि. सा., दशम खंड) ।

हिंदू धर्म तथा हिंदू समाज के पुनरुत्रयन ध्येय से उन्होंने निर्बलता तथा निष्क्रियता य

प्राचीन भारतीय संस्कृति के अनन्य उपासक तथा भारतीय राष्ट्रवाद के सबल, सशक्त, आधार-स्तंभ स्वामी विवेकानंद की दृष्टि में राष्ट्रवाद का स्थान धर्म तथा अध्यात्म से ऊंचा था । देश-प्रेम को सार्वभौम, धर्म की अभिव्यक्ति अथवा व्यावहारिक वेदांत मानते थे । भारत माता उनकी आराध्य देवी थीं और जनसामान्य का उत्थान ही उनके विचारों और कर्मों का केंद्र था ।

अकर्मण्यता के लिए हिंदुओं की भर्त्सना की, 'हम कीड़े बन गये हैं । हर किसी के पैरों पर लोटने के आदी बन गये हैं, जो भी हमें पैरों तले रौंदने का साहस रखता हो ।' अतः बलवान शक्तिमान होना अत्यावश्यक था । मृत्यु के कुछ समय पहले स्वामी विवेकानंद ने अपने शिष्यों से 'एक ओर, महाजितेंद्रिय, महाबुद्धिमान हनुमान-जैसे सेवा-भाव तथा एकनिष्ठता और, दूसरी ओर, त्रैलोक्य को भयभीत करनेवाले सिंहविक्रम के आदर्श का अनुसरण करने को कहा । देश की तत्कालीन दुर्दशा से व्यथित होकर उन्होंने कहा था— 'ढोल, मृदंग, करताल बजाकर उछल-कूद मचाने से देश पतन के गर्त में जा रहा है... कामविहीन उच्च साधना का अनुकरण न करके देश घोर तमोगुण से भर गया है । देश-देश में, गांव-गांव में ढोल-करताल ही बज रहे हैं, दुंदुभि-नगाड़े क्या इस देश में तैयार नहीं होते ? बचपन से जनाने बाजे सुन-सुनकर, कीर्तन सुन-सुनकर देश स्त्रियों का देश बन गया है, इससे अधिक और अधःपतन क्या होगा ? डमरू शृंग बजाना होगा, नगाड़े में ब्रह्मरुद्र ताल का दुंदुभि-नाद उठाना होगा ।... दिग्दिगंत कंपित कर देना होगा ।' (वि. सा., षष्ठ खंड, पृ. १८६) ।

रामनाद में अपने भाषण में उन्होंने कहा था— 'अपने बल पर खड़े रहिए, चाहे जीवित रहिए या मरिए । यदि जगत में कोई पाप है तो वह है दुर्बलता, दुर्बलता ही मृत्यु है, दुर्बलता ही पाप है । इसलिए, हर प्रकार से दुर्बलता का त्याग कीजिए ।' (वि.सा., पंचम खंड, पृ. ४७) । 'वेद और वेदांत का समस्त सार, सब कुछ, एक शब्द में निहित है— 'बल और अभय ।' उपनिषदों से भी मैंने केवल बल का आदर्श उद्धृत किया है । एक अवसर पर अपने शिष्यों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा था कि 'खान-पान, चाल-चलन, भाव-भाषा सब में तेजस्विता लानी होगी । चारों ओर प्राण का संचार करना होगा, नस-नस में रक्त का प्रवाह तेज करना होगा, जिससे सब मनुष्यों में प्राणों का स्पंदन अनुभव हो ।'

विश्व विजय प्राप्त करनी होगी

स्वामी विवेकानंद के राष्ट्रवाद को 'आध्यात्मिक साम्राज्यवाद' भी कहा गया है, क्योंकि उन्होंने घोषित किया था कि भारतीय (हिंदू) आध्यात्मिकता की अनोखी शक्ति को विश्वविजय प्राप्त करनी होगी । राष्ट्रीय जीवन, सतेज और प्रबुद्ध राष्ट्रीय जीवन के लिए बस यही एक शर्त है कि 'भारतीय विचार विश्व पर विजय प्राप्त करे ।' (हमारा प्रस्तुत कार्य, वि. सा., दशम खंड) ।

'हमें बाहर जाना ही पड़ेगा । अपनी आध्यात्मिकता तथा दार्शनिकता से हमें जगत को जीतना होगा । दूसरा कोई उपाय ही नहीं है । अवश्यमेव इसे करो या मरो ।' इसी कारण उन्होंने हिंदुओं की धार्मिक, नैतिक तथा बौद्धिक श्रेष्ठता का दावा और भारतीयों के यूरोपीयकरण का विरोध किया । उनका कहना था कि 'हमें अपनी प्रकृति के अनुरूप विकसित होना चाहिए । यदि आप यूरोपियनों के लिए कुछ शताब्दियों की संस्कृति का त्याग असंभव पाते हैं तो क्या आप समझते हैं कि आपके लिए दीप्तिमान बीसियों शताब्दियों की संस्कृति का त्याग संभव है ?' (विवेकानंद सेंटेनरी वाल्यूम, १९६३, पृ. ५२३) ।

स्वामी विवेकानंद के राष्ट्राभिमान को यह स्वीकार नहीं था कि पश्चिमी सभ्यता-संस्कृति की चकाचौंध से अभिभूत भारतवासी यह चिल्लाते फिरें कि हम नरपशु हैं, हे यूरोपवासियो हमारा उद्धार करो ।' उनका कहना था कि 'धिक्कार है

ऐसे लोगों को जो यूरोपियनों के सामने जाकर गिड़गिड़ाते हैं कि हम अति नीच हैं, हम बहुत क्षुद्र हैं, हमारा सब-कुछ खराब है । हे भगवान यह किस देश की सभ्यता है ?' (वि. सा., दशम खंड, पृ. ४९-५०) ।

'विलायती रंग में रंग' व्यक्ति को वे सर्वथा मेरुदंडविहीन मानते थे, जो इधर-उधर के विभिन्न स्रोतों से एकत्रित अपरिपक्व, विशृंखल, बेमेल भावों का असंतुलित ढेर-मात्र था । तभी इस घोर जीवन-संग्राम में देश के लोग बचे रह सकेंगे, नहीं तो शीघ्र ही इस देश और जाति को मृत्यु की छाया ढंकने लगेगी ।' (वि. सा., दशम खंड, पृ. ९५) । इसके लिए वे मांसाहार का भी समर्थन करने को तैयार थे— 'जितने दिन बलवान की जय का भाव मानव समाज में रहेगा, उतने दिन मांस खाना ही पड़ेगा या किसी दूसरे प्रकार की मांस-जैसी उपयोगी चीज खाने के लिए ढूंढ़ निकालनी होगी, नहीं तो बलवानों के पैरों के नीचे बलहीन पिस जाएंगे ।' (वि. सा., दशम खंड, पृ. ७६) ।

मंत्र के बल से जगांभ्रगत

देश में व्याप्त निष्क्रियता, हीन बुद्धि और कपट से क्षुब्ध स्वामीजी ने कहा था— 'तुम्हारे देश के लोगों का खून मानो हृदय में जम गया है, नसों में मानो रक्त का प्रवाह रुक गया है, सर्वांग पक्षाघात के कारण शिथिल-सा हो गया है; इसलिए मैं रजोगुण की वृद्धि कर कर्मतत्परता के द्वारा इस देश के लोगों को पहले इहलौकिक जीवन संग्राम के लिए समर्थ बनाना चाहता हूं । देह में शक्ति नहीं, हृदय में उत्साह नहीं, मस्तिष्क में प्रतिभा नहीं । क्या होगा रे इन जड़पिंडों से । मैं हिला-डुलाकर स्पंदन लाना चाहता हूं । इसलिए मैंने प्राणांत प्रण किया है— वेदांत के अमोघ मंत्र के बल से इन्हें जगाऊंगा— 'उत्तिष्ठत जाग्रत' अर्थात उठो, जागो । इस अभय वाणी को सुनाने के लिए ही मेरा जन्म हुआ है ।'... 'जाओ, गांव-गांव में, देश-देश में यह अभयवाणी चांडाल से लेकर ब्राह्मण तक को सुना आओ । सभी को पकड़कर कह दो कि तुम लोग अमित वीर्यवान हो—अमृत के अधिकारी हो ।'

कहा जाता है कि उन्होंने यह भी सुझाव रख था कि कैप्टन रेण्ड की हत्या के अपराध में मृत्युदंड झेलनेवाले चापेकर बंधुओं की सोने क

'शक्ति ही सद्गुण है' का उद्घोष करनेवाले स्वामी विवेकानंद के इस आह्वान ने लाखों-लाख भारतीयों के मन, प्राण को आलोड़ित कर दिया... 'उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्त होने तक मत रुको ।'

मूर्तियां स्थापित की जानी चाहिए । (भिक्खु पारी द्वारा उद्धृत, कालोनियलिज्म, ट्रेडीशन एंड रिफॉर्म, पृ. ६७) ।

शक्ति ही सद्गुण है

'शक्ति ही सद्गुण है' का उद्घोष करनेवाले स्वामी विवेकानंद (और महर्षि अरविंद) सदैव सशस्त्र क्रांति के माध्यम से भारत की आजादी का विचार करते थे । स्वामीजी ने यह कार्य भगिनी निवेदिता के जिम्मे छोड़ दिया था । भगिनी क्रिस्टाइन से स्वामीजी ने कहा था कि विदेशी शासन के उन्मूलन के लिए उन्होंने देशी रियासतों के शासकों को संगठित करने का प्रयास किया था और इसी उद्देश्य की पूर्ति के

निमित्त उन्होंने राइफलों व बंदूकों के निर्माता सर एच. मैक्सिम से मित्रता की थी, परंतु देशवासियों से वांछित सहयोग नहीं मिला। स्वामीजी राजनीति में प्रत्यक्षतः लिप्त न रहे हों, परंतु अंगरेजों के विरुद्ध युवकों को सशस्त्र विद्रोह के लिए प्रेरणा उन्होंने अवश्य दी। कांग्रेस की पद्धति से वे संतुष्ट नहीं थे— 'इस तरह से कहीं भी देश-प्रेम का जन्म नहीं हो सकता। भिखारी के कटोरे की— मशीन, धन-संपदा व व्यापार की दुनिया में कोई जगह नहीं है।'

समाज मेरे पीछे चलेगा

उनका राष्ट्रवाद संकीर्ण नहीं था। विश्व के देशों में परस्पर-निर्भरता देखकर उन्हें यह भान हो रहा था कि कोई भी समस्या केवल राष्ट्रीय स्तर पर नहीं सुलझायी जा सकती, बल्कि उसका समाधान अंतरराष्ट्रवाद के आलोक में ही संभव है। वे भारत के लिए ही नहीं वरन पूरे विश्व के हित में भारत के अभ्युदय के लिए लालायित थे। स्वतंत्र हो जाने पर तथा स्वयं के जीवन में चरितार्थ करने के बाद ही भारत मानव के देवत्व का यह संदेश प्रभावी रूप से समग्र विश्व को दे सकता था कि 'आत्मा की चेतना ही जीवन का केंद्रीय तत्त्व है।' विश्व में शांति की स्थापना के निमित्त भी भारत का स्वतंत्र होना अनिवार्य था। इस प्रकार, एक ओर उन्होंने भारतीयों की मुक्ति की कामना की ताकि वे वास्तव में मनुष्य बन सकें। दूसरी ओर, विश्व के समस्त धर्मों के बीच बंधुत्व का संदेश देकर, भारतीयों में आत्म-गौरव की भावना जागृत की। उन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद की नींव रखी और भावनात्मक देश-प्रेम को जागृत किया, उन्हें भारतीयता के गौरव से अनुप्राणित किया और यह उद्घोष करने को कहा कि 'मैं एक भारतीय हूं और प्रत्येक भारतीय मेरा भाई है।' उनके इस आह्वान की अनुकूल प्रतिक्रिया हुई। पश्चिमी सभ्यता की श्रेष्ठता का सम्मोहन दूर हुआ, हीन भावना तिरोहित हुई, भ्रम पर विजय प्राप्त हुई और परस्पर विद्वेष को अस्वीकार किया गया।' भारतीय नवयुवकों में मानवीय मूल्यों के संश्लेषण की प्रवृत्ति, निरहंकार शक्ति की उपासना तथा धर्म के प्रति आस्था जागृत हुई। उनकी शिक्षाओं के सार-तत्त्व— 'आत्मनोमोक्षार्थम् जगद्हिताय च' के आकर्षण ने भारतीय नवयुवकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। महात्मा गांधी और सुभाष चंद्र बोस ने भी इसे जीवन का लक्ष्य स्वीकार किया। जुलाई, १८९० में काशी में प्रमदादास से उन्होंने कहा था, 'मैं इस समाज पर बम की तरह फट जाऊंगा और समाज मेरे पीछे चलेगा।' 'मेरी क्रांतिकारी योजना', 'हमारा प्रस्तुत कार्य', 'भारत का भविष्य' जैसे उनके भाषण प्रायः सभी क्रांतिकारियों के प्रेरणास्रोत थे। शिकागो के विश्वधर्म सम्मेलन में उनकी सफलता और उनके प्रेरणास्पद प्रवचन युवा राष्ट्रवादियों के लिए प्रेरणा के अजस्रस्रोत बन गये। आत्मा को आलोकित करनेवाले उनके संदेशों ने मातृभूमि की छवि को उच्चासन पर प्रतिष्ठित किया। 'शक्ति ही सद्गुण है' का उद्घोष करनेवाले स्वामी विवेकानंद के इस आह्वान ने लाखों-लाख भारतीयों के मन, प्राण को आलोड़ित कर दिया... 'उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्त होने तक मत रुको।'

— काशी विद्यापीठ
वाराणसी २२१००२

हजरत हुसैन का पंजाबी काफीखानी

• बी.आर. पद्‌म

हजरत शाह हुसैन का जन्म लाहौर में १६५२ ई. के आसपास शेख उस्मान डडा के घर हुआ था । हजरत शाह हुसैन का परिवार जुलाहे का पेशा करके अपना जीवन व्यतीत करता था । जब शाह हुसैन ने जवानी में कदम रखा और यौवन उन्माद में लबरेज निगाहों से इस कायनात को देखा, तब उसे चारों ओर नाचती हुई प्रकृति, उसके पांवों में बजते हुए बिछुए सुनायी दिये । नीले आकाश में टिमटिमाते हुए सितारे, तीव्र धड़कन के स्फुलिंग बनकर, चांद की खूबसूरती पर फिदा यामिनी के इश्क और छिपे जजबातों की लहरें उठती नजर आतीं । अपनी इस अनुभूति को उसने इश्क की शुरुआत माना और अनुभव किया कि जैसे इस इश्क की आग से कुदरत जल रही है वैसे ही वह भी जल रहा है :

चारे नैण गडमड होय विच बिवाला केहा ।
इश्क चौबारे पायों आती, हुण तैनूं गम केहा ।

शीदां से मुलाकात

उस रोज वह मदरसे वाले मौलवी की गली से जब गुजरे, तो देखा एक खूबसूरत लड़की उसे देखकर दरवाजे के पीछे छिप गयी थी । उसकी

फिराक के रंजो गम की चाशनी बने, युवा शाह हुसैन के दिल को मीठी अनुभूति दे जाते । तब उसे प्रकृति के बागों में खिले हुए फूल किसी हसीना की सूरत बनते हुए नजर आते । रात में जब कुटर निविड आकाश में पिया की पुकार करती, तब उसे दामे इश्क का दर्द होता, जो रातों जाग्रत रखता । जब नसीमे सुबह बहता उसे उसमें से बहते हुए किसी गेसू की खुशबू आती । जब कभी भी दरिया के तट पर खडा होता उसे उसमें दिल की गहराइयों में

एक अदद झलक से लगा कि मानों धरती-आसमान एक-दूसरे की ओर झुक गये हों, हवा, अग्नि और जल जैसे एक जगह एकत्रित हो चुके हों, इन तत्त्वों के सम्मिश्रण से कयामत के जल में चमकता हआ आग का जो गोला बताया गया है शायद वह दिल मे आतिशेइश्क रहा होगा । शाह हुसैन ने गली में आते-जाते लोगों को देखा । उसे लगा जैसे मुकामे दीदार पर पहुंच चुके फकीर को ये नफसभरी दुनियां कुफ्र की ओर बुला रही है ।

आह...आसमान के कुशाद...विशाल सीने पर सदियों से वह जलता हुआ आफताब, सूरज इनसानी आकांक्षाओं व तमन्नाओं को सिम्त-दर-सिम्त बढ़ाते हुए सितारे चांद की ठंडक पाकर जिंदा रहते हैं । शायद आसमान तमन्नाओं से भरा शाह हुसैन तो नहीं । जो इश्क रूपी सूरज से तप रहा है । उसकी तमन्नाएं ही सितारे हैं । कभी बनती हैं, कभी मिटती हैं । वो चांद हुस्न बनकर सूरजरूपी इश्क को ठंडक पहुंचाता आया है । क्या इसी भांति विश्व के मानवीय जीवन में भी होता रहा है ? गली से गोरा चेहरा और उसके जेहन में आकाश-सी विशाल आंखें समायी रहने लगीं । खाना-पीना बंद, सोना बंद । उसके अब्बा उस्मान डडा, अम्मी, भाई और बहनें हाथ बांधे उससे पूछते कि अपनी आजारी को बताओ और उसे ऐसी बीमारी क्या है जिसका इलाज लाहौर के हकीम और मुल्ला भी नहीं कर सके ।

'शीदां जाने...शीदां...'

सभी हैरान थे कि यह हुसैन क्या कह रहा है ? हालत ऐसी हो गयी थी कि इधर मसजिद में अजां गूंजती इधर हुसैन खुदायी

उस रोज वो मदरसेवाले मौलवी की गली से जब गुजरा तो देखा एक खूबसूरत लड़की उसे देखकर दरवाजे के पीछे छुप गयी थी । उसकी एक अदद झलक से लगा कि मानो धरती-आसमान एक-दूसरे की ओर झुक गये हों, हवा, अग्नि और जल जैसे एक जगह एकत्रित हो चुके हों ।

लोग गुजरते रहे, वक्त चलता रहा और हुसैन उसके दर पर टकटकी बांधे खड़ा रहा । वो मखमूर आंखें दरवाजे से हट चुकी थीं । बस फिर क्या था, वह इसी जगत में लौट आया ।

शीदां-हुसैन का प्रेम

जब वह वहां से लौटा तो उसके पांव काम नहीं कर रहे थे । जुबान थम गयी थी । शरीर व उसकी गति निश्चेष्ट पड़ गयी थी । वह एकांत में पड़ा रहना चाहता था । बस हर पल, हर वक्त उसकी आंखों के सामने वह गेसू के दाम-सा शीदां कह उठता । धर्म-ईमानवाले ये ताअस्सूब के पुजारी लोग क्या जानें आस्था, विश्वास-अकीदा । यह अकीदा ही सच्ची पूजा है और अकीदा ही इबादत है, बंदगी है खुदा की । जैसे खुदा के हजारों नाम हैं, उसी तरह हुसैन का खुदा शीदां थी । शाह हुसैन अपने इस दर्द का बयान अपनी काफी में यूं करता है कि—

'इश्के दी सिर खारी चाया,
जिन्हां नूं इश्क चिरोका वे लोका ।'

तप हुसैन ही नहीं रहा था ,अपितु इस इश्क

के ताप में शीदां भी तप रही थी । ये दो आत्माओं की तपन युगों से लगी है । एक तप बाह्य है जो मुनिजन किया करते हैं, एक तप आंतरिक है जिसे प्रेमी-आशिक किया करते हैं । मुनियों का बाह्य तप जब आंतरिक तप हो जाता है, तब उनकी स्थिति योग सिद्ध होती है । जिसे अध्यात्म-ज्ञान में तालु से रिसता अमृत कहा गया है । तप का भोक्ता और प्राप्य शिव है जो सुंदर है । सुंदर का नाम हुस्न है । यह हुस्न और इश्क ही तालिब और मतलूब उपासक एवं उपास्य माने गये हैं । शिव को प्राप्त करने के लिए किया गया तप बाह्य नहीं आंतरिक भी था । यहां तप इश्क है । पार्वतीजी के पश्चात आंतरिक तप केवल सोहनी ने किया था । शेष सभी ने बाह्य तप किया है । करवा व्रत, कौमुदी व्रत सभी बाह्य क्रियाएं हैं । हुसैन की दुरवस्था शीदां से छिपी नहीं थी । गीता में श्रीकृष्ण ने एक जगह कहा है कि जो मुझे स्मरण करता है, मैं भी उसे स्मरण करता हूं । हुसैन की पीड़ा शीदां कैसे जान लेती थी, इसका जिक्र हुसैन खुद करता है—

शमां दे परवाने वाने वांगू, जलदेआं अग न मोडीए ।
हाथी इश्क महावत रांझा, अकस दे दे मोड़ीए ॥

दो प्रेमियों का मिलन

एक दिन शबे मिराज था । आधी रात को जब शहर सो रहा था, हुसैन घर से निकल पड़ा उस मसजिद की ओर जो एकांत में थी । चारों तरफ चुप्पी और महकता हुआ समीर बह रहा था । आंगन में खड़ी इमली के पत्तों में से चांद-चांदनी के वसल में...व्यस्त था । उनके प्रेम की बूंदें धरती पर ओस बनकर गिर रही थीं ।

तभी सहसा वहां इकहरे शरीरवाली काले-काले नागों से दामे गेसू लिये बड़े-बड़े पीरों को मात देता हुआ हुस्न लिये शीदां उसके सामने आ खड़ी हुई ।वह उसके हुस्न को देखता रह गया । अचानक वह उसके सिजदे में झुक गया । इश्क का रहम कि उसके कोमल हाथों ने उसे जमीं से उठा लिया । हाथ क्या थे गोया कमल थे दो, जिसके स्पर्श मात्र से बहुत दिनों के जिस्मानी और रूहानी...शारीरिक व आत्मिक कष्ट दूर हो गये ।

'या खुदा...रहम...'

'हां मेरे दोस्त...खुदा रहम करता है ।'

'लाइल्लाह
रसूल्लाह...बिस्मिल्लर्हिरमान... ।'

इतना बोलकर दोनों अर्श पर पहुंच गये ।

शीदां— हाय हुसैन

उनकी मुहब्बत का गीत दूर तक गूंज उठा । शहर में चर्चा हुई । लोग इश्क के दुश्मन हो गये । समाज की रीत जागी । दुनिया की लाज-शरम अपने काले हरमों से बाहर निकल पड़ी । शीदां पर निगाहों का पहरा लग चुका था । पर हद हो गयी इश्क की, वे लोकलाज से बेखौफ मर्गे इश्क पर चलते रहे । घरवालों ने कई जगह रिश्ते की बात चलायी,पर शीदां तो इश्क में बदनाम थी । जब बात न बनी,तो सारे परिवार ने दिल पक्का किया और शीदां को जहर दे डाला, उसकी सांसें टूटीं तो आखिरी सदा यही थी, 'हाय हुसैन ।'

वह उस वक्त सकते में आ गया । उसे अनुभव होने लगा कि यह दुनिया फानी है । उसी क्षण हुसैन ने अपना सिर मुंडा डाला । मस्तों का-सा भेष बनाकर लाहौर की गलियों में नाचने-गाने लगा । लोगों ने समझा वो शीदां की मौत से पगला गया है,लेकिन बात कुछ और

थी । शैख बहलोल दरियाई ने उसे अपना शागिर्द बनाकर मलामती सूफी संप्रदाय की नींव डाल दी । अब उनका नाम हजरत शाह हुसैन था और वह मलायती सूफियों के मुर्शिद थे । वह रोजाना अपना सिर मुंडाकर डेरे से निकलते और अपने मुरीदों के साथ गाते-बजाते लाहौर के अंदर घूमा करते । मुरीदी के लिए आनेवाले को पहला हुकम यह होता कि वो दाढ़ी और सिर मुंडाकर आये ।

हजरत बुल्ले शाह से भी ज्यादा संख्या में शाह हुसैन ने काफियां लिखीं और गायीं । पंजाबी सूफी काव्य में आपका नाम बड़े अदब के साथ लिया जाता है । उनके विचार हैं :—

काजी मुलां मतां दें दे, खरे स्याणे राह दसेंदे ।
(पर) इश्क दी लग्गे राह नाल, दिल अटकेया बेपरवाह नाल ।

इनका मजार बागवानपुरा लाहौर में है, जहां हर साल मेला लगता है ।

—ए-८७, पंजाब विश्वविद्यालय परिसर
चंडीगढ़-१६००१४

हंसिकाएं

स्वर्णकार

विवाह की स्वर्ण जयंती पर
पति की नजरों में प्यार था
स्वर्ण जयंती का वही— स्वर्णकार था

स्थल

विपक्षी दल के लोगों की
पीठ थपथपाते देखकर चौंके
हंसकर कहने लगे...
टटोल रहे हैं...
क्या...
छुरा कहां भोंके ??

सूखा

सर्वत्र सूखा पड़ रहा है
नल में पानी नहीं/
आंख का पानी भी मर रहा है ।

अंतहीन

उनकी उदारता के किस्से अनथक
आश्वासनों को ही लो
देते रहे जनता को,
अंतिम श्वास तक



प्रशंसा

रूपसी दुलहन का पंडित ने वर्णन यों किया
सतवंती गुणवंती...साक्षात विद्या
रूप की खान...गुण की वर्णमाला है
लगता है रूप-गुण का संग्रह निकाला है

● डॉ. सरोजनी प्रीतम



नंददास दर्शन और काव्य : सामयिक परिवेश और नंददास, नंददास की कृतियों का प्रवृत्तिमूलक अध्ययन, भक्ति दर्शन, मधुरा भक्ति से संबद्ध दार्शनिक सिद्धांत, काव्य भाषा, अप्रस्तुत योजना— इन अध्यायों में लेखक ने नंददास का पुनर्मूल्यांकन करने की चेष्टा की है । नंददास की काव्य प्रतिभा का प्रयोग मधुरा भक्ति के दार्शनिक सिद्धांतों के प्रतिपादन के लिए हुआ है, यह लेखक की स्थापना है । संपूर्ण पुस्तक उनके इसी दृष्टिबद्ध उद्देश्य से अनुप्राणित प्रतीत होती है । भाषा सशक्त है तथा पुस्तक सुपाठ्य भी है ।

लेखक : डॉ. जगदीश्वर प्रसाद; प्रकाशक : नई कहानी, १७० अलोपी बाग, इलाहाबाद; मूल्य : १२० रुपये ।

बंद दरवाजे पर दस्तक : अनीता कथूरिया के इस काव्य संकलन में एक सौ छब्बीस कविताएं हैं । कविताओं की विशेषता यह है कि तीन या दो शब्दों की पंक्तियां हैं और उनसे ही बहुत कुछ कहने की कोशिश । मनुष्य और जिंदगी, समाज और संबंध सबको बेनकाब करने की यह कोशिश ही दस्तक है । परिपक्वता की दृष्टि से प्रथम प्रयास सराहनीय है ।

प्रकाशक : लेखक मंच, शाहदरा, दिल्ली; मूल्य : १०० रुपये ।

मंजिल दूर नहीं है : अनीता कथूरिया का यह प्रथम कहानी संग्रह है । उनके ही जीवन की कच्ची-पक्की अनुभूतियों की ईमानदारी में इनमें जो अभिव्यक्ति प्रस्तुत हुई है उसमें कुछ पात्रों का सशक्त चित्रण हुआ है । कहानियां रुचिकर हैं ।

प्रकाशक : लेखक मंच, शाहदरा, दिल्ली; मूल्य : ७५ रुपये ।

वेरा, उन सपनों की कथा कहो : निकोलाई चेर्नीशेवस्की रूस में क्रांतिकारी जनवादी धारा के एक ओजस्वी प्रवक्ता, प्रकांड विद्वान, पत्रकार, लेखक और आलोचक थे । उनका उपन्यास 'स्तो जिलायते' हिंदी अनुवाद— 'क्या करें' रूसी युवा मानस का प्रतिनिधित्व करता है । इसी की नायिका है— वेरा । जिसे संबोधित करते हुए आलोक श्रीवास्तव ने कविताएं लिखी हैं । वेरा के चार सपने ही इसके चार खंड हैं । यह अनूठा प्रयोग और प्रयास है और स्तुत्य भी । कविता की भाषा तथा शब्द चयन भी पाठकों को अच्छे लगेंगे । लेकिन रूसी उपन्यास का परिचय जो उसकी भूमिका बनकर पाठकों को वेरा की मनःस्थिति तक ले जाती— इसका ही अभाव खटकता है । पुस्तक आकर्षक है ।

प्रकाशक : संवाद प्रकाशन, मेरठ : मुंबई; मूल्य : ८० रुपये (पेपर बैक) । रियायती दर : ४० रुपये ।

दरवेशों की मेंहदी : गुजरे जमाने को याद करने का अमृता प्रीतम का एक अलग ही ढंग है, क्योंकि उसमें उनकी संवेदना, अंतर्मन से उतरकर धीरे-धीरे धरती की जिस-जिस चीज का स्पर्श करती है— सब कुछ संवेदनशील हो जाता है और तब अमृता के शब्दों में जादू उतर आता है । यह भी उनकी स्मृतियों की चादर है जिसका पन्ना-पन्ना पठनीय है । परत-दर-परत

नयी अनुभूतियों का संसार खुलता है । इसमें कविताएं हैं, कहानियां हैं, संस्मरण हैं, डायरी है— सबसे बड़ी बात है कि इसमें अमृता खुद हैं ।

प्रकाशक : हिंद पॉकेट बुक्स, दिल्ली; मूल्य : ७५ रुपये ।

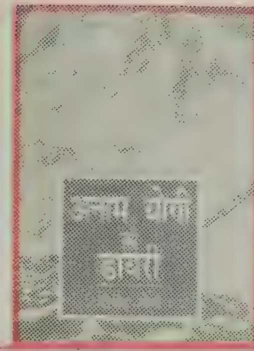
छोटा राजकुमार : विश्व कथा साहित्य के प्रकाशन के क्रम में बीसवीं शताब्दी के फ्रांस के सर्वाधिक सम्मानित लेखक की कृति 'द लिटिल प्रिंस' का फ्रेंच से सीधा हिंदी में अनुवाद प्रस्तुत किया गया है । लिखना और चित्र बनाना लेखक का शौक था और हवाई जहाज उड़ाना उनका पेशा । कथा इन्हीं का प्रतिफलन है । अनुवाद की भाषा सहज है और मूल कथा का आनंद देती है । पुस्तक में मूल लेखक के बनाये चित्र भी हैं । कथा बच्चों के लिए लिखी गयी है लेकिन हर वर्ग के पाठक के लिए रुचिकर है ।

मूल कृति : 'द लिटिल प्रिंस', मूल लेखक : आंत्वान द सेंतकज्युपेरी; अनुवाद : जगवंश किशोर बलवीर; संपादन : डॉ. नफीस आफरीदी; प्रकाशक : हिंद पॉकेट बुक्स, दिल्ली; मूल्य : ५० रुपये ।

भद्रशालिनी : भद्रशालिनी (राजगृह की नगर वधू) एक सफल ऐतिहासिक उपन्यास है । इसमें तथ्य के साथ कल्पना का रम्य सम्मिश्रण किया गया है । मगध के सुविख्यात वैद्य जीवक की माता भद्रशालिनी का पूर्व नाम शालवती था, जो मगध नरेश बिम्बिसार की राजमहिषी बनकर युद्ध और शांति के कार्यों का संपादन करती रही । इस चरित्र का चित्रण करते हुए उपन्यास विवरणात्मक हो गया है । भाषा विषयानुकूल है ।

लेखक : भगवती प्रसाद बाजपेयी 'अनूप'; प्रकाशक : सुयोग्य प्रकाशन, नयी दिल्ली; मूल्य :





५५ रुपये ।

निर्बलता का शाप : कवि और पत्रकार दुर्गादत्त त्रिपाठी साध्य की अपेक्षा साधना के अधिक मोह के परिणामवश यह पुस्तक प्रकाशित हुई है । मनुष्य ही नहीं प्रत्येक जीव में भगवान को देखना और साहित्य को पूजा समझना यह इस महाकाव्य का लक्ष्य है । इसमें सृष्टि रचना से लेकर आधुनिकतम प्रगति (१९४६) का परिचय दिया गया है । छंदबद्ध रचनाएं हैं, लेकिन 'महाकाव्य' कहलाने की क्षमता इसमें है या नहीं, पाठक विचार करेंगे । महाकाव्य की शर्तें इसमें पूरी नहीं होतीं । सशक्त भाषा शैली की ऐसी रचनाएं कम ही मिलती हैं ।

प्रकाशक : दुर्गादत्त त्रिपाठी न्यास, मुरादाबाद; मूल्य : २०० रुपये ।

अंधेरों के पार द्वार : अतीत, वर्तमान और भविष्य के अंधेरों के मध्य आस्था के द्वार खोलने का दावा करनेवाली सड़सठ कविताओं का यह संग्रह है । इसमें वर्तमान का सब कुछ है— संबंधों की विडंबना, फेमिनिटि, इत्यादि । कविताओं में शिल्प-सौष्ठव और काव्य-कौशल लाने का प्रयास जारी रखना पड़ेगा । सच कहने के साहस की भी प्रशंसा की जानी चाहिए ।

कवियित्री : डॉ. रेखा व्यास; प्रकाशक : कवियित्री, दिल्ली; मूल्य : २५ रुपये ।

परंपरा की पदचाप : सत्तासी कविताओं का संग्रह है । ये कविताएं— सूरदास, कबीर, तुलसी, गुरुनानक, कालिदास, निराला, टैगोर, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, अमीर खुसरो, जी. शंकर कुरूप, महादेवी, पंत, मैथिलीशरण गुप्त, दिनकर, प्रसाद, मुक्तिबोध, बच्चन, नागार्जुन, गालिब से लेकर अमृता प्रीतम, अशोक बाजपेयी आदि के लिए लिखी गयी कविताएं— मात्र पदचाप ही हैं । इनकी सार्थकता पर विश्वास करना मुश्किल है । व्यंग्य की धार तीक्ष्ण होती है, कोमल शब्द योजना के माध्यम से कवि ने इसे सहेजने की कोशिश की है ।

संकलनकर्ता : केदारनाथ कोमल; प्रकाशक : निर्मल पब्लिकेशंस, शाहदरा, दिल्ली; मूल्य : ७० रुपये ।

अनाम योगी की डायरी : यात्रा विवरण मात्र यात्रा वृत्तांत ही नहीं, योगी के आत्म-साक्षात्कार के गोपन रहस्यों का उद्‌घाटन भी है । हिमालय के दूसरे पक्ष का भी उद्‌घाटन है जिसमें अध्यात्म, पवित्रता और प्राकृत सौंदर्य ही नहीं अंधविश्वास, पाखंड, अशिक्षा, गरीबी और निसर्ग का दोहन— हर कहीं मौजूद है । योगी ने इसी विरोधाभास का चित्रण किया है । आरंभ से अंत तक पुस्तक में जिज्ञासा बनी रहती है ।

लेखक : दीपक योगी; प्रकाशक : प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली; मूल्य : १०० रुपये ।

अधर का पुल : इस काव्य संकलन में समकालीन जीवन का सजीव और सजग प्रतिबिंब है । इसकी भूमिका लक्ष्मीमल्ल सिंघवी ने लिखी है । कवि, गीतकार, कहानीकार, आलोचक, अध्यापक, बहुभाषाविद्, पत्रकार गौतम सचदेव की इन रचनाओं में व्यंग्य, विचार और अनुभूति का संगम है, लौकिक ध्वन्यात्मकता है, सहज चित्रात्मकता है ।

प्रकाशक : हिंदी बुक सेंटर, नयी दिल्ली; मूल्य : ८० रुपये ।

प्रपंच : इस लघु उपन्यास में श्रीमती बाला शर्मा ने एक परिवार की रोचक कथा के माध्यम से युग के कुछ सत्य उजागर करने की कोशिश की है । उपन्यास रोचक है ।

प्रकाशक : वातायन प्रकाशन, लखनऊ रोड, दिल्ली; मूल्य : ६८ रुपये ।

राष्ट्र संन्यासी : विश्व की प्राचीनतम संस्कृति के जन्मदाता भारतवर्ष को राष्ट्र संन्यासी के रूप में संबोधित करके कविताएं प्रस्तुत की गयी हैं । बीसवीं शती के अंतिम दशक में भारत के आध्यात्मिक महाजागरण के लिए कविताएं लिखी गयी हैं । रचना निराशावादी नहीं है । स्वर सशक्त है और राष्ट्र प्रेम का आस्वादन कराने में समर्थ है । पुस्तक पठनीय है ।

लेखक : पोद्दार रामावतार अरुण; प्रकाशक : किरण प्रकाशन, पेठियागाछी, समस्तीपुर; मूल्य : ८० रुपये ।

ऋतावरी : यह ऋग्वेद की देवी उषा पर रचित प्रथम हिंदी कथा काव्य है । विविध छंद हैं तथा नयी कविताएं भी हैं । यद्यपि छंद-योजना शिथिल है तथापि यह मौलिक काव्य है । भाषा अच्छी है । प्राचीनतम वेद से नवीनतम मानवमूल्यों को समन्वित करने का प्रयास श्लाघनीय है ।

लेखक : रामवरण चौधरी; जानकी प्रकाशन, पटना, नयी दिल्ली; मूल्य : १२५ रुपये ।

पते की बात : अंगरेजी के प्रथम निबंधकार फ्रांसिस बेकन के कुछ निबंधों का हिंदी भावानुवाद प्रस्तुत करने से हिंदी पाठकों को

पाश्चात्य जीवन दृष्टि तथा राजनीतिक, प्रशासनिक और अन्य कई पहलुओं को समझने की सहूलियत होगी। निबंध रुचिकर हैं। इसमें लेखिका की भाषा और कुशल शैली का योग है। अंगरेजी में और वह भी इंगलैंड से एम.ए. करने के कारण लेखिका ने अंगरेजी से हिंदी में सशक्त अनुवाद प्रस्तुत किया है।

लेखिका : डॉ. इंदिरा मिश्र; प्रकाशक : पुस्तकायन, नयी दिल्ली; मूल्य : ५० रुपये।

बड़े वही इनसान : डण्डा लखनवी के गीतों का यह संग्रह युग बोध को चित्रित करने का स्तुत्य प्रयास है। वर्तमान पीढ़ी को सजग करनेवाले ये गीत युग चिंता के कारण ही लिखे गये प्रतीत होते हैं।

प्रकाशक : अंतरराष्ट्रीय काव्य प्रकाशन, लखनऊ; मूल्य : ५० रुपये।

आपका स्वर्ग आपके हाथों में : स्वामी सत्यभक्तजी का चिंतक रूप उनके निबंधों में व्यक्त हुआ है। भाषा ऊबाऊ नहीं है। जीवन और जगत से संबंधित कई विषयों पर बड़े अच्छे ढंग से विचार हुआ है। संवाद शैली के प्रयोग से इसमें कथात्मकता आ गयी है।

प्रकाशक : मूलचंद बड़जाते, संयोजक, सत्यभक्त साहित्य प्रकाशन, वर्धा (महाराष्ट्र); मूल्य : २५ रुपये।

● मंजू ज्योत्सना

सांसों का इकतारा : जीवनानुभव के दायरे में अनेक ऐसी बातें आती हैं, जो प्रत्येक संवेदनशील व्यक्ति को आंदोलित करती हैं। सामान्य व्यक्ति जहां किंचित सोच के पश्चात भुला देता है, रचनाकार उन्हें शब्द देकर किसी विधा का अंग बना देता है। कुछ ऐसे ही प्रसंगों, भावों एवं विचारों का संकलन है— 'सांसों का इकतारा'। यह साध्वीप्रमुखा





कनकप्रभाजी की कविताओं का नवीन संकलन है।

प्रकाशक : आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नयी दिल्ली; मूल्य : ८५ रुपये।

● ललित गर्ग

वादी की पुकार : हिंदी कहानी लेखिका के रूप में निर्मला अग्रवाल एक चिरपरिचित नाम है। उनके कहानी संग्रह 'वादी की पुकार' में १३ कहानियां संकलित हैं। इस कथा-संग्रह की खास बात यह है कि लेखिका ने अपनी सभी कहानियों में नारी की व्यथा, संघर्ष, त्याग, ममता और स्नेह को केंद्र में रखकर कथा-सूत्र को आगे बढ़ाया है। स्त्री चाहे गांव में रहे या शहर में या फिर विदेश में, उसका दुःख-दर्द और उनसे उपजा तनाव प्रायः एक-सा रहता है। आज नारी पुरुषों जैसी सबल भले ही नहीं हो पायी है, पर उसमें विसंगतियों की चुनौती स्वीकार करने की ताकत है।

निर्मला अग्रवाल के इस कथा संग्रह की भाषा सरल है किंतु भावों की अभिव्यक्ति में पूरी तरह सक्षम है। कथा-संग्रह पठनीय है।

प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, महरौली, नयी दिल्ली; मूल्य : ७० रुपये।

● अपर्णा शर्मा

दीये से दीया जले : आज जनजीवन जिस मुकाम पर खड़ा है, वहां संस्कृति और अपसंस्कृति दो विपरीत ध्रुवों की भांति मनुष्य को अपनी-अपनी ओर खींचने की कोशिश कर रही हैं । यह स्थिति सहज ही जन-मानस को भ्रम में डाल रही है, भौतिक चकाचौंध एवं मुक्त बाजार व्यवस्था के चलते समृद्ध सांस्कृतिक उन्नयन का शुभ एवं श्रेय अनिश्चय की ओट में आ गया है । अनास्था एवं अनिश्चय का धुंधलका वर्तमान परिप्रेक्ष्य की उपज है । मनुष्य सोचता है कि इस युग में नीति और चरित्र के बल पर जीवन जीना दुष्कर है । उसके विकास की जड़ें हिल गयीहैं । ऐसे समय में अणुव्रत अनुशास्ता श्री तुलसी ने अपनी कृति **'दीये से दीया जले'** में विश्वास का दीया जलाने का वज्र संकल्प व्यक्त किया है । यह कृति लेखक के संकल्पों के हिमालय से प्रवाहित ऐसी चिंतन धारा है, जो युग की ऊष्मा से संतप्त मानव मन को शीतलता प्रदान करती है ।

६६ निबंधों का यह संकलन एक सृजनशील अध्येता साहित्यकार एवं संतपुरुष की वैचारिक यात्रा का एक सांस्कृतिक एवं नैतिक अभियान है । इस सांस्कृतिक एवं नैतिक पक्ष में राष्ट्रीय अस्मिता, सामाजिक मूल्यबोध और परंपरा एंवं संस्कृति के प्रति विवेकपूर्ण लगाव, राजनीतिक एवं लोकतांत्रिक सिद्धांतों का गहरा ज्ञान, समृद्ध सांस्कृतिक व्यक्तित्व का शुभ और श्रेय के प्रति समर्पित जुड़ाव, अदम्य सृजनशीलता इत्यादि का गहरा भावबोध अंतर्निहित है । लेखक ने जो विचार इस कृति में व्यक्त किये हैं, वे किसी शास्त्र की नहीं, अनुभव की वाणी हैं । यह अनुभव जन-जन का अनुभव बने, यह इस कृति में व्यक्त विचार का मूल ध्येय है और यही लेखक को अभीष्ट है । लेखक प्रस्तुत कृति के लेखों एवं संवादों में आत्मविश्वास को सुरक्षित रखने पर बल देते हु[ए] विश्वास की ज्योति पर आयी राख को हटाकर उसे पुनः प्रज्ज्वलित करने में साहित्य की भूमिक[ा] को महत्त्वपूर्ण मानते हैं । उन्होंने साहित्य के क[म] होते महत्त्व पर चिंता व्यक्त की है और इसके लिए रेडियो, टी. वी., वी. सी. आर., विदेशी चैनल आदि श्रव्य एवं दृश्य माध्यमों को जिम्मेदार ठहराया है ।

'दीये से दीया जले' विशेष रूप से उन पाठकों के लिए पठनीय और संग्रहणीय पुस्तक है, जो साहित्य की गूढ़ एवं गंभीर अभिव्यक्तिय[ों] से बचना चाहते हैं और जो छोटे-छोटे टुकड़ों म[ें] लिखे लेखों में व्यक्त विचारों से सीधा साक्षात्कार करने में रुचि रखते हैं । सीधे, सरल एवं हृदय को छू लेनेवाले इन विचारों में सरसत[ा] एवं सहजता है । गहन एवं गंभीर विषयों को भ[ी] लेखक ने बहुत ही सरल एवं सहज बनाया है दरअसल यह पुस्तक कोई उपन्यास, कहानी संग्रह एवं कविता संग्रह न होते हुए भी पाठक को उत्तरोत्तर आगे के पृष्ठों की ओर खींचती हुई ले जाती है । विदुषी लेखिका महाश्रमणी कनकप्रभाजी ने इस पुस्तक के संपादन में अथक श्रम किया है ।

पुस्तक का आवरण नाम के अनुरूप हैं । मुद्रण एवं साज-सज्जा चित्ताकर्षक है ।

प्रकाशक: आदर्श साहित्य संघ,
२१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली-११०००२, पृष्ठः १९०, मूल्यः ३५ रु[.]

प्रस्तुतिः ललित ग[र्ग]

प्राप्ति स्वीकार :

सूर्य के ये पांव (काव्य-संग्रह)
लेखक : डॉ. सूर्यदेव शास्त्री; प्रकाशक : रेखादय प्रकाशन, १३/४७ लिचू बगान (आर्यसमाज), कांकिनाड़ा, उत्तर २४ परगना (प. बंगाल); मूल्य : पेपर बैक : १५ रुपये, सजिल्द : २० रुपये ।

●

मधुराम (काव्य-संग्रह)
लेखक : जवाहरलाल 'मधुकर'; प्रकाशक : श्री जैन प्रेस, ११, सत्रयी स्ट्रीट, वडपलनी, मद्रास; मूल्य : ७ रुपये ।

●

राजकुमार शुक्ल (जीवनी)
लेखक : राय प्रभाकर प्रसाद; प्रकाशक : मानसी, बी-८, शांति विहार, पटना; मूल्य : ५० रुपये ।

●

दुर्योधन (उपन्यास)
लेखक : रामकुमार बींजराजका 'रवि'; प्रकाशक : कलावती बींजराजका प्रकाशन, सरैयागंज, मुजफ्फरपुर (बिहार); मूल्य : ५० रुपये ।

●

अग्नि-पखेरु (हाइकु-संकलन)
लेखक : डॉ. रमाकांत श्रीवास्तव; प्रकाशक : रुक्मिणी श्याम सुंदरी स्मृति संस्थान, ए- ६/९६, सेक्टर एल, अलीगंज (लखनऊ); मूल्य : २० रुपये ।

●

आज का सच (काव्य-संग्रह)
लेखक : प्रकाश वैश्य; प्रकाशक : आचार्य मित्रारायण सृजनपीठ, ६८, सिंधी कॉलोनी, ग्वालियर (म.प्र.); मूल्य : ३० रुपये ।

ज्योतिष एक खोज
लेखक : सी.एल. दीवान; प्रकाशक : दीवान ज्योतिष फाउंडेशन, ज्योतिष भवन, ६०६, खुशीपुरा, झांसी; मूल्य : ३५ रुपये ।

●

जीवन : यथार्थ और रहस्य (आत्मकथा)
लेखक : डॉ. सच्चिदानंद चौधरी; प्रकाशक : अयन प्रकाशन, १/२०, महरौली, नयी दिल्ली; मूल्य : ७५ रुपये ।

●

छंद ये मेरे (छंद-संकलन)
लेखक : डॉ. अनंतराम मिश्र 'अनंत'; प्रकाशक : लोकवाणी संस्थान, ए-४२, अशोक नगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली; मूल्य : ७० रुपये ।

●

समय के हस्ताक्षर बनाम निशानी अंगूठा (व्यंग्य-संग्रह)
लेखक : रामावतार सिंह सिसौदिया; प्रकाशक : ठहाका मंच, एफ-९३/२, तुलसी नगर, भोपाल (म.प्र.); मूल्य : २०० रुपये ।

●

वनिता (उपन्यास)
लेखक : डॉ. वेदव्रत शर्मा; प्रकाशक : लक्ष्मी प्रकाशन संस्थान, राहुल अपार्टमेंट्स, ५-ए, राजगढ़ कोठे, मंजिल नं.-२, फ्लैट नं.-९, गीता भवन मार्ग, इंदौर (म.प्र.); मूल्य : ८३ रुपये ।

●

जवाहर लाल नेहरू : एक समाजवादी दार्शनिक (शोध)
लेखक : डॉ. वेदव्रत शर्मा; प्रकाशक : लक्ष्मी प्रकाशन संस्थान, इंदौर (म.प्र.); मूल्य : १७५ रुपये ।

●

भागवतामृत (द्वितीय कलश)
लेखक : महावीर प्रसाद जोशी; प्रकाशक : श्रीमंगलम् प्रकाशन, सी-११, शिव मार्ग, श्याम नगर, जयपुर; मूल्य : २०० रुपये ।

अच्छाई पर बुराई को हावी न होने दें

— अणुव्रत अनुशास्ता श्री तुलसी

लाडनूं । अणुव्रत अनुशास्ता श्री तुलसी ने कहा है कि लेखक स्वयं अप्रतिबद्ध रहते हुए बुराई का विरोध करें । बुराई अंततः बुराई ही है । यद्यपि यह पहले भी थी और वर्तमान में भी है । पहले भी इसके निराकरण के उपाय खोजे गये थे और अब भी खोजे जाने चाहिए । अणुव्रत अनुशास्ता यहां सुधर्मा सभा में अणुव्रत लेखक अभिमुखीकरण शिविर के उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रहे थे । इस तीन दिवसीय शिविर का आयोजन अणुव्रत महासमिति ने किया है ।

कार्यक्रम का शुभारंभ समणी वृंद द्वारा प्रस्तुत मंगल संगान से हुआ । कार्यक्रम के अध्यक्ष कादम्बिनी के संपादक डॉ. राजेन्द्र अवस्थी, मुख्य अतिथि कालचक्र के संपादक श्री विनीत नारायण तथा मुख्य वक्ता डॉ. रामनिवास लाखोटिया थे । प्रारंभ में 'अणुव्रत' पाक्षिक के संपादक श्री धरमचंद चोपड़ा ने अतिथियों का स्वागत किया । मुनिश्री सुखलालजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि मनुष्य के पास जो सर्वश्रेष्ठ है उसमें आस्था का स्थान सर्वोपरि है, लेकिन आज का युग अनास्था से पीड़ित है ।



डॉ. राजेन्द्र अवस्थी ने लेखन की स्वतंत्रता की वकालत करते हुए कहा कि लेखक को स्वतंत्र होना चाहिए । उसे किसी भी आग्रह से बांध दिया, तो उसकी क्षमताएं समाप्त हो जाएंगी । उन्होंने कहा कि जीवन में धर्म सबसे बड़ी चीज है । यही जीवन निर्माण का आधार है । लेखक का यह दायित्व है कि वह उन लोगों के जागरण का प्रयास करें, जिनकी सोच अवरूद्ध हो गयी है ।

उन्होंने लेखकों को सुझाव दिया कि वे सुनें सबकी, लेकिन करें वही जो उचित मार्ग हो । 'हमें ऐसा करना चाहिए' की भाषा के स्थान पर 'हम ऐसा करें' की भाषा होनी चाहिए । महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जहां प्रथम पंक्ति से अंतिम पंक्ति तक बुराई ही बुराई दिखायी दे, वहां उसके उन्मूलन के लिए स्वर भी कुछ तीव्र होना चाहिए,

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि आज आवश्यकता है लेखक शब्द की परिभाषा बदलने की । लेखक यदि ऋषि नहीं है तो लेखक के स्थान पर अन्य शब्द का प्रयोग किया जाए ।

'रामलिंगर स्वामी: वल्ललार की ज्योति साधना' पुस्तक का विमोचन

नयी दिल्ली । अनंत कृपा ज्योति को समर्पित एक संध्या का आयोजन दिल्ली तमिल संगम, तमिल हिंदी संगम, रामलिंगर पणिमनरम् चेन्नै तथा साहित्य शोध संस्थान द्वारा नयी दिल्ली में आयोजित किया गया ।



''अहिंदी भाषी हिंदी विद्वानों को जिस भांति पुरस्कृत और सम्मानित किया जाता है उसी प्रकार जो हिंदी भाषी विद्वान अन्य भारतीय भाषाओं पर महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं उनके सम्मानित और पुरस्कृत होने की भी व्यवस्था होनी चाहिए'' यह

विचार व्यक्त किये 'आथर्स गिल्ड ऑव इंडिया' के महासचिव डॉ. राजेन्द्र अवस्थी ने। डॉ. एन. महालिंगम् द्वारा संपादित और डॉ. रवीन्द्र कुमार सेठ द्वारा लिखित एवं अनूदित कृति 'रामलिंग स्वामी: वल्ललार की ज्योति साधना' के लोकार्पण अवसर पर तमिल, हिंदी और संस्कृत के अनेक विद्वान, पत्रकार और लेखकों ने भाग लिया। डॉ. नरेन्द्र कोहली, डॉ. वेदवती वैदिक, श्री जी. बालचन्द्रन, डॉ. शशिप्रभाकुमार ने इस अवसर पर आयोजित संगोष्ठी में भाग लिया। राष्ट्रीय भावात्मक एकता के लिए तमिल-हिंदी संबंधों में माधुर्य के प्रचार-प्रसार में डॉ. रवीन्द्र कुमार सेठ के तिरुक्कुरल, सुब्रह्मण्य भारती, वैष्णव भक्ति और शैव-भक्ति आदि विषयों पर रचित ग्रंथों के महत्त्व को रेखांकित किया गया। पुस्तक का लोकार्पण डॉ. विजयेन्द्र स्नातक ने किया। तमिलनाडु के गांधीवादी चिंतक डॉ. एन. महालिंगम ने उन्नीसवीं शती के संत रामलिंग स्वामी के जीव-कारुण्य, विश्व-बंधुत्व तथा निर्धन सेवा आदि पर प्रकाश डाला।



श्रीमती माया शर्मा को पर्यटन लेखक के रूप में उनके एक लेख पर राष्ट्रीय पर्यटक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

तुलनात्मक भारतीय साहित्य के लिए के.के. बिड़ला फाउंडेशन शोधवृत्तियां

के.के. बिड़ला फाउंडेशन ने वर्ष १९९४-९६ से भारतीय साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन के लिए दो शोधवृत्तियां देने का निश्चय किया। शोधवृत्ति की अवधि दो वर्ष है। इसमें ९००० रुपये प्रतिमाह वृत्तिका और २५००० रुपये आनुषंगिक अनुदान प्रतिवर्ष दिया जाएगा। वर्ष १९९६-९८ के लिए डॉ. जे.पी. दास, प्रख्यात कवि एवं लेखक तथा डॉ. ई.वी. रामाकृष्णन, रीडर अंगरेजी विभाग, साउथ गुजरात यूनिवर्सिटी, सूरत का चयन किया गया है। डॉ. जे.पी. दास का शोध विषय 'आधुनिक भारतीय नाटक का विकास' तथा डॉ. ई.वी. रामाकृष्णन का शोध विषय 'राष्ट्रीय परिदृश्य : १९६०-९० की अवधि में मलयालम, कन्नड़, मराठी, गुजराती और हिंदी में लिखे उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन है।

राजेन्द्र अवस्थी को भारत भाषा भूषण

अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन ने इस वर्ष का सर्वोच्च साहित्यिक अलंकरण भारत भाषा भूषण सम्मान सम्मेलन के बारहवें अधिवेशन कलकत्ता में हिंदी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं पत्रकार श्री राजेन्द्र अवस्थी को दिया है।



महात्मा गांधी की हस्तलिपि में उनके मूल दस्तावेजों को ब्रिटेन में भारतीय उच्चायुक्त डॉ. एल. एम. सिंघवी ने नीलामी से बचाया। राष्ट्र की धरोहर डॉ. सिंघवी को प्राप्त हुई, इस अवसर पर लिये गये चित्र में डॉ. सिंघवी तथा अन्य लोग



पत्र-साहित्य पर संगोष्ठी

पटना । कादम्बिनी क्लब द्वारा कवि रामगोपाल शर्मा 'रुद्र' की स्मृति में शांति आश्रम में पत्र-साहित्य पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता आचार्य विन्ध्यवासिनी दत्त त्रिपाठी ने की एवं संचालन क्लब के संयोजक डॉ. शिवनारायण ने किया । संगोष्ठी का उद्घाटन उपन्यासकार डॉ. भगवतीशरण मिश्र ने किया । मुख्य वक्ता के रूप में लेखक डॉ. सतीशराज पुष्करणा ने 'हिंदी के विकास में पत्र-साहित्य का योगदान' विषयक आलेख का पाठ किया । विशिष्ट वक्ता के रूप में गीतकार ललित कुमुद ने कहा कि हिंदी पत्र-साहित्य समृद्धि पथोन्मुख है ।

पत्र-साहित्य पर विचार-विमर्श के उपरांत अनेक लेखकों ने अपने नाम दूसरे शीर्षस्थ साहित्यकारों के पत्रों का वाचन किया, जिनमें श्री विन्ध्यवासिनीदत्त त्रिपाठी, उदयराज सिंह, कृष्णानंद कृष्ण, डॉ. शिवनारायण, प्रो. कैलाश प्रसाद सिंह 'स्वच्छंद', नरेश पांडेय चकोर, डॉ. सतीशराज पुष्करणा, राजकुमार प्रेमी तथा सिद्धेश्वर प्रमुख थे । संगोष्ठी के दूसरे चरण में कुछ चुने हुए कवियों ने काव्य-पाठ किया, जिनमें बालकवि विराग गौरव सहित श्री मृत्युंजय मिश्र करुणेश, सुदेश कुमार लाल, हलधर भारती, कमलेश कुमार (कलकत्ता), रामलखन सिंह मयंक, हरीन्द्र विद्यार्थी तथा राकेश प्रियदर्शी प्रमुख थे । प्रो. कैलाश प्रसाद सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया ।



बावली में क्लब का उद्घाटन

मेरठ । कादम्बिनी क्लब बावली (मेरठ) का उद्घाटन वयोवृद्ध समाज सुधारक चौ. जित्तन सिं के कर-कमलों द्वारा संपन्न हुआ । क्लब कार्याल मुकेश कुमार-निवास में साहित्यिक, सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य रू से भाग लेनेवाले थे साहित्यकार देवेन्द्र चौधरी दर्दीले, प्रवीण तोमर, मधुलिकी, अर्चना सिंह, महक सिंह, मास्टर निहाल सिंह आर्य, उमा शर्मा, वीरसैन, महावीर तोमर ।

इस अवसर पर साहित्यकार देवेन्द्र दर्दीले तथा युवा कवि प्रवीण तोमर की रचनाएं सराही गयीं । कादम्बिनी क्लब के संयोजक मास्टर प्रेम सिंह ने शहीद समिति की ओर से साहित्य प्रेमियों व कवियों को उत्साहित करते हुए प्रशस्ति-पत्र व शील्ड प्रदान किया ।

कवि सम्मेलन का आयोजन

मधुबनी (पूर्णिया) । कादम्बिनी क्लब के तत्त्वावधान में यहां एक विराट कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया । लक्ष्मी पूजा समिति के सभापति श्री प्रदीप कुमार मिश्रा एवं कादम्बिनी क्लब की संयोजिका श्रीमती मंजुला उपाध्याय 'मंजुल' ने अपने-अपने अभिभाषण से, उपस्थित कवियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया । अध्यक्षता क्लब के सदस्य डॉ. सत्येन्द्र 'निगम' ने की । संचालन श्री संजय कुमार सिन्हा ने किया ।

सर्वप्रथम पूर्णिया आकाशवाणी के केंद्र निदेशक श्री विजय नंदन प्रसाद ने क्लब की साहित्यिक गतिविधियों की विस्तार से चर्चा करते हुए सराहना की एवं अपनी कविताएं सुनायीं ।तत्पश्चात— श्री शिवराज सिंह, भोलाना आलोक, गोपाल घोष, चंद्रकांत भारती, संजय सिन्हा, चन्द्रकांत राय, कौशल कुमार राय, महेश विद्रोही, कृतनारायण प्यारा, परशुराम पारस, सत्येन्द्र निगम, देवआनंद, नवीन भारती, नंदकिश सुमन, राजकुमार कमल, यमुना प्रसाद वसाक,

बच्चा यादव, मुकेश सुबोध, संतोष, अरविन्द, नूतन आनंद, किरण झा, बबीता चौधरी, मंजुला उपाध्याय मंजुल, कुमकुम चौधरी, वंदना ने भी अपनी-अपनी रचनाएं सुनायीं। धन्यवाद ज्ञापन अध्यक्ष श्री सत्येन्द्र निगम ने किया।



क्लब की मासिक बैठक सह कवि गोष्ठी

रांची। रांची जिला कादम्बिनी क्लब की मासिक बैठक सह कवि गोष्ठी स्थानीय शिल्पी युवा संगठन परिसर में संपन्न हुई।

कार्यक्रम में नरेश बंका, महुआ मांजी, राजीव थेपड़ा, रेहाना मोहम्मद अली, मुक्ति शाहदेव, डॉ. सुरिंदर कौर नीलम, अशोक अंचल, आलोक आदित्य, सत्य प्रकाश, रश्मि कुमारी तथा अनेक गण्यमान्य लोगों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में कवि-गोष्ठी का सफल आयोजन हुआ जिसमें डॉ. सुरिंदर कौर नीलम एवं रेहाना मोहम्मद अली ने अनेक कविताएं सुनायीं। अशोक अंचल, मुक्ति शाहदेव एवं आलोक आदित्य ने श्रोताओं को मुग्ध कर दिया। दूसरी ओर रश्मि कुमारी एवं महुआ मांजी ने भी खूब वाहवाही लूटी जबकि नरेश बंका की हास्य-व्यंग्य पंक्तियों ने श्रोताओं को खूब हंसाया। गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. नीलम ने की जबकि संचालन नरेश बंका ने किया। कार्यक्रम के अंत में यशस्वी लेखिका स्व. डॉ. कुमुद के सम्मान में एक मिनट का मौन रखा गया।

बुद्धि विलास के उत्तर

१. अंकपद्धति, शून्य का प्रयोग, दशमलव प्रणाली, २. क. लगभग १४ करोड़ ९६ लाख किलोमीटर, ख. ८ मिनट, ३. १८वीं सदी में, वर्जीनिया में, पीटर जैफर्सन ने (अमरीका के तीसरे राष्ट्रपति टामस जैफर्सन के पिता ने), ४. सदाबहार, देवदार या गुलमेंहदी का, क्रिसमस से एक दिन पहले (२४ दिसंबर), ख. खुशहाली का, ग. भगवान ने विश्व की रचना के पहले 'ईडन गार्डन' लगाया था, जिसमें सेब का पेड़ था। 'क्रिसमिस ट्री' उसी की याद में लगाया जाता है, ५. क. 'पॉलीग्राफ मशीन', कैलिफोर्निया के एक मेडीकल छात्र जॉन ए. लारसन ने सन् १९२१ में, ख. एक ही समय में शरीर का रक्तचाप, दिल की धड़कन, सांस का उतार-चढ़ाव बढ़ जाता है, ६. क. १९९५-९६ में ३,०२० करोड़ रु. का रेकॉर्ड निर्यात, ख. २०० प्रतिशत उत्पादन में और ४०० प्रतिशत निर्यात में वृद्धि, ७. १९८४ में ८.१ प्रतिशत (५४४ सीटों में महिला सदस्य ४४), ८. क. श्रीलंका के ए.टी. आर्यरत्ने, ख. सचिन तेंदुलकर (क्रिकेट), मालती (विकलांग एथलीट), शाइनी विल्सन (ओलंपिक में दौड़कूद स्पर्धा में सेमीफाइनल में पहुंची थी), ग. कबीर सम्मान— मलियाली कवि श्री अयप्पा पणिकर, तुलसी सम्मान— चित्रकार महासुंदरी देवी, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान— कथाकार सुश्री कृष्णा सोबती, ९. क. वसीम अकरम ने सकलैन मुश्ताक के साथ भागीदारी (जोड़ी) में ३१३ रन बनाये और १२ छक्के लगाये— दो विश्व रेकॉर्ड कायम किये, ख. पाकिस्तान के १६ वर्षीय शाहिद अफरीदी केवल ३७ गेंदों में (११ छक्के और ६ चौके लगाये),

१०. कार की सामने की हेडलाइट

समस्या-पूर्ति— २०८ कहां मैं



लगता है पाठकों ने इस चित्र को भली-भांति देखा नहीं है। पाठकों की मिली ढेर सारी समस्या-पूर्तियों में एक भी समस्या-पूर्ति हमें ऐसी नहीं मिली, जिसे हम प्रथम तथा द्वितीय पुरस्कार दे सकें। ढेरों समस्या-पूर्तियों में केवल एक ही ऐसी समस्या-पूर्ति हमें मिली है जिसे हम तृतीय पुरस्कार दे रहे हैं।—सं.

बंद कमरा
घुप्प अंधेरा
सभी कोने में मकड़जाले
'घोटालों' के हैं 'हवाले'
किरण जैसे गुम जहां में
कहे बापू ! हूं कहां मैं

—डॉ. अनामिका रिछारिया
३/४ ऑफीसर कॉलोनी
एल.आई.सी. के पास
सिविल लाइंस, झांसी (उ.प्र.)

दि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राकेश शर्मा द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस
१८/२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित



समस्यापूर्ति—२१०　　है कौन

समस्या-पूर्ति साहित्य की पुरानी विधा है। हमने उसे फिर से जीवित किया है। यहां प्रकाशित चित्र को ध्यान से देखिए और नीचे का शीर्षक पढ़िए, इसे लेकर आपको सिर्फ छंदबद्ध ही नहीं, अतुकांत कविता भी हो सकती है, लिखनी है, उसमें भावों का गांभीर्य आवश्यक है। रचना मौलिक तथा अधिकतम छह पंक्तियों की हो। समस्या-पूर्ति के परंपरागत नियमों के अनुसार चित्र के नीचे दिये शब्द कविता के अंत में ही आने चाहिए।

१. समास्या-पूर्ति केवल पोस्टकार्ड पर ही भेजें।
२. समस्या-पूर्ति संपादक के व्यक्तिगत नाम से नहीं भेजें।
३. एक बार पुरस्कृत व्यक्ति की रचना छह माह तक दोबारा पुरस्कृत नहीं की जाएगी।

पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है

प्रथम—२५० रु.; द्वितीय—२०० रु. और तृतीय—१५० रु.

अंतिम तिथि : २५ जनवरी, १९९७

पारदर्शी : सूरज. एन. शर्मा


स्वाद व सुगंध में आज भी सर्वश्रेष्ठ
रत्ना छाप
ज़ाफरानी पत्ती
भारत में पहली बार
होलोग्राफिक
50 ग्रा० व 10 ग्रा० के पाउच में
PRATIBHA
ZAFRANI ZARDA
IS 2344
CM/L-1081435
आई.एस.आई. के मानदंड पर
प्रभात ज़र्दा उत्पादन
वैधानिक चेतावनी तम्बाकू चबाना स्वास्थ्य के लिये हानिका